बीसल देव रास

डॉ० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट्०
रीडर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी
तथा
श्री अगरचंद नाहटा

हिन्दी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग

प्रथम संस्करण, १६५३
द्वितीय संस्करण, १६६०

मुद्रक—आज़ाद प्रेस, प्रयाग

प्रथम संस्करण की

प्रस्तावना

प्रायः ढाई वर्ष हुए, 'राजस्थानी' की फ़ाइलें उलटते-पुलटते जनवरी, १६४० के अंक में श्री अगरचंद नाहटा का 'बीसलदेव रासो की हस्तलिखित प्रतियाँ' शीर्षक लेख पढ़ा। उसमें नाहटा जी ने ग्रन्थ की एक दर्जन से अधिक प्राचीन प्रतियों का संक्षिप्त उल्लेख किया था। उस लेख को पढ़ने के अनन्तर ग्रन्थ के पाठ-निर्णय और पाठ-संपादन का विचार उत्पन्न हुआ। किन्तु प्रतियाँ प्राप्त करने के लिए नाहटा जी से परिचय न होने के कारण मैंने श्रद्धेय डॉ० धीरेन्द्र वर्मा जी से इसकी चर्चा की, तो उन्होंने नाहटा जी को लिखा। श्रद्धेय डॉक्टर साहब के पत्र का उत्तर देते हुए नाहटा जी ने ग्रंथ की प्रतियाँ इकट्ठी करके देना स्वीकार किया। इस देश में जहाँ प्रायः लोग प्रतियाँ दिखाना तक नहीं चाहते, उन्हें इकट्ठी करके उपयोग के लिए अन्य को देना बड़ी भारी उदारता का कार्य है। नाहटा जी का नाम उनकी इसी उदारता के नाते ही इस ग्रंथ के एक सम्पादक के रूप में जा रहा है, अन्यथा शेष समस्त कार्य मेरा किया हुआ है, और उसका संपूर्ण उत्तरदायित्व मुझ पर ही है। नाहटा जी ने अर्थ के अंश को अंतिम रूप में देख कर उसमें लगभग एक दर्जन स्थलों पर सुधार के सुझाव भी दिए, जिन्हें ग्रहण कर लिया गया है। यह उनकी अतिरिक्त कृपा थी।

केवल आभार-निवेदन शेष है। श्रद्धेय डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा ने उपर्युक्त प्रकार से इस कार्य में मेरी सहायता की है, इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। उक्त सहायता के बिना यह कार्य एक प्रकार से असंभव ही था। नाहटा जी के पूर्व भी मुझे अर्थ-निर्णय में प्रायः एक दर्जन स्थलों पर श्री नरोत्तमदास जी स्वामी तथा लगभग इतने ही स्थलों पर अपने पूर्ववर्ती छात्र और अब विश्वविद्यालय के सहयोगी श्री जगदीशप्रसाद गुप्त से भी सहायता मिली थी। इन सज्जनों का भी मैं आभारी हूँ। अब भी प्रायः एक दर्जन स्थल शेष

हैं, जिनके अर्थों के सम्बन्ध में पूर्ण निश्चय नहीं हो सका है। प्राचीन ग्रन्थों के सम्बन्ध में इस प्रकार की कठिनाइयाँ रह जाना स्वाभाविक है। जो विद्वान् इस विषय में अपने सुझाव देंगे उनका भी मैं आभारी हूँगा। ग्रन्थ के अंत में दी हुई अनुक्रमणिका मेरे छात्र श्री मिथिलेश कांत, एम० ए० ने बनाई है। इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

ग्रंथ में जहाँ-तहाँ कुछ छपाई की भूलें रह गई हैं। पाठक कृपया उन्हें दिए हुए शुद्धि-पत्र को देख कर ठीक कर लें।

प्रयाग,
श्रावण शु० १३, सं० २०१०। माताप्रसाद गुप्त

द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना

प्रस्तुत संस्करण में कृति को यथासंभव अधिक पूर्ण और संशोधित रूप में रखने का प्रयास किया गया है। इसी दृष्टि से भूमिका भाग में तीन नवीन शीर्षक 'कथावस्तु और उसकी ऐतिहासिकता', 'रासक तथा रास काव्य-परंपरा और बीसलदेव रास' तथा 'बीसलदेव रास का काव्यत्व' रक्खे गए हैं जिनमें रचना के ऐतिहासिक तथा साहित्यिक पक्षों की विस्तृत विवेचना की गई है। स्वीकृत पाठ वाले भाग में पाठालोचन की दृष्टि से पाठ का आवश्यक संशोधन किया गया है। अर्थ वाले भाग में इस बार दुर्बोध शब्दों के अपभ्रंश और संस्कृत रूपों को भी देने का यत्न किया गया है, और अर्थ को अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक रूप दिया जा सका है। कहना न होगा कि पिछले छः-सात वर्षों में किए गए मेरे हिन्दी के आदिकालीन साहित्य के अध्ययन से इस संस्करण में संपादन के विभिन्न अंगों को पूर्ण और परिष्कृत बनाने में मुझे बड़ी सहायता मिली है।

मुझे हर्ष है कि रचना का संशोधित संस्करण हिन्दी पाठकों को भेंट कर रहा हूँ। जिस सौजन्य के साथ उन्होंने इसके प्रथम संस्करण को अपनाया है, उसके लिए में उनका हृदय से आभारी हूँ।

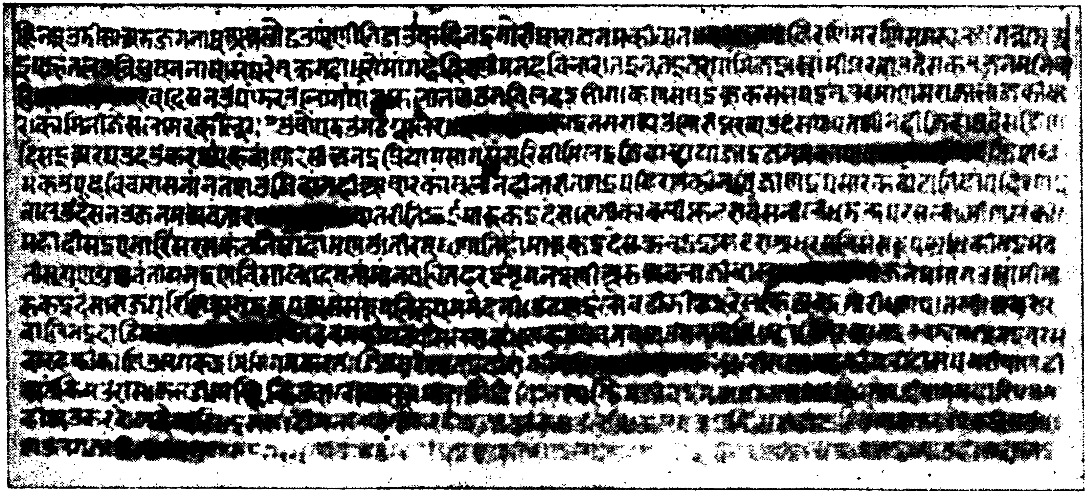
प्रयाग,
पौष कृ० १, सं० २०१६। माताप्रसाद गुप्त

विषय-सूची

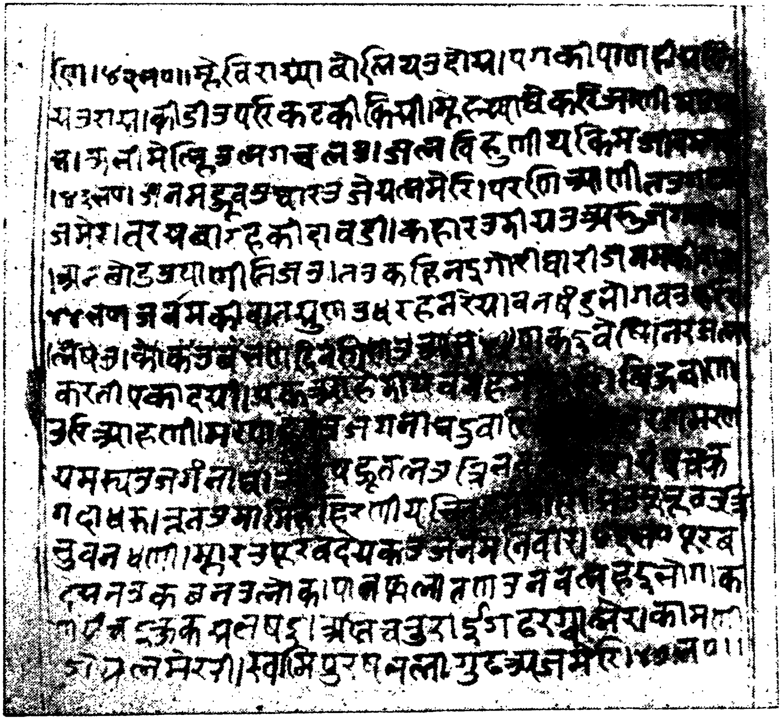
शुद्धि-पत्र

पृष्ठ.पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ.पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७.१७	अधार	आधार	१२९.१७	म०	म
८.७	पुष्पिका	पुष्पिका का	१३६.४	सोंगी	सींगी
१८.९	सागरे	सगा रे	१५६.४	ह्ंस	हंस
१९.१०	कवाड्या	कवाड्या	१५८.४	स्रावण	स्रावण
२२.१२	बनमैं	इनमैं	१६९.४	चलाह	चलाइ
२७.१३	वास्यउ	वार्यउ	१८१.६	नह	नइ
३०.१	क०	म०	१९४.७	सारिसा	सरिसा
५१.१०	लिया	लिया (१०)	२१०.२	टसकला	ठसकला
५६.१५	भूल	मूल	२१९.१७	ओलग्गा	ओलग्ग
५९.१५	सत्राहवीं	सत्रहवीं	२२३.१४	अंतेउ	अंतेउर
५९.२३	जैसा	जैसी	२२३.१६	तांबूल	तंबालू
६३.११	षड़यंत्र	षड्यंत्र	२२३.२१	∠ताम्बूल	∠त्रंबालुक= पात्र-विशेष
६३.२६	प्रशाद	प्रसाद			
६६.१७	सूर	सूरि	२२४.१९	∠धात=अघात	∠घात=आघात
६८.२५	रासक	रासअ	२२६.६	आहेउ	आहेड
७१.८	बाहर	बारह	२२६.१३	सद्दृ	स्मृ
७२.९	न	म	२२६.२२	रूपः	रूप
७२.१९	(अलग चाकरी)	ऊलग (चाकरी)	२२७.२५	ऊगल∠ओलगा	ऊलग∠ओलग्गा
७५.४	पर	पर भी	२२८.१६	∠ओलग	∠ओलग्गा
७९.९	अर्जन	अर्जुन	२२८.२३	∠ओलग्ग	∠ओलग्गा
८२.९	यिनोद	विनोद	२२९.७	[प्रवासी]	(चाकर)
१११.४	मइ	नइ	२२९.१९	अपनी	अपने
१२७.२	इसीय,	इसीय	२३१.१	ऊमडी	ऊभडीं
१२९.२	न	म	२३१.२	जिष्प्रदित	निष्पादित

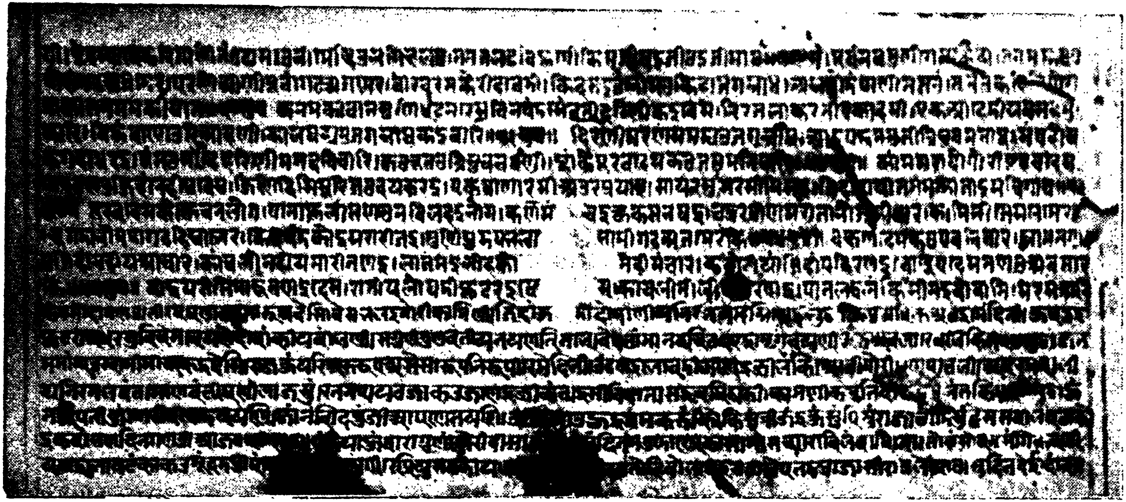
पृष्ठ.पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३३.२०	धोडिला	घोडिला
२३४.१७	अविष्ट	आविष्ट
२३७.१४	[नदियों के]	[पर्वतों की]
२३७.१४	नीचे घाट	नीची घाटियाँ
२३७.१४	पड़ते	पड़ती
२३७.१६	को	को कोई
२३८.२	शीत)	] शीत
२३९.१९	तप	तप्
२३९.२२	लगा	लग
२४०.१६	हुअ	हुआ
२४५.१४	होगे	हो
२४६.२३	काटि	कटि
२४८.१९	थीं	थी
२४८.२४	प्रवृत्ति	प्रावृत्ति
२५०.२५	स्फेट्य	स्फेटय्
२५१.२१	मूँगफली	मूँग की फल
२५३.८	और	और हँस हँस कर
२५४.११	कौदंड	कोदंड
२५४.११	दिया	लगा दिया
२५४.१३	कंचूक	कंचुक
२५५.२१	निरीक्ष	निरीक्ष्



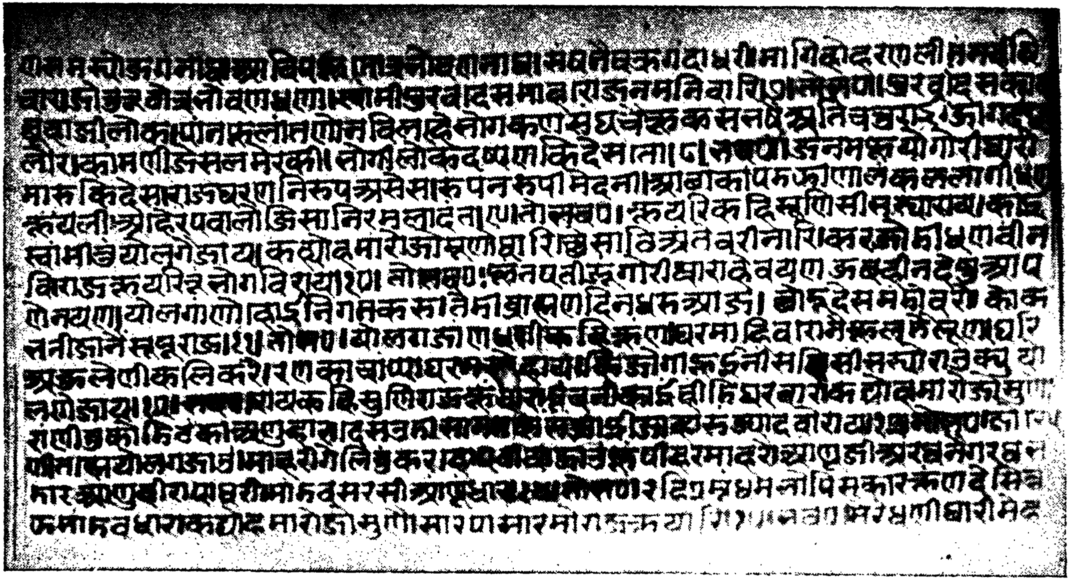
म० प्रति का एक पृष्ठ ।



पं० प्रति का एक पृष्ठ ।



मो॰ प्रति का एक पृष्ठ ।



प्र० प्रति एक पृष्ठ ।

भूमिका

१. विषय-प्रवेश

'बीसलदेव रास' हिंदी का गौरव-ग्रंथ माना जाता रहा है, क्योंकि इसमें स्वस्थ प्रणय की एक सुन्दर प्रेम गाथा गाई गई है, और सामान्यतः इसके संबंध में विश्वास यह रहा है कि यह हिंदी के सबसे प्राचीन ग्रन्थों में से है। कुछ इतिहासकारों ने तो इसे हिंदी का सर्वप्रथम ग्रंथ तक कहा है। किन्तु राजस्थान के आलोचकों और इतिहासकारों के गत कुछ वर्षों में जो विचार सामने आए, उन्हें देख कर किंचित् आश्चर्य हुआ।

१९३९ में श्री मोतीलाल मेनारिया ने अपने राजस्थानी साहित्य के इतिहास में लिखा[१]—"मालूम होता है नाल्ह कोई बहुत पढ़ा-लिखा हुआ कवि नहीं, बल्कि एक साधारण योग्यता का रमता-फिरता भाट था, जो अपनी तुकबंदियों द्वारा जन-साधारण को प्रभावित कर अपनी उदर-पूर्ति करता था। जन्मसिद्ध काव्य-प्रतिभा उसमें न थी। अतः रासो में न तो काव्य-चमत्कार, न अर्थ-गौरव और न छंद-वैचित्र्य है। सर्वसाधारण की बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग उसने किया अवश्य, पर उनका भी ठीक-ठीक प्रयोग उससे न हुआ; उनके साथ लिपटे हुए भाव को वह समझ न सका।......... निष्कर्ष यह है कि साहित्यिक दृष्टि से 'बीसलदेव रासो' का मूल्य प्रायः नगण्य है।" फिर भी उन्होंने इसकी प्राचीनता स्वीकार की—"हिंदी भाषा के आदि स्वरूप और उसकी अविकसित अवस्था का बहुत-कुछ आभास हमें इस

१. राजस्थानी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा, पृ० २९।

ग्रन्थ द्वारा मिलता है, और इसलिए नाल्ह का नाम हिंदी साहित्य में अमर होगा।"

किंतु जनवरी १९४० में श्री अगरचंद नाहटा ने 'बीसल देव रासो की हस्तलिखित प्रतियाँ' शीर्षक एक लेख में[१] उसकी प्राचीनता भी अस्वीकार कर दी। उन्होंने ग्रन्थ की ऐतिहासिक, भौगोलिक और भाषा-विषयक विशेषताओं पर विचार करते हुए लिखा कि यह सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी की रचना ज्ञात होती है, और उन्होंने यह सुझाव तक दिया कि सोलहवीं शताब्दी में नरपति नाम का एक जैन कवि हो गया है, असम्भव नहीं कि यह रचना भी उसी की हो।

स्वर्गीय श्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अपने एक लेख द्वारा नाहटा जी की शंकाओं का समाधान करने की चेष्टा की[२], और उनका उक्त लेख ऐतिहासिक समालोचना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, फिर भी नाहटा जी के विचारों में उससे कोई परिवर्तन नहीं हुआ, क्योंकि उसके बाद के लेखों में भी नाहटा जी ने अपने वे ही विचार प्रगट किए हैं।[३]

इस प्रकार के मतों से और कुछ भले ही हो, यह अवश्य ज्ञात होता है कि राजस्थान के विद्वानो में अपनी चीजों के लिए अनुचित मोह नहीं है, और यह संतोष का विषय है। फिर भी जहाँ अपने प्राचीन ग्रन्थों के संबंध में इस प्रकार की समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं, वहाँ उनका समाधान इतना सुगम नहीं होता है, कारण यह है कि अपने प्राचीन ग्रन्थों की पाठ-परम्पराएँ बहुत विकृत हो गई हैं; इसीलिए उनकी किसी भी एक प्रति अथवा सामान्य संस्करण के आधार पर उनकी कला अथवा प्राचीनता के संबंध में कोई आक्षेप करना प्रायः उनके प्रति अन्याय हो जाता है।

---

१ राजस्थानी, जनवरी १९४०, पृ० २२।

२. ना० प्र० प०, वर्ष ४५ (सं० १९९७) पृ० १६३।

३. ना० प्र० प०, वर्ष ४७ (सं० १९९९) पृ० २५५ तथा ना० प्र० प०, वर्ष ५४ (सं० २००६) पृ० ४१।

'बीसलदेव रास' के संबंध में, जैसा हम आगे देखेंगे, यह बात और भी अधिक लागू होती है, कारण यह है कि काल के व्यवधान से उसकी विभिन्न प्रतियाँ कम से कम उसके पाँच प्रकार के पाठ प्रस्तुत करती हैं, जिनमें कुल मिलाकर लगभग पौने पाँच सौ छंद आते हैं, जिनका केवल २७%-२८% प्रामाणिक माना जा सकता है, और इस २७%-२८% के संबंध में भी इन प्रतियों में इतना पाठभेद है कि अन्यत्र कम ही मिलेगा। फलतः केवल पाठालोचन के सिद्धान्तों के आधार पर—जैसा आगे किया गया है—पाठ-निर्धारण करके ही हम कृति का ठीक-ठीक मूल्यांकन कर सकेंगे।

२. प्रयुक्त प्रतियाँ

'बीसलदेव रास' की प्राप्त प्रतियाँ अपने पाठ-साम्य के आधार पर[१] पाँच समूहों में रक्खी जा सकती हैं : म० समूह, प० समूह, न० समूह, अ० समूह और स० समूह। इन्हीं समूहों के अनुसार उनका एक संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है। यह समस्त प्रतियाँ श्री अगरचंद जी नाहटा से प्राप्त हुई हैं।

म० समूह

इस समूह की केवल दो प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं।

(१) म०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ २०२ ॥ इति श्री वीसलदेव रास समाप्तं ॥ छ ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ कल्याणमस्तु ॥ ॥ श्री ॥

पुष्पिका में प्रतिलिपिकार-विषयक या अन्य कोई उल्लेख न होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए उपयुक्त आधार नहीं मिल सका। इसके ऊपर कागज बड़ौदा के श्री मजमूदार के पते का था, इसलिये उनके नाम के पहले अक्षर के अनुसार इसका संकेत 'म०' रख लिया गया है।

१. दे० आगे इसी भूमिका में 'प्रतियों के पाठ-संबंध-सूत्र' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न समूहों से संबधित विवेचन।

यह प्रति पूर्ण है, सुलिखित है और कागज तथा लेखन-शैली की दृष्टि से बहुत प्राचीन ज्ञात होती है।

(२) म०—जो केवल ३८ छंद तक लिखकर अधूरी छोड़ दी गई है। इसीलिए इसमें पुष्पिका भी नहीं है। यह पूर्णतः म० का पाठ देती है, और अधूरी है, इसलिये इसके लिये संकेत म० रख लिया गया है।

पं० समूह

इस समूह की सात प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं।

(३) पं०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ २४६ ॥ इति श्री वीसलदे रास समाप्तं ॥ १ ॥ संवत् १६३३ वर्षे वैशाख बदि ११ दिनें। आदित्यवारे। लिपतं आगरा मधे पं० सीहा लिपतं ॥ संपूर्ण ॥ छ ॥ १ ॥

तिथियुक्त प्रतियों में यही सब से प्राचीन है। प्रतिलिपिकार के नाम के प्रथम अक्षर के आधार पर ही इस प्रति के लिए 'पं०' संकेत रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है।

(४) आ०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ २४७ ॥ इति वीसलदेव रासः समाप्त : ॥

पुष्पिका में प्रतिलिपिकार आदि का कोई उल्लेख न होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए भी पर्याप्त आधार न मिल सका। यह प्रति आठ पत्रों में ही पूरी हुई है, केवल इसी आधार पर इसे 'आ०' कहा गया।

छंद ३२-६६ का पत्रा इसमें नहीं है, अन्यथा प्रति पूर्ण और सुलिखित है।

(५) चा०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ २४७ ॥ इति वीसलदेव रास ॥

पुष्पिका के अपर्याप्त होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए भी यथेष्ट आधार नहीं मिल सका। यह अत्यंत छोटे अक्षरों में लिखी होने के

कारण केवल चार पत्रों में समाप्त हो गई है। केवल इसी के आधार पर इसे 'चा०' कहा गया है।

यह प्रति भी सर्वथा पूर्ण है, और सुलिखित है।

(६) की०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ २४८ ॥ कइ भुवण न देषुं रे रवितलइ ॥ इति श्री वीसलदेव रास समाप्तं ॥ संवत १७३७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने लिषितं पंडित कीर्त्तिविलास गणिना ॥ साध्वी राजलक्ष्मी तत् शिष्यणी सुमतिलक्ष्मी तत् शिष्यणी प्रेमलक्ष्मी पठनार्थम् ॥

इस प्रति के लिपिकार का नाम 'की' से प्रारम्भ होता है, इसलिए इसका संकेत 'की०' रख दिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण है और सुलिखित है।

(७) पु०—जिसकी पुष्पिका है :—

॥ २४६ ॥ इति बीसलदेव रास समाप्तं ॥

इस प्रति की पुष्पिका भी स्पष्टतः अपर्याप्त थी। इसको देखने पर ज्ञात हुआ कि इसके कुछ पत्रे एक प्रति के थे और शेष पत्रे दूसरी प्रति के थे—दोनो प्रतियाँ खंडित थीं—और उन्हें मिला कर पुस्तक पूरी कर दी गई थी, यही कारण है कि १६वीं संख्या के इसमें दो पत्रे हैं। इसी **पुनरुद्धार** के आधार पर इस प्रति का संकेत 'पु०' रक्खा गया है।

(८) ग्या०—जिसकी पुष्पिका का पत्रा नहीं है।

इस प्रति के केवल ग्यारह पत्रे शेष हैं, इन्हीं के आधार पर इसका संकेत 'ग्या०' रख दिया गया है।

यह प्रति भी अन्तिम पत्र के अतिरिक्त पूर्ण है, और सुलिखित है।

(६) र०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ २४८ ॥ कै भ० ॥ इति श्री सिङ्गार वर्णन बीसलदे रास समाप्तं ॥

संवत् १७५१ वर्षे चैत्र वदि ४ शुक्रवारे ।। टिणी मध्ये वा० श्री० ५ श्री कनक मणिक्य गणि जी तत् शिष्य पं० रत्नशेषरेण लिपी चक्रे ।। वेगवाणी साह श्री अभैराज जी वाचनार्थ ।। श्री रस्तुः ।। कल्याणमस्तुः ।।

लिपिकार के नाम के प्रथम अक्षर के आधार पर इस प्रति का संकेत र० रक्खा गया है ।

छन्द १३३-१६६ का अंश खंडित है, अन्यथा प्रति पूर्ण और सुलिखित है ।

(१०) ना०—जिसकी पुष्पिका पत्रा नष्ट हो गया था, और किसी प्रति से प्रतिलिपि करके श्री अगर चन्द नाहटा ने जिसका पाठ स्वयं पूरा किया है । इसलिए अन्य आधार के अभाव में प्रति के उद्धारकर्त्ता के नाम से 'ना०' लेकर उसे इसका संकेत निर्धारित कर दिया गया है ।

इस अन्तिम पत्रे के अतिरिक्त यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है ।

न० समूह

(११) इस समूह की केवल एक प्रति मिली है, जो श्री नरोत्तमदास स्वामी द्वारा कराई हुई किसी प्राचीन प्रति की प्रतिलिपि है ।

इसकी पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है :—

।। [२] ७८ ।। इति श्री बीसलदे चहुआण रास समाप्तः ।।

अन्य उपयुक्त आधार के अभाव में श्री नरोत्तमदास स्वामी की प्रति होने के कारण इसका संकेत 'न०' रख दिया गया है ।

यह प्रति पूर्ण है, किन्तु यह ऐसे व्यक्ति की की हुई प्रतिलिपि है जिसे प्राचीन राजस्थानी लिपि का यथेष्ट ज्ञान नहीं था, इस कारण अनेक वर्णों और मात्राओं को पढ़ने में भूल हुई है । कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं :—

उ 7 तु : उमा हियउ 7 उमाहियतु (न. १४६. ७)

उ 7 नु : तूतउ 7 तूतनु (न. ५०. ४)

ऊ 7 कु : ऊजलइ 7 कुजलइ (न. २२०. ३)

च 7 व : चालीयउ 7 वालीयउ (न. १८. १), (न. ४१. १)

चउवारा 7 वउवारा (न. १६३.३); चंद 7 वंद (न. १६४.५); च्यारि 7 व्यारि (व. २६२.४); नागर चाल 7 नागर वाल (न. ३२.६); चीरी 7 वीरी (न. १९१.१); चोर 7 वोर (न. १९५.६); चालीय 7 वालीय (न. ६६.६); चांविल> वांविल (न. १२१.३)

छ 7 ब : छउ 7 बउ (न. ९.२); अछइं 7 अबइं (न. १४०.१)

ज 7 ड : भूलउ जी 7 भूलउ डी (न. ३.६), (न. ४.४)

ज 7 त : जूठा 7 तूटा (न. ५९.१); पूजियइ 7 पूतियइ (न. १९५.१)

झ 7 क : झरइ 7 करइ (न. १८८.४)

ट 7 द : ऊलट्यउ 7 ऊलद्यउ (न. १५६. ३)

ठ 7 व : द्रेठि 7 द्रेवि (न. ११२.१०)

ड 7 क : न्हानडा 7 न्हानका (न. १६३.४)

ड 7 ज : आहेडी 7 आदेजी (न. ४९.१)

ड 7 भ : उडीसइ 7 उभीसइ (न. ६२.५)

ड 7 म : कडुयइ 7 कमुयइ (न. ३.१); कूल्हडइ 7 कूल्हमइ (न. ६१.२); गाड्या 7 गाम्या (न. ८१.५)

त 7 न : तपइ 7 नपइ (न. १६४.१); तूं 7 नूं (न. ११८.६)

थ 7 घ : चउथि 7 चउघि (न. ३.५); गरथ 7 गरघ (न. ११.२); थे 7 घे (न. ३०.१), (न. ३८.३); अरथ गरथ 7 अरघ गरघ (न. ८१.५); थारा 7 घारा (न. ११७.४); थारी 7 घारी (न. ११७.५); थारडी 7 घारडी (न. १६६.७)

द 7 व : दारण 7 वारण (न. ८५.५); दीनिय 7 वीनिय (न. २७३.२)

द 7 ह : दीपाइ 7 हीपाइ (न. १९. १)

न 7 त : चूनडी 7 चूतडी (न. ३६.२); नरस 7 तरस (न. ४९.१); नउ 7 तउ (न. ५२.१); मनि 7 मति (न. ६२.४);

कठन 7 कठत (न. १०५.७); नीसरइ 7 तीसरइ (न. ११८. ३); नीगम्या 7 तीगम्या (न. १७०.३); जनोईय 7 जतोईय (न. १६१.१); तूनइ 7 तूतइ (न. २०३.२); न पीवइ 7 त पीवइ (न. १२६.२); सोनो 7 सोतो (न. १२५.५); पंड्या नइ 7 पंड्या तइ (न. १६४.५); निरममा 7 तिरममा (न. २७२.३); न 7 त (न. २७३.४); नाह 7 ताह (न. ३१.३); मोहनी 7 मोहती (न. ७.४)

प 7 य : पागार 7 यागार (न. १५७.६)

फ 7 भ : फेरइ 7 भेरइ (न. ८६.८)

भ 7 त : सभाउ 7 सताउ (न. २३६.२); भली 7 तली (न. ३०.१)

र 7 न : चीरी 7 चीनी (न. १४७.६)

ल 7 ज : लोवडी 7 जोवडी (न. ५४.२); सहेलिय 7 सहेजिय (न. १२७.१)

ल 7 स : वाल 7 वास (न. ४४.१)

श्र 7 ग्र : श्रावण 7 ग्रावण (न. १५५.६)

स 7 म : सिरि 7 मिरि (न. १४८.४)

स 7 म : सेरी 7 मेरी (न. १८६.३)

ह 7 द : आहेडी 7 आदेजी (न. ४६.४); हे 7 दे (न. ५०.४); हेडाऊ 7 देडाऊ (न. ८८.७), (न. १२६.४), (न. १२६.५)

ा 7 ी : रसाइण 7 रसीइण (न. ५.१), (न. ७१.५); दाधा 7 दाधी (न. १४६.२); सापडइ 7 सीपडइ (न. ६२.३)

ी 7 ा : सीलवंती 7 सीलवंता (न. १६८.३); भतीजी 7 भतीजा (न. १३४.४); सीह 7 साह (न. २७.६); विरासी 7 विरासा (न. ४७.१); सोरठी 7 सोरठा (न. ११४.३); बांदी 7 बांदा (न. ११२.७); कोइली 7 कोइला (न. १६१.६); सीस 7 सास (न. २५४.२)

फलतः इस प्रति का उचित उपयोग पाठ-प्रमाद की उपर्युक्त प्रकार की संभावनाओं को यथेष्ट रूप से ध्यान में रखते हुए ही किया जा सकता था, और ऐसा ही किया भी गया है। इस संस्करण में न० का पाठ वही माना गया है जो पाठ-विकृति की इस स्थिति से पूर्व का रहा होगा—और इसलिए एक प्रकार से हम बहुत-कुछ न० के उस आदर्श का उपयोग करने में सफल हुए हैं जिसकी यह प्रतिलिपि है।

अ० समूह

इस समूह की तीन प्रतियाँ प्राप्त हैं।

(१२) अ०—जो श्री अगरचंद नाहटा द्वारा अंशतः स्वतः की हुई और अंशतः किसी अन्य से कराई हुई किसी प्राचीन प्रति की प्रतिलिपि है। इसके अंत में कोई पुष्पिका नहीं है; इसलिए श्री अगर चंद नाहटा के नाम के पहले अक्षर को लेकर इसका संकेत 'अ०' रख लिया गया है।

यद्यपि यह भी आधुनिक प्रतिलिपि है, किन्तु इसमें उस प्रकार की भूलें नहीं हैं जैसी ऊपर श्री नरोत्तम दास स्वामी की प्रतिलिपि में पाई जाती हैं। नाहटा जी पहले स्वतः इस ग्रन्थ का संपादन करना चाहते थे। इसलिए इस पाठ को मूल में रखते हुए प्रति में ही उन्होंने कुछ अन्य प्रतियों से पाठांतर लिखना प्रारम्भ किया था, किन्तु पीछे उसे छोड़ दिया।

यह प्रति भी पूर्ण है, और सुलिखित है।

(१३) मो०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥३०६॥ इति श्री वीसल देव चहुआण रास संपूर्ण ॥ संवत् १७६३ वर्षे जेष्ठ सुदि १५ चांद्रवारे श्री जेसलमेर दुर्गे पं० मोटा लिषतं ॥

प्रतिलिपिकार के नाम के प्रथम अक्षर के आधार पर ही इस प्रति का संकेत 'मो०' रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है।

(१४) ब०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥३१०॥ इति श्री वीसल देव चहूआण रास संपूर्णः ॥ ग्रंथाग्रंथ ६००॥

इस प्रति पर बद्रीदास म्यूजियम का कागज लगा हुआ था। इसलिए अन्य आधार के अभाव में उसी के नाम के पहले अक्षर के अनुसार इस प्रति का संकेत 'ब०' रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण और सुलिखित है।

स० समूह

अन्य समूहों से भिन्न इस समूह का पाठ चार सर्गों या खंडों में विभक्त मिलता है। इस समूह की केवल दो प्रतियाँ मिली हैं।

(१५) स०—जो रचना का नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित और श्री सत्यजीवन वर्मा द्वारा संपादित संस्करण है। संपादक के नाम के पहले अक्षर के अनुसार ही इस प्रति का संकेत 'स०' रख लिया गया है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह प्रति पूर्ण है। इसकी भूमिका में कहा गया है कि इसका पाठ सं० १६६९ की एक प्रति[1] की प्रतिलिपि तथा सं० १६५९ की एक प्रति के आधार पर निर्धारित किया गया है। संपादित पाठ कहाँ तक किस प्रति के आधार पर पाठ निर्धारित हुआ है, इस बात का उल्लेख संपादक ने कहीं भी नहीं किया है। इतना ही ज्ञात होता है कि प्रयुक्त दोनों प्रतियाँ स० समूह की ही थीं—अन्यथा कदाचित् इस बात का उल्लेख संपादक करता कि कौन-से छंद किस प्रति में कम या अधिक थे।

केवल एक समूह की प्रतियों का आधार होने पर उसकी त्रुटियों का परिहार कठिन ही नहीं प्रायः असंभव हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में संपादक ने त्रुटियाँ स्वतः ठीक करने का यत्न किया है। भूमिका में उसने लिखा है—"उसमें यत्र-तत्र जहाँ-कहीं मुझे कुछ शब्द छुटे हुए जान पड़े हैं, वहाँ मैंने उन्हें कोष्टक में दे दिया है। ग्रंथ के छंद-क्रम में मुझे अनेक स्थलों पर प्रसंग के अनुसार व्यतिक्रम करना पड़ा है, पर उसे ठीक करने में मुझे संकोच करना

१. ना. प्र. सभा द्वारा प्रकाशित १९०० के खोज-विवरण सू० ९० में विद्याप्रचारिणी सभा, जयपुर की सं. १६६९ की प्रति का उल्लेख हुआ है, यह कदाचित् वही है।

पड़ा है कि कहीं ऐसा करते समय ग्रंथ का वास्तविक क्रम नष्ट न हो जाय। फिर भी एक-आध स्थलों पर मुझे विवश होकर पदों के एकाध चरणों को इधर-उधर करने पर विवश ही होना पड़ा है।"

यदि वर्माजी ने दोनों प्रतियों के पाठांतर भी स्वीकृत पाठ की तुलना में टिप्पणियों में दे दिए होते, तो यह संस्करण पाठ-निर्धारण में विशेष उपयोगी होता, और प्रयुक्त प्रतियों के अभाव में इस संस्करण का उपयोग करना यथेष्ट होता। फिर भी इस संस्करण का स्वीकृत पाठ एक विशेष समूह का ही है, जिसकी एक अन्य प्रति का उल्लेख नीचे किया जायगा, और दो या अधिक शाखाओं के पाठों का मिश्रण उसमें नहीं हुआ है, यह बात स्वतः प्रकट हो जाती है, इसलिए पाठ-निर्धारण में इस प्रति का भी उपयोग यथेष्ट रूप से किया जा सका है।

किंतु इस प्रति में भी उसी प्रकार का पाठ-प्रमाद है जिस प्रकार का हमने श्री नरोत्तमदास स्वामी की प्रति के संबंध में देखा है—यद्यपि कम है। कुछ इने-गिने उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं: इस समूह की उक्त अन्य और किंचित् उत्कृष्टतर प्रति प्राप्त हो जाने के कारण इस संस्करण के पाठ-प्रमाद के संबंध में विस्तार से जानने की उतनी आवश्यकता नहीं रह गई है जितनी न० के सम्बन्ध में हुई है, क्योंकि न० अपने समूह की एकमात्र प्राप्त प्रतिनिधि है:—

च 7 व : चीरी 7 वीरी (स. ३. ६. ६)
छ 7 दु : छइ 7 दुइ (स. १. ५८. १)
छ 7 व : छइ 7 वइ (स. २. ४६. ५)
ठ 7 ढ : गोठ 7 गोढ (स. ३. ६०. ६)
ड 7 उ : लाड 7 लाउ (स. १. ६५. १)
ढ 7 ट : ढोलिसु 7 ठोलिसं (स. २. ३०. २)
द 7 व : चादर 7 चावर (स. ३. ६१. ३)
न 7 ठ : निवार 7 ठिवार (स. १. ६५. १)

प 7 ध : प्रवाली 7 धवाला (स. २. १२. ६.)

भ 7 म : भूती 7 मूती (स. २. ८०. ३)

ी 7 ा : वइठी 7 वइठा (स. १. ५८. १); प्रवाली 7 धवाला (स. २. १२.६); कपिली 7 कपिला (स. २. २५.६); जाणीयउ 7 जाणायउ (स. ५. ५२. १)

(१६) प्र०—जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है :—

॥ ४१ ॥ इति श्री राजा बीसलदे रास चतुर्थ खंड संपूर्ण ॥ ४ ॥ संवत् १७२४ वर्षे मगसिर वदि १५ ॥

पुष्पिका में प्रतिलिपिकार आदि के विषय का कोई उल्लेख न होने के कारण इस प्रति के नामकरण के लिए भी पर्याप्त आधार न मिल सका। हिंदी पाठक श्री सत्यजीवन वर्मा द्वारा संपादित पाठ से ही परिचित हैं, इसलिए उसे 'प्रचलित' पाठ कहा जा सकता है। किन्तु वह मुद्रित रूपांतर है, और कुछ न कुछ संपादक का भी उसके पाठ-निर्धारण में हाथ रहा है, इसीलिए उस समूह की इस प्रति को 'प्रचलित पाठ' मान कर इसके लिए 'प्र०' संकेत रख लिया गया है।

यह प्रति भी पूर्ण है और सुलिखित है।

हर्ष की बात है कि प्रस्तुत संस्करण के लिए पाँच विभिन्न समूहों—या शाखाओं—की पर्याप्त प्रतियाँ प्राप्त हो गईं। असंभव नहीं कि और भी एकाध समूह—या शाखा—की प्रतियाँ आगे-पीछे प्राप्त हों; किन्तु पाठ-निर्धारण के लिए येही बहुत-कुछ पर्याप्त सिद्ध हुई हैं।

३. प्रतियों का पाठ-सङ्गठन

संख्याओं का व्यतिक्रम निकाल देने पर विभिन्न प्रतियों में छंदों की स्थिति निम्नलिखित है :—

समूह	म०	पं०	र०	ना०	न०	अ०	प्र०	स०
समस्त समूहों के	११८	११८	११७	११८	११५	११८	११३	११४

	म०	पं०	र०	ना०	न०	अ०	प्र०	स०
पं०स०न०अ०[1]		६	१०	१०	१०	१०	१०	१०
म०पं०न०अ०	४३	४३	४२	४३	४३	४३		
म०न०अ०स०	२१				२१	२१	२१	२१
म० अ० स०	६					६	६	६
म० स०	३						३	३
म० न० अ०	५				५	५		
म० अ०	१					१		
पं० न० अ०		७४	७२	७४	७४	७४		
पं० अ०		३	३	३		३		
पं० न०[1]			१	१	१			
न० अ०					४	४		
प्र० स०							१४१	१४१
निजी			३	६	१	६		१६
योग	१६७	२४७	२४८	२५८	२७४	२६४	२६४	३१४

आगे हम देखेंगे कि म० पं० न० अ०, म० न० अ० स०, म० अ० स०, म० स०, म० न० अ०, म० अ०, पं० न० अ०, पं० अ०, पं० न०, न० अ० तथा प्र० स० में से प्रत्येक समुच्चय में पाठ की सामान्य विकृतियाँ पाई जाती हैं, केवल पं० स० न० अ० में कोई भी समान विकृतियाँ नहीं मिलती हैं, इसलिए यह प्रकट है कि पं० स० न० अ० के अतिरिक्त शेष समुच्चय पाठ-विकृति के हैं।

म० के छन्द १२४ तथा छन्द १२७ एक ही हैं, इसलिए प्रति में लिखित छन्द-संख्या में एक की वृद्धि हो गई है, और उसमें एक छन्द-संख्या की वृद्धि इस लिए हुई है कि म० ५५ की छन्द-संख्या छूट गई है। मू० ऊपर बताया जा चुका है कि अधूरी है, किन्तु जहाँ तक जाती है, म० के समान ही है।

१. इनमें से तीन छन्द ऐसे हैं जिनकी एकाध पंक्तियाँ म० में मिलती हैं। ये तीन छन्द हैं स्वीकृत २६, ४५, तथा ८६।

आ०, चा०, की० और ग्या० में पं० स० न० अ० के दसो छन्द हैं, अन्यथा वे पं० के समान ही हैं। पु० के सम्बन्ध में ऊपर बताया जा चुका है कि वह दो भिन्न-भिन्न खंडित प्रतियों को मिलाकर बनाई गई है जो इसी समूह की थीं।

ब० और मो० भी अ० के समान ही हैं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त किसी-किसी प्रति में एकाध छन्द-संख्या का अन्तर क्रम-संख्याएँ देने में भूल से हो गया है। एकाध प्रतियों में एक दो छन्दों की पुनरावृति से संख्या-वृद्धि हो गई है।

इस प्रकार ऊपर जो छन्द-संख्याएँ हमें विभिन्न प्रतियों की पुष्पिकाओं में मिली हैं, उनकी तुलना में पं० तथा स० समूह की प्रतियों की वास्तविक छन्द-संख्या में अन्तर नगण्य है, म० और न० समूहों में भी वह साधारण है। अ० समूह में अपेक्षाकृत अधिक अन्तर का कारण यह है कि उसमें कुछ छन्द दो-दो छन्दांशों में विभक्त होकर पुनः नवीन पंक्तियों के योग से दो-दो स्वतन्त्र छन्दों में परिवर्तित हो गए हैं, और अन्य समूहों की तुलना में इसमें छन्दों की पुनरावृत्ति भी कुछ अधिक हुई है।

४. प्रतियों के पाठ-सम्बन्ध-सूत्र

ऊपर हमने प्रतियों के पाठ-सङ्गठन का लेखा लेते हुए देखा है कि जो छन्द समस्त समूहों में समान रूप से नहीं मिलते हैं वे विभिन्न समूहों समुच्चयों में मिलते हैं। इनमें से पं० स० न० अ० को छोड़ कर शेष सभी पाठ के विकृति-समुच्चय भी हैं, यह एक बड़े महत्त्व की बात है।

१. म० पं० न० अ०

(१) स्वीकृत ११६.५ का पाठ इनमें हैं :

कह्यउ हमारउ जइ सुणउ।

---

१. यह छन्द (परिशिष्ट का १५७) पं० की केवल १० तथा ना० प्रतियों और न० में पाया जाता है।

किन्तु यह स्वीकृत ११०.५ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार है।

(२) म० ६५.६ = पं० ७८.६ = न० ८५.६ = अ० ८६.६ है :

म्हानं उलग जाण की षरीय जगीस।

किन्तु यह स्वीकृत ६०.१ है, और इसमें भी वहाँ इस प्रकार है।

(३) म० १५.१ = पं० १७.१ = न० १६.१ = अ० २०.१ है :

पाइ कंकण सिरि तिलक दिपाइ।

किन्तु 'पाइ कंकण सिरि' स्वीकृत १५.१ में आता है :

पाइ कंकण सिरि बांधियउ मउड़।

और इनमें भी वहाँ इस प्रकार हैं।

(४) म० १७२.२, .३ = पं० २०४. २,.३ = न० २३८. २,.३ = अ० २६५. २,. ३ हैं :

नै लापा दीन्ही राजा कुलह कबाइ।

दीधउ सोनउ सोलहउ।

किन्तु सामान्य पाठान्तर के साथ यह पंक्तियाँ स्वीकृत ११.२,.३ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार हैं।

(५) म० १७२.६ = पं० २०४.६ = न० २३८.६ = अ० २६५.६ है :

सिद्धि करउ बीसल चहुआण।

किन्तु यह पंक्ति अन्तिम शब्द के पाठान्तर के साथ म० १७३.६ = पं० २०३.६ = न० २३७.६ = अ० २६४.६ भी है।

(६) म० १७८.२ = पं० २०६.२ = न० २४३.२ = अ० २७०.२ है :

भगवा कापड़ मइला बेसि।

किंतु यह पुनः यथा म० १८४. २ = पं० २२०.२ = न० २५५. २ = अ० २८४. २ भी आई है।

(७) म० १७२.१ = पं० २०४.१ = न० २३८.१ = अ० २६५.१ है :

राजा सु मिलियउ पूरब्यउ राउ।

किंतु म० १७४.१ = पं० २०५.१ = न० २३९.१ = अ० २६६.१ भी यही है, केवल कुछ पाठभेद है।

(८) म० १४०.५ = पं० १५२.५ = न० १८४.५ = अ० १९७.९ है :

रतन जडित पग मोजडी।

किंतु म० १७८.५ = पं० २०९.५ = न० २४३.५ = अ० २७०.५ भी यही है।

(९) म० १७४.४ = पं० २०५.४ = न० २३९.४ = अ० २६६.४ है :

सगारे सणीजा की जातीया पूठि।

किंतु यह शब्दावली स्वीकृत १०९.४,.५ में इस प्रकार है :

म्हाका सागरे सुणीजा संक्या आज।

पूठि उघाड़ी म्हाकी हिव हुई।

और इनमें भी थोड़े से पाठभेद के साथ वहाँ इस प्रकार है।

(१०) म० १९०.२ = पं० २२७.२ = न० २६१.२ = अ० २९०.२ है :

तिन्हि म्हानइ दीधी थी जीमणी बांह।

किंतु यह स्वीकृत ८६.२ है, और इनमें भी इसी वहाँ इस प्रकार है।

(११) स्वीकृत ६३.५ का पाठ इनमें है :

बादल छायउ चंद जिउं।

किंतु यह स्वीकृत ७९.५ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार है।

(१२) स्वीकृत ६९.५ का पाठ इनमें है :

छाहड़ी गिणइ न तावड़उ।

किंतु यह स्वीकृत ८९.५ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार है।

२. म० न० अ० स०

(१) म० २०.४ = न० २६.४ = अ० २७.४ = स० १.४७.४ है :

काथा सोपारी पाका जी पान

किंतु यह स्वीकृत १८.४ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार है।

(२) म० ८८.३ = न० ९८.३ = अ० १०२.३ = स० २.५१.३ है :

बेटी राजा भोज की।

किंतु यह स्वीकृत ८.५ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार है ।

(३) म० ८६. २=न० ६६.२=अ० १०३.२=स० २.५२.२ है :

सिसहर भाण गिल्या जाणे राह ।

किंतु यह स्वीकृत ८०.२ है, और इनमें भी वहाँ इस प्रकार है ।

(४) म० १४१=न० १८६=अ० १६८=स० ३.३६ की. १,. २ हैं :

बरस बावीस मउ बालक बेस ।
दंत कबाड्या किरुलसा केस ।

किंतु यह शब्दावली स्वीकृत ८३. १,. २ में इस प्रकार आती है :

असीय बरस की बूढइ वेस ।
दंत कबाड्या सिरि पांडुरा केस ।

और इनमें भी वहाँ इसी प्रकार है । इसलिए ऐसा ज्ञात होता है कि म० न० अ० स० में उक्त अन्य स्थान पर आई हुई ऊपर की पंक्तियाँ इन पंक्तियों की शब्दावली को लेकर गढ़ी गई हैं ।

३. म० अ० स०

(१) म० १५६.१=अ० २५०.१=स० ३.५६.१ है :

पंडीया गोरडी किण परि डीठ ।

किन्तु यह स्वीकृत १०५.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(२) म० १६३.४=अ० २५५.४=स० ३.६०.४ है :

बचन अम्हारउ जाणि म जाणि ।

किन्तु स्वीकृत २६.४ भी प्रायः यही है :

बचन दुइ म्हांका माणि म माणि ।

(३) म० १६३.५=अ० २५५.५=स० ३.६०.५ है :

ऊमडउ जोसीय बीनवइ ।

किन्तु प्रायः यही इसी छन्द की. २ भी है :

बीनवइ जोसीव ऊभडउ आइ ।

४. म० स०

(१) म० १५५.४=स० ३.५०.६ है :

देस उडीसा कउ परधान ।

किन्तु यह अन्य समस्त प्रतियों में यथा स्वीकृत १०६.२ है, और प्रसंग की दृष्टि से वहीं सार्थक लगती है ।

(२) स्वीकृत १८. ३ का पाठ म० स० में है :

मोतीयाँ का रे आषा पड़इ ।

किन्तु यह स्वीकृत १७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(३) स्वीकृत ८३.७ का पाठ इनमें हैं :

कह्यउ हमारउ जे सुणइ ।

किन्तु यह स्वीकृत ५७.३ है और इनमें भी इस प्रकार है ।

(४) स्वीकृत १२०.२ का पाठ इनमें है :

बाजित्र बाजिया नीसाणे घाउ ।

किन्तु यह स्वीकृत २५.२ है; और इनमें भी इस प्रकार है ।

(५) स्वीकृत १२०.१ का पाठ इनमें है :

हिव बारमइ बरस घरि आवीयउ राउ ।

किन्तु यह थोड़े से शब्दांतरों के साथ स्वीकृत १२३.१ है, केवल इस प्रति में उसका पाठ भिन्न है ।

५. म० न० अ०

(१) म० २०=न० २६=अ० २७ की. ४ है :

काथा सोपारी पाका जी पान ।

किन्तु यह स्वीकृत १८.४ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(२) म० ४३/१=न० ५४/१=अ० ५६/१ में पाँच चरण हैं, म० ४३/२=न० ५४/२=अ० ५६/२ में छः चरण हैं—और दोनों मिला कर

कुल ग्यारह चरण हैं। इस ग्रन्थ में कोई भी छंद विषम संख्याओं के चरणों का नहीं है। छंद के उत्तरार्द्ध के छः चरण छन्द-योजना की सामान्य प्रवृत्तियों के अनुसार पूर्णतः एक कडवक निर्मित करते, और छंद के पूर्वार्द्ध के पाँच चरणों से भी, यदि एक चरण उनके अंत में और होता, एक पूर्ण कडवक निर्मित होता। म० में तो यह भूल प्रकट है, क्योंकि उक्त अंतिम पंक्ति के साथ छंद की क्रम-संख्या ४२ भी उसमें छूट गई है, और दोनों छंद मिल कर एक हो गए हैं। न० और अ० में उक्त पंक्ति तो छूटी ही रही, किन्तु छंद-संख्या ठीक कर ली गई है।

(३) म० ४३/२ = न० ५४/२ = अ० ५६/२ की.३ है :

रूप अधिकी छइ मेदिनी।

किन्तु यह स्वीकृत ३४. ३ है और इनमें भी इस प्रकार है।

६. म० अ०

(१) म० ८१.८ = अ० ६२.७ है :

कहूयउ म्हारउ जे करइ।

किन्तु यह स्वीकृत ११०.५ है, इनमें भी इस प्रकार है।

(२) म० ८१.५ = अ० ६२.५ है :

कोडि टका कउ नवसर हार।

किन्तु यह अन्यत्र म० १६६.६ = अ० २६१.४ भी है।

(३) म० १०६.६ = अ० १२६.६ है :

देस उडीसा कउ परधान।

किन्तु यह स्वीकृत १०९.२ है—केवल म० का पाठ वहाँ भिन्न है।

(४) म० १६३.३ = अ० २५५.३ है :

उलगाणा नय बेग चलाविज्यो।

किन्तु थोड़े पाठांतर के साथ यह स्वीकृत १०६.३ है और इनमें भी वहाँ इसी प्रकार है।

७. पं० न० अ०

(१) स्वीकृत ५८. २ का पाठ इनमें है :

कडिहि पटोली चूनड़ी भाति (सार—न०)।

किंतु यह स्वीकृत ५६. ३ है, जिसका पाठ है :

पहिर पटोली हे चूनड़ी ।

(२) स्वीकृत १०.५ के स्थान पर इनमें है :

दोबड़ बाजइ छइ दुडबडी ।

किंतु यह स्वीकृत २५.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(३) स्वीकृत २५.१ का पाठ इनमें है :

परणि अरणि घर चालियउ राउ ।

किंतु यह स्वीकृत २७.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(४) स्वीकृत ३५.५ का पाठ बनमें है :

कह्यउ म्हारो जे सुणउ ।

किंतु यह स्वीकृत ५७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(५) स्वीकृत ८१.८ का पाठ इनमें है :

तइं तउ कांइ सिरजी उलगाणा की नारि ।

किंतु यह स्वीकृत ३.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(६) स्वीकृत १०१.५ का पाठ इनमें है :

महिमा अधिकी छइ देव की ।

किंतु यह स्वीकृत १००.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(७) स्वीकृत १०२.४ का पाठ इनमें है :

घरि घरि तोरण मंगलच्यारि ।

किंतु यह स्वीकृत १२०.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(८) म० २२.५ का पाठ इनमें है :

लूण उतारइ अपछरा ।

किंतु यह स्वीकृत १२.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(९) म० १७५.१ का पाठ इनमें है :

[पं० न०—उडीसा की] तलहटी उतरयउ बीसल राउ।

किंतु म० २१.१ है :

तलहटी उतरयउ बीसल राउ।

और यह इनमें भी इस प्रकार है।

(१०) पं० ६.५ का पाठ इनमें है :

सुरगहि मोहइ छइ देवता।

किंतु यह स्वीकृत ७.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(११) पं० १०७.३ का पाठ इनमें है :

आधीय चादरि बइसणा।

किंतु यह स्वीकृत १०९.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१२) पं० १०७.६ का पाठ इनमें है :

कहइ उडीसा का परधान।

किंतु यह स्वीकृत १०९.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१३) पं० १०८.६ का पाठ इनमें है :

उतउ मोटउ षत्रीय कुलह सिणगार।

किंतु प्रायः यही शब्दावली म० २१.७ की है, जो इनमें भी इस प्रकार है।

(१४) पं० ११८.६ का पाठ इनमें है :

मनि हरष्यउ बीसल चहुआण।

किंतु यह पं० १०६.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१५) पं० १३२.३ का पाठ इनमें है :

सूकि पाकि पंजर हुई।

किंतु प्रायः यही शब्दावली म० १२२.८ की भी है, जो इनमें भी इस प्रकार है।

(१६) पं० १४६.४ का पाठ इनमें है :

एक रिसउ स्वामी घरि संभालि।

किंतु प्रायः यही शब्दावली स्वीकृत ६३.४ की भी है, इनमें भी इस प्रकार है।

(१७) पं० १५७.२ का पाठ इनमें है :

तुम्हें उतरि तावउ समुंद कइ तीरि।

किंतु प्रायः यही शब्दावली पं० १४६.२ की भी है, जो इनमें भी इस प्रकार है।

(१८) पं० १८३.२ का पाठ है :

भाणमती राणी ली छइ बोलाइ।

किंतु यह स्वीकृत २०.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१९) पं० ८७=न० १११=अ० ११७ है :

उलग जातां किम रहा नारि।
बोलिया बोल नइ चितह बिचारि।
बोल्यउ पाल्या म्हे तउ आपणउ।
बइसि उगाहिस्या हीरा की षाणि।
मुहि बिलषाणइ जिन रहइ।
म्हे तउ वइगा आविया देषे हे नारि॥

किंतु ठीक यही छंद पं० ६१=न० ६७=अ० ७१ भी है।

(२०) पं० ३५.१,. २ का पाठ है :

हुई पहिरावणी हरषियउ राव।
दीन्हा तेजीय कुलह कबाइ।

किंतु यह क्रमशः स्वीकृत २५.१ तथा ११.२ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(२१) पं० अ० में स्वीकृत १०.२ तथा १०.३ के बीच में और न० में स्वीकृत १०.२ के स्थान पर है :

बाजा रे बाजइ नीसाणे धाउ ।

किंतु यह स्वीकृत २५.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

८. पं० न०

(१) स्वीकृत ६.४,.५,.६ का पाठ इनमें है :

मइमत हस्ती सहस अठार।
लाष तुरीय घरि पाषरया ।
बर रे आणउ बीसल दे चहूआण ।

किन्तु छन्द का जैसा संगठन ग्रंथ भर में मिलता है, उसके अनुसार .४ और .६ का तुक मिलना चाहिए ।

(२) स्वीकृत ४६.३ इनमें नहीं है, जिसके कारण इनमें कडवक केवल पाँच चरणों का रह गया है । किन्तु ग्रन्थ भर में छः चरणों से कम का कोई कडवक नहीं है ।

(३) स्वीकृत ७७ इस प्रकार है :

भाद्रवइ बरसइ गुहिर गंभीर ।
जल थल महियल सहु भर्‌या नीर ।
जांणि कि सायर ऊलट्यउ ।
निस अंधारीय बीज षिवाइ ।
बादल धरती स्यउं मिल्या ।
मूरष राउ न देषइ जी आइ ।
हूँ ती गोसामी नइ एकली ।
दुइ दुष नाह किउं सहणा जाइ ॥

इन प्रतियों में उपर्युक्त .६,.७ नहीं हैं । किन्तु .८ के 'दुइ दुष' से स्पष्ट है कि 'हूँ ती गोसामी, नइ एकली' प्रसंग में अनिवार्य है । इसलिए .६,.७ इन प्रतियों में भूल से छुटे हुए ज्ञात होते हैं ।

(४) स्वीकृत १०४.५,.६ का पाठ इनमें है :

जइ तुम्हे राव जी नावीया।
तउ धण हीयडउ फाटि मरेसि।

किन्तु यह स्वीकृत १०५. ५,. ६ है, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(५) स्वीकृत ६५.४ का पाठ इनमें है :

सात सषी मिलि बैठी छइ आइ।

किन्तु यह स्वीकृत ६४.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

९. पं० अ०

(१) पं० ९२.८=अ० १२३.८ है :

तुरीय डंकावइ संभरि राय।

किन्तु यह स्वीकृत ६६.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

१०. न० अ०

(१) न० १०५.१,.२=अ० ११०.१,.२ है :

जांहि के घर हरिणाषी हुवै नारि।
सो क्यउं ओलगै और का बारि।
(न०—ताह कउ नाह क्यउं उलग जाइ।)

किन्तु यह पंक्तियाँ अन्यत्र म० १२१.१,.२=न० १६९.१,.२=अ० १७१.१,.२ भी हैं और पाठ वहाँ प्रायः अ० का है।

(२) स्वीकृत ७९.६ का पाठ इनमें है :

उवा गात्र उघाड़ा हो बिकल सरीर।

किन्तु यह स्वीकृत ६३.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(३) निम्नलिखित पंक्तियाँ न० अ० में दो बार आती हैं : एक बार न० ५४/२=अ० ५६/२–५७ में, और पुनः न० ९१=अ० ९५ में :

सगुण गुणवंतीय नइण बिसाल।

देषतां मानव चित हरइ ।
मृगनइणी अर अबला जी बाल ।

(४) न० १२०.३ = अ० १२८. ३ है :

सोरठी झलकै काप में ।

किन्तु यह पंक्ति अन्यत्र यथा न० १८४.३ = अ० १६७.७ है ।

उपर्युक्त के अतिरिक्त कुछ पाट-विकृतियों से विभिन्न प्रतियों में पाठ-मिश्रण के भी प्रमाण मिलते हैं । इस पाठ-मिश्रण पर नीचे विचार किया जा रहा है ।

११. म० न० अ० ∠ म० + स०

(१) स्वीकृत १२५ है :

टसकला मुसकला मोनइ न सुहाइ ।
धण कइ हियडलइ हाथ म लाइ ।
लाजै नहीं प्रीय निरमभा ।
म्हाकउ वास्यउ तूं किउं ऊलगइं जाइ ।
बालउ रे बैस न देषही ।
हिवइ निगुणा नाह मोहि किसइ मेलाहि ॥

यह छंद म० न० अ० में भी है (म० १६५ = न० २७२/१ = अ० ३०२) केवल . ५,.६ म० में नहीं है ।

किन्तु म० न० अ० में यह पुनः यथा म० ७० = न० १०६ = अ० ११२ आया है :

टसकला मसकला मो न सुहाइ ।
म्हारइ हियडलइ हाथ म लाइ ।
म्हानइ मेल्हीय तुम्ह चालिस्यइ ।
दुष तणउ मुझ को नहीं छेह ।
देह सूकी नइ पिंजर हुई ।
तुझ विण रात रोवतां जाइ ।

घडीय बरस मुझ होइस्यइं ।
निठुर नाह अम्ह मूकि कि जाइ ॥

पं० की पाठ में यह ऊपर के प्रथम स्थान पर और स० की पाठ-परम्परा में यह ऊपर के दूसरे स्थान पर आता है। प्रसंग से यह प्रकट है कि यह छन्द पुनर्मिलन के अनंतर ही आना चाहिए, प्रवास के अवसर पर नहीं। इसलिए यहाँ भी म० की पाठ-परम्परा पर स० की पाठ-परम्परा का प्रभाव प्रकट है।

१२. म०, अ०∠म०+स०

(१) म० १६४=अ० २५६=स० ३·६१/१ है :

आणीया हाथीया सइ दुय च्यारि ।
आणीया अरथ नइ द्रव्य भंडार ।
आणीया हीरा पाथरी ।
आणीय तेजीय तरल तोषार ।
कबाइ पहिरावुं पाट की ।
काल्हि चलाविस्यां एतीय बार ॥

और म० १६५=अ० २५६=स० ३.६१/२ है :

उगउ सूर नइ हूअउ परभात ।
दीधा हाथीय सय दुइ साथ ।
दीधा हीरा पाथरी ।
दीधा तेजीय मत्त गयन्द ।
कबाइ पहिरावी पाट की ।
राजा जी चालिस्यइ मास बसन्त ॥

स० में म० १६४ की ·४,·५,·६ तथा म० १६५ की ·१,·२,·३ नहीं हैं। किन्तु वे दोनों की .३ के अन्तसाम्य के कारण छूटी हुई ज्ञात होती हैं, क्योंकि प्र० में पाई जाती हैं।

यह दोनों छन्द एक ही (स्वीकृत ११०) हैं, और थोड़े से शब्दान्तर के साथ म० अ० में पुनः यथा म० १६७=अ० २६३ आए हुए हैं। फलतः यह

प्रकट है कि म० अ० में यह छन्द एक स्थान पर तो अपनी पाठ-परम्परा के कारण है, और शेष दो स्थानों पर स० की पाठ-परम्परा के प्रभाव से है।

१३. म०∠म०+स०

(१) म० ८६ है :

चीरा लिषी धण आपणइ हाथ ।
पंड्या हो चालि हेड़ाऊ कय साथि ।
सात सउ कोस कउ गामंतरउ ।
पंड्या रुड़ा चालिज्यो देस की सींव ।
तावडउ गिणज्यो न छांहडी ।
म्हारी चीरीय राषिज्यो जिउ थारउ जीव ॥

म० में यह छन्द १३२ है, केवल इसके .३,.४ उसमें नहीं हैं ।

किन्तु म० १४६ भी प्राय: यही है :

बाहुड़ धणह दिषालीय बाट ।
ऊँचा परबत नीचा घाट । (तुलना स्वीकृत ६८.४)
लांबीय बांह दिषाली । (तुलना इसी छन्द की .१)
नइ देखतां जो जो देस की सीम ।
छांहडी तावडउ मत गिणइ ।
चीरीय राषजो जिम थारउ जीव ॥

इन दो छन्दों में से म० ८६ का पाठ पं० परम्परा में मिलता है और अंशत: स० परम्परा में भी, किन्तु म० १४६ का पाठ केवल स० परम्परा में मिलता है । इससे ज्ञात होता है म० ८६ अपनी मूल परम्परा के अनुसार है, और म० १४६ स० परम्परा के प्रभाव से आया है। स० पाठ स्पष्टत: अशुद्ध है, इसलिए यह साम्य म० और स० का परस्पर विकृति-सम्बन्ध स्थापित करता है ।

१४. पं०∠पं०+फ़०

(१) स्वीकृत ११८=पं० २२६=न० २६०=अ० २८६ है :

जोगीयां कौनु कहइ हो बात ।
भंइसि कउ दहीय नइ घीअरु भात ।
दूध कटोरइ पाइसुं ।
आछा चावल घणीय निवात ।
सुसतउ जीमे वीरा जोगिया ।
हंसि हंसि कहउ तुम्हारा प्रीय की बात ॥

और पं० २२७=न० २६१=अ० २६० का पूर्वार्द्ध है :

हिंव कुल्हडउ दूध नइ सीयलउ भात ।
बाषडउ दहीय नइ ऊन्हउ जी भात ।
मल्हि मल्हि आज परूसिस्या ।
उणिनइ दूध कटोरह घणीज निवात ।
आंगण बइसि जिमाडियउ ।
तउ हंसि हंसि कहि म्हारा प्रीय तणी बात ॥

दोनों छन्द प्रायः एक ही हैं—न केवल दोनों का आशय एक है वरन् शब्दावली भी प्रायः एक ही है—और दोनों छन्द पं० समूह में लगातार आते हैं। म० और स० में ऐसा नहीं है। स० में इनमें से प्रायः पं० २२६ के पाठ का छन्द है और म० में पं० २२७ के पाठ का। इसलिए यह प्रकट है कि पं० में यह पुनरावृत्ति वर्त्तमान म० अथवा स० के किसी पूर्वज के प्रभाव से हुई। म० और स० में से अपेक्षाकृत म० से पाठ-साम्य इन दो छन्दों में अधिक है, इसलिए म० के किसी पूर्वज का प्रभाव पं० न० अ० पर प्रकट है।

ग्या० में पं० २२७ नहीं है, पं० समूह की शेष सभी प्रतियों में दोनों छन्द हैं।

१५. न० अ० ∠ म०+पं०

(१) स्वीकृत ४२ का पाठ म० में इस प्रकार है :

चालियउ उलगाणउ धण जाण न देइ ।
मो नइ मारि कइ सरि साथां लेइ ।
अंचल ग्रहि धण इम कहइ ।
नयण दोइलै नइ मो मारि ।
जोबन बन भरि नारि तइ ।
जीवतो न छोड़उं स्वामी थारउ हो कोड ।
उलग जातउ तू कइ मुगछ होड ।।

पं० में इस म० पाठ की केवल प्रथम तीन पंक्तियाँ हैं, शेष चार पंक्तियों के स्थान पर उसमें निम्नलिखित तीन मात्र हैं :

दुइ दुष सालइ हो सामीय सांझ ।
जोबन मुरडीय मारिस्या ।
रोस किसउ जइ साधण बांझ ।

न० अ० में स्वीकृत ४२ के स्थान पर दो विभिन्न छन्द दो स्थानों पर आते हैं : न० १०७=अ० ११३ तथा न० ७२=अ० ७६; और इनमें से न० १०७=अ० ११३ म० पाठ का है, और न० ७२=अ० ७६ पं० पाठ का है।

(२) स्वीकृत ३३.४,.५,.६ का पाठ म० में है :

चतुर माणस राजा भोज की धार ।
कामणी जैसलमेर री ।
लूगडउ चोपडउ गढ़ ग्वालेर ।

इन पंक्तियों का पाठ पं० में है :

अति चतुराई गढ़ ग्वालेर ।
कामणी जैसेलमेर री ।
पुरिस भला स्वामी गढ़ अजमेरि ।

न० में पाठ पूर्णतः म० का है, केवल उसके अनंतर पं० पाठ की अंतिम पंक्ति रख दी गई है।

अ० में भी पाठ पूर्णतः म० का है, केवल निम्नलिखित पंक्ति—

किह खंड कोइ सराहिजै।

और रख कर पं० पाठ की अंतिम पंक्ति तब रक्खी गई है।

(३) स्वीकृत ५४ का पाठ म० में है :

.१ पंडिया कहियइ दामोदर प्रीय तणी बात।
.२ केहउ रे थावर केहउ रे राह।
.३ नित नित चालउ चालउ करइ।
.४ आठमउ थावर बारमउ राह।
.५ ग्रह गणि तिथि मंदा कह्या।
.६ छोड़ि नइ गोरडी प्रीय तणी बात।

और पं० में है।

.१ आणि दमोदर प्रीय समझाय।
.२ ग्रह कौ पीड्यउ ऊलग जाइ।
.३ विण दोषइ ग्रह पीडियउ।
.४ उण नइ आठमउ थावर बारमउ राह।
.५ ऊमीय मेल्हि उलग चालियउ।
.६ रोवती छांडि धण चालियउ नाह।

न० में आठ पंक्तियाँ हैं और इस प्रकार हैं : पं० .१, पं० .२, म० .२, पं० .४, म० .५, म०. ६, पं०. ५. पं०. ६।

अ० में दस पंक्तियाँ हैं, जिनमें से आठ तो उपर्युक्त न० की ही हैं, शेष दो म०. ३, म०. ४ हैं—अर्थात् इसमें भी दोनों पाठों को मिला दिया गया है, केवल इसमें म०. १ तथा पं०. ३ नहीं हैं।

१६. अ∠म० + पं०

(१) स्वीकृत ११३ का पाठ म० में है :

.१ जोगी कहइ एक गोरखनाथ ।
.२ कमल पदमासण दूध का हाथ ।
.३ मूँगफली जिसी आंगुली ।
.४ एतउ अहर प्रबालीय बदन मयंक ।
.५ बोलती बोलय धण कालरी ।
.६ ससि बदनी धण चीता कय लंकि ॥

पं० में उपर्युक्त म० .४, .६ के स्थान पर है :

उणिरा कठिन पयउहर काजली रेह ।
उणरइ सोवन चूडली झलकइ आथि ।

और निम्नलिखित पंक्तियाँ पं० में यथा .७,.८ हैं :

चूडि कहइ कइ चूडलो ।
थे तउ चोरी देज्यो तिणि धण कइ हाथ ।

अ० में एक छंद—२७४ पूर्ण रूप से म० का उपर्युक्त पाठ देता है, और एक अन्य छंद—२७५, जो निम्नलिखित है, पं० का मिश्रित पाठ देता है :

.१ राउ कहइ सुणउ गोरखनाथ ।
.२ रतन कचोलउ छइ मूंध कै हाथ ।
.३ ख्याल घणउ गोरी मोरीयां ।
.४ उणि रे कठिन [पयउहर] काजली रेह ।
.५ मीठो थोडौ गोरी बोलिहै ।
.६ म्हाकुं चित्त न बिसरइ जी नवलह नेह ।
.७ सोवन चूड़ै सोहती ।
.८ सात सषी तणै नित रहइ साथि ।
.९ सहस त्रीयां माहिं जाणियै ।
.१० म्हाकी चीरी देज्यो तिण धण हाथि ॥

इस छन्द की .२,.४,.७,.१० क्रमशः पं० पाठ की .२,.४,.६,.८ हैं।

(२) स्वीकृत २७ ·५,·६ का पाठ म० में है :

कइ लेष्यउ लाधउ विह तणउ।
राजा भोज की चउरी चढ्या जाइ।

इसके स्थान पर पं० का पाठ है :

चउरी चढ्यउ राजा भोज की।
बडा बडेरा मेल्या करतार।

अ० के पाठ में पं० पाठ की दोनों पंक्तियाँ और म० पाठ की .५ है, केवल म० .६ के स्थान पर है :

मन को वांछित पाएउ अपार।

(३) स्वीकृत ११७. ६ का पाठ म० में है :

तिण बिन बउलावीया बारह मास।

इसके स्थान पर पं० में है :

हिवइ ताह स्युं हुवा चीरी बिवहार।

अ० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ हैं, इसीलिए कडवक में कुल छः के स्थान पर सात चरण हो गए हैं जो ग्रंथ की छंद-योजना के विरुद्ध हैं।

(४) स्वीकृत ६४.४ का पाठ म० में है :

बलि बलि बइसइ छइ राजकुमारि।

पं० में इसका पाठ है :

भोली तोथी भलीय दवदंती हे नारि।

अ० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ हैं।

(५) स्वीकृत ५८ का पाठ म० में है :

साधण ऊभी रे प्रउलि दुवारि।
रतन जडित सिरि तिलक निलाडि।
जाल जालंधी गोरडी।

सोना की पाइल झलकइ छइ पाइ ।
रतन जडित सिरि राषडी ।
तेह नइ नाह कउ ऊलग जाइ ।

और पं० परम्परा का पाठ है :

साधण ऊभी छइ टेकि पगार ।
कडिह पटोली चूनडी सार ।
काने हो कुंडल झिगमिगइ ।
पागा हो पाइल षरीय सुचंग ।
हीरा जडित माथइ राषडी ।
मोनइ सरब गति बीसरी थारी चींत ।
राति दिवस चलि चलि करउ ।
स्वामी थां धरि छइ राजा किसी इह रीति ।

अ० में इस विषय के दो कडवक हैं : अ० १०६, तथा अ० ११० । अ० १०६ म० पाठ का है—केवल उसमें म० की .३ नहीं है और तीन अन्य पंक्तियाँ भी हैं । अ० ११० पं० पाठ का है—केवल पं० पाठ की प्रथम पाँच पंक्तियों के स्थान पर उसमें भिन्न पंक्तियाँ हैं ।

(६) म० ५३ है :

चालउ उलगाणउ लेइ छइ सउण ।
राजा नइ चालतां बरजस्यइ कउण ।
सात बरस आगे रही ।
चीरी देइ नवि मोकल्यउ कोइ ।
हिवइ कइ गोरी तपइ ।
इसीय बातां नहु जुगतीय न होइ ॥

और पं० ७१ है :

जइ धण मरसी गंग माहे जाइ ।
ऊलग जातां जी तो न रहाइ ।

इसा बचन किम बोलिजइ ।
मरस्या जे निकुलीणी नारि ।
तुं तउ कुलवंती किम मरइ ।
एतउ भोर मिसि छोड़ी हे नारि ॥

अ० ८१ में प्रथम पाँच पंक्तियाँ पं० ७१ की हैं, और फिर .६,.७,.८ हैं :

मइं नवि छोड़ी तू चितइ उतारि ।
इवइ गोरडी तू तपै ।
अजुगती बात न बोलीय नारि ।

अ० .६ पं० .६ से तुलनीय है, और अ०. ७, .८ स्पष्ट ही म० .५, .६ हैं ।

(७) म० १०६ है :

राणी सं कोक्या संपूरण रिणवास ।
बंदिडी सरस बोलावीया दास ।
कोक्या पंच महाजना ।
तिलक संजोइ ए दीधउ छइ मान ।
एक अंतेउर बाहिरउ ।
देस उडीसा कउ परधान ॥

पं० ११७ है :

तठइ राणी जी सरब कोक्या रिणवास ।
तिलक संजोइ नइ दीधउ जी ग्रास ।
छानउ पूरब्या राइ थी ।
राणी भाई कीधउ राय चहुआण ।

अ० में इस आशय के दो कडवक हैं—अ० १२६ जो म० पाठ का है, और अ० १५३ जो पं० पाठ का है ।

१७. अ० ∠ म०+न०

(१) स्वीकृत १७. २ का पाठ म० तथा न० में क्रमशः है :

म० सात सषी मिलि कलस बंधाइ ।

न० सरब सोहागिणि कौतुग जाइ ।

अ० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ हैं, इसीलिए कडवक में एक पंक्ति बढ़ गई है। यह ध्यान देने योग्य है कि उपर्युक्त दोनों पाठ इन प्रतियों के अतिरिक्त अन्यत्र पूर्णतः नहीं मिलते—स० समूह का पाठ म० के निकट है, और पं० समूह का न० के निकट है।

समूहों की प्रतियाँ अपने समूह के अंतर्गत एक दूसरे के कितना निकट हैं यह नीचे के विवेचन से प्रकट होगा।

१८. म० समूह की प्रतियाँ

म० समूह की दोनों प्रतियों में वे विकृतियाँ तो पाई ही जाती हैं जिनका उल्लेख म० के संबंध-सूत्र से ऊपर हो चुका है, निम्नलिखित विकृतियाँ और भी उनकी आत्यंतिक सन्निकटता प्रमाणित करती हैं :

(१) दोनों में म० ११.१ है :

दीन्ही सोपारीय हरषीयउ राय ।

किन्तु यह स्वीकृत १०.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२) दोनों में स्वीकृत १७.५,.६ नहीं हैं।

(३) दोनों में १६.६ है :

पालषी परदल अंत न छेह ।

किन्तु यह स्वीकृत १३.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(४) दोनों में म० १७.४,.५,.६ हैं :

बाजा बाजइ घुरइ नीसाण ।

राजा आवीयउ परणिवा ।

षेहाडंबर तिहां छाइयउ भाण ।

किन्तु ये पंक्तियाँ स्वीकृत १५.४, .५, .६ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(५) दोनों में स्वीकृत १९.६ है :

दीन्हो अरथ नइ गरथ भंडार ।

किन्तु यह स्वीकृत २०.४ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(६) दोनों में स्वीकृत २१.४, .५ हैं :

दीन्हो अरथ नइ गरथ भंडार।
दीन्हो छइ देस सवालषउ।

किन्तु यह स्वीकृत २०. ४,.५ हैं, और इनमें भी इस प्रकार है।

(७) दोनों में स्वीकृत २७.२ का पाठ है :

बाजा जी बाजइ नीसाणे घाउ।

किन्तु यह स्वीकृत २५.२ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

मू० केवल ३८ छन्द तक है, और उपर्युक्त विकृति-साम्य के स्थल केवल इन्हीं ३८ छन्दों तक के हैं। इसी से दोनों के प्रतिलिपि-संबंध की सन्निकटता का अनुमान किया जा सकता है।

१६. पं० समूह की प्रतियाँ

पं० समूह की समस्त प्रतियों में वे विकृतियाँ पाई जाती हैं जिनका उल्लेख पं० के संबंध-सूत्र से ऊपर हो चुका है। विकृति-साम्य के और अधिक उदाहरण इस समूह के संबंध में देना अनावश्यक होगा।

केवल ग्या० इस प्रसंग में उल्लेखनीय है, क्योंकि वह कहीं-कहीं अपने समूह से भिन्न और म० समूह से प्रभावित पाठ देती है :

(१) स्वीकृत ११८=पं० २२६ तथा पं० २२७/१ प्रायः एक ही छन्द हैं, और यह पुनरावृत्ति पं० समूह भर में पाई जाती हैं, केवल ग्या० इसका अपवाद है।

(२) निम्नलिखित पंक्ति पं० समूह में दो बार आती है : एक बार यथा स्वीकृत ८६. २, तथा पुनः यथा पं० २२७/२.२ के रूप में :

तइं मोनइ दीधी थी जीमणी बांह।

किन्तु ग्या० में यह पुनरावृत्ति नहीं है।

(३) म० ७६ का पाठ पं० समूह भर में भिन्न है, किन्तु ग्या० में वह म० जैसा ही है।

(४) स्वीकृत २०.२ का पाठ म० में है :

सयल अंतेउर लीयउ रे बुलाइ।

और पं० समूह में है :

भाणमती राणी कुमरि की माइ।

ग्या० में दोनों पाठों की पंक्तियाँ हैं, इसीलिए उसमें इस कडवक में एक पंक्ति अतिरिक्त हो गई है।

(५) स्वीकृत ६२.३,. ४,. ५ इन (म० ग्या०) में हैं :

छंडिया चौबारा चौषंडी।
छंड्या हो संइभरि नागरचाल।
छोड्यउ देस सवालषउ।

किन्तु ये क्रमशः स्वीकृत ६७.३,२०.६,३८.५ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

२०. अ० समूह की प्रतियाँ

अ० समूह की तीनों प्रतियों में वे विकृतियाँ पाई जाती हैं जिनका उल्लेख ऊपर अ० के संबंध-सूत्र से हो चुका है। विकृति-साम्य के और अधिक उदाहरण देना यहाँ अनावश्यक होगा। केवल एक और विकृति-साम्य का उल्लेख यथेष्ट होगा।

(१) म० १२८ अ० में अ० १७६ तथा अ० १६० के रूप में दो बार आया हुआ है। इन अन्य प्रतियों में भी यह पुनरावृत्ति इस प्रकार मिलती है।

२१. स० समूह की प्रतियाँ

प्र० स० में वे विकृतियाँ तो पाई ही जाती हैं जिनका उल्लेख ऊपर स० के संबंध-सूत्र से हो चुका है। उनके अतिरिक्त भी बहुतेरी पाई जाती हैं। केवल निम्नलिखित का उल्लेख यथेष्ट होगा।

(१) स्वीकृत १७ इनमें इस प्रकार है :

तोरण आवियो बीसल राय ।
पंच सखी मिल देखवा जाय (कलस बंदावि—स०) ।
मोतीयां का आषा हूया (किया—स०) ।
कुंकुं कंदन तिलक सिंदूर ।
अवली सवली आरती ।
जाणे कि तोरण उगियो सूर ॥

किंतु यही छंद दो बार अन्यत्र भी थोड़े से शब्दांतर के साथ इन प्रतियों में इस प्रकार आता है :

स० १. २६=प्र० १. २६ हैं :

परणवा चालियो बीसलराय ।
पंच सषी मिलि कलस बंधाय (बंदावि—स०) ।
मोतियाँ का आषा हूया (किया—स०) ।
कुंकुं चंदन पाका पान ।
अवली सवली आरती ।
जाइ बघेरै दीयो मेल्हाण ॥ (तुलना स० १. ३०. १.)

स० १.४८=प्र० १. ४५ है :

धार नगरी आव्यौ बीसलराय ।
पंच सषी मिलि देषिवा जाय ।
मोती थाल भराविया ।
माहि बीजोरउ तिलक सिंदूर ।
अवली सवली आरती ।
जाणि प्रत्यक्ष उगियो सूर ॥

(२) स्वीकृत १५. ४,. ५ का पाठ इनमें इस प्रकार है :

ब्राह्मण उचरइ बेद पुराण ।
मंगल गावइ कामनी ।

किंतु यह स्वीकृत १४. २, ३ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(३) स्वीकृत २५. ३ का पाठ इनमें है :

चौरी चढ़ियो राजा भोज की।

किंतु यह स्वीकृत २७. ६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(४) स्वीकृत ४४. ७ का पाठ इनमें है :

कह्यउ हमारउ जइ सुणइ।

किंतु यह स्वीकृत ५७. ३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(५) स्वीकृत ५०. १ का पाठ इनमें हैं :

पंच सषी मिलि बैठी छइ आइ।

किंतु यह स्वीकृत ५२. १ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(६) स्वीकृत ८७. ५ तथा स्वीकृत १०५.५ का पाठ इनमें हैं :

एक सरां घरि आवजू।

किंतु यह स्वीकृत ९३. ३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(७) स्वीकृत १०५. ५,.६ का पाठ इनमें हैं :

चढ़तो जोबन किहां लहेस।

किंतु यह स्वीकृत १०४.६ है, केवल स्वीकृत १०४.६ का पाठ इनमें भिन्न है।

(८) स्वीकृत १२२. ४ का पाठ इनमें है :

कूंकू चंदन तिलक (सिरह—स०) सिंदूर।

किंतु यह स्वीकृत १७. ४ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(९) स्वीकृत १२५. ४ का पाठ इनमें है :

निगुणी राजा थारौ किसौ बेसास।

किंतु यह स्वीकृत ४५. २ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१०) स० ३. ६३ = प्र० ३. ६१ की .३ है :

उलिगाणउ घरि चालीयौ।

किंतु यह स्वीकृत १०६.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(११) स० १. १३. ५=प्र० १. १०. ५ है :

बेटी राजा भोज की।

किंतु यह स्वीकृत ८. ५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१२) स० १. २०. ६=प्र० १. २०.६ है :

राजमती दीधा (दीई—स०) बीसलराय।

किन्तु यह स्वीकृत ८. ६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१३) निम्नलिखित पंक्ति अन्य स्थानों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों पर भी इन प्रतियों में आई है :

बाजित्र बाजइ नीसाणे घाइ।

स० १. २१. २=प्र० १. २१. २

स० १. २५. २=प्र० १. २५. २

स० ३. ६७. २=प्र० ३. ६५. २

स० ४. २६. २=प्र० ४. २५. १

स० ४. ३५. १=प्र० ४. ३४. १

स० ४. ३६. २=प्र० ४. ३५. २

किन्तु यह स्वीकृत १२०. २ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१४) स० १. ३३. ५=प्र० १. ३३. ५ और

स० ४. १३. ४=प्र० ४. १३. ३ है :

मेघाडंबर सिरि छाहीयो (छत्र दीयो राय—स० ४.१३.४)।

किन्तु यह स्वीकृत १४. ५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(१५) स० १. ३७. १,. २=प्र० १. ३७. १,. २ और

स० १. ५१. १,. २=प्र० १. ४८. १, २ हैं :

देस मालागिर हूयो उछाह।

राजमती को रच्यो बीबाह।

किन्तु यह पंक्तियाँ स्वीकृत १६. १, २ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(१६) स० १. ५०.६ = प्र० १. ४७.६ है :

तोरण आवीयौ बीसलराय ।

किन्तु यह स्वीकृत १७. १ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(१७) स० १६. ५.६ = प्र० १. ५५.६ है :

जइ घरि आवी जाति पमारि ।

किन्तु यह स्वीकृत १०.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(१८) स० १. ७७.६ = प्र० १. ७३.६ है :

राजमती रंग (रमै—प्र०) बीसलराय ।

किन्तु यह स्वीकृत ८.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(१९) स० २. १३.२ = प्र० २. १०.२ है :

काईं स्वामी तुं ओलग जाइ ।

किन्तु थोड़े अंतर के साथ यह स्वीकृत ३७.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(२०) निम्नलिखित पंक्ति इन प्रतियों में अन्य स्थानों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्थानों पर भी आई है :

कह्यउ हमारउ जउ सुणइ ।

स० २.१६.३ = प्र० २.१५.३,

स० २.२३.३ = प्र० २.२२.३,

स० २.१४.३ = प्र० २.१३.३,

स० २.२८.३ = प्र० २.२५.३,

स० २.६६.५ = प्र० २.६३.५ ।

किन्तु यह स्वीकृत ५७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(२१) स० २.२४.४ = प्र० २.२३.४ है :

पांड्या हूँ थारी गुण केरी दास ।

किन्तु यह स्वीकृत ५५.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

[प्र० २.२३ में स० २.२४ तथा स० २.२५ की पंक्तियाँ मिल गई हैं, कारण यह है कि स० २.२४.४ तथा स० २.२५.१ में पाठ-साम्य के कारण प्रतिलिपिकार बीच की पंक्तियों को छोड़ कर आगे बढ़ गया।]

(२२) स० ३.६१.३ = प्र० ३.८६.३ है :

केलि गरभ जिसी कूंवली।

किन्तु यह स्वीकृत १२८.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२३) निम्नलिखित पंक्ति इनमें अन्य स्थानों के अतिरिक्त निम्न स्थानों पर भी आई है :

कर जोड़ी नरपति कहइ।

स० १.१०.३ = प्र० १.८/१.३,

स० १.१२.५ = प्र० १.६/२.५,

स० ४.१.३ = प्र० ४.१.३।

किन्तु यह स्वीकृत १.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२४) स० ४.१०.१,.२ = प्र० ४.१०.१,.२ हैं :

ब्राह्मण राजन कियो परवेस।

लेइ बीजोरौ मिल्यो नरेस।

किन्तु यह स्वीकृत १०३.१,.२ हैं, और इनमें भी इस प्रकार हैं।

(२५) स० ४.२४.२ = प्र० २३.४.२ तथा

स० ४.४२.२ = प्र० ४.४०.२ है :

गोकल माहै जिसो (सोहै—स०) गोव्यंद।

किन्तु यह स्वीकृत १६.६ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२६) स० १.२६.६ = प्र० १.२६.६ है :

जाइ बघेरै दीयो मेल्हाण।

किन्तु यह स्वीकृत १४.१ है, और इनमें भी इस प्रकार है।

(२७) स० ४.३१.७=प्र० ४.३०.७ है :

मोतीयां का आषा हूया (किया—स०) ।

किंतु यह स्वीकृत १७.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(२८) स० ४.३६.३=प्र० ४.३५.३ है :

गढ माहि गूड़ी ऊछली ।

किन्तु यह स्वीकृत १२०.३ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(२६) स० ४.३७.५=प्र० ४.३६.५ है :

राजा राणी सूं मीलइ (मिल्यो—प्र०) ।

किन्तु यह स्वीकृत १२८.५ है, और इनमें भी इस प्रकार है ।

(३०) स्वीकृत ११४ का जो पाठ इनमें है, उसमें .२ छूटी हुई है । शेष समस्त प्रतियों में तो यह पंक्ति है ही, छन्द-योजना तथा प्रसंग की दृष्टि से भी यह पंक्ति अनिवार्य है ।

निम्नलिखित पंक्तियाँ इनमें दो बार आती हैं :

(३१) पालीय परगह अंत न पार ।

यथा स० १.३२.४=प्र० १.३२.४ तथा स० १.३४.४=प्र० १.३४.४ ।

(३२) धार नगरी चाल्यो वीसलराय ।

यथा स० १.४८.१=प्र० १.४५.१ तथा स० १.५०.१=प्र० १.४७.१ में ।

(३३) राव कहइ सुणि राजकुमारि ।

दूमनी काइँ होयडइ वर नारि ।

यथा स० २.२३.१,.२=प्र० २.२२.१,.२ तथा स० २.१४.१,.२=प्र० २. १३.१,.२ ।

(३४) नाल्ह रसायण नर भणइ ।

यथा स० २.८५.३ = प्र० २.७८.३, तथा स० २.८६.३ = प्र० २.७६.३ ।

(३५) प्रोहित जोवै प्रोलि पगार।

यथा स० ३.४५.६ = प्र० ३.४२.६ तथा स० ४.४६.२ = प्र० ३.४३.१।

(३६) राइ दीसइ जिसो पूनम चंद।

यथा स० ४.२६.६ = प्र० ४.२५.६ तथा स० ४.२४.१ = प्र० ४.२३.१।

(३७) राइ बदन जिसो पूनिम (पूरण—स०) चन्द।

यथा स० ४.२४.६ = प्र० ४.२३.४ तथा स० ४.२४.१ = प्र० ४.२३.१।

[और ऊपर का (३६) भी इसके साथ लिया जावे तो यह पुनरावृत्ति चार बार होती है।]

निम्नलिखित पंक्तियाँ इनमें चार बार आती हैं :

(३८) मेल्ही चादर वैसणइ।

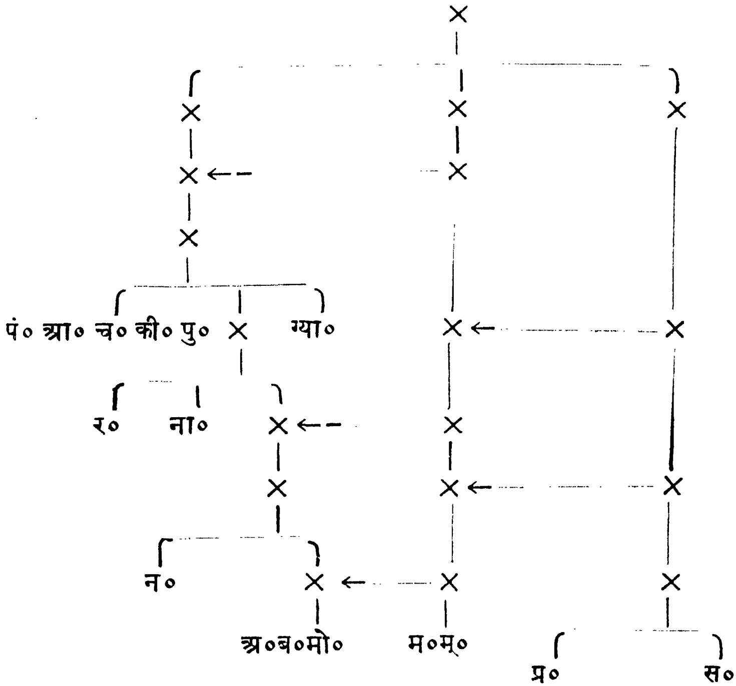
यथा स० २.८४.५ = प्र० २.७७.५,
स० २.८३.५ = प्र० २.७६.५,
स० ३.४८.३ = प्र० ३.४५.३,
स० ३.६१.३ = प्र० ३.५७.३।

(३९) देवीयो वेदीयो चोगणो मान।

यथा स० २.८३.४ = प्र० २.७६.४,
स० २.४८.२ = प्र० २.४६.२,
स० ३.५०.४ = प्र० ३.४७.४,
स० ३.६१.२ = प्र० ३.५७.२।

५. प्रतियों का पाठ-सम्बन्ध

ऊपर-पाठ सम्बन्ध के जो सूत्र सामने आए हैं, उनके आधार पर विभिन्न प्रतियों के पाठ-सम्बन्ध को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :



ऊपर हमने प्रतियों का जो पाठ-सङ्गठन देखा है, वह भी इस पाठ-सम्बन्ध से सिद्ध होता है।

६. पाठ-निर्धारण

उपर्युक्त पाठ-सम्बन्ध के आधार पर हम पाठ-निर्धारण के विषय में इन निष्कर्षों पर पहुँचते हैं :—

(१) अ० ब० मो० अर्थात् अ० समूह म० तथा पं० समूहों के पूर्ण मिश्रण का परिणाम है, इसलिए पं० तथा म० समूह की विद्यमानता

में संपादन में उसका आधार न ग्रहण करना चाहिए क्योंकि उसके मूल उपादान म० समूह और पं० समूह प्राप्त हैं।

(२) इसी प्रकार न० पाठ पं० समूह के साथ म० समूह के किसी पूर्वज के मिश्रण का परिणाम है, इसलिए पं० तथा म० समूहों की विद्यमानता में संपादन में इसका आधार भी न ग्रहण करना चाहिए।

(३) ग्या० पाठ पर म० के किसी पूर्वज का प्रभाव स्पष्ट है, इसलिए पं० समूह का वह शुद्ध प्रतिनिधि नहीं माना जा सकता। पं० समूह का पाठ निर्धारित करने के लिए उस समूह की शेष प्रतियों का ही आश्रय लेना होगा।

(४) म० समूह का पाठ उक्त समूह की प्रतियों से निर्धारित होगा।

(५) इसी प्रकार स० समूह का पाठ उक्त समूह की प्रतियों से निर्धारित होगा।

(६) पं० समूह का पाठ म० समूह के किसी पूर्वज का ऋणी है, इसलिए अन्य कारणों के अभाव में इन दोनों सापेक्ष समूहों का पाठ-साम्य मात्र पाठ की प्रामाणिकता के लिए निर्णयात्मक नहीं हो सकेगा।

(७) म० समूह का पाठ स० समूह के किसी पूर्वज का ऋणी है, इसलिए अन्य कारणों के अभाव में इन दोनों सापेक्ष समूहों का भी पाठ-साम्य मात्र पाठ की प्रामाणिकता के लिए निश्चयात्मक नहीं हो सकता।

(८) पं० समूह का पाठ स० समूह का अथवा उसके किसी पूर्वज का ऋणी नहीं है, इसलिए इन दोनों समूहों का पाठ-साम्य मात्र पाठ की प्रामाणिकता के लिए साधारणतः प्रामाणिक माना जाना चाहिए।

(९) जिन विषयों में म० पं० तथा स० तीनो समूहों में पाठ-साम्य है, उनकी प्रामाणिकता स्वतःसिद्ध मानी जानी चाहिए।

(१०) जिन विषयों में म० तथा पं० समूह एकमत हों, और स० भिन्न

हो, अथवा म० तथा स० समूह एकमत हों और पं० समूह भिन्न मत का हो, उन विषयों में शेष समस्त वाह्य और अन्तरंग संभावनाओं के साक्ष्य से ही पाठ-निर्णय करना चाहिए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर ग्रंथ का संपादन किया गया है। इस संस्करण में कुल १२८ छंदों को प्रामाणिक मान कर उपर्युक्त प्रकार से उनका संपादन किया गया है। इन १२८ छंदों में से १०८ तो ऐसे हैं जो खंडित प्रतियों के खंडित अंशों को छोड़कर न केवल समस्त समूहों बल्कि प्रत्येक समूह की समस्त प्रतियों में मिलते हैं। पुनः संलग्न तालिका से ज्ञात होगा कि शेष में से दस तो ऐसे हैं कि तीनों समूहों में पाए जाते हैं, यद्यपि यह अवश्य है कि वे किसी समूह-विशेष की एकाध प्रति में नहीं पाए जाते हैं। और भी तीन की कुछ पंक्तियाँ अन्य छंदों के साथ इन प्रतियों में भी मिलती हैं जिनमें ये छंद नहीं मिलते हैं। केवल सात ऐसे हैं जो केवल पं० तथा स० समूहों में मिलने के कारण स्वीकृत किए गए हैं, और ये हैं स्वीकृत ६, २४, ८७, ११४, १२१, १२२, १२३ और १२७। इस तथ्य की ओर संकेत करने के लिए इन छंदों पर आगे दिए गए संपादित पाठ में तारक चिह्न लगा दिया गया है।

'बीसल देव रास' एक गीति-प्रबंध है। इस दृष्टि से भी देखने पर इन १२८ छंदों में कथा-निर्वाह भली भाँति हो जाता है; यह अवश्य है, कि कहीं-कहीं पर अस्वीकृत छंदों में से कोई-कोई कथा की पूर्णता अथवा उसमें अन्य प्रकार के चमत्कार लाने में सहायक हो सकते हैं, किंतु प्रक्षेपों का ठीक यही कार्य भी हुआ करता है। अतः इस प्रलोभन से बचकर आधुनिक पाठालोचन की वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मूल के निर्धारित छंदों को ही स्वीकार किया गया है।

ग्या० रा० तथा न० में जो अंश खंडित हैं उनके अतिरिक्त उन प्रतियों के शेष अंशों तथा शेष प्रतियों में जो छंद प्राप्त नहीं हैं, और फिर भी स्वीकृत किए गए हैं, उनकी तालिका निम्नलिखित है :—

	स्वीकृत	म०	पं०	र०	न०	प्र०	स०
(१)	६	१	१				
(२)	९						१
(३)	२२						१
(४)	२४	१					
(५)	२६	१[1]				१[1]	१[1]
(६)	३८						१
(७)	३९						१
(८)	४५	१[1]					
(९)	५९					१	
(१०)	६३					१	
(११)	६६				१		
(१२)	७९			१			
(१३)	८२					१	
(१४)	८६	१[1]					
(१५)	८७	१					
(१६)	११४	१			१		
(१७)	१२१	१					
(१८)	१२२	१					
(१९)	१२३	१					
(२०)	१२७					१	
		१०	१	१	२	५	५

अ० चा० की० और ग्या० तथा अ० ब० और मो० में उपर्युक्त स्वीकृत समस्त छंद प्राप्य हैं। ना० में भी यह सभी छंद हैं, केवल स्वीकृत ५५ नहीं है।

१. इन छंदों की एकाध पंक्तियाँ अन्य छंदों में इन प्रतियों में भी है।

किन्तु ना० में यह छंद भूल से छूटा हुआ है, क्योंकि छंद के साथ छंद-संख्या और अगले छंद की प्रथम चार पंक्तियाँ भी छूट गई हैं।

७. कथावस्तु और उसकी ऐतिहासिकता

निर्धारित पाठ के अनुसार कथा संक्षेप में इस प्रकार है (कोष्ठकों में दी हुई संख्याएँ इस संस्करण के छंदों की हैं) :—

[**धार**-नरेश परमार] **भोजराज** की सभा बैठी; रानी ने राजा से निवेदन किया कि जीवन-काल में ही कन्या (राजमती) का विवाह योग्य वर देखकर कर देना चाहिए (६)। अतः राजा ने ब्राह्मण और भाट के द्वारा **अजमेर** के शासक **बीसल देव** चहुवान के पास लग्न की सुपारी भेजी (८,६)। बीसलदेव ने संबंध स्वीकार कर लिया।

धार के लिए बारात चल पड़ी (१३)। मार्ग में **बाघेरा** में पड़ाव हुआ (१४)। पाँचवी मंजिल में वह **चित्तौर** गढ़ पहुँची (१५)। फिर वह धार पहुँची (१६)। **राजमती** और बीसल देव का विवाह हुआ(१७-१८)। बीसल देव को दायज में **आलीसर** (१६), **माल** (१६), **सपादलक्ष देश** (२०), **साँभर सर** (२०), **नागर चाल** (२०) **विछाल** (२०), **टोडा** (२०), **टउँक** (२०), **बूँदी** (२०), **कुडाल** (२०), **मंडोवर** (२१), **सोरठ** (२०), **गुजरात** (२०), तथा बारह गढ़ों के साथ **चित्तौर गढ़** (२२) प्राप्त हुए। राजमती को लेकर (२५) बीसलदेव अजमेर आ गया (२६)।

एक दिन राजमती से बीसल देव ने गर्वपूर्वक कहा कि उसके समान दूसरा राजा नहीं है, क्यों कि उसके राज्य में साँभर सर से नमक निकलता है, चारों ओर **जेसलमेर** का थाना है, एक लाख घोड़ों पर पाखरें पड़ती हैं, और अजमेर गढ़ में बैठकर वह राज्य करता है (२८)। राजमती ने उत्तर में कहा कि उसे गर्व न करना चाहिए, क्योंकि उसके समान अनेक राजा हैं: एक तो **उड़ीसाधिपति** है जिसके राज्य में उसी प्रकार खानों से हीरा निकलता है जिस प्रकार बीसलदेव के राज्य में नमक निकलता है (२६)। बीसल देव

ने इस पर उससे प्रश्न किया कि उसे यह बात कैसे ज्ञात हुई—वह तो अभी बारह वर्ष की थी, और उसका जन्म भी जैसलमेर में हुआ था (३०)। राजमती ने कहा कि वह पूर्वजन्म में उड़ीसे में हिरणी होकर जन्मी थी और उसका देहांत जगन्नाथ स्वामी के द्वार पर हुआ था (३१)। उसने मरण-काल में जगन्नाथ देव का स्मरण किया था और जब उसे उनका दर्शन प्राप्त हुआ था, उसने उनसे पूर्व देश में पुनः जन्म न मिलने का वर माँग लिया था (३२)। उसने कहा कि पूर्व के देश में लोग घृणित होते हैं, चतुरता ग्वालियर गढ़ में देखी जाती हैं, कामिनियाँ जेसलमेर की और पुरुष अजमेर गढ़ में अच्छे होते हैं (३३)। इसीलिए उसने जगन्नाथ देव से मारू देश में जन्म का वर माँगा (३४)। बीसल देव को राजमती की यह बात लग गई, और उसने कहा कि राजमती ने उसकी विसराहना की है, इसलिए वह बारह वर्षों तक उससे कोई संबंध न रक्खेगा, और वह उडीसा में राज-सेवा करने के लिए जावेगा ताकि उसके घर में भी हीरे की खानि आ जावे (३५)।

राजमती को जब अपनी भूल ज्ञात हुई, उसने बहुत अनुनय-विनय की और अनेक प्रकार से बीसल देव को उसके इस संकल्प से विरत करने का यत्न किया, किंतु कोई फल न निकला (३६-५३)। तदनंतर उसने ज्योतिषी को बुला कर कहा कि किसी प्रकार चार महीने तक वह उसके स्वामी को रोके, ताकि इस बीच वह उसे समझा-बुझा ले (५४-५५)। ज्योतिषी ने ऐसा ही किया (५६)। फिर भी राजमती को कोई सफलता नहीं मिली और राजा शकुन लेकर उड़ीसा-यात्रा के लिए निकल पड़ा (५७)। राजमती ने एक बार पुनः बीसल देव से अनुरोध किया कि वह उसको छोड़ कर न जावे (५८), किंतु फिर भी वह अकृतकार्य ही रही (५९), और अंततः बीसल देव को उसने विदा दी (६०-६१)।

राजा ने जैसलमेर छोड़ा, टोडा और अजमेर छोड़ा, टउँक और विछाल छोड़ा, राणा का रनिवास छोड़ा, और बनास उतर गया (६२)। फिर उसने चंबल का पिछला खाल (नाला) पार किया और शकुनों के साथ

वह आगे बढ़ा (६६)। राजमती उसके वियोग में दिन काटने लगी (६७-८२)। एक कुटनी ने उसे सत से विचलित करना चाहा किंतु राजमती ने उसे पास न फटकने दिया और उसे पीटकर निकलवा दिया (८३-८४)।

अवधि के समाप्त होने का समय आया तो राजमती पंडित (पुरोहित) के पास आई, और उसके द्वारा बीसलदेव के पास उसने संदेश भेजा। (८५-८७)। मौखिक संदेश के अतिरिक्त उसने एक पत्रिका भी उसके द्वारा भेजी (८८-९२)। उसने पंडित से बीसल देव को जिस प्रकार भी संभव होता लिवा लाने का अनुरोध किया (९३-९४)। पंडित ने उससे बीसल देव की उनहार पूछी, जिसे उसने बताया (९५-९६)। पंडित ने राजमती को बीसलदेव को लाने का आश्वासन देते हुए प्रस्थान किया (९७-९८)।

मजे-मजे में चलकर पंडित सातवें मास उड़ीसा पहुँचा (९९-१००)। वह जगन्नाथ देव के स्थान पर गया (१०१) और तदनंतर राज-द्वार पर पहुँचा (१०२)। वह उपहार लेकर बीसल देव से मिला (१०३)। तदनंतर उसने उसे राजमती की पत्रिका दी और उसका संदेश सुनाया (१०४)। उसने राजमती की विरह-दशा का भी निवेदन किया (१०५)। उडीसा के राजा को जब यह ज्ञात हुआ कि बीसल देव घर जा रहा है, पट्टरानी से उसने यह बताया (१०६)। पट्टरानी ने उसका विवाह करा देने का वचन देकर उसे रोकना चाहा (१०७), किंतु बीसल देव ने बताया कि उसकी हज़ार स्त्रियाँ हैं, जिनमें से एक उसकी वल्लभा है, जिसका पीहर मांडव और धार में है (१०८)। उड़ीसा के प्रधान अमात्य ने भी उसे समझाया कि वह उड़ीसा में रह जावे, किंतु बीसल देव इस पर तैयार न हुआ (१०९)। उड़ीसा के राजा ने बिदा करते हुए बीसलदेव को प्रचुर धन-राशि तथा बहुमूल्य हीरे-पत्थर दिए (११०)।

बीसल देव ने उड़ीसा से प्रस्थान किया और इसकी सूचना के लिए एक पत्रिका उसने एक योगी के द्वारा अजमेर भेजी जो अपने योग बल से अजमेर

शीघ्र पहुँच सकता था और उसे राजमती की उनहार बताई (१११-११३)। राजमती को शुभ शकुन होने लगे (११४)। योगी अजमेर पहुँच गया (११५) और उसने राजमती को बीसल देव की पत्रिका दी (११६-११७)। योगी ने राजमती को बताया कि तीसरे दिन राजा अजमेर पहुँच जावेगा (११९)।

बीसलदेव अजमेर आ गया (१२०-१२१)। राजमती ने उसके स्वागत के लिए शृंगार किया (१२२)। बारह वर्षों पर स्त्री से पति मिला (१२३)। बारह वर्षों तक छोड़ रखने के संबंध में राजमती ने उसे उलाहने दिये (१२४-१२६), तदनंतर दोनों प्रेमपूर्वक मिले (१२७-१२८)।

रचना में तीन ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम आते हैं : बीसलदेव, राजमती और भोज परमार। बीसल देव (विग्रह राज) नाम के चार शासक हुए हैं किंतु राजमती नाम की कोई रानी ज्ञात नहीं है; बीसल देव (विग्रहराज) तृतीय की रानी का नाम अवश्य सोमेश्वर के बीज्योल्याँ के शिला लेख में राजदेवी मिलता है। हो सकता है कि 'बीसलदेवरास' का कवि इसी राजदेवी को राजमती कहता हो, और उसका बीसलदेव बीसलदेव (विग्रहराज) तृतीय हो, जिसका समय सं० ११५० के लगभग पड़ता है। भोज परमार का समय सं० १११२ के लगभग पड़ता है। इसलिए रचना के तीनों व्यक्ति ऐतिहासिक हैं।[१]

किंतु इस रचना में शेष विवरण जो आते हैं, ऐतिहासिक नहीं हैं। राजमती भोज परमार की कन्या थी, यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। भोज कभी भी सोरठ, मंडोवर, गुजरात आदि का शासक था, यह इतिहास से प्रमाणित नहीं है। अजमेर और जेसलमेर उस समय तक बसे भी नहीं थे। अजमेर सं० ११६५ के लगभग अजयराज के द्वारा बसाया गया था, और जेसलमेर ख्यातों के अनुसार जेसल के द्वारा सं० १२१२ में—किंतु अन्य साक्ष्यों के अनुसार सं० १२५० के लगभग—बसाया गया था। फिर, बीसल देव तृतीय की

१. दे० गौरीशंकर हीराचंद ओझा : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४५ (सं० १९०७), पृ० १६३-१६७।

उड़ीसा-यात्रा भी इतिहास से प्रमाणित नहीं है।[१] इसलिए यह प्रकट है कि रचना का ऐतिहासिक महत्व नगण्य है। वह केवल तीन ऐतिहासिक पात्रों को लेकर प्रचलित किसी किंवदंती पर आधारित अथवा कल्पित रचना है।

८. रचना-तिथि

म० समूह में रचना-तिथि विषयक कोई छन्द नहीं है।

पं० समूह में निम्नलिखित छन्द (पं० २४५) मिलता है :—

संवत सहस सतिहत्तरई जाणि।
नल्ह कवीसरि कही अमृत वाणि।
गुण गुथ्थउ चउहाण का।
सुकल पक्ष पंचमी श्रावण मास।
रोहिणी नक्षत्र सोहामणउ।
सो दिन गिणि जोइसी जोडइ रास ॥

न० समूह में (न० २७७) पहिली पंक्ति का पाठ है :—

संवत सहस तिहुत्तर जाणि।

शेष समस्त पाठ उसमें भी प्रायः पं० समूह का ही है।

अ० समूह में (अ० ३०६) .१,.४,.५ क्रमशः यथा निम्नलिखित हैं :—

संवत तेर सतोत्तरइ जाणि।
सुक पंचमी नइ श्रावण मास।
हस्त नक्षत्र रविवार सुं।

शेष समस्त पाठ प्रायः पं० समूह का ही है।

स० समूह में निम्नलिखित (स० १.६) छंद मिलता है :—

बारह सै बहोत्तराहां मँझारि।
जेठ बदी नवमी बुधवारि।

. . . .

१. दे० राजस्थानी, जनवरी १६४०, पृ० २२; नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४७, (सं० १६६६), पृ० २५५, वही, वर्ष ५४, (सं० २००६), पृ० ४१।

नाल्ह रसाइण आरंभइ ।
सारदा तुठि ब्रह्मकुमारि ।
कासमीरां मुख मंडली ।
रास प्रगासों बीसलदे राइ ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक प्रमुख समूह म० में तिथि-विषयक कोई छन्द नहीं है। पं०, न० तथा अ० समूहों में छन्द ग्रंथ के अंत में आता है और स० समूह में आदि में। पुनः पं०, न० और अ० समूहों के पाठ परस्पर भी भिन्न हैं, और स० समूह के पाठ से वे किसी शब्द में भी साम्य नहीं रखते। पं०, न० और अ० में ही तीन भिन्न-भिन्न तिथियाँ मिलती हैं। ऐसी दशा में पाठालोचन के सिद्धान्तों के अनुसार इनमें से कोई भी मूल का नहीं माना जा सकता है। न० और अ० समूहों को छोड़ देने पर भी म०, पं० तथा स० समूहों में, अन्यथा कम से कम पं० और स० समूहों में, किसी प्रकार का पाठ-साम्य होने पर ही वह पाठ ग्रहण किया जा सकता था, किंतु पं० ही नहीं, स० पाठ के साथ किसी भी अन्य समूह के पाठ का एक शब्द भी नहीं मिलता। ऐसी दशा में रचना-तिथि के छन्द पं० तथा स० समूहों में अलग-अलग स्वतंत्र रूप से प्रक्षेप की भावना से रक्खे गए ज्ञात होते हैं।

पुनः ऊपर दिए गए चार पाठों से कम से कम छः तिथियाँ तो निकलती ही हैं :—

(१) पं० : सं० १०७७।
(२) न० : सं० १०७३।
(३) अ० : सं० १३७७ } 'तेर सतोत्तरइ' से ये दो भिन्न अर्थ लिए
(४) " : सं० १३०७ } जा सकते हैं।
(५) स० : सं० १२७२ } 'बारह सै बहोत्तराहां' से ये दोनों अर्थ लिए
(६) " : सं० १२१२ } जाते हैं।

चैत्रादि और कार्त्तिकादि—दो प्रकार के वर्षों के अनुसार इन छः की बारह तिथियाँ बन जाती हैं, और यदि गत और वर्त्तमान संवत् लिए जावें तो उपर्युक्त से कुल चौबीस तिथियाँ होती हैं। यदि और आगे अमान्त और पूर्णिमान्त

मासों के भेदों पर न भी जाएँ, तो यह चौबीस तिथियाँ क्या कम हैं ? गणना करने पर इन चौबीस में कोई न कोई ठीक निकल ही आवेगी। गणना करके महा-महोपाध्याय स्वर्गीय गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने सं० १२७२ की तिथि को कार्त्तिकादि वर्ष में लेने पर गणना से ठीक बताया।[१] किंतु असंभव नहीं है कि उपर्युक्त चौबीस तिथियों की गणना करके पर दो-एक और भी ठीक निकल आवें। फिर १२७२ का पाठ स० समूह का है जो, पाठ की दृष्टि से यद्यपि अमिश्रित है, किंतु अत्यधिक प्रक्षेप-पूर्ण भी है—वस्तुतः यही समूह सब से अधिक प्रक्षेप-पूर्ण है। ऐसी दशा में इन छंदों के आधार पर ग्रंथ की रचना-तिथि निर्धारित करना उचित नहीं जान पड़ता।

तथ्य जैसा ऊपर कहा जा चुका है यह ज्ञात होता है कि विग्रहराज तृतीय की रानी का नाम राजदेवी था। उसी के संबंध में राजमती नाम से कुछ कहानियाँ समय पाकर प्रसिद्ध हो गईं। फिर भोज परमार आदि से उसे संबंधित कर विग्रहराज तृतीय के बहुत बाद किसी नरपति नाल्ह नामक कवि ने इस ग्रंथ की रचना कर डाली। किंतु कितने बाद उसने यह रचना की, यह प्रश्न फिर भी बना रह जाता है।

एक प्रकार से और इस समस्या पर विचार किया जा सकता है, वह है प्रतियों की पाठ-परंपरा की दृष्टि से। हम ऊपर देख चुके हैं कि इस ग्रंथ के पाठ के तीन मुख्य समूह हैं: म०, पं० तथा स०; न० तथा अ० केवल म० तथा पं० की विभिन्न स्थितियों के मिश्रण से बने हैं। इनमें से म० की प्रति यद्यपि प्राचीन है किंतु उसकी प्रतिलिपि-तिथि अज्ञात है। किंतु पं० समूह की प्राचीनतम प्रति सं० १६६३ की है, और स० समूह की प्राचीनतम प्रति सं० १६६६ की है।

ऊपर हम देख चुके हैं[२] कि मूल आदर्श को लेकर जो लगभग १२८ छन्दों का रहा होगा, पं० तक पहुँचने में पाठ-विकास की कम से कम चार स्थितियाँ पड़ती हैं : (१) उस पाठ की जो लगभग १२८ छन्दों का रहा होगा,

---

१. गौरी शंकर हीराचंद ओझा : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४५ (सं० २९९७), पृ० १६३-१६७।

२ देखिए ऊपर के 'प्रतियों का पाठ-संगठन' तथा 'पाठ-संबध' शीर्षक।

(२) ४३ छन्द युक्त उस पाठ की जो उसमें म० के किसी पूर्वज के प्रभाव से आए होंगे, (३) ७४ छंद युक्त उस पाठ की जो पं० में अपने प्रक्षेपों के रूप में बढ़ते रहे होंगे, और जिन्होंने पाठ को उस स्थिति तक पहुँचाया होगा जहाँ से उसके आधार पर न० समूह के पाठ का विकास हुआ, और (४) ३ छंद युक्त उस पाठ की जो अ० समूह के विकास के पूर्व पं० समूह में आ मिले होंगे। इसी प्रकार लगभग १२८ छन्दों के मूल आदर्श को लेकर स० तक पहुँचने में पाठ-विकास की कम से कम छः स्थितियाँ पड़ती हैं : (१) उस पाठ की जो १२८ छन्दों का रहा होगा, (२) २१ छंद युक्त उस पाठ की जो म० की उस स्थिति की पाठ-वृद्धि में सहायक हुआ जिससे न० समूह का निर्माण हुआ, (३) ६ छंद युक्त उस पाठ की जो म० की उस स्थिति की पाठवृद्धि में सहायक हुआ जिससे अ० समूह का निर्माण हुआ, (४) ३ छंद युक्त उस पाठ की जो उसके अनंतर भी म० की पाठ-वृद्धि में सहायक हुआ, (५) १४१ छंद युक्त उस पाठ की जो प्र० के अलग होने तक स० समूह की पाठ-वृद्धि में सहायक हुआ, और (६) १६ छंद युक्त उस पाठ की जो स० प्रति की अपनी पाठ-वृद्धि का कारण हुआ।

इस प्रकार पं० की चार स्थितियाँ और स० की छः स्थितियाँ तो निश्चित रूप से ज्ञात हैं। असंभव नहीं है कि और अधिक प्रतियाँ प्राप्त होने पर इस प्रकार की एक-दो अधिक स्थितियाँ और प्रकाश में आवें।

अब यदि प्रत्येक स्थिति के लिए औसत अवधि ५० वर्ष की रक्खें—जो मेरी समझ में अधिक नहीं है—तो स० पाठ-परंपरा के अनुसार रचना की प्रथम प्रति का काल सं० १३६६ और पं० की पाठ-परंपरा के अनुसार रचना की प्रथम प्रति का काल सं० १४३३ के लगभग ठहरता है। अतः 'बीसल देव रास' की रचना दोनों के बीच की तिथि सं० १४०० के लगभग हुई मानी जा सकती है।

जिन स्थानों के नाम 'बीसलदेव रास' (प्रस्तुत संस्करण) में आते हैं, उनमें से कोई भी सं० १४०० के बाद का नहीं प्रमाणित हुआ है, इसलिए इस तिथि के सम्बन्ध में कोई ऐतिहासिक अड़चन भी नहीं ज्ञात होती है।

ग्रन्थों के रचना-काल पर भाषा की दृष्टि से भी विचार किया जाता है। श्री अगरचंद नाहटा ने ग्रन्थ की भाषा की दृष्टि से लिखा है : "बीसल देव रासो की भाषा सोलहवीं-सत्रहवी शताब्दी की राजस्थानी भाषा है। जिन विद्वानों ने ग्यारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक की राजस्थानी भाषा का अध्ययन किया है, उनका यह मत हुए बिना नहीं रह सकता। ग्रंथ में प्राचीन भाषा का अंश बहुत कम—नहीं के बराबर है।" और इस प्रसंग में पाद-टिपणी में उन्होंने एक सुझाव यह भी दिया है कि सोलहवीं शताब्दी में नरपति नामक एक जैन कवि हुआ है, जिसका उल्लेख 'जैन गुर्ज्जर कविओ' भाग १ में हुआ है; असंभव नहीं कि 'बीसलदेव रास' का रचयिता भी वही हो।[१]

मेरा अपना विचार है कि उपर्युक्त कारणों से यह मानना असंभव है कि 'बीसलदेव रास' सोलहवीं शताब्दी के किसी कवि की रचना है। उसकी भाषा के आधार पर जो परिणाम नाहटा जी ने निकाला है, उसके विषय में यह जान लेना चाहिये कि जिन प्रतियों की भाषा के आधार पर उन्होंने यह परिणाम निकाला है, उनमें ग्रंथ के पाठ की अंतिम स्थितियों तक के प्रक्षिप्त छंद मिले हुए हैं, जिनकी संख्या मूल से भी अधिक है। यह पाठवृद्धि सोलहवीं-सत्राहवीं शताब्दी तक की हुई हो सकती है, इसलिए ग्रंथ के अंतिम रूपों के आधार पर उनका अनुमान बहुत गलत नहीं कहा जा सकता। किन्तु प्राचीन ग्रन्थों का काल-निर्धारण प्रायः उन अंशों की भाषा के आधार पर किया जाना चाहिए जिनमें भाषा का प्राचीनतम रूप में पाया जाता है, क्योंकि प्रतिलिपियों के होते-होते भाषा का रूप कुछ का कुछ हो जाता है। और प्रस्तुत संस्करण के पाठ की भाषा को सं० १४०० के आस-पास की किन्हीं भी राजस्थानी रचनाओं की भाषा से मिलाकर यह बात देखी जा सकती है कि 'बीसलदेव रास' की भाषा लगभग उन्हीं के जैसा है।[२]

---

१. राजस्थानी, जनवरी १९४०, पृ० २१।

२. दे० तैस्सितोरी : 'पुरानी राजस्थानी' नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, तथा ग्रियर्सन : 'ओल्ड गुजराती ग्रामर', 'लिंग्विस्टिक सर्वे आव इंडिया, भाग ९, खंड २, पृ० ३५३-३६४।

जहाँ तक गुजरात के नरपति और 'बीसलदेव रास' के रचयिता नरपति नाल्ह के एक होने का प्रश्न है, यह नहीं कहा गया है कि गुजरात के 'नरपति' ने भी अपने को कहीं 'नाल्ह' कहा है, जबकि 'बीसलदेव रास' का रचयिता अपने को 'नाल्ह' कहता है। फिर जो पंक्तियाँ तुलना के लिए दोनों कवियों से दी गई हैं, उनमें से चार तो इस संस्करण में प्रक्षिप्त माने गए छंदों की हैं, और शेष तीन पंक्तियों में जो साम्य है वह साधारण है; उस प्रकार का साम्य देखा जावे तो मध्ययुग के किन्हीं भी दो कवियों की रचनाओं में मिल सकता है। फिर 'बीसलदेव रास' में न जैन नमस्क्रिया है और न कोई अन्य बात मिलती है जिससे इसका लेखक जैन प्रमाणित होता हो। केवल आंशिक नाम-साम्य के आधार पर इस रचना को सोलहवीं-सत्राहवीं शती के किसी जैन लेखक की कृति मानना तटस्थ बुद्धि से संभव नहीं ज्ञात होता है।

६. रासक तथा रास काव्य-परंपराएँ और बीसलदेव रास

'रास', 'रसायन', 'रासक', 'रासा' और 'रासो' कही जाने वाली रचनाएँ अपभ्रंश तथा हिंदी साहित्य में दो प्रकार की मिलती हैं : एक प्रकार की बहु रूपक (छंद) निबद्ध हैं—उनमें अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ मिलता हैं, और उनमें छंद-परिवर्तन द्रुत गति से होता दिखाई पड़ता है; दूसरे प्रकार की रचनाएँ अल्प रूपक (छंद) निबद्ध हैं—उनमें दो-चार प्रकार के छंद ही प्रयुक्त मिलते हैं और छंद-परिवर्तन केवल एकरसता-निवारण के लिए अत्यल्प मात्रा में किया गया दिखाई पड़ता है। दोनों परंपराओं का एक संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेने पर उनका भेद स्पष्ट हो जावेगा।

बहु रूपक निबद्ध परंपरा

(१) इस परंपरा की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति अपभ्रंश की 'संदेश रासक' है। इसका रचयिता एक मुसलमान कवि अब्दुल रहमान है। कृति के संपादक मुनि जिन विजय जी के अनुसार यह रचना शहाबुद्दीन गोरी के

१. संपादक-मुनि जिन विजय, प्रकाशक भारतीय विद्याभवन, बम्बई।

आक्रमण के पूर्व की होनी चाहिए। इसमें विजयनगर (जेसलमेर) की एक विरहिणी की विरह गाथा वर्णित हुई है, जो वह एक पथिक के द्वारा अपने प्रवासी पति के पास भेजना चाहती है, किंतु जैसे ही यह पथिक उसका संदेश लेकर आगे बढ़ता है, उसका पति प्रवास से लौटता दिखाई पड़ता है और दंपति आनंद-पूर्वक मिलते हैं।

इसका कवि, जैसा उसने स्वयं लिखा है, प्राकृत काव्य तथा गीत-विषय में प्रसिद्ध हो चुका था जब उसने इस बहु रूपक निबद्ध प्रबंध काव्य की रचना की—

पच्चाएसि पहूओ पुव्व पसिद्धो य मिच्छ देसोत्थि।
तह विसए संभूओ आरद्दो मीर सेणस्स ॥ ३ ॥
तह तणओ कुल कमलो पाइअ कव्वेसु गीय विसयेसु।
अद्दहमाण पसिद्धो संनेहयरासयं रइयं ॥ ४ ॥

यह रचना केवल २२३ छंदों की है, किन्तु इतने में ही २२ प्रकार के छंदों का प्रयोग निरंतर छंद-परिवर्तन करते हुए किया गया है। इन छंदों में सर्वाधिक प्रयुक्त छंद रासा या आहाणक है। स्वयं कवि ने एक स्थान पर इस रचना में इस बहु रूपक निबद्ध रासक-परंपरा का उल्लेख किया है : नगर-वर्णन करते हुए वह कहता है—

विविह विअक्खण सत्थिहि जइ पविसइ णिरु।
सुम्मइ छंदु मणोहरु पायउ महुरयरु।
कहव ठाइ चउवेइहि वेउ पयासियइ।
कह बहु रुवि णिबद्धउ रासउ भासियइ ॥ ४३ ॥

अर्थात्—यदि कोई विविध विचक्षणों के साथ नगर में प्रविष्ट हो, तो वह प्राकृत के मनोहर और मधुरतर छंद सुनेगा। किसी स्थान पर चतुर्वेदी-गण द्वारा वेद प्रकाशित होता होगा तो कहीं बहु रूपक निबद्ध रासक भाषित होता होगा।

(२) सं० १४०० के लगभग रचा गया[1] 'पृथ्वीराज रासो' भी इसी परंपरा की रचना है। इसकी सर्वप्रमुख कथाएँ पृथ्वीराज द्वारा अपने मंत्री कयंबास-बध, संयोगिता के लिए जयचंद-पृथ्वीराज युद्ध, शहाबुद्दीन-पृथ्वीराज युद्ध, तथा पृथ्वीराज के प्राणांत की हैं। 'पृथ्वीराज रासो' के छोटे बड़े चार-पाँच पाठ मिलते हैं, किन्तु सभी में ये कथाएँ पाई जाती हैं। आकार-वृद्धि के साथ-साथ छंद-वैविध्य भी अधिकाधिक होता गया है। किंतु सबसे छोटे आकार के पाठ में भी, जो लगभग सवा चार सौ रूपकों का है, बीसों प्रकार के छंद प्रयुक्त हुए हैं, और छंद-परिवर्तन द्रुतगति से हुआ है।

(३) प्रायः इसी समय का रचा हुआ जल्ह का 'बुद्धि रासो' भी इस परंपरा की एक प्राचीन रचना है। इसमें एक विरहिणी प्रेमिका की कथा है, जिसका प्रेमी राजकुमार उसे छोड़कर राजकार्य से कुछ दिनों के लिए चला जाता है और अवधि समाप्त होने पर भी लौटता नहीं है। इस पर प्रेमिका की माता उसे उसके प्रेम-मार्ग से विरत करना चाहती है, किंतु प्रेमिका अपनी प्रेम-निष्ठा में अविचल रहती है; तब तक उसका प्रेमी राजकुमार वापस आ जाता है और दोनों का आनंदपूर्ण सम्मिलन होता है। यह रचना कुल १४० छंदों में समाप्त हुई है, किन्तु इतने आकार में ही कम से कम १०-१२ प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है।[2]

(४), (५) इस परंपरा की प्राचीन रचनाओं में दो और भी ऐसी हैं जो उल्लेखनीय हैं: वे हैं 'मुंज रास', तथा 'हम्मीर रासो'। इन नामों की रचनाएँ अभी तक नहीं मिली हैं, किंतु मुंज तथा हम्मीर के संबंध के जो छंद कतिपय प्राचीन ग्रंथों में मिले हैं वे संख्या में अत्यल्प होते हुए भी वैविध्य पूर्ण हैं। मुंज के संबंध के छंद हेमचंद्र के प्राकृत व्याकरण, मेरुतुंग के

१. दे० प्रस्तुत लेखक द्वारा संपादित और साहित्यसदन, चिरगाँव से प्रकाशनीय 'पृथ्वीराज रासो' की भूमिका।

२. दे० पं० मोती लाल मेनारिया : 'राजस्थान में हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज', भाग १, पृ० ०६

'प्रबंध चिन्तामणि'[1] तथा एक जैन संकलन-कर्त्ता के एक प्राचीन प्रबंध-संग्रह में उद्धरणों के रूप में मिले हैं।[2] हम्मीर-विषयक छंद नागकृत 'प्राकृत पैंगल' में अनेक वृत्तों के उदाहरण के रूप में दिए हुए हैं।[3] मुंज-विषयक छंद प्रायः मृणालवती से उस के प्रेम के हैं, जिसकी कथा उपर्युक्त जैन प्रबंधों के अनुसार संक्षेप में इस प्रकार है। तैलप से युद्ध में पराजित होकर मुंज बंदीगृह में तैलप की विधवा भगिनी मृणालवती से प्रेम करने लगता है, और जब उसके भृत्य उसको बंदीगृह से निकाल भगाने की योजना बनाते हैं, वह मृणालवती को लेकर भागने के लिए उससे प्रस्ताव करता है। मृणालवती अपकीर्ति के भय से भागना नहीं चाहती है और यह भी चाहती है कि मुंज बंदीगृह में बना रहे जिससे उसका प्रेम-व्यापार चलता रहे, इसलिए वह इस षड़यंत्र का भेद तैलप को बता देती है। तैलप षड्यंत्र समाप्त कर मुंज को अत्यंत अपमानित करता है और फिर उसे हाथी से कुचलवा कर मरवा डालता है। हम्मीर-संबंधी छंद प्रायः उसके युद्धों के संबंध के हैं।

हिंदी के मध्य युगीन साहित्य में तो अनेकानेक रचनाएँ इस परंपरा की मिलती हैं, जिनमें से महत्व की दृष्टि से सर्वाधिक उल्लेखनीय निम्नलिखित हैं: 'परमाल रासौ',[4] जो चंद की रचना कही गई है, एक अज्ञात लेखक कृत 'राउ जैतसी रासा'[5], नल्लसिंह कृत, 'विजयपाल रासौ',[6] माधवदास चारण रचित 'राम रासौ'[7], दयाल कृत 'राणा रासौ',[8] कुंभकर्ण कृत

१. मेरु तुंग : प्रबंध चिंतामणि (सिंघी जैन ग्रंथमाला) पृ० २१-२५।
२. मुनि जिन विजय संपा० : पुरातन प्रबंध संग्रह (सिंघी जैन ग्रंथमाला) पृ० १३-१५।
३. संपा० चंद्र मोहन घोष, प्रकाशक एशियाटिक सोसाइटी बंगाल : मात्रावृत्त ७१, ९२, १०६, १४७, १५१, १९०, २०४, वर्णवृत्त १८३।
४. संपा० श्यामसुन्दर दास, प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
५. संपा० नरोत्तम दास स्वामी, राजस्थान भारती, भाग २, अंक २, पृ० ७०।
६. मुंशी देवी प्रशाद मुंसिफ द्वारा संपादित 'कविरत्नमाला' में संकलित।
७. पं० मोतीलाल मैनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० १४३।
८. वही : 'राजस्थान में हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज', भाग १, पृ० ११९।

'रतन रास'[1], जानकवि कृत 'कायम रासौ'[2], डूंगरसी रचित 'शत्रुसाल रासौ'[3], कान्ह रचित 'मांकण रासो'[4], गिरधर चारण रचित 'सगत सिंह रासो'[5], जोधराज रचित 'हम्मीर रासो', [6] दलपति विजय रचित 'खुमाण रासौ' [7], सदानंद कृत 'रासा भगवंत सिंह' [8], गुलाब कृत 'करहिया कौ रायसौ' [9], शिवनाथकृत 'रासा भइया बहादुर सिंह का' [10], तथा 'रायसा' [11], और महेश कवि कृत 'हम्मीर रासो'[12]। इन रचनाओं का विवरण देना यहाँ न संभव ही होगा और न आवश्यक ही।[13] से सभी रचनाएँ छंद-वैविध्य युक्त हैं और परिनिष्ठित काव्य की दृष्टि से रची गई हैं। अतः शुद्ध साहित्य की दृष्टि से इस परंपरा की प्रायः सभी रचनाएँ अत्यंत संपन्न हैं। अलग-अलग इन रचनाओं का आकार-प्रकार तथा विषय-वैविध्य भी दर्शनीय है।

अल्प रूपक निबद्ध परंपरा

(१) इस परंपरा की सबसे प्राचीन प्राप्त रचना जो अपभ्रंश की है, जिन-

१. 'राजस्थान में हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज', भाग ४, पृ० २२४।
२. प्रकाशक—राजस्थान पुरातत्व मंदिर, जयपुर।
३. पं० मोती लाल मेनारिया, 'राजस्थानी भाषा और साहित्य', पृ० १५८।
४. संपा० अगर चंद नाहटा : राजस्थान भारती, भाग ३, अंक ३-४, पृ० ९७-१००।
५. संपा० अगर चंद नाहटा : 'राजस्थान में हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज' भाग ३, पृ० १०७
६. प्रकाशक—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
७. पं० मोती लाल मेनारिया : नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सं० २००९, पृ० ३५४।
८. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ५, पृ० ११४-१३१।
९. वही, भाग १०, पृ० २७८।
१०. हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों का खोज-विवरण (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी) १९२०—२२, नो० १८२।
११. वही।
१२. वही, १९०७—११, सू० २६३।
१३. विस्तृत विवरण के लिए दे० प्रस्तुत लेखक लिखित 'रासोकाव्य धारा' : हिंदी साहित्य, भाग २, पृ० ९९-१३७, प्रकाशक—भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग।

दत्त सूरि रचित 'उपदेश रसायन' है।[१] यह सं० १२०० के लगभग की कृति है। इसमें चउपई छंद ही प्रयुक्त हुआ है, और रचना ३२ छंदों में समाप्त हुई है। इसका विषय जैन धर्मोपदेश है।

(२) इस परंपरा की एक दूसरी प्राचीन और महत्वपूर्ण रचना शालिभद्र सूरि की 'भरतेश्वर बाहुबली रास' है।[२] इसमें राज्य के लिए भरतेश्वर और बाहुबली के बीच हुए युद्ध की पौराणिक जैन कथा है। इसकी रचना सं० १२४१ में हुई थी। इसका छंद-विधान गीतिपरक है, और छंद-वैविध्य की दृष्टि रचना में नहीं है।

(३) शालिभद्र सूरि की एक अन्य रचना 'बुद्धि रास' भी इसी परंपरा में आती है।[3] इसमें जैन धर्म के सिद्धान्तों का उपदेश किया गया है।

(४) आसगु की 'जीयदया रास' भी जो सं० १२५७ की रचना है, इसी परंपरा में आती है।[४] इसका विषय नाम से ही प्रकट है।

(५) आसगु की एक अन्य रचना 'चन्दन बाला रास' में चंदनबाला की जैन धार्मिक कथा है। यह चौपई-दोहों में कही गई है।[५]

(६) धर्म सूरि की इस परंपरा की एक कृति 'जंबू स्वामी रासा', जो सं० १२६६ की कृति है, जैन महात्मा जंबू स्वामी के चरित को लेकर लिखी गई है।[६]

(७) विजय सेन सूरि की इस परंपरा की एक कृति 'रेवंत गिरि रास', जो सं० १२८८ के लगभग की रचना मानी गई है, गिरिनार के जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार का वृत्त प्रस्तुत करती है।[७]

---

१. दे० अपभ्रंश काव्य त्रयी, गायकवाड़ ओरिएंटल सीरीज, बड़ौदा।
२. संपा० मुनि जिन विजय, प्रकाशक—भारतीय विद्याभवन, अंधेरी, बम्बई।
३. वही।
४. दे० मंजुलाल मजमुदार : गुजराती साहित्य ना स्वरूपो, पद्य विभाग, पृ० ८१६।
५. संपादक अगरचंदनाहटा : राजस्थान भारती, भाग ३, अंक ३-४, पृ० १०६-११२।
६. दे० नाथूराम प्रेमी : हिंदी जैन साहित्य, पृ० २५।
७. सी० डी० दलाल संपादित प्राचीन गूर्जर काव्य संग्रह, भाग १, पृ० १।

(८) पाल्हण की 'नेमि जिणंद रासो' या 'आबू रास' नामक कृति भी, जो सं० १२८९ की रचना है, इसी परंपरा की रचना है। इसमें चउपई-दोहा तथा एकाध ही अन्य छंद का प्रयोग हुआ है।[१]

(९) देल्हणि कृत 'गय सुकुमाल रास', जो सं० १३०० के लगभग की कृति मानी गई है, गय सुकुमार के धार्मिक चरित्र को लेकर लिखा गया है। इसमें चउपई तथा एकाध स्थान पर एक-दो अन्य छंदों का प्रयोग हुआ है।[२]

(१०) 'सप्त क्षेत्रिरासु', जो सं० १३२७ की एक अज्ञात लेखक की कृति है, और सप्तक्षेत्रों—जिन मंदिर, जिन प्रतिमा, ज्ञान, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका की उपासना का प्रतिपादन करती है, ११९ छंदों की रचना है, किन्तु कुल तीन-चार प्रकार के छंदों में रची गई है।[३]

(११) मंडलिक कृत 'पेथड रास' जो सं० १३६० की कृति है, जैन संघपति पेथड के चरित्र को लेकर लिखी गई है। यह रचना ६५ छंदों की है और यह भी तीन-चार प्रकार के छंदों में ही निर्मित हुई है।[४]

(१२) एक अज्ञात लेखक की इस परंपरा की रचना 'कच्छूली रास', जिसका समय सं० १३६३ है, जैन तीर्थ कच्छूली ग्राम का वर्णन करती है। यह कुल ३५ छंदों की है और इसमें भी तीन-चार प्रकार के ही छंद प्रयुक्त हुए हैं।[५]

(१३) अंबदेव सूर कृत 'समरा रास', जो सं० १३७१ के कुछ ही बाद की कृति मानी जाती है, जैन संघपति समरा के चरित्र को लेकर रची गई है। इसमें कुल ११० छंद हैं, किन्तु तीन-चार ही प्रकार के छंद प्रयुक्त हुए हैं।

---

१. दे० राजस्थानी, भाग ३, अंक १, पृ० ८३।

२. दे० राजस्थान भारती, भाग ३, अंक २, पृ० ८७।

३. सी० डी० दलाल संपादित प्राचीन गूर्जरकाव्य, भाग १।

४. वही।

५. वही।

६. वही।

यह परंपरा और आगे तक भी पश्चिमी राजस्थानी तथा गुजराती में मिलती है, किंतु कोई उल्लेखनीय नवीनता इसमें नहीं दिखाई पड़ती है, इसलिए इसका और आगे का विवरण देना अनावश्यक होगा।

इस परंपरा की प्रवृत्तियाँ नितांत प्रकट हैं। प्रायः यह समस्त परंपरा धार्मिक प्रचार और धर्मानुभूति का आधार लेकर आगे बढ़ी है। इसमें शुद्ध साहित्यिक दृष्टि नहीं दिखाई पड़ती है। प्रायः रचनाएँ बहुत छोटी हैं, और उनमें छंद-वैविध्य की दृष्टि का तो सर्वथा अभाव है। इनमें से कुछ गीति-परक भी हैं, और प्रायः कण्ठस्थ करके विभिन्न पर्वों पर तथा तीर्थ-यात्रादि पर संगीत तथा नृत्य के साथ प्रस्तुत की जाती रही हैं। उपर्युक्त अभावों के साथ-साथ आकार-प्रकार तथा विषय संबंधी वैविध्य का अभाव भी इस परंपरा की रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

'बीसल देव रास' इन दोनों परंपराओं में से किसमें आती है यह विचारणीय है। इसमें भी छन्द-वैविध्य नहीं है। आरंभ से अन्त तक एक ही प्रकार के गेय छन्द का प्रयोग किया गया है, और पूरी रचना केदारा राग में गाए जाने के लिए रची गई है, जिसका उसके प्रारंभ में ही निर्देश कर दिया गया है। इसलिए यह रचना अल्प रूपक निबद्ध रास-परंपरा में ही आती है, यह प्रकट है। फिर भी यह उस परंपरा में एक प्रकार से अपवाद-स्वरूप ही आती है। न यह धार्मिक है, न यह जैन कृति है, और न यह साहित्यिक गुणों से किसी प्रकार से हीन है। अवश्य ही इस प्रकार की और भी रचनाएँ इस परंपरा में रही होंगी : समाज केवल शुष्क धर्म पर—केवल व्रत, उपवास, और फलाहार पर नहीं जीता है, वह कुछ बल-वीर्यवर्द्धक तथा रुचिकर भोजन भी चाहता है। किन्तु वे सुरक्षित नहीं रह सकी हैं, और नाल्ह की यह रचना अपवाद-स्वरूप ही हमें मिलती है। किन्तु अपने साहित्यिक महत्व की दृष्टि से इस परंपरा की रचनाओं में यह अप्रतिम है। यह एक भावुक कवि की सरस कल्पना से प्रस्तुत ऐसे स्वस्थ प्रणय की कथा है जिसमें जीवन का तरल रस प्रवाहित हो रहा है।

दोनों परंपराओं के उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से ज्ञात होगा कि प्रथम परंपरा परिनिष्ठित साहित्य की थी और दूसरी धार्मिक अथवा लोक-साहित्य की थी। पहली परंपरा की रचनाओं के लोकप्रिय होने का उल्लेख अब्दुल रहमान ने तो किया ही है, प्राकृत-अपभ्रंश के साहित्य शास्त्रियों यथा विरहाङ्क तथा स्वयंभू ने भी 'रासक' तथा 'रासाबंध' नाम से इस काव्य-परंपरा का लक्षण-निर्देश किया हे।

विरहाङ्क ने लिखा है—

अडिलाहिं दुवहएहिं व मत्तारड्डुहि तथाअ ढोसाहिं।
बहुएहिं जो रइज्जइ सो भरणइ रासओ णाम॥

अर्थात्—जिसमें अडिल्ला, दोहा, मात्रा रड्डा और ढोसा आदि बहुतेरे छंद पाए जाते हैं, ऐसी रचना 'रासक' कहलाती है।

इसी प्रकार स्वयंभू ने लिखा है—

घत्ता छड्डणिआहिं पद्धडिआ सुअरण्ण रूएहि।
रासा बंधो कव्वे जणमण अहिरामो होइ॥

अर्थात्—काव्यों में 'रासाबंध' अपने घत्ता, छप्पय, पद्धडी तथा अन्य रूपकों के कारण जन-मन-अभिराम होता है।

किन्तु दूसरी परंपरा का कोई उल्लेख प्राचीन लक्षण-ग्रन्थों में नहीं मिलता है, जिससे यह प्रकट है कि या तो उस परंपरा का उस समय विकास नहीं हुआ था और या तो उसका कोई साहित्यिक महत्व नहीं समझा जाता था। फलतः यदि उसमें 'बीसलदेव रास' जैसी सरस रचनाएँ उसमें अपवाद-स्वरूप मिलें तो आश्चर्य न होगा।

उपर्युक्त विवेचन से यह भी ज्ञात हुआ होगा कि दोनों परंपराओं को एक दूसरे से अलग रखना ही उचित है, इसीलिए अच्छा यह होगा कि हम उन्हें अलग-अलग नामों से अभिहित करें। बहुरूपक निबद्ध काव्यरूप को विरहांक ने रासक (∠ रासक) कहा है, स्वयंभू ने रासाबंध (∠ रासक+बंध) कहा है; अब्दुल रहमान ने अपनी रचना को रासय (∠ रासक) तथा

भाषित होने वाले इस काव्यरूप को रासउ (∠ रासकु ∠ रासक) कहा है; इस परंपरा की शेष रचनाएँ भी 'रासा' तथा 'रासउ' अथवा 'रासौ' नामों से मिलती हैं, इसलिए इन्हें इन्हीं नामों से पुकारना चाहिए। दूसरी परंपरा की प्रायः रचनाएँ 'रास' और 'रसायन' नामों से मिलती हैं, अतः उन्हें 'रास' और 'रसायन' नामों से पुकारा जा सकता है।

सामान्यतः यह समझा जाता रहा है कि इन काव्यरूपों का संबंध विशेष रसों, विशेष प्रकार की कथावस्तुओं, विशेष प्रकार के कथा-नायकों और विशेष प्रकार के रचयिताओं से रहा है। रासौ काव्यों के संबंध में यह एक प्रचलित धारणा रही है कि उनमें प्रमुख रस वीर होता है, जिसके सहायक के रूप में शृंगार की भी अवतारणा की जाती रही है; उनमें युद्ध की कथा प्रधान रूप में होती रही है, और मध्ययुग में युद्धों का एक प्रमुख कारण विवाह होता रहा है, इसलिए उनमें विवाहों का भी वर्णन होता रहा है ; उनके नायक राजा होते रहे हैं जो मध्ययुग में अनेक कारणों से आपस में लड़ते-भिड़ते रहे हैं; और उनके रचयिता उनके आश्रित चारण या भाट होते रहे हैं जो उनकी प्रशस्ति में इस प्रकार के काव्यों की रचना करते रहे हैं; वे उनके साथ युद्धों में भी जाते रहे हैं, और न केवल उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते रहें हैं, स्वयं उनके साथ-साथ युद्ध करते हुए आवश्यकता पड़ने पर प्राणोत्सर्ग भी करते रहे हैं। इसी कारण हिंदी साहित्य के आदि काल में जब रासौ ग्रंथ ही पहले मिले, उसे चारण काल अथवा वीरगाथा काल की संज्ञा दे दी गई।

किन्तु ऊपर बहु रूपक निबद्ध रासक-परंपरा का जो संक्षिप्त परिचय दिया गया है, उस पर यदि ध्यान दिया जावे तो ये समस्त धारणाएँ निराधार प्रमाणित होंगी। उदाहरण के लिए अब्दुल रहमान कृत 'संदेश रासक,' तथा जल्ह कृत 'बुद्धि रासो' शृंगार रस की रचनाएँ हैं : इनमें वीर रस का नाम भी नहीं है। कान्ह रचित 'मांकण रासो' मत्कुण (खटमल) के कृत्यों का गुण-गान करता हुआ हास्य रस का काव्य है। माधवदास चारण का 'राम रासो' राम-

चरित्र से संबंधित मुख्यतः शांत रस का काव्य है। 'पृथ्वीराज रासौ' नवरस युक्त महाकाव्य है : उसके अंत में कहा गया है—

रासउ असंभु नवरस सरस चंदु छंदु किअ अमिअ सम।
शृंगार वीर करुणा विभछ भय अद्भुत्त हसंत सम॥

अतः यह समझना कि 'रासौ' वीर रस का ही कोई काव्यरूप है, ठीक नहीं है। ठीक यही बात कथानक के संबंध में भी लागू होती है : 'संदेश रासक', 'बुद्धि रासो' और 'माकंण रासो' में से एक भी युद्ध विषयक काव्य नहीं है। कथानायक का राजा होना भी इसी प्रकार आवश्यक नहीं है; जब मत्कुण (खटमल) तक उसका नायक हो सकता है, तो और किसी के होने की संभावना प्रकट ही है; रचयिताओं में से चारण इने-गिने ही हैं : 'संदेश रासक' का कवि अब्दुल रहमान जुलाहे मीरसेन का पुत्र था; 'कायम रासो' का लेखक जान भी मुसलमान था, 'शत्रुसाल रासौ', 'मांकण रासो', 'हमीर रासो' 'खुमाण रासो', 'रासाभगवंत सिंह', 'करहिया कौ रायसौ', आदि के रचयिता भी चारण नहीं थे। इनमें से अनेक काव्य कथानायकों के समय के हैं भी नहीं, बहुत पीछे के रचे हुए हैं।

इसी प्रकार 'रास' के संबंध में यह धारणा रही है कि वह कोमल भावनाओं का काव्य रूप रहा है। किंतु एक मात्र 'बीसलदेव रास' ही शुद्ध शृंगार का काव्य इस परंपरा में मिलता है, शेष काव्य जैन धर्म से संबंधित होने के कारण शांत रस के हैं, जिनमें से 'भरतेश्वर बाहुबली रास' में वीर रस का भी अच्छा परिपाक हुआ है। अनेक में तो कोई कथावस्तु भी नहीं है : जैसे 'उपदेश रसायन रास', 'बुद्धि रास', 'जीवदया रास', 'रेवंत गिरि रास', 'सप्तक्षेत्रि रासु' तथा 'कच्छूली रास' में।

अब इन भ्रमपूर्ण और निराधार धारणाओं को हमें त्याग देना चाहिए। 'रासक' या 'रासो' के संबंध में तो यह अब निश्चित ही हो गया है कि वह एक छंद-वैविध्य प्रधान काव्यरूप था और इसी रूप में वह प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य काल से हिंदी के रीति काल तक विकसित होता रहा। 'रास' अथवा

'रसायन' काव्यरूप के संबंध में अभी और अधिक खोज तथा अध्ययन अपेक्षित है। आशा है कि पुरानी पश्चिमी राजस्थानी और गुजराती के विद्वान् 'रास'-रसायन' परंपरा की रचनाओं का विश्लेषण करने और उस काव्य रूप के आधारभूत तत्वों का निर्धारण करने में दत्तचित होंगे।

१०. बीसल देव रास का काव्यत्व

'बीसल देव रास' एक खंड काव्य है: उसमें बीसल देव तथा राजमती के जीवन की एक ही घटना को पल्लवित किया गया है: वह है बीसल देव का राजमती की एक बात से रूठ कर उडीसा चला जाना और बाहर वर्षों के अनंतर पुनः राजमती के बुला भेजने पर वापस लौटना। यह घटना नायक-नायिका के जीवन की एक वैयक्तिक घटना के रूप में ही प्रस्तुत की जाती है, किसी और विशाल परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत नहीं की जाती है। बीसल देव एक वैभव शाली राजा है, किंतु उस के प्रवास से उसके राज्य पर क्या बीतती है, उसकी प्रजा की क्या दशा होती है, और समाज उसके प्रवास को किस दृष्टि से देखता है—आदि बातें काव्य का वर्ण्य नहीं बनती हैं। उसका यह प्रवास किसी महत् उद्देश्य से होता भी नहीं होता है, केवल उड़ीसा से हीरे लाने के लिए होता है। उद्देश्य की प्राप्ति में भी किसी महत् साधन या उपाय का अवलंबन नहीं लिया जाता है, बीसल देव उड़ीसा जाकर चुपचाप वहाँ की राजसेवा में प्रविष्ट हो जाता है, और बारह वर्षों के अनंतर अजमेर वापस होने के समय जब अपना वास्तविक व्यक्तित्व प्रकट करता है, उसके सम्मानार्थ उड़ीसे का राजा रत्नराशि देकर उसे विदा करता है। फलतः रचना किसी भी दृष्टि से महान् नहीं कही जा सकती है। किंतु अपनी सीमित परिधि में वह अवश्य ही सरस, ललित और कलापूर्ण है।

कथा का नायक बीसल देव है और उसकी नायिका राजमती है किंतु काव्य नायक-प्रधान न होकर वस्तुतः नायिका-प्रधान है। कवि ने इसी नायिका के व्यक्तित्व को भली भाँति उभाड़ा है, और निस्संदेह अपने कुछ विशिष्ट गुणों के कारण वह हिंदी साहित्य का एक सर्वप्रिय चरित्र बन गई है।

राजमती एक नव विवाहिता पत्नी के रूप में हमारे सामने आती है : वह बीसल देव के स्वभाव से अभी परिचित नहीं है, फलतः जब बीसल देव उसके सामने डींग हाँकने लगता है कि—

मो सारिषउ नहीं अवर भूआल । २८ ।

वह यह भूल कर बैठती है कि उसकी हाँ-में-हाँ न मिला कर कह पड़ती है कि उसे गर्व न करना चाहिए क्योंकि उसके समान अनेक भूपाल हैं, जिनमें से एक तो उड़ीसा- पति ही हैं, जिसके राज्य में उसी प्रकार खानें हीरे उगलती हैं जिस प्रकार उसके राज्य में साँभर की झील नमक उगलती है—

गरब न करि हो सइंभरिवाल ।
तो सारिषा अवर घणा रे भूआल ।
एक उडीसा कउ धणी ।
वचन दुइ म्हांका माणि म माणि ।
जिउं थारइ सइंभरि उग्रहइ ।
तिउं आं घरि उग्रहइ हीरा कइ षांणि ॥ २६ ॥

बस इतनी सी ही बात पर बीसल देव रूठ पड़ता है और बारह वर्ष तक के लिए उसे छोड़ कर उडीसा जाने और हीरे की खानें लाने की प्रतिज्ञा कर बैठता है (छंद ३५)। यहाँ विचारणीय यह है कि राजमती ने ऐसी कौन-सी लगने वाली बात कह दी जिसके कारण बीसलदेव इस प्रकार घर-बार छोड़कर, राज्य छोड़कर, और नव विवाहिता पत्नी को छोड़कर (अलग चाकरी) के लिए एक दूर देश को बारह वर्षों के लिए चला जाता है ! राजमती ने तो यह भी नहीं कहा था कि उससे बढा-चढ़ा कोई राजा है ; उसने तो यही कहा था कि उसके सदृश अनेक राजा हैं। और इतनी सी ही बात बीसल देव को लग जाती है ।

किंतु जैसे ही राजमती को बीसल देव के इस उद्धत स्वभाव का परिचय मिलता है, वह उत्तर में एक शब्द भी बिना कहे अपने समस्त स्वाभिमान को तिलांजलि देकर अपने को अपराधिनी मान लेती है। वह उसके पैर की जूती बन जाती है और कहती है—

कीटी ऊपर कटकी किसी । ३६ ।

सचमुच ही उसकी भूल—यदि वह वास्तव में भूल थी—एक कीट सदृश ही कही जा सकती थी, जिसके दंड के लिए बीसल देव का यह संकल्प एक कटक तुल्य ही था; वह कहने लगती है कि उसने तो हँसी भर की थी, जिसे बीसल देव ने सच्चा मान लिया ! (छंद ३६)

जहाँ तक हीरे लाने की बात है उसके संबंध में भी वह कहती है कि उसे इतने दूर देश जाने की आवश्यकता नहीं है, वह (राजमती) अपने पीहर जाकर हीरे तथा बहुमूल्य पत्थर ला देगी (छंद ३७) । किंतु उसके अनुरोधों का कोई प्रभाव बीसलदेव पर नहीं पड़ता है और वह दूसरे ही दिन सपादलक्ष देश को छोड़कर उड़ीसा जाने का निश्चय करता है (छंद ३८) । राजमती उससे कहती है कि चाकरी के लिए जाने में बड़ी अपकीर्ति होगी, किंतु इसका भी कोई प्रभाव बीसल देव पर नहीं पड़ता है (छंद ३९) । इस पर वह कहती है कि यदि बीसल देव ने जाने का ही निश्चय कर लिया है तो वह उसकी सेविका के रूप में उसके साथ जाएगी, उसके पैर दाबेगी, उसे पंखा झलेगी, जब वह सोवेगा, उसके पहरे में खड़ी जागती रहेगी, और इस प्रकार अपने स्वामी की सेवा करेगी—

ऊलग जाण की करइ छै बात ।
हूं पण आवसुं रावलइ साथि ।
बांदीय हुइ करि निरबहूं ।
पाव तलासिसुं ढोलिसुं वाइ ।
ऊभीय पुहरइ जागिसुं ।
इण परि ऊलगुं आपणउ राय ॥ ४० ॥

किंतु बीसल देव उसके इस अनुरोध को भी टुकरा देता है (छंद ४१) ।

वह अब उसके अंचल पकड़ कर उससे अनुनय-विनय करती है और कहती है कि तरुण तथा संतानहीन होने के कारण उसके विरह को वह सहन

न कर सकेगी, इसलिए ही या तो वह उसको साथ ले जावे, और या तो उसका जीवन समाप्त कर दे—

चालियउ उलगाणउ धण जाण न देइ ।
मो नइ मारि कइ सरिसीय लेइ ।
अंचल ग्रहि धण इम कहइ ।
दुइ दुष सालइ हो सामीय सांझ ।
जोबन मुरडीय मारिस्यइ ।
दोस किसउ जइ साधण बांझ ॥ ४२ ॥

किंतु उसके इस आग्रह का भी कोई प्रभाव बीसलदेव पर नहीं होता है और वह अंचल छुड़ा कर जाना ही चाहता है। तब राजमती की समस्त आशाओं आकांक्षाओं पर पानी फिर जाता है; जीवन उसके लिए भारतुल्य हो जाता है (छंद ४४, ४५)। एक-दो बार और वह बीसल देव से कुछ कहने का साहस करती है (छंद ४८, ५०), किंतु बीसल देव फिर भी अपने निश्चय पर अडिग रहता है (छंद ५१)। सामान्यतः एक नारी जिस सीमा तक नहीं जा सकती है, उस सीमा तक राजमती जाती है। राजमती की सखियाँ जब उससे कहती हैं कि यदि स्त्री चाहे ही तो उसके अंचल में बँधा हुआ पति किसी प्रकार उसको छोड़कर नहीं जा सकता है (छंद ५२), वह कहती है—

सात सहेलीय सुणउ म्हारीय वात ।
कंचूउ षोलि दिषाडिया गात्र ।
जां दीठां मुनिवर चलइं ।
म्हाकउ मूरष राव न जाणए सार ।
त्रीयां चरित मइ लष किया ।
राउ नही सषी भइंस पीडार ॥ ५३ ॥

राजमती के इस सीमा तक जाने के अनंतर भी यदि बीसल देव अविचलित रहता है, तो राजमती का उसको मूर्ख कहना और यह कहना कि वह नरपाल नहीं महिषपाल है, यथार्थ ही लगता है।

कुछ आलोचकों को यह बात खटकी है कि राजमती ने इस स्थान पर तथा एकाध अन्य स्थानों पर भी पति को मूर्ख कहा है, अथवा उसके संबंध में इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया है, किंतु एक निरपराध नव-विवाहिता से उसके सतत क्षमायाचना और आत्मसमर्पण पूर्ण होने पर यदि उसे छोड़कर कोई जाने पर ही तुला हो तो उसे इससे कम क्या कहा जा सकता है ? अमर्षपूर्ण सीता ने वाल्मीकीय 'रामायण' में उनको छोड़कर वन जाते हुए राम के मुख पर कहा है, 'मेरे पिता मिथिलाधिप राजा जनक ने आपको पुरुष-शरीर धारी स्त्री नहीं समझा था, तभी तो उन्होंने आप को दामाद बनाया था'—

किं त्वामन्यत वैदेहः पिता मे मिथिलाधिपः ।
राम जामातरं प्राप्य स्त्रियं पुरुष विग्रहम् ।।

(रामायण, अयोध्या कांड, ३०. ३)

राजमती ने तो बीसल देव के मुख पर इतना भी नहीं कहा ।

एक बार ज्योतिषी से कहलवा कर वह ठीक मुहूर्त न होने के बहाने बीसल देव को इसलिए कुछ दिनों तक रोक रखती है कि कदाचित् वह किसी प्रकार से उसे समझा ले (छंद ५४-५६)। किंतु फिर भी कोई परिणाम नहीं निकलता है, और बीसल देव उसे छोड़कर उड़ीसा चला ही जाता है ।

बारह वर्ष के कठोर दिन तरुणी राजमती बड़ी कठिनाई से काटती है : महीने आते हैं और उस वियोगिनी को अधिकाधिक संतप्त करके चले जाते हैं; ऋतुएँ आती हैं, और वर्ष आते हैं और इसी प्रकार चले जाते हैं, बीसल देव नहीं आता है। राजमती अपने स्त्री-जन्म पर झंखती है : वह कहती है कि इससे तो अच्छा होता कि वन का कोई जीव होती—

अस्त्रीय जनम कांइ दीधउ महेस ।
अवर जनम थारइ घणा रे नरेस ।

रानि न सिरजीय रोझडी।
घणह न सिरजीय धउलीय गाइ।
बनषंड काली कोइली।
हउं वइसती अंबा नइ चंपा की डाल।
भषती द्राष वीजोरडी।
इणि दुष झूरइ अबला जी बाल॥ ८१॥

वह कहती है कि वह रानी न होकर जाटनी होती तो भी अच्छा होता, कम से कम वह अपने पति के साथ काम में लगी रहती और खुलकर उसे गले तो लगाती—

आंजणी काइं न सिरजीय करतार।
षेत कमावती स्यउं भरतार।
पहिरिण आछी लोवडी।
तुंग तुरीय जिम भीडती गात्र।
साईय लेती सामुही।
हंसि हंसि बूझती प्री तणी वात॥ ८२॥

वह अब पंडित (पुरोहित) के पास आती है और उससे बीसल देव के पास संदेश भेजती है। वह बीसल देव से कहने के लिए उससे कहती है कि वह उसके विरह में ऐसी कृशगात हो गई है कि बाएँ हाथ की मुद्रिका अब उसकी दाहिनी बाँह में भी ढीली पड़ रही है—

पंडिया कहिज्यो म्हारइ प्रीय नइ जाइ।
डावां हाथ कउ मूंदडउ।
ढलिक करि आवइ हो जीमणी बांह॥ ८५॥

वह उसे इस बात का का स्मरण दिलाती है कि उसी ने चंद्र-सूर्यादि की साक्षी देकर दोनों का पाणि-ग्रहण कराया था (छंद ८६), वह बीसल देव से कहने के लिए उससे कहती है कि एक राम थे, जिन शूर ने स्त्री के लिए

समुद्र पर सेतु बाँधा था, और एक वह है जिसने अपनी नव विवाहिता स्त्री को अपना अमूल्य यौवन समाप्त करने के लिए छोड़ रक्खा है—

वालुं हो धणीय तुम्हारडउ जांण।
कठिन पयोहरां तिज्यउ परांण।
बालउ जोवन षिसि गयउ।
जोवन के सिरि बांधिया नेत।
जिण बांधिया रावण षिस्यउ।
त्रिय कारणि राम बांधियउ सूरा सेत ॥ ८७ ॥

वह एक पत्रिका भी लिखकर पंडित के हवाले करती है, जिसमें वह अपने पति को विश्वास दिलाने के लिए कि पत्रिका उसी की लिखी है, अन्य किसी को जो न ज्ञात हो सकता रहा हो ऐसा एक संकेत लिखती है—

साम्हइ हियडलय जीमणी कूंषि।
दुइ नष लागा नाह का।
आप समांणी करती आलि।
धण विसहर प्रीयउ गारुडी।
आउ सामी थारा डंक संभालि ॥ ९० ॥

किन्तु इस पत्रिका में उसके मनका जो अमर्ष है वह उमड़ ही पड़ता है। वह कहती है कि वह एक कुलीन कन्या है, और शील (सदाचार) की शृंखला से किसी प्रकार उसने अपने यौवन को जकड़ रक्खा है, जिस प्रकार कोई किसी चोर को बाँध रखता हो, अतः यह स्वाभाविक ही है कि इसका पाप उसके उस निष्ठुर पति को पहुँच रहा हो, जिसने उसे अकारण छोड़ रक्खा है और यदि वह अब भी न आया तो इस जन्म में तो वह उलगाणा (राजभृत्य) ही हुआ है, अगले जन्म में वह साँप होगा—

कुल की रे बेटीय सील जंजीर।
जोवन राषउं मइ चोर जिउं।

पगि पगि तो नइ पहूच रे पाप।
इणि भवि उलगाणउ हूउ।
अवर भवि होयउ कालउ साप ॥ ६२ ॥

किन्तु पंडित से वह अपनी दुर्दशा का ही संदेश भेजना चाहती है—

पंडिया तिम कहेज्यो जिम प्रीय नि रिसाइ।
साधण तुझ विण अन्न न षाइ।
कुहाणी फाटउ रे कंचुयउ।
ग्रोपरि फाटउ तु धण केरउ चीर।
जिम दव दाधी लाकडी।
तूं तउ उव इगउ रे आविज्यो नणद का वीर ॥ ६४ ॥

पंडित उड़ीसा पहुँचकर बीसल देव को राजमती की पत्रिका देता है, और उसका संदेश कहता है। बीसलदेव उड़ीसा के राजा से विदा लेता है और रत्नराशि लेकर अजमेर के लिए प्रस्थान करता है। वह एक योगी से राजमती को अपने प्रस्थान की पत्रिका भेजता है। उस पत्रिका को पाकर राजमती गले से लगा लेती है किन्तु वह इस मांख (अमर्ष) से रोने लगती है कि किसी समय जिसके बिना वह घड़ी भी न जी सकती थी, उससे पत्र-व्यवहार तक की नौबत आ गई—

चीरी रही गोरी गलइ लगाइ।
जाणि करि बाछडइं स्युं मिली गाइ।
नइणां थी लोही पडइ।
परिहसि रूनी भीनउ छइ हार।
जिण विण घडीय न जीवती।
हिवइ ताहि स्युं हुवा चीरी विवहार ॥ ११७ ॥

अन्ततः वह दिन आ जाता है जब उसका पति लौटता है; उसके आगमन के धौंसे के सुनकर वह युवती संतोष की एक गहरी साँस लेती है कि वियोग की

इस दीर्घ अवधि को वह निर्मल चरित्र के साथ व्यतीत करने में समर्थ हुई है—

ऊलग पूगि घरि आवियउ भरतार।
जाणि करि उतरी समुंद कउ पार।
  कलंक न कोई सिर चडिउ।
वाधतउ जोबन विरह की झाल।
  लंछण को लागउ नहीं।
पगि पगि सषीय न झंपियउं आल ॥ १२१ ॥

उसका सामना करने को वह, कवि की अपूर्व कल्पना में, अर्जन की भाँति सन्नद्ध होती है—

हिव घरि आवियउ सइंभरि वार।
अरजन जिम धण करइ सिणगार।
  भमुह कोवंड चहोडिया।
नव कुच कंचू मेल्हिया पंचि।
  कंत पियारइ कारणइ।
तिण कारणि धण मेल्हिया संचि ॥ १२२ ॥

उसके जो अंग किसी समय चोर ही भाँति बँधे हुए थे, अब वे छोड़ दिए जाने पर उसके सहायक बनकर स्वभावतः अर्जुन के बाणों की भाँति पुनरागत स्वामी के हृदय को विद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं। किन्तु प्रवास से लौटा हुआ उसका निर्लज्ज पति जब उसे प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है, राजमती उसकी मूर्खता पर व्यंग्य किए बिना नहीं रहती है—

ऊलग जाइ तइं किसउ कियउ नाह।
मोडि उसीसउ नइ सूतउ बांह।
  कठिन पयोहर नू मिल्या।
केली गरभ सा नू मिल्या गात।

जांघ जोडावउ नू निरषिया ।
रंग भरि रयणि न षेलियउ षेल ।
देव सतावौ तूं फिर आउ ।
स्वामी घी विणजियउ नइ जीमियउ तेल ॥ १२६ ॥

और पाठक भी राजमती के साथ सहमत होकर कह उठता है कि बीसलदेव ने घी का बनिज करते हुए भी खाया तेल ही ! कवि उस पुनर्मिलन में भी नायिका की विरह-वेदना को नहीं भूलता है—

कनक काया जिसी कूंकूं रोल ।
कठिन पयोहर हेम कचोल ।
केलि गरभ जिसी कूंवली ।
घायल जिउं धण षंचइ अंग ।
मोडि कडि चालइ गोरडी ।
उणकी विरह वेदन नवि जाणइ कोइ ।
जिउं राजा राणी सुं मिल्या ।
तिम एण संसार मिलिज्यो सहु कोइ ॥ १२८ ॥

फलतः यह प्रकट हो गया होगा कि यद्यपि रचना में कोई महानता नहीं है किन्तु जीवन की यथार्थता सरसतम रूप में व्यंजित हो सकी है, पुनः साहित्य में न हमें दूसरी राजमती मिलती है और न दूसरा बीसलदेव ही मिलता है, और इसी में 'बीसलदेव रास' के कवि की सबसे बड़ी सफलता निहित है ।

उसके वर्णन भी उसके अपने हैं । उसका बारहमासा हिंदी के आदि कालीन बारहमासों में से है और किसी भी बारहमासे से टक्कर ले सकता है । बीसलदेव के अभिज्ञान को कवि ने कितना वास्तविकोपम बनाने का यत्न किया है—

दाढीय राम कइ भमर भमाइ ।
मस्तक माहे केवडउ ।
माहिलइ कोइय जीमणी आंषि ।
कालउ तिलउ अछइ भमर जिसउ ।...॥६६ ॥

इस अभिज्ञान-विवरण में वह उसकी दाहिनी आँख के कोये के तिल तक को बताना नहीं भूलता है। यही बात राजमती के भी अभिज्ञान में देखी जा सकती है—

सांभलउ जोगी कहइ नरनाथ।
कोमल पदम छइ धण केरइ हाथ।
मूंगफली जिसी आंगुली।
उणिरा कठन पयउहर काजली रेह।
बोलती बोल छइ आकुली।
दंत दाडिम धण चीता कय लंकि ॥ ११३ ॥

उसकी आकुल बोलने की आदत को बताना कवि नहीं भूलता है।

एक और विचित्र बात जो इस कवि में दिखाई पड़ती है वह है इसकी हास्य या विनोद-प्रियता। राजमती ने वर्ष भर का संवल देकर पंडित को भेजते हुए उससे घी अधिक खाने को कहा था जिससे कि वह द्रुत गति से चल सके—

घीय घणउ जीमजो जिम पगि हुवइ प्राण। ६७।

किन्तु पंडित को पेट-पूर्ति ही अधिक प्रिय लगने लगती है, वह खूब खा पीकर मजे-मजे में चलता है, और वह वह सब भुला देता है जो उससे राजमती ने कहा था—

कोस पयाणइ पंडियउ जाइ।
सात अंगारा करि बइठउ जी षाइ।
हलवइ हलवइ पग ठवइ।
चालतां गोरडी दीधी थी सीख।
ते सहु पंडिया नइ वीसरी।
चालिवा लागियउ छोटीय वीष ॥ ६६ ॥

इसी प्रकार कवि का उड़ीसा वर्णन देखिए—जहाँ बैल की पूजा होती है

और गाय हल में जोती जाती है, मांड खाया जाता है, और चावल रख लिया जाता है—

सातमइ मास पहूतलउ जाइ ।
जठइ मानिजइ बलद नइ हल बहइ गाइ ।
मांड पीजइ कण राषिजइ ।
तठइ लाल विहूणी वाजइ छइ घांटि ।
इसीय सकति अछइ देव की।
नाहर चोर नवि लागए वाट ॥ १०० ॥

इस प्रकार की यिनोद-प्रियता हिंदी साहित्य में बहुत ही कम मिलती है। फलतः 'बीसल देव रास' अपने ढंग की एक ही रचना है, और इसका कवि भी अपने ढंग का अकेला ही है, और इसलिए श्री मोतीलाल मेनारिया के उक्त कथन से सहमत होना संभव नहीं ज्ञात होता है जो इस भूमिका के प्रथम शीर्षक विषय-प्रवेश के अन्तर्गत प्रारंभ में ही उद्धृत किया गया है।

बीसल देव रास

राग केदारउ

[१]

गउरिका[1] नंदन त्रिभुवन सार।
नाद[2] भेदइ[3] थारइ उदर भंडार।
एकदंतउ[4] मुखि[5] झलहलइ[6]।
मूंसाकउ[7] बाहण[8] तिलक सिंदूर[9]।
कर जोडी[10] नरपति[11] भणइ[12]।
जाणि करि[13] रोहिणी[14] तप्पइ[15] सूर[16] ॥
भुवणनइ[17] देषउं रे[18] रबि[19] तलइ ॥

---

[१] यह छंद म०, पं० र० ग्या० ना० न० अ० १, प्र० १.१, स० १.२ है। स० प्र० में स्वीकृत .३, तथा .५ परस्पर स्थानांतरित हैं। प्र० में ध्रुवक है : भुवण मोहो वर कामिणी।

१. पं० गवका, र० ग्या० ना० प्र० गवरिका, स० गौरी। २. न० नादइ। ३. ना० भेद, स० प्र० बेदां। ४. अ० दंत। ५. म० ना० स० प्र० मुख। ६. स० प्र० झलमलइ) प्र० झलमलि = झलमलइ)। ७. म० ग्या० मूसका, पं० मुसिकउ, ना० न० मूसा को, अ० मूसक, स० मूषा, प्र० मूसा का। ८. ग्या० [में नहीं है]। ९. पं० सेंदूरि, अ० सिंदूर कि०, स० सेंदुर। १०. स० जोड़े। ११. प्र० नाहलो (=नाल्हो)। १२. प्र० कवि। १३. ग्या० जाणकरि, ना० जाणिकेरि, स० जाणिक, प्र० जाणकि। १४. म० रोहिणी जिउ, पं० रोहिणी जिम, र० रोहिणी युं, ग्या० ना० रोहिणी ज्युं, न० रोहिंणाचल, स० रोहिणीउ, प्र० रोहिणी इउं। १५. म० तप्पउ, पं० तेपउ, प्र० तपे। १६. पं० सूरि, ना० अ० सूर कि। १७. पं० भवण नइ, ना० भवण न (इसी कारण ध्रुवक का पहला अक्षर समस्त छंदों के साथ पं०

[२]

दूसरइ कडवइ[१] गणपति[२] गाइ[3] ।
नवण[४] करी[५] नइ[६] लागुं जी पाइ ।
तोहि[७] लंबोदर बीनवउं[८] ।
सिद्धि नइ[९] बुद्धि[१०] तणउ रे[११] भंडार[१२] ।

ग्या० ना० न० में 'भ०' है), र० ग्या० कइ भवण नइ, न० कि भवण न (ना० अ० में यह 'कि' पूर्व की पंक्ति के अंत में है) । [१८]. ना० न० देषुं, मृ० देषुंजी । [१९]. पं० तपई । (पं० ग्या० ना० न० में अंतिम पंक्ति अगले छंद की पहली पंक्ति के रूप में है, जो कि भूल से हुआ ज्ञात होता है) ।

[२] यह छंद म० ना० २, ग्या० पं० र० न० अ० ३, स० १.४, प्र० १.३ है । [इस छंद की पहली ही पंक्ति है : दूसरइ कडवइ...अतः यह निश्चित रूप से ग्रन्थ का दूसरा छंद रहा होगा] ।

किन्तु स० में .१,.२, .४,.५ है :

(.१) तुठी सारदा त्रिभुवन माई । (तुलना० स्वीकृत ५.२)
(.२) देव विनायक लागूं हूं पाय ।
(.३) चउसठि जोगिनि का अगिवाण ।
(.४) चउथ जोहारूं खोपरां ।

प्र० में भी .४,.५ स० की हैं, किन्तु शेष यथा स्वीकृत हैं ।

[१]. म० कडुअउ, पं० कडवउ, र० कडूवै, ना० प्र० कडवै जी, न० अ० कडुयइ । [२]. र० तूं गणपति । [3]. म० सार (तुलना० स्वीकृत १.१), ना० गाय । [४]. म० न्हवण, ग्या० नुवणि, अ० नमणि, न० पणमि । [५]. (+ [६]) पं० नवं करि, र० न० करू अरु, म० ना० नमुं करि, अ० नमुं अरु, प्र० नमी करो । [७]. म० ग्या० तुझ, ना० तुझहि । [८]. ग्या० प्र० बीनवुं, स० बीनमूं । [९]. पं० र० ग्या० बुधिका, ना० रिद्ध । [१०]. पं० र० ग्या० स्वामी । [११]. पं० र० ग्या० मुगति, ना० तणौजी । [१२]. पं० र०

चउथि करउं तुझ[13] पारणउ[14] ।
भूलउ जी[15] अक्षर आणिज्यो[16] ठांइ ।। भु० ।।

[३]

हंस गमणि[1] मृगलोयणी[2] नारि ।
सीस समारइ[3] दिन गिणइ[4] ।
ततषिणि[5] ऊभी छइ राजदुवारि[6] ।
नाहनइ जोवइ[7] चिहुं दिसइ[8] ।
काइं[9] सिरजी[10] उलगाणांरी[11] नारि ।
जाइ दिहाडउ रे झूरतां[12] ।। भु० ।।

ग्या० ना० दातार । [13]. पं थारउ । [14]. ना० पारणै । [15]. पं० तूं जी भूलउ जी, स० भूलेउ । [16]. स० आणिजे ।

[३] यह छंद म० ना० ३, पं० र० ग्या० न० अ० २, स० १.१, प्र० १.२ है । किन्तु पं० र० ग्या० .४ है : चिहुं दिसि नाह निहालती । स० में .३ तथा .४ नहीं हैं । म० और ना० में एक अतिरिक्त पंक्ति .७ है :

(म०) इसी नारी न देव दुखिणी काइ ।

(ना०) एक पग आंगणि एक पग द्वार ।

[1]. म० गज गमणी, स० हंस बाहणि (तुलना० स्वीकृत ४.१) । [2]. म० मृगा लोचनी, स० मिग लोचनि, ना० मृग लोचनी । [3] पं० र० सवारइ, ग्या० संभारइ । [4]. प्र० गणै । [5]. पं० सतखिण, अ० सुलक्षण, प्र० साय धण । [6]. न० राजकुवारि, म० पलि दुवार । [7]. म० नाह निहालुं, प्र० नाह न देषइ । [8]. प्र० दसा । [9]. पं० का, प्र० स० जिण । [10]. प्र० सिरजो, स० सिरजइ । [11]. पं० ना० प्र० उलगाणां की; स० उलिगण घर । [12]. र० झूरती, ग्या० झूरतां ।

[४]

हंस बाहणि[1] देवी[2] करि धरइ[3] वीण।
जूठडउ[4] कवित[5] कहइ[6] कुलहीण[7]।
वर देज्यो[8] माता[9] सारदा[10]।
भूलउ जी[11] अक्षर आणि[12] बहोडि[13]।
तइं[14] तूठी[15] अक्षर[16] जुडइ[17]
नाल्ह वषाणइ बे कर जोड़ि ॥ ध्रु० ॥

---

[४] यह छन्द म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० ४, स० १.५, प्र० १.४/२ तथा १.५ है। किन्तु पं०, र०, ग्या०, अ० .६ है : नाल्ह भणइ अति सीय वाणि। स० में स्वीकृत .५ यथा .३ है, और .५ है : वीसलदेव रास प्रगासतां। पुनः स० .६ है : नाल्ह कहइ जिणि आवइ हो खोडि। प्र० में अतिरिक्त .७, .८ हैं :

(.७) सरसती सामणि करौ तै पसाय।

(.८) रास कहूं राजा वीसलराय।

[1]. (+२) प्र० सरसती सामणि। [2]. (+३+४) म० में अतिरिक्त शब्दावली पुनरावृत्ति के रूप में है 'वी कर धरउ'। [3]. पं० धरउ, ग्या० ना० धरी. प्र० ग्रहइ। [4]. पं० जूठउ, र० भूठो रे. ना० न० म० भूठउ, प्र० भुठडो, स० (+५+६) कुकठ कंथू बोलूं। [5]. म० प्र० कवीयण, पं० किवत (कवित), र० अ० कथित, न० वकित। [6]. म० हुइ, प्र० हूं। [7]. प्र० मतिहीण। [8]. प्र० दीयो। [9] (+[10]). प्र० देवी सारदा। [11]. पं० भूलउ। [12] (+[13]) म० पं० र० ग्या० ना० न० आणिजो ठाई (तुलना० स्वीकृत २.६)। [14]. स० तो, म० अ० जइ। [15]. न० स० तूठां, प्र० तूठै। [16]. स० बर। [17]. स० प्रापिजइ।

[५]

नाल्ह रसाइण रसभरि[1] गाइ।
तूठी[2] छइ[3] सारदा त्रिभुवन माइ।
उलगाणा गुण[4] बर्णवउं[5]।
सगुण[6] सुमाणसां[7] सीषिज्यो[8] रास।
स्त्रीयचरित्र[9] धण[10] लष[11] लहइ[12]।
एकही[13] अक्षर[14] सरब[15] विणास॥ ध्रु०॥

[६]*

भोजराज तणउ[1] मिल्यउ छइ दिवाण[2]।
बहु नर बैठा छइ[3] अगवाणि[4]।

---

[५] यह छन्द म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० ५, स० १.३, प्र० १.४/१ है। किन्तु प्र० में उपर्युक्त .४ और .५ के बीच अतिरिक्त है :

कुकठ कुमाणस सीष न लाय।

[1]. न० परिगुण, अ० गुणभरि। [2]. म० तोनइ तूठी। [3]. म० हो। [4]. प्र० रस। [5]. म० मू० बीनवउं, ग्या० वीनवइ, पं० र० ब्रन्नवउं, ना० प्र० वर्ण्णवुं, न० अ० गाइसुं, स० वरणतां। [6]. ना० सुगुण, स० कुकठ (तुलना० उपर्युक्त ४.२ स० पाठ से)। [7]. म० सामाणसां, न० माणस, म० कुमाणसां, प्र० सुमाणस। [8]. ना० सीषियो, स० जिण कहई, प्र० तुम्हे सीषज्यो। [9]. त्रीया चरित्र, र० स्त्री चरित्र, स० अस्त्री चरित। [10]. न० कहि, स० गति। [11]. स० को, पं० र० न० अ० कुण। [12]. ना० ले सकइ, न० सकै, अ० कीया, ग्या० कहइ। [13]. मू० एकिण। [14]. म० मू० कुवचन, स० आखर। [15]. पं० र० ना० ग्या० बचन, स० रस सबइ।

[६] यह छंद ग्या० र० ना० ७, न० अ० ८, प्र० १.११ स० १.१४ है। प्र०.२ है : मिल्या चोरासीया इंद्रविमाण। स०.२ है : मील्या सुरनर इन्द्र विमान।

[1]. प्र० स० राजा भोज कइ। [2]. अ० जुड्यो छै दीवाण, ग्या० मिल्या

राइ राणा चिहुं दिसितणा[५] ।
राणी जी बिनवै[६] राइ नरिंद[७] ।
बारइ हो बहतै आपणइ[८] ।
कुमरी परणाविज्यउ[९] जोइ नइ विंद[१०] ॥ भु० ॥

[७]

पंडित[१] तोहि[२] बोलावइ रे[३] राइ ।
ले[४] पतडउ[५] पंडिया[६] रावलइ[७] आवि[८] ।
सुवर[९] सोधे[१०] म्हाका[११] जोसिया[१२] ।
आणिज्यो[१३] नागर[१४] चतुर सुजाण ।

छइ दीवाण । ३. ग्या० बहुनर देटा छै, अ० तिहां बैठी छइ सहि । ४. अ० आगेवाण । ५. ना० दिसि तणी, स० दिसि देसीका, प्र० दिसि देसका । ६. प्र० राणी पूछइ सुणयो, स० पूंछइ सुणि । ७. ना० स० राव नरिंद, प्र० नर्यंद, अ० धरह नरिंद । ८. प्र० वारै विहतै आपणै । ९. ना० थे कुमरी परणाविज्यो, ग्या० ये तउ कुमरि परिणावजउ, प्र० स० कुवंरि परणावौ । १०. ग्या० जोइ लिउ वींद, अ० सबलसै वीर, प्र० तो सोभो वींद, स० सोभउ वींद ।

[७] यह छंद म० ६, पं० ७, र० ग्या० ना० ८, न० अ० ९, स० १.१५, प्र० १.१२ है । किंतु स०. ४,.६ हैं :

(.४) चतुर नागर ईसउ आणज्यो चंद ।
(.६) जिम गोवल माहिं सोहइ गोव्यंद ।
(तुलना० स्वीकृत १६.६)

और प्र०.४,.६ हैं : (.४) चतुर नर आणजो वींद ।
(.६) उवाका चरण दीसि जिसा पुनिम चंद ।

१. स० पांड्या । २. पं० तोन, र० ग्या० ना० न० तोनइ । ३. पं० र० ग्या० ना० न० अ० प्र० छइ, स० हो । ४. (+ ५) प्र० पतडउ लेइ करि । ६. स० जोसी । ७. स० बेगो तुं । ८. स० आई ।

सुरगइ[१५] मोहइ[१६] देवता ।
बीर[१७] बिचखण[१८] बीसलदे[१९] चहुआंण ॥ मु० ॥

[८]

बंभण[१] भाट[२] बोलाविया[३] राउ ।
लगन[४] सोपारीय दीन्ही[५] पठाइ[६] ।
गढ अजमेरि[७] नइ[८] गम[९] करउ[१०] ।
पाटि[११] बइसारि[१२] पषालिज्यो पाय ।
बेटी कहिज्यो[१३] राजा भोज की ।
राजमती बर बीसल राय ॥ मु० ॥

---

९. म० स० सुदिन, ग्या० सुवरि, अ० सोवर, ना० सवरो । १०. पं० सोधी, अ० सोझे, स० कहे, प्र० कवहि । ११. पं० र० ना० म्हारा, स० रूडा, प्र० न । १२. पं० ग्या० ना० न० अ० पंडिया, प्र० जोवसी । १३. पं० आणि कोई, र० आणो कोई, अ० आणजे, ना० आण कोई । १४. पं० नर । १५. र० सुरगहि, पं० सुरगह, ना० सुरगिर, न० अ० सरग ज्युं, स० प्र० सुरनर । १६. म० ग्या० मोहइ छइ, र० मोहइ जे, ना० मोह्या छइ । १७. पं० बर बीसल, र० वर, ना० बार । १८. म० विचित्तण । १९. पं० राजा बीसलदे, र० ना० न० बीसल ।

[८] यह छंद म० ७, पं० ६, र०, ग्या०, ना० १०, न० ११/१, अ० ११, स० प्र० १.१६ है ।

१. सा० पांड्यो, प्र० पांडीया । २. स० प्र० तोहि । ३. पं० र० ग्या० ना० न० अ० बोलावइ छइ, स० म० बोलावइ । ४. ना० लगल । ५. म० अ० पांड्या दीन्ही, र० दीय, स० ले करि, ना० दीनी, ग्या० दीन, प्र० लेई । ६. स० जाहि, प्र० रावलै जाय (तुलना० स्वीकृत ६.२) । ७. स० अजमेरां । ८. पं० र० ना० थे, अ० कुं, ग्या० नां । ९(+१०). प्र० जावेज्यो । ११. पं० उवइ का, स० चउरी, प्र० चांचर । १२. पं० र० बइसारि नइ, स० बइसी, प्र० बैठ । १३. र० स० [में नहीं है], प्र० हो ।

[९]

गढ अजमेरि[१] बसइ रे[२] भुआल[३]।
चहुआणां कुलि[४] तिलक सिणगार[५]।
कुलीय[६] छत्तीसइ[७]रे[८] ऊलगइ।
मइमत[९] हस्तीय पडइ रे पलाण।
लाष तुरीय[१०] घरि[११] पाषर्‌या[१२]।
बर[१३]रे[१४]आणउ[१५]बीसलदे[१६]चहुआंण ॥ भु० ॥

[१०]

दीन्ही[१] सोपारीय[२] नइ[३] हरषियउ[४] राय।
मनिहि आणंदियउ अधिक[५] उछाह।

[९] यह छंद म० ८, पं० ८, र० ग्या० ना० ६, न० अ० १०, प्र० १.१७ है। किंतु पं० र० ग्या० ना० न० अ० .४ है : मइमत हस्तीय सहस अठार (–अभार न०)। और

अ० .६ है : बीसलदे बरउ कुंअर भरतार।
प्र०. ४, .६ हैं : (.४) बांध्या हस्ती घुरै नीसाण।
(.६) पांडीयो सोझी बर बीसल राय।

१. प्र० अजमेरां। २. पं० बसइ रि, ना० बसइ, प्र० बसै जी। ३. पं० भूवालि, ग्या० ना० न० प्र० भूपाल। ४. प्र० वंश। ५. ना० सिणगार, प्र० नेलाड़ि। ६. प्र० चोरास्या। ७(+८). प्र० जिहां। ९. प्र० मयदह। १०. ग्या० तुरीया। ११. पं० धरे, ग्या० र० ना० न० अ० पाषर। १२. पं० प्र० पाषरइ, र० ग्या० ना० न० अ० पडै। १३(+१४). पं० र० ग्या० ना० न० ईसउ। १५. पं० र० वर, ग्या० वीर, ना० सुरबर न० छुंइ। १६. र० बीसल ते, ग्या० बीसल।

[१०] यह छंद म० ६, पं० १०, र० १२, ग्या० ११, ना० न० अ० १२, स० प्र० १.२१ है। पं० ना० ग्या० अ० में यथा .३ (अतिरिक्त) है :

घरि घरि[६] गूड़ी[७] ऊछलइ[८] ।
कामणि[९] गावइ[१०] छइ[११] मंगलच्यार ॥
चहुआंणां कुल[१२] ऊधरउ ।
जइ[१३] घरि[१४] आविस्यइ[१५] जाति पमारि ॥ भु० ॥

[११]

बांभण साहि[१] समदिया[२] बीसलराइ[३] ।
हांसला[४] तेजीय नइ[५] कुलह कबाइ[६] ।

बाजा रे बाजइ नीसाणे धाउ । (तुलना० स्वीकृत २५.२) ।

न० र० स० प्र० में यही .२ के स्थान पर है । पं० अ० में स्वीकृत .३ यथा .४ है । ना० ग्या० न० र० में यह पंक्ति नहीं है । ना० में स्वीकृत .२ यथा .३ है, और न०. ३ है : सुरंग केसर तत्तां छाटणां । ना०. ४ है : मन माहै अधिक आणंद उछाह—(तुलना० स्वीकृत १०.२)

पं० अ० न० में यथा .५ (अतिरिक्त) हैं : दोवड बाजइ छइ दुडवडी (तुलना० स्वीकृत २५.३) । र० में यह स्वीकृत .३ के स्थान पर है, और ना० ग्या० में यथा .४ है । म० .५ है : सफल दीहाडउ गोरी आज कउ (तुलना० स्वीकृत २६.५)

[१]. पं० दीन, स० प्र० हुई । [२]. र० सोपा । [३](+[४]). र० ना० प्र० मन हरषीयउ, स० मनि हरष्यो छइ । [५]. पं० ना० अतिहि, मू० अंग । [६]. स० प्र० गढ़ माहिं (–माहै प्र०) । [७]. पं० गुडी रे । [८]. म० मू० पं० र० स० ऊछली । [९]. म० स० प्र० घरि घरि (तुलना० स्वीकृत ११७.४) । [१०](+[११]). म० स० प्र० तोरणि (तुलना० स्वीकृत ११७.४) । [१२]. प्र० वंस । [१३](+[१४]). म० जिण घरि, अ० जां घरि, र० स० जो घरि । [१५]. पं० र० आवी, प्र० आवइ छै ।

[११] यह छंद म० १०, पं० ११, ग्या० १२, र० ना० न० अ० १३, स० प्र० १.२२ है ।

[१]. प्र० स० बांभण, पं० र० ग्या० न० अ० लग्नकउ बंभण, ना० लगन

दीन्हउ छइ[७] सोनउ सोलहउ।
पाट[८] पटंबर[९] पाका[१०] जी[११] पान।
कर जोडी[१२] राजा भणइ[१३]।
आगलइ[१४] राव[१५] सिउं[१६] राषिज्यो मांम[१७] ॥ भु० ॥

[१२]

मेल मिली तिहां[१] हरषियउ[२] राउ।
सूरिज मंडल[३] रह्यउ[४] रे[५] लुकाइ।
कउतिग आया छइ[६] देवता।
सुरग थी[७] आविया[८] सुरह[९] बिमांण।

बंभण। २. पं० र० ना० न० अ० समदीयउ छइ, ग्या० समुदावइ, अ० चमुदीयउ, स० समदइ छइ, प्र० नै दीयै। ३. ग्या० राय। ४. पं० र० ग्या० न० अ० दीन्हा, ना० दीना छै, प्र० हांसलो। ५. पं० र० ग्या० न० अ० तजीय, न० तीजीय, स० घोड़उ, प्र० घोडौ। ६. प्र० कमाय। ७. म० दीयउ छइ, पं० न० स० दीन्हो, ना० दीना छै, अ० दीन्हउ जी। ८. र० राउ। ९. स० पटोला, प्र० बइसारी नै। १०(+११). स० प्र० बीड़ा। १२. ना० कर जौ। १३. प्र० कहइ। १४. म० आगलि, ग्या० आगिला, ना० न० आगला, प्र० पांडीया, स० पाड़्या। १५. म० रावउ, ग्या० रावसं, स० थोड़उ, प्र० तुम्ह। १६. स० म्हाको, प्र० माहरी। १७. स० मान।

[१२] यह छन्द म० १३, पं० १५, ग्या० १६, र० ना० न० १७, अ० १८, स० प्र० १.२७ है। किंतु स० प्र० .१.२ है :

(.१) जान संजोई बीसलराव।
(.२) खेह उठी रबि गयो लुकाइ (—उलपाय प्र०)।

१. पं० र० ना० ग्या० तठइ, म० अ० तत्र। २. पं० र० चडीयउ छइ। ३. र० खेह स्युं, ग्या० ना० खेह। ४(+५). पं० रहिउ, ग्या०

लूण उतारइ[१०] अपछरा[११] ।
धनि धनि[१२] हो[१३] बीसल[१४] चहुआंण[१५] ॥ ध्रु० ॥

[१३]

पूजियउ[१] गणपति[२] चाली छइ[३] जांन[४] ।
लहइ[५] चउरासिया[६] दूणउ जी[७] मांन ।
सात[८] सहस नेजा धणी ।
पालषी बइठा छइ[९] सहस पंचास ।

गयउ रे, न० रह्यो । ६. पं० आया, स० आव्या । ७. पं० ना० स्वर्गह, र० स्वरग्रह, अ० सरग थकि, स० प्र० कोतिग । ८. स० आव्या, प्र० आया, ना० आवी । ९. र० ना० न० अमर, ग्या० अमिअ, अ० देव, स० प्र० इन्द्र । १०. र० ना० उतारइ छइ । ११. न० म० सुहामणी, मू० सुहासणी । १२. पं० तउ धन, र० ग्या० ना० तु धन धन । १३(+१४). म० प्र० बीसलदे । १५. म० चहुआंणि ।

[१३] यह छन्द म० १४, पं० १६, ग्या० १७, र० ना० न० १८, अ० १६, स०, प्र० १.२८ है । किंतु पं० र० ना० न० अ० में .३, .४, .५, .६ इस प्रकार हैं :

(.३) असी सहस घोड़ा चढया (—मिल्या न०) ।
(.४) साठि सहस पालषी अपारि ।
(.५) गूजर गउड चाल्या (—मिल्या न०) घणा ।
(.६) राव राणा तणा अंत न पार ।

स०, प्र० में .६;८ क्रमशः हैं :

(.६) असी सहस चाल्या केकाण ।
(.८) खेहाडंबर नवि सूझइ (छाहीयो—प्र०) भाण ।

१. म० ग्या० पूजीय । २. स० बिनायक, ग्या० गणपते । ३. र० चालीयइ, ना० न० मू० चालीयउ, अ० चालीय, स० चाल्यो छइ । ४. म०

हस्तीय[१०] सिंणगार्या[११] छइ[१२] सातसइ[१३]।
पालीय परदलको[१४] नहीं छेह।
कटक[१५] चड्यउ[१६] धजा फरहरी।
जाणि करि बीसल परतिष्य देव॥ भु०॥

[१४]

देव[१] बाघेरडइ[२] दीयउ रे[३] मेल्हाण।
ऊचरइ[४] बंभण बेद[५] पुराण।
मंगल गावइ[६] कामणी[७]।
पंच सबद[८] कउ[९] रुणझुणकार[१०]।

जांनम। [५]. म० दीयइ, मू० इउ, ग्या० [में नहीं है], ना० चाहै, स० सहु। [६]. ग्या० चउरास्या महं। [७]. र० दूणजी, ग्या० प्रणउ जी, ना० विमणो, स० दीधउ छइ, प्र० दीधौ। [८]. स० प्र० आठ। [९]. सा० बइठा, प्र० बइसा। [१०]. प्र० हाथी। [११](+[१२]). स० प्र० चाल्या। [१३]. स० दोढ़सो, म० सात छइ। [१४] ग्या० परगण को। [१५]. स० प्र० रथ। [१६]. स० प्र० ऊपरि।

[१४] यह छन्द म० १८, पं० १६, ग्या० २०, र० ना० न० २१, अ० २२, स० प्र० १.३० है। किन्तु पं०, ग्या०, र०, ना० .६ है :

सुबस बसउ थारउ एह संसार।

और स०, प्र० .६ है : आज सफल राजा जनम संसार।

प्र० में .१ नहीं है।

[१]. स० जाइ। [२]. मू० पं० स० बघेरइ, ग्या० बाघोरडइ। [३]. म० हूउ, ना० दीया, न० कीयउ रे, अ० दीधउ। [४]. स० वाचउ, प्र० जिहां पढ़ै। [५]. न० देव, अ० भाट। [६]. न० गावइ छइ। [७]. म० गोरडी। [८]. म० मू० स्वामी पंच सवद। [९]. पं० र० ग्या० ना० अ० करइ, स० प्र० तणा। [१०]. मू० बहु झुणकार, पं० झुरझणकार, र० स० प्र० झुणकार, न०

मेघाडंबर सिरि[11] छत्र[12] धर्‌यउ[13] ।
सुबस[14] सिद्धारथ[15] सयल[16] संसारि[17] ॥ भु० ॥

[१५]

पाइ कंकण सिरि[1] बंधियउ मउड ।
पंचमी[2] मजिलि गयउ[3] दुरग[4] चीतोडि[5] ।

जण भुणकार । [11]. म० सिरइ, प्र० [में नहीं हैं] । [12]. प्र० ताडीयो । [13]. पं० ना० धरइ, र० छइ, न० धरे, अ० ढलइ, स० दियउ । [14]. म० सविसि, न० अ० सर्वजन, स० आज, पं० र० ना० सुबस बसउ (बासउ—ना०) । [15]. [ं]० र० ग्या० ना० थारइ, न० अ० हरषीयउ, स० सफल राजा । [16]. पं० र० इहु, ना० एक, स० जनम । [17]. म० संसारि ।

[१५] यह छन्द म० १६, पं० २१, ग्या० २२, र० ना० न० २३, अ० २४, स० प्र० १.३१ है ।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .४,.५,.६ हैं :

(.४) कडियाली हीरा की (दीपइ रे—न० अ०) जोड़ि ।
(.५) चिहुं दिसि मोतीय झिगमिगइ ।
(.६) कालीय पीलीय ढलकइ छइ ढाल ।

इनमें .७ .८ भी हैं, जो इस प्रकार हैं :

(.७) एक माता दूजा (बीजा--ग्या०) ऊमता ।
(.८) पं० र० ग्या० ना० : तठइ राजा जाइ अरु वासी छइ (बसीयौ—ना०, पहुचा छइ—ग्या०) धार ।
न० अ० : पांच (सात—न०) मंजल करि आवीयउ धार ।

प्र० स० में० .४,.५,.६ इस प्रकार हैं :

(.४) ब्राह्मण उचरइ बेद पुराण । (तुलना० स्वीकृत १४.२)
(.५) मंगल गावइ कामनी । (वही, .३)
(.६) उठी षेह नवि सूझै भाण ।

[1]. प्र० शिर । [2]. स० प्र० प्रथम । [3]. स० प्र० पयाणउ (पीयाणो–

रातइ[६] फूंदा[७] पाट का ।
बाजा जी बाजइ घुरइ निसाण ।
राजा चालियउ परणिवा ।
षेहाडंबर छाइयउ भाण ॥ धु० ॥

[१६]

राजा[१] उतरयउ[२] धार मंझारि[३] ।
मन मांहे[४] हरषियउ[५] राजकुमारि ।
जाइ[६] सषी करउ आरती ।
सकल[७] संपूरण[८] पूनिम[९] चंद ।
सुरनर[१०] मोह्या[११] सुरगका[१२] ।
गोवलमाहि[१३] जिसउ[१४] परतिष्य[१५] गोविंद ॥ धु० ॥

प्र०) । ([४]+[५]), मू० गढ चीत्तोडि, ग्या० दुरगि चीत्तोड । [६]. प्र० राता । [७]. म० षेडइ, मू० बांधइ ।

[१६] यह छन्द म० २३, पं० २५, ग्या० २७, र०, ना० २८, न० २६, अ० ३०, स० १.४६, प्र० १.४६ है ।

[१]. ग्या० न० राजा जी, स० प्र० बीसल । [२]. र० ग्या० उतर्या, स० आव्यौ, प्र० आवीयो । [३]. पं० न० अ० नयर मझारि, र० ना० नगर मझारि । [४] (+५). स० प्र० मन हरषी धन । [५]. र० हरषीया, न० हरषी छइ, ग्या० हरषये । [६]. स० प्र० चालौ (स० चाल्यौ) । [७]. मू० कलत, म० पं० र० ना० न० अ० कलस । [८]. स० दिसो जीसो, प्र० दीसै जसो । [९]. अ० पूरन । [१०]. मू० सुरने । [११]. न० जोवंइ, अ० मिलि जौवै । [१२]. र० ना० छइ देवता, अ० सइ देवता, न० सवि मिली, स० प्र० देवता, मू० सुराइका । [१३]. मू० चंदन, म० ग्या० वदन, पं० र० अ० न० गोकुल माहिं । [१४]. मू० वे पीते, स० जिम, ना० न० अ० [में नहीं है] । [१५]. स० सोहइ, प्र० बसै, पं० जियउ, अ० जइसो ।

[१७]

तोरणि[1] आवियउ[2] बीसलराव ।
सात[3] सषी[4] मिलि[5] कलस[6] वंदाइ[7] ।

---

[१७] यह छंद म० २४, पं० २४, ग्या० २६, र० ना० २७, न० २८, अ० २६, स० १.५२, प्र० १.४९ है ।

किंतु म० में 'कूंकूं' (.४) तथा 'सूर' (.६) के बीच की शब्दावली छूटी हुई है ।

पं० ग्या० र० ना० .२ है : अउहव सूहव कउतिग जाइ ।

अ० में स्वीकृत .१ तथा .२ के बीच अतिरिक्त है :

सरब सोहागिण कउतिग जाइ ।
बीसलदेव कुं बधावीई ।

न० में इनमें से प्रथम स्वीकृत .२ के स्थान पर है ।

प्र० १.२९, १.४५ तथा स० १.२९, १.४८ भी इस छंद से तुलनीय हैं :—

स० प्र० १.२९ : परणवा चाल्यो बीसलराव ।
पंच सषी मिलि कलस बंदावि ।
मोती का आषा कीया ।
कूंकूं चंदन पाका पान ।
अमली समली आरती ।
जाइ अघेरइ दियो मिलाण ।। (तुलना० स्वीकृत १४.१)

प्र० १.४५ तथा स० १.४८ : धार नगरी आयो बीसलराय ।
पंच सषी मिली देषिवा जाय ।
मोती थाल भरावीया ।
माहिं बीजोरउ तिलक सिंदूर ।
अमली समली आरती ।
जाणि प्रतक्ष उगीयो सूर ।।

1. म० ग्या० तोरण । 2. म० बंदीयउ । 3. न० सरब, अ० सात,

मोतियांका[८] रे आषा पडइ[९] ।
चोवा[१०] चंदन तिलक[११] सिंदूर[१२] ।
अवली सवली आरती[१३] ।
जाणि करि तोरणि उगया[१४] सूर ॥ भु० ॥

[१८]

सात सहेलीय[१] बइठी छइ[२] आइ[३] ।
राजा[४] माइ[५] पुजावण[६] जाइ ।
चंदन सीप भरी लियइ[७] ।
काथउ सोपारीय[८] नइ[९] पाका[१०] जी[११] पान ।
रंग[१२] हथलेवउ जोडियउ[१३] ।
जाणे[१४] रुषमणि[१५] सरिसउ[१६] बइठउछइ[१७] कान्ह ॥ भु० ॥

स० प्र० पंच । [४](+[५]). न० सुहागण, अ० सहेलीय, म० सषी मिलइ । [६]. न० कउतिग. प्र० देखबा । [७]. न० गाउ, प्र० जाय । [८]. र० ग्या० ना० न० मोत्यां का, मू० मोरवां में । [९]. स० किया, प्र० हूया । [१०]. अ० चोवानै, न० चोजा, स० प्र० कूंकू । [११].(+[१२]). म० स्यउं करि सिणगार । [१३]. पं० र० ना० न० अ० करइ आरती । [१४]. ग्या० प्र० स० उगियो ।

[१८] यह छंद म० २५, पं० २६, ग्या० २८, र० ना० २६, न० ३०, अ० ३१, प्र० १.५२, स० १.५७ है ।

म० प्र० स० में .३ है : मोतीयां का रे आषा पड़इ । (तुलना० स्वीकृत १७.३)

[१]. स० प्र० पंच सषी मिलि । [२]. स० बइठी, म० मू० लीयइ । [३]. म० मू० बोलाइ । [४]. पं० र० ग्या० राजा हो, न० अ० राजानइ, ना० राजाइ, प्र० स० राजा है । [५]. म० ग्या० माहि, न० अ० चउरीय । [६]. न० अ० माहिं ले । [७]. स० किया । [८](+[९]). र० प्र० स० सोपारीय । [१०]- (+[११]). पं० पाका हो, र० प्र० स० पाका । [१२]. स० हइ, प्र० हरषै,

[१६]

देस[1] मालवइ[2] हूवउ रे[3] उछाह[4] ।
राजमती तणउ[5] रच्यउ रे[6] बिबाह ।
चंदन काठ कउ मांडहउ ।
सोनाकी[7] चउरी[8] नइ[9] मोतियांकी[10] माल ।
पहिलइ[11] फेरइ दीजइ[12] दाइजउ[13] ।
आलीसर[14] सउं[15] ऊपरि[16] माल[17] ॥ ध्रु० ॥

ग्या० रंगहि । [13]. पं० र० वाहिजइ, ना० चाढ़िजै, प्र० मेलीयौ । [14]. पं० ग्या० र० ना० न० अ० जाणि करि । [15]. (+ [16]) स० मिलीयो । [16]. मू० सिरि, पं० ग्या० र० ना० न० अ० [में नहीं है] । [17]. ग्या० बइठउ हो ।

[१६] यह छंद म० २६, पं० २७, ग्या० २८, र० ना० ३०, न० ३१, अ० ३२, प्र० १.५६, स० १.६० है। किंतु म० मू० में उपर्युक्त .५ और .६ के बीच अतिरिक्त है :

दीन्हा छइ अरथ नइ गरथ भंडार। (तुलना० स्वीकृत २८ .४)

[1]. म० देसठि, मू० देस सवि । [2]. न० मालव माहे, प्र० स० मालागिर (इन प्रतियों में मालवा को सर्वत्र 'मालागिर' कहा गया है) । [3]. पं० हूउ, र० हूयउ, ग्या० हूयो रो, ना० कुतौ, स० हूवउ हो, म० कीयउ रे । [4]. र० उच्छाह । [5]. पं० र० राजमती कउ, स० राजकुंवर को । [6]. स० हूवउ, मू० करिबो, ना० रच्यौ । [7]. प्र० सोना तणी । [8]. म० थूंटी । [9]. पं० र० ग्या० ना० न० अ० स० [में नहीं है] । [10]. र० स० मोती की, प्र० मोती री । [11]. अ० प्रथम, प्र० पैहलै । [12]. ना० न० दियउ, स० राइ, प्र० [में नहीं हैं] । [13]. स० दै डाइचौ, प्र० डायचो । [14]. म० अलीयल देस, ग्या० मांडलगढ, पं० र० मंडलगढ, ना० मंगलगढ, अ० मांडवगढ, ग्या० न० मांडिलगढि । [15]. र० सिउं, ना० न० सुं०, प्र० स० सौं,

[२०]

दूजइ[१] फेरइ फेरियउ[२] राउ।
भानुमती राणी कुमरि की माइ।
जमाईनूं[३] दीजइछइ[४] दाइजउ[५]।
दीन्हाछइ[६] अरथ नइ सरब[७] भंडार।
दीन्हउ छइ देस[८] सवालषउ।
सर[९] सइंभरि[१०] सउं[११] नागरचाल[१२]।

ग्या० स्युं। [१६](+[१७].) स० देइ कुडाल, प्र० देस कूडाल (तुलना० स्वीकृत २०·८)।

[२०] यह छंद म० २७, पं० २८, ग्या० ३०, र० ना० ३१, न० ३२, अ० ३३, प्र० १.५८, स० ०·६२ है। म० में अंतिम दो पंक्तियाँ नहीं हैं। म० स० में .२ है :

सयल अंतेउर (पाट महादे राणी—स०) लीयउ रे बुलाइ। (तुलना० स्वीकृत २१.२)

ग्या० में यह पंक्ति स्वीकृत .२ के पूर्व अतिरिक्त है।

अ० में .७ है : हसि करि सासू जी बीनवै।

प्र० स० में स्वीकृत .४, .५ नहीं है, और स्वीकृत .८ के अनंतर अतिरिक्त है :

मांडल गढ़ सूं ऊपर माल। (तुलना० स्वीकृत १६.६)

[१]. ग्या० बीजइ, प्र० स० तीजो। [२]. पं० जउ फिरइ, न० अ० जब फेरीयउ, प्र० स० फेरइ छै। [३]. म० बाई नै, पं० जमाई काई, र० काउं, न० कासूं, न० अ० जमाई कूं, प्र० स० राजकुंवर। [४]. प्र० स० [में नहीं है]। [५]. स० दाडाइचौ, प्र० द्यौ डाइचौ। [६]. पं० र० उण दीन्हा, ना० उण दीया, न० अ० दीना जी, स० प्र० (+७) दीया साधन। [७]. म० पं० र० ना० न० अ० गरथ। [८]. न० दीन्हो। [९](+[१०]). म० टुंक तोडा, अ०

तोडा[१३] टउंक[१४] बिछालसउं[१५] ।
वूंदीय[१६] सरसउं[१७] देस कुडाल ॥ भु० ॥

[२१]

त्रीजइ[१] फेरइ फेरियउ[२] राय ।
सगलउ अंतेउर लीयउ[३] रे[४] बुलाइ[५] ।
राजमतीसउं[६] दीजइ[७] दाइजउ ।
दीन्हा तेजीय[८] तुरीय केकांण[९] ।

तुंक तोड़ा, स० दीधा सैंभर । [११]. पं०. सिउं, र० सिं, म० सूं० (=सउं), ना० तिहां, स० दीधा । [१२]. र० नागर वाल, ना० तेह विचाल । [१३](+[१४]). ग्या० टउंक अछाइ । [१५]. पं० र० ग्या० ना० न० अछइ तेह बिचाल, ग्या० हिव तेह विचाल । [१६](+[१७]). पं० सात ही बूंदीय सर सिउं, ना० जंबू सरसा ।

[२१] यह छंद म० २८, पं० २६, ग्या० ३१, ना० ३२, न० ३३, अ० ३४, प्र० १.५७, स० १.६१ है ।

न० में .३ और .४ के बीच अतिरिक्त हैं :

दीन्हो अरथ नइ गरथ मंडार । (तुलना० स्वीकृत २०.४)
दीन्हा छइ देस सवा लखउ । (,, ,, २०.५)

म० .२ है : भानुमती राणी लीयउ रे बोलाइ । (,, ,, २०.८)

स० .४ है : दीधा साधन अरथ भंडार ।

प्र० .४ है : दीधा सामेहणी नवसर हार ।

[१].(+[२]). म० तीसरइ फेरइ फिरीयउ, प्र० स० दूजो फेरो फेरियउ । [३](+[४]). ग्या० बैठो छइ । [५]. ग्या० आइ । [६]. पं० कायउ, ना० काउं, न० अ० काउं कांउं, र० काय, ग्या० कासुं । [७]. म्० अछै, पं० र० ग्या० अ० दीजइ छइ, स० (+८) दाडाइचौ, प्र० (+८) को डायचो । [८]. अ० जी तेजीय, म० छइ । [९]. पं० सुपाइ, ग्या० सउपा य, न० अ०

दीन्हउ[१०] देस मंडोवरउ[११] ।
समुंद सउं[१२] सोरठ सहु[१३] गुजरात ॥ भु० ॥

[२२]

हाथि[१] तंबालूय[२] अंजलि[३] नीर ।
गलइ[४] जनोइय[५] पहिरण[६] चीर ।
कुलीय छत्तीसइ देषतां[७] ।
पाट पलिंग नइ सावटू सउड़ ,
राजा[८] दीयइछइ[९] दाइजउ ।
बारां[१०] गढसउं[११] दुरग[१२] चीतोड ॥ भु० ॥

संपा ज । [१०]. प्र० दीधो । [११]. म० मंडोवरो । [१२]. म० समुंद मांय, पं० र० सात समुंद, न० अ० सामुहि, स० समंद । [१३]. पं० र० [में नहीं है], ग्या० सर्व, अ० सु, स० सारी, प्र० नै, म० सहस ।

[२२] यह छंद म० २६, पं० ३०, ग्या० ३२, र० ना० ३३, न० ३४, अ० ३५, प्र० १.६४ है ।

पं० ग्या० र० ना० न० अ० में स्वीकृत .१ यथा .२, स्वीकृत .२ यथा .१, स्वीकृत .३ यथा .५ और स्वीकृत .५ यथा .३ हैं । पुनः इनमें स्वीकृत .६ यथा .८ है, और यथा .६,.७ हैं :

(.६) पाय पषालि नइ पूजियउ मउड़ ।
(.७) कर जोड़ी राजा भणइ ।

म० में पं० .६ स्वीकृत .४ के स्थान पर है ।

प्र० में .३ है : चोथो फेरो फेरीयो ।

ग्या० में .४ है : सोवन पालषी सावटू चीर ।

[१]. न० आथ, प्र० हाथे । [२]. प्र० तंबालू राजा । [३]. न० प्र० अंचल । [४]. पं० र० अ० न० कंधि । [५]. प्र० जनोई राजा । [६]. पं० पहिरताइ । [७]. पं० र० ग्या० पाषती, अ० पेषतां । [८]. अ० चउथइ फेरइ, र० प्र० राजा । [९]. पं० दइ छइ, र० दिइ छइ, अ० दीयइ । [१०]. म० बारहां, पं० तुम्ह

[२३]

पाटि बइठीछइ[1] राजकुमारि।
कडिहि[2] पटोलीय[3] चूनड़ी[4] सार।
कांनह[5] कुंडल झिगमिगइ[7]।
सीससउं[8] राषडी[9] तिलक[10] निलाडि[11]।
रूप देषि राजा हस्यउ।
त्रिभुवन मोहियउ[12] जाति[13] पमारि[14] ॥ भु० ॥

[२४]*

तुरीय पलाणीया ठामोठामि[1]।
सासू[2] जुहारण[3] चालीयउ[4] राइ[5]।

बारहा, र० तुम्ह नइ बारह, ना० बार, अ० तुम्हा बारां। [11]. र० गढ़ सुं, ना० गौढ़ां, प्र० गढ़ा सुं। [12]. पं० गरं, न० रंग।

[२३] यह छंद म० ३०, पं० ३२, ग्या० ३४, र० ना० ३५, न० ३६, अ० ३७, प्र० १.५४, स० १.५८ है।

[1]. म० बइसारीयउ, न० बइसारीजइ, अ० बैसारी छै, प्र० बैठी अछइ, स० बईठा हुई। [2]. म० पहिर, ना० करहि। [3]. स० बस्त्र। [4]. पं० र० ग्या० ना० अ० सिरि चूनड़ी, स० जादर, प्र० नवसर। [5]. पं० कानिह, र० कानिहि, न० स० कान्ह, अ० कानहि, ना० प्र० काने। [7]. स० आड़ीया, प्र० ताडीया। [8]. पं० र० ना० न० अ० सोवन, प्र० स० सरब। [9]. स० सोना री, प्र० सोना तणो। [10]. स० मुकुट, प्र० मुगट। [11]. प्र० नेलाड़। [12]. र० मोहइ ए, ना० मोहई, स० मांहइ, प्र० मोहो राणी। [13](+[14]). पं० राजकुमार, र० राजकुआंरि, प्र० देष परमार।

[२४] यह छन्द पं० ३६, ग्या० ३८, र० ना० ३९, न० ४०, अ० ४२, प्र० १.६८, स० १.७१ है।

[1]. ना० ठामो ठाम। [2].(+)[3]. र० जुहार करण। [4](+[5]). न०

कुलीय छत्तीसइ गइलछइ[६] ।
माणिक मोती भर्यउ नालेर ।
सासू[७] आसीसत[८] बंदियइ[९] ।
थे[१०] अविचल राज करउ[११] अजमेर[१२] ॥ भु० ॥

[२५]

हुई पहिरावणी हरिषयउ राउ ।
वाजित्र[१] वाजइ[२] निसाणे घाउ ।
दोवड वाजइ छइ दुडवडी ।

अ० चालीयउ जाम, प्र० स० चाल्यो छइ राइ । ६. प्र० स० साथ छइ, ना० ऊलगे । ७(+८). प्र० सा० भाणमती आसीस, ना० सासू आसीषत । ९. प्र० स० द्यइ । १०. र० तुम्हें, ग्या० थे तउ । ११(+१२). प्र० स० कीज्यो अजमेर, ग्या० करिज्यो अजमेर, ना० करउ गढ़ अजमेर ।

[२५] यह छन्द म० ३१, पं० ३७, ग्या० ३६, र० ना० ४०, न० ४१, अ० ४३, प्र० १.६६, स० १.६६ है ।

किन्तु पं० ग्या० र० ना० न० अ० में .१ है :

परणि अरणि घरि (करी—या०) चालीयउ राउ । (तुलना० स्वीकृत २७.१) ।

म० मू० .४ है : मादल सरसी बाजइ छइ भेरि ।

पं० ग्या० र० .५ है : धरि की (कउ—ग्या०) ऊभी धाह दे (दीयइ—या०) ।

ना० .५ है : धार को नाथ भीतर दहइ ।

न० अ० ·५ है : धार निगलि (सगलाई—अ०) हो (जन—अ०) पेषतां ।

प्र० स० में : (.२) अंचल बंधीयउ राजकुमार ।

(.३) चौरी चढियो राजा भोज की । (तुलना० स्वीकृत २७.६)

वाजइ वरधू भूंगल[3] भेरि ।
सगली धार सुहामणी[४] ।
धारकउ[५] दीप[६] चाल्यउ[७] अजमेरि ॥ भु० ॥

[२६]

राजाकइ बारि[१] घुर्‌या रि[२] निसाण ।
मनमाहे हरषियउ बीसल चहुआंण ।
परणियउ[3] राजा भोज कइ ।
म्हाकइ[४] अंचल बंधीय[५] राजकुमारि ।
सफल दिहाडउ[६] आजकउ ।
जो[७] घरि आविस्यइ[८] जाति पमारि ॥ भु० ॥

(.४) स० : हूवउ संघारउ रावलइ । प्र० : हू संतोष राजा माहि ।
१. पं० बाजा, ग्या० ना० र० बाजा हो, न० अ० बाजा जी । २. पं० र० ग्या० न० अ० बाजीया, ना० बाजै छै । ३. ग्या० अ० भली । ४. मू० मधामणी । ५. ना० बीस [ल] राव । ६. अ० वीद, स० द्विज, प्र० दीपक । ७. र० [में यह शब्द बाद में बढ़ाया गया है], प्र० गढ अजमेर ।

[२६] यह छन्द पं० ३१, ग्या० ३३, र० ना० ३४, न० ३५, अ० ३६ है । म० प्र० स० में यह छन्द नहीं है किन्तु इसकी .४ स्वीकृत छन्द २५ की .२ के प्र० स० के पाठ के रूप में तथा इसकी .५ स्वीकृत छन्द १० की .५ के म० के पाठ के रूप में आई हैं ।

१. ना० बारणै । २. ग्या० न० घुर्‌या रे, र० घुरा जी, अ० घुराइ । ३. ना० मन हरष्यौ । ४. न० अ० [में नहीं है] । ५. पं० अ० गोरी । बांधीयउ, ग्या० बीधी, र० बांधी छै, ना० बांधी । ६. ग्या० अ० दिहाडउ गोरी । ७. ग्या० जउ, अ० जां । ८. ग्या० आवीयउ, अ० आवीयो वीसल हो ।

[२७]

परणि उरणि[1] घरि[2] आवियउ[3] राइ[4] ।
सगली[5] जनमांहि[6] हूउ उछाह ।
राउ[7] कहइ[8] परधानस्यउं[9] ।
कइ[10] म्हांनूं[11] तूठउ[12] सिरजणहार[13] ।

[२७] यह छन्द म० ३२, पं० ३८, ग्या० ४०, र० ४१, ना० ४६, न० ४२, अ० ४४ है। इस छन्द की पंक्तियाँ स० में क्रमशः १ .७८.१, तथा १.७३.२, .३, .४, .५, .६ हैं और प्र० में प्रथम १.७४.१ है, शेष पंक्तियाँ उसके किसी छंद में नहीं है। पं० ग्या० र० ना० न में .५, .६ हैं :

(. ५) चउरी चढयउ राजा भोज की। (तुलना० स्वीकृत .६)
(. ६) बदा-बडेरा मेल्या करतार।

अ० में पं० ५ यथा .७ है, और .८ है :

मन को वांछित पायउ अपार।

म० म्० में .२ है : बाजा जी बाजइ नीसाणे घाउ। (तुलना० स्वीकृत २५.२)

स० १.७३ .३ है : सुणि प्रधान राजा कहइ। (तुलना० स्वीकृत २७.३)

स० १.७३ .६ है : जाइ सुपासण बइठो छइ राइ।

ना० में .१ के स्थान पर है : पाटु दुलीचै बैठेउ चै राइ।

[1]. र० ग्या० परणि अरणि, स० परणी, प्र० परणीनै। प्र० स० [में नहीं है। [3]. स० आयउ। [4]. प्र० स० बीसलराय। [5]. ना० नगर। [6]. ना० मांहे। [7]. पं० र० ना० अ० राजा, न० राज। [8]. न० कइ। [9]. पं० र० ग्या० जन सांभलउ, न० अ० मंत्री सांभलउ। [10]. म० कइ, र० भाइ, अ० कहै, ग्या० [में नहीं हैं]। [11]. पं० र० ग्या० न० म्हानइ, अ० अम्हनै, स० मोहि। [12]. पं० र० तूठउ हो, ना० ग्या० न० अ० स० तूठउ छै, म० तूठाउ। [13]. म० पं० ग्या० देव मुरारी। [14](+[15]). न०

कइ[१४] लेष्यउ[१५] लाधउ[१६] विहितणउ[१७] ।
राजा भोज की चउरी एह चड्या जाइ ॥ भु० ॥

[२८]

गरब करि बोलियउ[१] सइंभरि[२] वाल[३] ।
मो[४] सारिषउ[५] नहीं[६] अवर[७] भूआल[८] ।
म्हा घरि[९] सइंभरि उग्रहइ[१०] ।
चिहुं[११] दिसइं[१२] थांणा रे जेसलमेर ।
लाख तुरीया[१३] पाषर[१४] पडइ[१५] ।
गोरी[१६] राजकउ[१७] बइसणउ[१८] गढ अजमेरि ॥ भु० ॥

विहि लिख्यउ, स० आखर । [१६]. स० लिखाया । [१७]. म० विहतणउ, न० विहतणउ सार, स० वेह का । [१८]. म० चवरी ।

[२८] यह छंद म० ३४, पं० ४०, ग्या० ४२, ना० ५२, र० न० ४४, अ० ४६, प्र० २.१, स० २.२ है । पं० ना० में .५ नहीं है ।

[१]. ना० बोलै, स० ऊभो छइ, प्र० ऊभो । [२]. म० सइंभर, प्र० सींभर्‍यो । [३]. न० वास (∠वाल), म० राव, प्र० राय । [४](+[५]). पं० अ० मउ समउ, र० ग्या० ना० मो समउ, न० मो सम । [६](+[७]). पं० र० अवर न० ग्या० ना० को नहीं अवर, म० नहीं कोइ अवर । [७]. अ० [में नहीं है], स० ऊर । [८]. ग्या० र० प्र० भूपाल । [९]. पं० ग्या० ना० न० अ० मो घरि, र० मो घरे, स० म्हां घरि, प्र० माहरि घरि । [१०]. म० म० नवलषी । [११]. पं० र० ना० म्हारइ चिहुं, न० म्हारा चिहु, अ० म्हारौ चिंहुं । [१२]. म० वली । [१३] म० तुरीय । [१४](+[१५]). म० घरि पाषरइ । [१६]. ना० प्र० स० [में नहीं है] । [१७]. म० गढ्या को, प्र० राजा को । [१८]. प्र० स० थानिक । १९ म० गढ अजमेर ।

[२६]

गरब[1] म[2] करि हो[3] सइंभरि वाल[4]।
तो[5] सारिषा[6] अवर[7] घणा रे भूआल[8]।
एक उडीसा कउ धणी।
वचन[9] दुइ[10] म्हांका[11] माणि[12] म माणि[13]।
जिउं[14] थारइ[15] सइंभरि उग्रहइ।
तिउं[16] आं घरि[17] उग्रहइ हीराकइ षांणि॥ ध्रु०॥

[३०]

थारउ[1] जनम हूउ[2] गोरी[3] जेसलमेरि[4]।
परणि आणी तूं गढ अजमेरि।

---

[२६] यह छन्द म० ३५, पं० ४१, ग्या० ४३, र० ४५, ना० ५३, न० ४५, अ० ४७, प्र० २.२, स० २.४ है।

म० मू० .५ है : थारइ रे भसकउ लूण कउ।

न० अ० ,, : जिउं थारइ सैंभर लूण की।

[1]. स० गरभि। [2](+[3]). पं० र० ग्या० न कीजइ धणी, न० अ० म जाइ धणी, स० न बोलो हो, ना० न कीजइ, प्र० म करिहो। [4]. म० प्र० स० सइंभर राव, पं० सइंभर वालि। [5](+[6]). पं० र० ग्या० तुझ समां, न० अ० तो थकी। [7]. म० राव, पं० आछइ, र० छइ, अ० अधिक छै, न० अधिकइ, ना० [में नहीं है]। [8]. ना० प्र० भूपाल। [9]. पं० वच। [10]. न० ए, प्र० स० [में नहीं है]। [11]. म० म्हाकरि, अ० अम्हारो, स० हमारउ तुं। [12](+[13]). ना० मानिनद्व जोइ, स० मानिंनु मानि, म० मू० जाणि म जाणि, ग्या० मानि न मानि, प्र० मान निसांच। [14](+[15]). प्र० थारि घरि। [16](+[17]). पं० तिहु उवा घरि, स० राजा उणि घरि, ना० त्युं उणरइ, प्र० उण घरि।

[३०] यह छंद म० ३७, पं० ४४, ग्या० ४७, र० न० ४८, ना० ५६, अ० ५०, प्र० २.५, स० २.७ है।

बार[५] बरस की डावडी[६]।
किहां[७] रे[८] उडीसउ अरु[९] जगन्नाथ[१०]।
अन्न छोडउं[११] पांणी तिजउं[१२]।
कहि[१३] मइ[१४] गोरी थारी[१५] जनम की बात ॥ ध्रु० ॥

[३१]

जइ[१] तूं[२] पूंछइ[३] धरह नरेस[४]।
बनषंड[५] सेवती[६] हिरणी कइ वेस।

म० में स्वीकृत .१, .२ की निम्नलिखित शब्दावली 'तूं' के शब्द साम्य के कारण छूट गई है : 'जेसलमेरि। परणि आणी तूं'।

[१]. अ० [में नहीं है], प्र० स० (+२+३) जनमी गोरी तूं। [२]. म० हूयउ। [३]. पं० अ० तूनां। [४]. अ० गढ़ अजमेर : [५]. पं० र० अ० ना० वारह, म० सात। [६]. प्र० स० गोरडी। [७]. म० कहि पं० र० न० कहां, अ० किह, प्र० (+८) किम समरूं, स० (+८) कूं समर्‍यो। [८]. म० नइ, ना० [में नहीं है], न० ते। [९](+[१०]). ना० अ० किहां जगन्नाथ, न० नइ जगन्नाथ, म० को जगन्नाथ, प्र० स० जगनाथ। [११]. ग्या० छाडु, प्र० स० मेल्हूं। [१२]. ग्या० तजुं। [१३](+[१४]). पं० तउ कहिनइ, ना० अ० तूं तउ कहि नइ (न—ना०), स० कहित, ग्या० तउ कहि न। [१५]. अ० थाका, ग्या० थाकी, र० स० थारा।

[३१] यह छन्द म० ३६, पं० ४५, ग्या० ४८, र० न० ४६, ना० ५७, अ० ५१, प्र० २.६, स० २.८ है।

[१]. पं० ग्या० र० अ० ना० न० जणम की। [२]. पं० ग्या० र० अ० ना० न० बात। [३]. पं० ग्या० अ० ना० न० सुणउ, म० धरह, प्र० पूछइ छइ। [४]. न० तरस। [५](+[६]). म० बनषंड सेवउं, पं० बनषंड भोगवउ,

निरजला करती एकादसी।
एक आहेडीय[७] वनह मंझारि।
बिहुं[८] वाणे[९] उरि आं[१०] हणी।
म्हांकउ[११] काल[१२] घस्यउ[१३] जगन्नाथ दुआरि[१४] ॥ भु० ॥

[३२]

हिरणी[१] मरणि[२] समरयउ जगन्नाथ।
आइ पहूतलउ[३] त्रिभुवन नाथ।
संष रे[४] चक्र गदाधरो[५]।
मांगि[६] हे[७] हिरणी[८] मनह[९] विचारि[१०]।
जइ[११] तूं[१२] तूठउ[१३] त्रिभुवनधणी।
स्वामी[१४] पूरब[१५] देसकउ[१६] जनम निवारि[१७] ॥ भु० ॥

ना० वनषंड भोगउं, स० बनषंड रहती। ७. प्र० आहडी आयो। ८. म० मृ० दुहुं, प्र० दोए, स० ले। (९+१०). म० मृ० बाणे विचित्रां, पं० र० अ० बाणा उरि, न० बाणे उर, स० बाणां उरहु। ११. पं० र० अ० ना० न० ग्या० [में नहीं है]। १२. पं० र० न० ना० ग्या० मरण, प्र० स० जनम। १३. पं० ना० न० ग्या० हूवउ, र० हूउ, स० दीज्यो, प्र० हूयो। १४. म० कइ बारि, प्र० कइ दूवारि।

[३२] यह छन्द म० ३८, पं० ४६, ग्या० ४६, र० न० ५०, ना० ५८, अ० ५२, प्र० २.७, स० २.६ है।

म० .५ है : तइ तूठइ वर पामिजइ। (तुलना० स्वीकृत ४०.३)

स० में .२ नहीं है।

१. ग्या० हिरण। २. स० मणि। ३. न० अ० पहुतौ जी, र० ग्या० ना० अ० पहूतौ, ग्या० पहूतउ। ४. प्र० नै। ५. न० गदा करि धरयउ, स० गदाधरीय। ६. पं० र० ग्या० ना० अ० तू तउ मांगि, प्र० मांगि हो। ७(+८). मृ० प्र० हिरणली। ९. पं० चितह, र० चितय, ना० मन मै। १०. पं० र० ग्या० मझारि। ११(+१२). ना० हू, पं० ग्या० जउ, स० तो।

[३३]

पूरब देसकउ[१] कुच्छनउ[२] लोग[3]।
पान फूलांतणउ[४] नवि[५] लहइ[६] भोग।
कण संचइ[७] कूकस भषइ।
अति चतुराई गढ ग्वालेरि।
कामणी जेसलमेररी[८]।
स्वामी पुरुष भला अछइ[९] गढ अजमेरि॥ ध्रु०॥

---

[13]. स० तूठा। [१४]. पं० ग्या० र० न० म्हारउ, ना० अ० म्हाकै, स० [में नहीं है]। [१५](+[१६]). प्र० स० पूरव देस म्हारो, म० पूरव्यउ देस कउ। [१७]. ना० विचार।

[३३] यह छन्द म० ३६, पं० ४७, ग्या० ५०, र० ५१, न० ५२, ना० ५६, अ० ५४, प्र० २.८, स० २.११ है।

किन्तु म० .४, .६ है : (.४) चतुर माणस राजा भोज की धार।
(.६) लूगडउ चोपडउ गढ़ग वालेर।

अ० में .४, .६ म० की उपर्युक्त हैं : फिर है अ० .७ : किंह खंड कोई सराहिजै। इसके अनंतर यथा अ० ८ स्वीकृत .६ है।

न० में .४, .६ यथा म० में हैं तथा यथा .७ स्वीकृत .६ है, .८ नहीं है।

प्र० तथा स० में .६ है : भोगी (भोगो—स०) लोक दक्षण के (को—स०) देस।

[१]. म० देसनउ, प्र० देस का, स० देसके। [२]. म० कच्चउ, म० पांडुरउ, ना० कच्छनो, र० कचनो, ग्या० कछु नहीं, न० कुचनउ, प्र० कछूहा जी, स० पूरब्या। [3]. पं० ग्या० प्र० स० लोक। [४]. र० फूलां कउ। [५](+[६]). स० तु लहइ। [७]. प्र० संघचै। [८]. ग्या० प्र० जेसलमेर की। [९]. म० में यह शब्द नहीं है।

[३४]

जनम मांगिउं[1] स्वामी[2] मारू कइ[3] देसि[4] ।
राजकुंवरि[5] अनइ[6] रूप[7] असेसि[8] ।
रूप[9] निरूपम[10] मेदिनी[11] ।
पहिरणइ[12] लोवडी[13] झीणइ रे[14] लंकि ।
आछी[15] गोरी[16] धण[17]पातली[18] ।
अहर[19] प्रवालीय[20] नइ[21] दाडिम[22] दंत ।। ध्रु० ।।

---

[३४] यह छन्द म० ४४, पं० ४८, ग्या० ५१, र० ५२, न० ५५, ना० ६०, अ० ५८, प्र० २.६ स० २.१२ है ।

पं० ग्या० र० ना० न० में यथा उपर्युक्त .७, .८ हैं :

(.७) इसीय बिधाता विहि घड़ी ।
(.८) कामिणी कहूं कि रूप अनंत ।

अ० में यथा .७, .८ है : (.७) माणवती धण लाजसूं ।
(.८) रतन पायौ जाकौ जाणौ जी कंत ।

इनके अतिरिक्त अ० में यथा .६, .१० पं० .७, .८ हैं ।

प्र० स० .५ है : ललयांगी (ललांगी—प्र०) धन कूंवली ।

[1]. पं० ग्या० र० दीयउ, प्र० हूयो, स० हूवउ, ग्या० ना० मांगूं । [2]. पं० र० [में नहीं है], प्र० स० थारउ, ग्या० गोरी । [3](+[4]). न० मारूयइ देस, ग्या० मारू को देस । [5]. म० प्र० राजघरिणि । [6]. पं० र० न० अ० अरु, स० अति, प्र० नइ । [7]. पं० रूपि, न० पआर (∠अपार) । [8]. पं० असेसि, न० नरेस । [9]. पं० रूपि । [10]. पं० नइ रूपिन, र० अ० निरूपी । [11]. पं० मेदन, ना० मेहिना । [13]. म० उठणइ, र० पहिरणि, न० पहिरण, प्र० स० आछा । [13]. प्र० स० कापड़, ना० झीणी लोवडी । [14]. पं० झीणइए, र० अ० जीणइ जी, ना० झीणउ, न० झीणइ जी । [15](+[16]). म० अछइ गोरी, पं० अ० आछी गोरी, ना० आची गोरी । [17]. र० [में नहीं

[३५]

चितइ[1] चमकियउ बीसल राव।
धणकउ[2] बचन[3] वस्यउ[4] मनमाहिं[5]।
म्हे[6] विसराह्या[7] गोरडी[8]।
मइ[9] तइं[10] बरस बारहकी काणि[11]।
ऊलग कइ मिसि गम करउं।
जिउं घरे आवइ हीरा की षांणि॥ भु०॥

है], स० धण। [18]. प्र० कूयली, स० कूंवली। [19]. प्र० अहैर, स० अहिरध। [20]. म० प्रवालि, ग्या० परवांली, प्र० पवालो, स० बाला। [21](+[22]). म० ग्या० ना० दाडिम, प्र० जिसा निरमला, स० निर्मल।

[३५] यह छंद म० ४५, पं० ४२, ग्या० ४४, न० र० ४६, ना० ५४, अ० ४८, प्र० २.३, स० २.५ है।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .५, .६ हैं :

(.५) कह्यउ म्हारो (तुम्हारउ-—या०) जे सुणउ। (तुलना० स्वीकृत ११८.५)

(.६) म्हे तो जाइ देषस्यां (नइ देषस्युं—ग्या०) हीरा की षांणि।

प्र० स० में स्वीकृत ·१, ·२ परस्पर स्थानांतरित हैं, और ·५, ·६ हैं :

(·५) कउ म्हारइ हीरा उग्रहइ।

(·६) नहीं तो गोरी तिजूं हूं पराण।

और प्र० ·३ है : मन माहिं कूमषाणो षरो।

[1]. ग्या० चित्त। [2]. र० ना धण का। [3]. स० बोल। [4]. पं० र० रह्या, ना० बस्या, ग्या० हीयउ बस्या। [5]. अ० चित माहिं। [6]. म० म्हा, स० हूं। [7]. ग्या० बिचिराया, न० सिराह्या, स० वीसद्वयो। [8]. म० न० ऊचट्या, न० गोरी तइं देषस्यां हीर कह्या, स० ते वेदिठा। [9](+[10]). पं० र० ना० न० हम तुम्ह, अ० दुव्या हम तम, प्र० अम तम, स० म्हानुं। [11]. प्र० स० लांब।

[३६]

हूं[1] विरासी[2] राजा[3] मइ[4] कीयउ[5] दोस[6] ।
पगरी[7] पाणहीस्यउं[8] किसउ[9] रोस[10] ।
कीडी ऊपर कटकी किसी ।
म्हे हस्या थे करि जाणियउ साच ।
ऊभीय[11] मेल्हि[12] किउं[13] चालीयउ[14] ।
स्वामी[15] जलह[16] विहूणा[17] किम जीयइ[18] माछ[19] ॥भु०॥

---

[३६] यह छन्द म० ४६, पं० ४३, ग्या० ४५, न० र० ४७, ना० ५५, अ० ४६, प्र० २.४, स० २.६ है।

म० में .३, .४ छूटी हुई हैं।

स० में .३, .४ हैं : (.३) मे य हसंती बोलीयो ।
(.४) आपणइ मान हतौ मानस छइ सांस ।

प्र० में .३, .४ हैं : (.३) मोरे हंसंता बोलीयो ।
(४) आपणइ मनि तुमे मानियो सांच ।

[1](+[2]). म० हूं भूली, पं० र० म्हे विरस्यां, स० हूं बराकी । [3]. पं० र० बोलियउ, ग्या० राजी, प्र० म्हारा धणी, स० धणी । [4](+[5]). स० मो कियउ । [6]. स० रोस (तुलना० .२) । [7]. पं० र० पगकी, ग्या० पायनी, ना० पांनी, न० पायरी, स० पांवकी, प्र० [में नहीं है] । [8]. र० पाणही सिं, प्र० पाणही उपरि, ना० पाणिही सुं, स० पाणही सुं । [9](+[10]). पं० स० कियउ रोस, प्र० ए कसो रोस । [11](+[12]). स० ऊभडी मेल्हे, म० ऊभडी मेल्हि । [13]. पं० ग्या० न० अ० ऊलग, र० उलगइ, ना० प्र० नै, स० [में नहीं है] । [14]. पं० अ० चल्यउ, र० चलिउ, ग्या० चड्यउ, ना० चालस्यां, म० चालीयइ । [15]. पं० र० ग्या० ना० न० अ० प्र० [में नहीं है], स० राजा । [16]. म० जलिहि, पं० अ० स० जल । [17]. स० जल । [18]. ना० जीवस्यै । [19]. स० हांस ।

[३७]

सइंभरि[१] धणीय[२] किउं[३] ऊलग जाइ[४] ।
म्हाकी[५] तूं[६] गइल[७] दे[८] करह[९] पठाइ ।
पीहर[१०] जाइसु[११] आपणइ[१२] ।
आणिसुं[१३] अरथ नइ[१४] गरथ[१५] भंडार ।
आणिसुं[१६] हीरा[१७] पाथरी ।
स्वामी[१८] मालव[१९] सरसी[२०] आणिसुं[२१] धार[२२] ॥ ध्रु० ॥

---

[३७] यह छन्द म० ४८, पं० ५६, ग्या० र० ६०, न० ६३/१, ना० ६८, अ० ६६, प्र० २.१४, स० २.१५ है।

पं० ना० र० .६ है : म्हाकइ (म्हाकर—पं०, मांकी—नां०) तउ भोज स्युं (सि—र०) आणंली भार (अणूंली धार—र० ना०)।

ग्या० .६ है : आणिसु भोज सरसीय धार।

न० अ० ,, : सहस गयंद सुं आणिस्युं धार।

[१], म० सइंभर, प्र० जोरे, स० रहि रहि। [२](+[३]). म० धणीय कउ, पं० धणीय किम, अ० धणीकुं, न० धणी कूं क्युं, प्र० धणी तम्हे, स० राव तू। [४]. प्र० जाउ। [५]. ग्या० म्हाका। [६]. र० ग्या० ना० न० प्र० [में नहीं है]। [७]. प्र० गेलि। [८](+[९]). प्र० तूं करहो, ना० दुइ करह। [१०]. ना० मीहर, ग्या० पहर। [११]. म० सांकली, पं० र० जाइ करि, ना० जाय कै, प्र० जाऊ हूं। [१२]. प्र० माहरै। [१३]. म० लावउं पं० आणिस्यं, ना० आणसुं, प्र० आणू जी। [१४](+[१५]). पं० र० गरथ, स० नइ दरब न० [में नहीं है]। [१६]. म० ल्यावउं, पं० ग्या० प्र० आणूं। [१७]. म० हीरा नइ। [१८](+[१९]). प्र० स० मांडव। [२०]. स० सरसीहु। [२१]. म० आणउं, प्र० आणूं, ना० आंणु ली (∠जी)। [२२]. म० कार।

[३८]

हूं न पतीजउं गोरी[1] थारइ[2] वइणि[3] ।
जां[4] नवि[5] देषउं[6] आपणइ नइणि ।
काल्ह ही[7] उलगाणउ हुइ[8] गम[9] करउं[10] ।
तेडूं[11] बंभण दिन गिणउ[12] आज ।
छोडउं[13] देस सवालषउ[14] ।
गोरी[15] कोकि[16] भतीजा[17] म्हे[18] सउंपिस्यउं[19] राज ॥ धु० ॥

[३९]

ऊलग जाण[1] कहइ धणी[2] कउण ।
घर माहे वरउ[3] नहीं कूल्हडइ लूण ।

---

[३८] यह छंद म० ४९, पं० ४९, र० ५३, ग्या० ५२, न० ५६, ना० ६१, अ० ५९, प्र० २.११ है । किंतु र० ना० अ० में स्वीकृत '४ तथा .६ परस्पर स्थानांतरित हैं।

१. म० स्वामी । २(+३). र० थारइ हे वयण, प्र० थारा हे वयण, ग्या० थारे हे वयणि । ४(+५). प्र० जबही न । ६. पं० देषं, र० न० देषुं । ७(+८). म० उलग । (९+१०). प्र० निगम करूं । ११. र० तेडे, प्र० तेडी, ना० तेरू, म० कोकउ, ग्या० क्रोध, न० अ० कोइक (तुलना० म० पाठ) । १२. र० गिणावो, प्र० धरूं, ग्या० गिणइ । १३. न० राज छोडिसूं, अ० छोडिहूं, र० छोडहों । १४. प्र० मंडोवरो । १५. पं० र० ग्या० न० अ० [में नहीं है] । १६(+१७). पं० अ० कोकि भतीजउ, र० कोका भु [ती] जा नुं, ना० काका भतीजा, ग्या० न० कोकि भतीजा नुं, प्र० काक भतीजा नै । १८(+१९). र० ग्या० संपिसिउं, न० सूपिसुं, प्र० सुपू, ना० सहू परचा ।

[३९] यह छंद म० ५०, पं० ५४, र० ग्या० ५८, ना० ६६, न० ६१, अ० ६४, प्र० २.१२ है ।

पं० र० ग्या० अ० में .२ है : जिहि (जहां—ग्या०) की गांठडी गरथ

घरि[४] अकुलीणीय[५] रे[६] कलि करइ[७]।
रिण का[८] चंपिया[९] घर[१०] न सुहाइ।
कइ रे जोगी हुइ नीसरइ[११]।
कइ[१२] मुहडउ[१३] लेइ[१४] नइ[१५] ऊलग[१६] जाइ ॥ भु० ॥

[४०]

ऊलग जाण की करइ छै बात।
हूं[१] पण[२] आवसुं[३] रावलइ[४] साथि।

नइ (न—ग्या०) लूण।

न० में .२ है : गाठडी गरथ नइ कूल्हडउ लूण।

ना० में .२ है : जिण की गाठडी गरथ न कुलडै लूण।

प्र० में ·६ है : सइंभर्‍यो राउ क्युं योलगै जाय।

१. ग्या० जायइ। २. म० कहइ धण, पं० न० कहइ धणी, र० करिइं धणी, ना० कौ धणीय, अ० धणी कै। ३. प्र० वारा। ४. र० कइं। ५(+६). ना० अलाण, प्र० अकुलेणी। ७. र० कलह करइ, न० करि करइ, ग्या० कुलि करइं। ८. पं० र० कइ रिणका, ना० कइ रिण, अ० रिणि। ९. अ० च्युंपीया। १०. ग्या० धरि। ११. म० नीकलइ। १२(+१३-+१४). न० अ० कइ मुह लेइ, प्र० सींभरयो राउ। १५(+१६). ग्या० न० ऊलग, ना० उलगण, प्र० क्युं योलगै।

[४०] यह छंद म० ५६, पं० ६२, र० ग्या० ६६, ना० ७४, न० ६८, अ० ७२, स० २.३०, प्र० २.२७ है।

म०. १ है : ऊलग चालिस्यइ धण करै उकंत।

म० .२ „ : तूं नवि मेल्हि जीवती संगि।

और म० में स्वीकृत .३, .५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

पं० ग्या० ना० न० अ० में .१ है : हउं (हूं—र० ना०) न पतीजुं राजा थाकी (राउली–अ०) बात। (तुलना० स्वीकृत ३८.१)

१.(+२). पं० र० ग्या० ना० न० अ० साघण। ३. पं० ग्या०

बांदीय[५] हुइ करि[६] निरबहूं[७] ।
पाव[८] तलासिसुं[९] ढोलिसुं[१०] वाइ[११] ।
ऊभीय[१२] पुहरइ[१३] जागिसुं[१४] ।
इण परि[१५] ऊलगुं[१६] आपणउ[१७] राय[१८] ॥ ध्रु० ॥

[४१]

गहिली हे[१] मुंधि तोहिं[२] लागी छइ[३] वाइ ।
अस्त्री लेइ कोइ ऊलग जाइ ।

चालिस्यइ, ना० चस्यै । ४. पं० राइकइ । ५. पं० बांदडी हुइ, न० बांदी करि, स० दासी हुइ । ६. न० हूं, अ० छानी । ७. म० चालिस्यउं, पं० वापरउं, ग्या० हूं रहूं, न० अ० रहूं । ८. म० थारा पाव, अ० पाइ । ९. पं० तलासिस्यां, र० तलासिस्यो, ना० तलीतसुं, ग्या० उलसिसुं, न० तलामसि, प्र० तलासुं । १० पं० ढोलिस्या, र० घालस्यो, प्र० ढोलूं । ११. ना० वाव, न० अ० वाउ । १२. स० पुहर । १३. म० पहुरइ, ना० पौंहरैं, प्र० पोहरइ, स० पुहर प्रति । १४. पं० जानिसिउं, अ० जागिस्यां । १५. पं० अण परि, अ० इणि विधि, स० इण हर । १६. पं० सेविस्यउं, र० ना० न० स० सेवस्युं, अ० सेवस्यां । १७. ग्या० रावना । १८. ग्या० पाउ, स० नाह ।

[४१] यह छंद म० ५७, पं० ६३, र० ग्या० ६७, ना० ७५, न० ६६, अ० ७३, प्र० २. २८, स० २.३१ है ।

म० .१ है : सात सहेलीय आइ बईठ । (तुलना० स्वीकृत ५१.१) ।
,, .२ है : ऊलग जाती स्त्रीय न दीठ ।
,, .३ है : काइं लजावउ गोरडी ।
,, .६ है : एइ पूरबउ धण षोटउ हे सार ।
ना० .१ है : गहिली मूंध तूं षरीय गिमार ।
,, .२ है : हीयडलै नयण नहीं थारै नारि ।

१(+२). ग्या० मुंध किउ । ३. त्या लगावीयउ, पं० न० अ० लागी ।

भोली[४] है[५] नारि[६] तूं[७] बाउली ।
चंद कूडइ[८] किउं ढांकियउ[९] जाइ ।
रतन छिपायउ[१०] किउं[११] रहइ[१२] ।
उवइ वाचाकउ[१३] हीणउ पूरव्यउ राउ ॥ भु० ॥

[४२]

चालियउ[१] उलगाणउ[२] धण[३] जाण न देइ[४] ।
मो नइ[५] मारि कइ सरिसीय[६] लेइ[७] ।

[४](+[५]). प्र० स० गहिली (तुलना० स्वीकृत.१)। [६](+[७]). प्र० स० मुंधउ तूं, ग्या० नारि किउं । [८]. प्र० कहो । [९]. र० न० अ० प्र० स० ढांकणउ । [१०]. पं० र० ना० न० छिपायउ गोरी । [११](+[१२]). र० न० किम रहै, म० किउं छपइ । [१३]. पं० उठ ठइ वाचाको, स० आगह वाचा कौ ।

[४२] यह छंद म० ७२, पं० ६६, र० ग्या० ७०, ना० ७८, न० ७२ तथा १०७, अ० ७६ तथा ११३, प्र० २.२६, स० २.३२ है ।

म० .४ है : नइण दोइ लै नइ मो मारि ।
,, .५ ,, : जोवन वन भरि नारितइ । (तुलना० स्वीकृत .५)
,, .६ ,, : जीवतो न छोडउं स्वामी थारउ हो कोड ।
,, .७ ,, : उलग जातउ तू कइ मुगछ होउ ।
न० .४ है : नयण दुइ वाण कर वीधीयउ राउ । (तुलना० म० .४)
,, .५ ,, : जोवन कइ भर नाहला । (तुलना० म० .५)
,, .६ ,, : राति दिवस साथइ सेवसुं वेड ।
,, .७ ,, : ओलगे म्हाकुं नवि चलउ । (,, म० .७)
,, .८ ,, : हूं तौ जीवती थाका न मूकूं जी केडि । (,, म० .६)

न० अ० में न० ७२=अ० ७६ के अतिरिक्त न० १०७=अ० ११३ भी यही छंद है, किंतु न० ७२=अ० ७६ पं० के अनुसार है, और न० १०७= अ० ११३ म० के अनुसार है ।

अंचल ग्रहि धण[८] इम[९] कहइ[१०] ।
दुइ दुष सालइ हो सामीय सांझ ।
जोवन मुरडीय मारिस्यइ[११] ।
दोस किसउ[१२] जइ[१३] साधण[१४] बांझ[१५] ॥ भु० ॥

[४३]

छोडि[१] नइ[२] गोरी[३] तूं[४] दे[५] मुझ जांण[६] ।
बरस दिन[७] रहूं[८] तउ[९] थारडी[१०] आंण ।

स० में .४, .५ .६ हैं :

(.४) इक इकेली जोवन पूर । (तुलना० स्वीकृत ६१.६)

(.५) सूनी सेज बीदेस पिउ । (तुलना० स्वीकृत ७५.६)

(.६) दुइ दुष नाल्ह कहइगो कूण (तुलना० स्वीकृत .८)

[१]. म० चाल्यौ, ग्या० चालिस्यां । [२]. र० ग्या० उलग, ना० ऊमांण । [३]. र० तोई, ना० [में नहीं है] । [४]. अ० चालण न देइ, प्र० जाण न देहि (—देस प्र०) । [५]. पं० र० कइ मुछ, अ० कहि मोहि, न० मोइहां । [६]. म० सरि साथा, ग्या० सरसीय, अ० साथइ जी, स० साथ तुं, प्र० मुझ सरसी । [७]. स० लेहि । [८](+[९]). पं० र० ग्या० साधण, प्र० स० तै धन (—ती प्र०) । [१०]. प्र० स० रही । [११]. प्र० मारि ज्युं । [१२]. प्र० कसा को । [१३](+[१४]). ना० जो साइ धण, प्र० गोरडीय । [१५]. प्र० नाह ।

[४३] यह छंद म० ६३, पं० ६७, र० ७१, ग्या० ७२, ना० ७६, न० ७३, अ० ७७, प्र० २.३०, स० २.३३ है ।

किंतु प्र० में स्वीकृत .२ नहीं है ।

[१](+[२]). म० रहु रहु, न० छांडिहे, अ० छांडिरे, प्र० स० छोड़ि अंचल । [३]. ना० अ० गोरडी, म० भावज, प्र० स० धणि । [४](+[५]). म० देहि, पं० र० तउ देहि, ना० दे । [६]. ग्या० जाणि । [७]. अ० दिवस, स० दोय ।

कठिन पयोहर[11] दिव[12] किया[13] ।
हंसि करि[14] गोरडी[15] कहिसु[16] विचार[17] ।
एह[18] दिव[19] कीया[20] आकरा ।
एह[21] दिव[22] सुर नर[23] हूया छइ[24] छार[25] ॥ भु० ॥

[४४]

मइ[1] छंडी हो[2] स्वामी[3] थारी[4] आस ।
जोगिणि होइ सेवउं[5] बनबास ।

---

[9](+[9]). पं० रहउं । [10]. पं० र० न० थारी हे, अ० तुझ, स० देवकी । [11]. म० पयोधर, पं० पयउहर । [12](+[13]). र० देब कीया, ग्या० न० अ० स० दिव करूं, ना० छोडीया, प्र० दव करूं । [14]. पं० र० तब्र हसि करि, म० हसि हसि, ना० अ० तब्र हसि । [15]. स० गोरी । [16]. म० काहिसु, पं० र० ना० न० अ० कहइ, ग्या० करइ, प्र० पूछइ, स० पूछइ छइ । [17]. प्र० स० नाह । [18](+[19]). ना० ए दिव, प्र० एक दिव । [20]. न० कीया छइ, अ० कीधा छै, प्र० सधण, स० छइ पीउ । [21](+[22]). पं० र० न० स्वामीय ज (ईया–र० न०) दिवा, अ० या दिवसां, ग्या० इया दिवाहू, ना० स्वामी ईयां दिवि, प्र० इहें दिवसां, स० ईण दिव थी । [23]. ग्या० सुर । [24]. पं० र० हूआ, ग्या० स० हूया, ना० हुऊ, अ० ज्यानी, न० कीया दूआ । [25]. म० सार, ना० छांह ।

[४४] यह छंद म० ५४, पं० ७०, र० ७४, ग्या० ७३, ना० ८२, न० ७६, अ० ८०, प्र० २.३२, स० २.३५ है ।

म० न० अ० .५ है : कइ रे पाणी पथ गम करउं ।

ग्या० में म० न० अ० की तथा स्वीकृत दोनों .५ हैं, और दोनों के बीच में निम्नलिखित पंक्ति और है : कासी करवत हुं लीयुं जाइ ।

म० में .१, .२ के बीच और है : मइला हो स्णामी किसउ वेसास । (तुलना० स्वीकृत ४५.२) ।

कइ तप तपुं[६] बाणारसी।
कइ[७] तउ[८] परबत[९] चडउं[१०] केदार।
कइ रे हिमालइ माहिं गिलउं।
कइ[११] तउ[१२] झंफग्रउं[१३] गंग दुवारि[१४] ॥ ध्रु० ॥

[४५]

छंडी हो[१] स्वामी[२] म्हे[३] थारी हो[४] आस।
मइला हो[५] थारउ[६] किसउ बेसास।

प्र० स० .४ है : कइ जाइ (पण–प्र०) भैरव पडण पडाई।
,, .५ है : कइ पंडव पथ संचरूं (नीसरूं–प्र०)।
,, .७ है : कह्यउ हमारउ जइ सुणइ। (तुलना० स्वीकृत ५७.३)
,, .८ है : ऊलग स्वामी परिय जी वार (छाड़ि धणि इणी—प्र०)।

१. पं० ना० हिव, न० प्र० स० [में नहीं है]। २. म० छांडी, स० प्र० मेल्ही, ग्या० छोडी हो। ३. प्र० स० मेरे धणी (मे धणी-स०)। ४. म० थारथी, पं० थाहरी, ग्या० थारडी। ५. र० सेवां। ६. र० तपसि; न० तपिसूं, स० तपुहुं। ७(+८). पं० र० ना० न० कइ सरीर। ९. पं० र० न० झंपउ, ना० उप। १०. पं० र० ना० न० देस केदारि, र० देइ किदार। ११(+१२). पं० स्वामी, अ० कै रे, र० न० स्वामीकै, प्र० कै हूं, स० कइ जाय। १३. पं० ना० न० धण मरिसी, र० धण मरिस्यै, अ० झुंझुपल्युं, प्र० स० सेवसूं। १४. पं० गंग नइ पारि, र० ग्या० न० गंग कै पारि, ना० गंग मै जाइ।

[४५] यह छंद पं० ७६, ग्या० ८०, ना० ८६, न० ८३, अ० ८७, प्र० २.१६, स० २.१७ है।

यद्यपि यह छंद म० में नहीं हैं, किंतु पिछले छंद में स्वीकृत .१ तथा .२ के बीच म० में जो अतिरिक्त पंक्ति है, वह इसी छंद की .२ है।

१(+२). ग्या० छोडी हो स्वामी, प्र० मेल्ही छै मेरे धणी, स० मेल्ही हो

बांदी करि[7] धणि[8] नवि[9] गिणी[10] ।
म्हाकी[11] सगा सुणीजा मांहे[12] लोपी छै[13] माम[14] ।
जीवत डी[15] मूयां[16] बडइ[17] ।
बालुं हो[18] धणी[19] तुम्हारडा[20] दाम[21] ॥ भु० ॥

[४६]

बोलइ छइ[1] भावज छंडीय[2] काणि ।
अंचल ग्रहि[3] वइसारिय[4] आणि ।

मइ धणी । [3](+[4]). ग्या० न० थारडी । [5](+[6]). र० मैलाधो हो थारो, ग्या० मैला थीआरउ, ना० मैला थारौ, अ० मनह मैला थारउ, प्र० स० मैला राजा थारउ । [7](+[8]). ना० बांदडी कर तै, अ० बांदी सरिसी र, प्र० तैं हूं बांदी, स० तो हूं दासी । [9](+[10]). अ० तैं गिणी, प्र० स० करि गीणी । [11](+[12]) र० ना० न० म्हांका सगा सुणीजा की, प्र० स० सगा सणीजा मां । [13](+[14]). म० लोपीय माम, र० लोपी है लाज, प्र० नीगमी माम, स० ना गमीमा । [15]. अ० इण जीवई माहे, प्र० जीवत डो । [16](+[17]). र० ना० अ० मूई भली । [18](+[19]). पं० बालं हो धण, र० हूं बालो हो धण, ना० हूं बालू हौ धणी, ग्या० न० अ० बालूय हो स्वामी, प्र० बालूं हो भोली राजा, स० वालूं लोभी हूं । [20](+[21]). पं० तुम्हारडा द्राम, र० तुम्हारडो राज, ना० थारडा ठाम, ग्या० न० अ० थारडा दाम (–दास न०), प्र० तुम्हारा दास, स० थारा दाम, म० तुम्हारडा ठाम ।

[४६] यह छंद म० ६४, पं० ७७, र० ग्या० ८१, ना० ६०, न० ८४, अ० ८८, प्र० २.३४ स० २.३७ है ।

किंतु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में स्वीकृत .३ के स्थान पर स्वीकृत .५ है, और

यथा .५ है : कइ या (आं—ग्या०, आतो—ना०) पीहरि लाडली ।

प्र० स० में यथा .१ है : हंसि गलि लाई भोजी सो कांण (भांजी काणि—

ऊभी[५] दीयइ[६] उलंभडा।
कइ धण[७] थारइ[८] हीयइ[९] न समाइ[१०]।
कइ धण[११] जीभकी[१२] आकरी।
किणि[१३] दुष देवर[१४] ऊलग[१५] जाइ॥ धु०॥

[४७]

ऊभडी[१] भावज दीयइ छइ[२] सीष।
रतन कचोलइ किम[३] पाडइ[४] भीष।

और स्वीकृत .१ प्र० स० में यथा .२ है।

प्र० .३ है : आगलि उभी भावजणी।

स० .३ है : आज उलेंभीउ भांजवा।

१. पं० र० न० तठइ आई छइ, ग्या० ना० अ० तठइ आवी छइ। २. म० छंडी हे, पं० र० ग्या० मानीय, ना० नी, न० मजिय, अ० छंडीय। ३. प्र० ग्रहीत। ४. पं० र० न० अ० ग्या० बइसार्यउ (बइसारीउ—ग्या०), प्र० बैसाडीयो, स० तिय बइसाडी छइ। ५. अ० बोलै छै। ६. अ० देइ। ७. र० स्वामी कै धण, पं० सायधण वीरा, स० या धन बीरा। ८. प्र० थारि (=थारइ) ९. ना० (+१०) इमायकै, प्र० हृदे। ११. पं० क्या छइ, र० काया छइ, ग्या० कइ आं, ना० कां छइ, स० कै या, प्र० कै ए। १२. प्र० बोली, स० बोलकी। १३. पं० इव कउ, ग्या० न० हिव, र० अब कि, ना० एबेकु, अ० तिणि, स० कौणे। १४. पं० ग्या० देई, र० देइ तै, न० देव किऊं, ना० [में नहीं है]। १५. प्र० ऊलगैं, ना० ऊगल।

[४७] यह छंद म० ६२, पं० ७६, र० ८३, ग्या० ८३, ना० ६२, न० ८६, अ० ६०, प्र० २.३५, स० २.३८ है।

म० में स्वीकृत .६, .७, .८ नहीं हैं, और .६ है : स्वामी ए स्त्रीयां नहीं एण संसारि। (तुलना० स्वीकृत .८)

सा[५] किम[६] पगस्यउं ठेलिजइ[७] ।
इसीय, अस्त्रीय नवि राउ कइ नारि ।
इसीय न देवलि[८] पूतली ।
करल[९] नयण धण[१०] वचन[११] सुमीठ[१२] ।
दईय[१३] निपाई[१४] विहि घडी ।
म्हे तउ[१५] इसी[१६] तिरी[१७] न रवि तलै[१८] दीठ[१९] ॥ ध्रु० ॥

प्र० में स्वीकृत ·५, ·६, नहीं है, स्वीकृत ·८ यथा ·६ है, और ·४, ·५ इस प्रकार हैं :

(·४) असीय न राय तणै रहै वास। (तुलना० स्वीकृत ·४)
(·५) असीय विधाता घडि सकि। (तुलना० स्वीकृत ·७)

ना० में ·४ है : इसी असत्री जिण घर वीस।

पं० न० ग्या० में ·४ है : इसी नारी जिणि कइ घरि नास।

र० ,, : इसी जिणि कइ घर वसिय छै नारि।

प्र० स० ,, : इसी रायां तणौ (राय तणै—प्र०) नहीं च अवास (रहै वास—प्र०)।

१. पं० र० ना० ऊभी हो, ग्या० न० अ० स० ऊभीय, प्र० ऊभी छै। २. पं० र० ग्या० देइ छै, न० देवइ छइ। [३](+[४]). ग्या० जे पडइ, न० काइं पाडइ, प्र० संपजै, स० राय सांपजै। [५](+[६]). म० सा क्यंउ, ना० इसी क्युं, न० असा किउं प्र० तोहि, न० स० ते नाउं। ७. म० पगस्यउं ठेलियइ, र० पग सिउं ठेलिजइ। ८. ग्या० देवहि, ना० देवां, न० देरवह। [९](+[१०]). र० करतल नयण धण, ग्या० न० अ० सरल नयण धण, स० सलूणो नयण धण। [११](+[१२]). पं० र० ग्या० ना० न० अ० षरीय (घरीय—ना०) सुमीठ, स० बचन सुमीत। [१३](+[१४]). ना० देह निपाई, ना० दईय न पाउहि, स० दईय नरवाली। [१५](+[१६]+[१७]). ना० स० इसी अस्त्री, न० अ० म्हे तउ इसी नारी। [१८](+[१९]). पं० रली डिठ।

[४८]

साधण[1] बोलइ[2] सुणि रावका[3] पूत।
ऊलग जाण कउ परउ[5] कुसूत[6]।
बेटी व्याही[7] राजा भोज की।
सोलहउ सोनउ काइं[8] करइ छार।
मरण जीवण स्वामी पग तलइ[9]।
कनक कचोलइ[10] उरि[11] धरइ[12] भार[13]।
हेडाऊ का तुरिय जिउं[14]।
हाथ न[15] फेरइ[16] सउ सउ[17] बार[18] ॥ धु० ॥

---

[४८] यह छंद म० ६६, पं० ८८, र० ८७, ग्या० ८६, ना० ६५, न० ८६, अ० ६३, प्र० २.३६, स० २.३६ है।

म० में स्वीकृत .३, .६ नहीं हैं, स्वीकृत .५ यथा .३ है, और स्वीकृत .७, .८ यथा .५, .६ हैं।

प्र०, स० में .१ है : ऊभी भावज सिंह दुवार (राज कुमारि–प्र०) ज। शेष पंक्तियाँ हैं : स्वीकृत .४, .५, .६, .७, .८; स्वीकृत .२, .३ नहीं हैं।

[1]. पं० र० ग्या० ना० अ० भाटिणि। [2]. पं० ग्या० ना० अ० कहइ। [3]. र० न० राजा का, ग्या० राजा की, ना० राज का। [5]. म० घर नही, न० अ० करउ। [6]. म० सूत, ग्या० छइ सूत, ना० सपूत, न० अ० छउ सूत। [7]. अ० न० परणी। [8]. प्र० वीरा काई। [9]. र० ना० न० राजा पग तलइ, प्र० स० छैइ पग तलइ। [10]. र० न० कनक कचोला, प्र० कनक कचोलडि, स० कनक कचोली, ग्या० कनक कचोलइ। [11](+[12]-+[13]). पं० र० ग्या० उर धरइ भार, ना० अर भर्यो गात्र, प्र० स० उरि भयो भार, ग्या० त्रिष हूया दो। [14]. म० जउ। [15](+[16]). स० तुये दिन दिन हाथ फेर नइ, प्र० दिन माहिं हाथ फेरै। [17](+[18]). ना० बीसलराउ, स० सौ बार, प्र० दस बार।

[४६]

कडुवा बोल न[1] बोलि हे[2] नारि।
मइ[3] तुम्हे[4] मेल्हीय हे[5] चितह[6] बिसारि[7]।
जीभ नवी[8] नहु[9] नीकलइ[10]।
दवका[11] दाधा हो कूपल[12] लेइ[13]।
जीभका[14] दाधा[15] न पाल्हवइ[16]।
नाल्ह[17] भणइ[18] सुणिज्यो[19] सहु कोइ[20] ॥ ध्रु० ॥

---

[४६] यह छंद म० ६१, पं० ७५, र० ग्या० ७६, ना० ८८, न० ८२, अ० ८६, प्र० २.१७, स० २.१८ है।

पं० र० ग्या० ना० न० में स्वीकृत .३ नहीं है। र० ना० न० में स्वीकृत .४ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित है।

न० ·१ है : तुहि सषी जूठी म्हे सांची नारि।

स० .३ है : जीभ न जीभ विगोयनो।

ना० में ·४ के 'दाधा' के अनंतर ·५ के 'दाधा' तक की शब्दावली वर्ण-साम्य के कारण छूट गई है।

[1](+[2]). प्र० म० बोलिस। [3]. पं० र० ग्या० ना० न० म्हे तउ, अ० म्हा, प्र० तै, स० तुं। ४. पं० र० ना० [में नहीं है], न० तो नइ, अ० तुं ना, प्र० मुझ, स० मो। [5]. स० मेल्हसी, ना० मेल्हीयो। [6](+[7]). म० प्र० चितह ऊतारि, ना० चितह बिचार। [8](+[9]). अ० नवउ नहीं। [10]. प्र० ऊगयो। [11]. म० दधका, पं० अ० दव। [12]. स० कुपली, ना० वले। [13]. र० न० प्र० होइ, स० मेल्हि, ना० पाल्यवै। [14]. म० जेभां का, पं० जीभ की, र० न० जीभ। [15]. पं० दाधी। [16]. पं० र० न० अ० नवि पालवै, प्र० स० नु पांगुरई। [17](+[18]). प्र० स० नाल्ह कहइ, ना० नाल्ह भणजे। [19](+[20]). ना० सहूं व विचार।

[५०]

चालियउ उलगाणउ छंडीय[1] काणि[2] ।
अरथ दरब[3] थारा[4] जीव की[5] हाणि ।
तइ बूडइ[6] स्वामी[7] म्हे[8] बूडी[9] ।
तइ[10] गयइ[11] स्वामी[12] ए घर[13] जाइ[14] ।
अरथ दरब[15] गाड्या[16] रहइ ।
जेह नइ[17] सिरिजियउ[18] तेहीज[19] षाइ ॥ ध्रु० ॥

---

[५०] यह छंद म० ६७, पं० ७४, र० ग्या० ७८, ना० ८७, न० ८१, अ० ८५, प्र० २.३८, स० २.४१ है ।

म० .१ है : साधण बोलीय छंडीय काणि । (तुलना० स्वीकृत ४६.१)

" .२ है : ताहरइ हुवइ राजा गरथ की हाणि ।

" .५ है : धन संचइ धरती गलइ ।

प्र० स० .१ है : पंच सखी मिलि बइठी छइ आइ । (तुलना० स्वीकृत ५२.१)

1. ना० झाली । 2. ना० बाग । 3. ग्या० गरथ, र० घर । 4. ना० अ० थाकै, ग्या० घणा, स० लियां, अ० लीया । 5. ग्या० जीवीरी । 6. म० राडइ, पं० र० ग्या० न० अ० बुरइ, ना० मुवइ, प्र० विरो, स० बुरो । 7. पं० र० ग्या० राजा, अ० न० सामी, प्रस स० धणी । 8(+9). म० म्हे रूडी, पं० हम बुरउ, र० हम बुरो, ग्या० ना० हूं बुरी, प्र० मा विरो, स० मौ वीरौ । 10(+11). पं० र० न० तउ मुआ, ना० ग्या० तो मुइ हूं, अ० तो गया, प्र० तोहि विरो, स० तोहि बूरो । 12. पं० र० न० रातउ, अ० राउ जी, ना० राजा तब ही, ग्या० राउ तबही, प्र० थारि, स० थीरौ । 13(+14). पं० र० ना० न० स० ही घर जाइ, ग्या० ना० परघर जाइ, म० इ घर जाई, प्र० घरि जाय, स० घर जाइ । 15. न० ना० ग्या० गरथ । 16. प्र० काढ़ो । 17(+18). पं० जेहि न सिरजियो, ग्या० जेह नइ सिरज्योउ हुवइ, प्र० जिण कूं सरजीया, स० जीण सीरज्यो होई । 19. पं० सोईय, र० ग्या० सोई य, ना० सोइ ज, न० तेह नइ, प्र० तेह ज, म० सो फिरि ।

[५१]

आकुली[1] बोलि[2] पाछइ[3] पछिताइ[4]।
हिव[5] किउ[6] नाह मनावणउ[7] जाइ[8]।
हर[9] तूठइ[10] वर[11] पामिजइ[12]।
सासू[13] न[14] गिणी[15] न देवर[16] जेठ।
म्हाकउ कह्यउ[17] न राखियउ[18]।
म्हा तोहे[19] गोरडी[20] छेहली[21] भेटि[22] ॥ ध्रु० ॥

---

[५१] यह छंद म० ५१, पं० ८०, ग्या० ८४, र० ८५, ना० ६३, न० ८७, अ० ६१, प्र० २.६०, स० २.६२ है।

म० .५ है : राजा मनि ध्रवकर वस्यउ।

न० में .३ नही है।

प्र० स० में स्वीकृत .३ यथा .५ है, और .३ है :

मइ तो कांई नवि बोलियो। (तुलना० स्वीकृत .५)

1. अ० न० प्र० आकरी, स० आडो। 2. पं० र० ग्या० स० होइ। 3. पं० न पाछइ, र० ग्या० नइ पाछइ, न० नइ, प्र० घरो, स० नइ घरौ। 4. र० इव। 5(+6). म० हिव कउ, ग्या० अब किम, न० पछह किंउ, प्र० नाह बोलावइ, स० नांह बोलावउ। 7. प्र० हूं किण मुषि, स० धन कवन मुखि। 8. म० जाहि, स० जाह। 9. पं० परहर, प्र० र० हरि। 10. प्र० पुज्यो होय, स० पूजो होइ। 11(+12). र० परि पाईयै, प्र० तो बाहुडइ, स० बाहुड़ो। 13(+14+15). म० देवर गिणइ, ना० न० अ० सासू न गिणी, प्र० स० देवर मनावई। 16. म० नइ तिहि बड, प्र० अर बडो, स० अरी बड़ो। 17. पं० काय, ग्या० कहियउ। 18. ग्या० नवि रइइ। 19. म० म्हा तउ, न० हम तुम्ह, ना० म्हा नूं, अ० राउ तुम्ह, ग्या० हम तुझ, प्र० हावि, स० हुइ। 20. प्र० स० गोरी सुं, ग्या० हे गोरडी। 21. म० पं० र० ग्या० ना० अ० न० पाछिली। 22. न० अ० द्रेठि, स० भेंट।

[५२]

सात[1] सहेलीय[2] रही[3] समझाइ[4] ।
निगुणी हे गुण हूवइ[5] तउ[6] नाह[7] किउं जाइ[8] ।
फूल पगर जिउं[9] गाहिजइ ।
चांपीया[10] तेजीय[11] जउ रे[12] उससाइ[13] ।
मृग रे चरंता मोहिजइ[14] ।
सखी[15] अंचलि बांधियउ नाह[16] किउं[17] जाइ ॥ ध्रु० ॥

[५३]

सात[1] सहेलीय[2] सुणउ[3] म्हारीय[4] बात[5] ।
कंचूउ[6] षोलि दिषाडिया[7] गात्र[8] ।

---

[५२] यह छंद म० ५८, पं० ६८, र० १०३, ग्या० १०४, ना० ११२, न० १२६, अ० १३५, प्र० २.१८, स० २.१६ है।

म० अ० में .३ नहीं है।

प्र० में .४ नहीं है, और .५ है : एक परा आ भोगंवइ ।

स० में .४, .५ नहीं हैं।

[1]. पं० र० ग्या० ना० न० सखीय, प्र० स० पंच । [2]. प्र० स० सखी मिलि । [3](+[4]). म० बइठी छइ आइ (तुलना० स्वीकृत ६४.१), अ० कहइ समझाइ, प्र० बैठी आय । [5]. म० हूइ । [6](+[7]). ना० न० अ० नाह, प्र० तो पीउ, स० तउ प्रीव । [8]. पं० कं, म० कउ, र० ना० किम । [9]. ग्या० ऊ । [10]. ना० जंपीया । [11]. ना० तुरीय, प्र० रौ जीउ । [12]. पं० तुरीय जिम, ग्या० न० अ० तुरीय, ना० ऊकाहिया । [13]. म० सूसाई, न० ऊसास, र० केकाण, ना० जाइ, अ० ऊमाइ । [14]. पं० र० ग्या० ना० गोरी मोहिजइ । [15]. पं० र० ना० न० अ० भोली । [16]. र० प्रिय । [17]. पं० कं, र० किम, स० कुं ।

[५३] यह छंद म० ५६/१+६०/२, पं० ६६, र० १०४, ग्या० १०५,

जा दीठां[९] मुनिवर[१०] चलइ[११]।
म्हाकउ[१२] मूरष राव न जाणए सार[१३]।

ना० ११३, न० १२७/१+१२८/२, अ० १३६/१+१३७/२, प्र० २·१६, स० २.२० है।

म० ५६.४, .५, .६ हैं : अवकर बोलीयउ कोप्यउ है राव।
तिणि कुवचन सखी धण छली।
ढल गयउ (ढालीउ—ग्या०) पांसउ नइ चूक गयउ दाव।

म० ६०. १, .२, .३ है : रोवती ठणकती कहि नइ बात।
केलि गरभ जिसउ उब्रलउ गात्र। (तुलना० स्वीकृत १२७.३)
उरि जाडी कडि पातली। (तुलना० स्वीकृत ६४.७)

पं० ग्या० में स्वीकृत पाठ के अनंतर क्रमशः म० ५६.४, .५, .६ भी हैं, और स्वीकृत पाठ की .४, तथा .५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

प्र० स० में पंक्तियाँ है, क्रमशः (.१) स्वीकृत .६,
(.२) अस्त्रीय चरित्र नवि लहै विचार (उलषइ गंवार—स०)।
(.३) स्वीकृत .५,
(.४) स्वीकृत .२,
(.५) तउ (तोहि—प्र०) यतीनो म्हारो बालहो।
(.६) निहचै करि योलगैं चालणहार।

[१](+[२]+[३]), पं० र० ना० न० अ० सुणउ सहेलीय, ग्या० सगुणउ सहेलीय। [४](+[५]). म० मोरी बात, ना० माहरी बात, अ० हुं कहुं बात। [६]. म० अंचल, ग्या० कंचू, ना० कंचूवो, अ० कंचूयउ, प्र० स० चोली।

त्रीयां चरित[१४] मइ लष[१५] किया।
राउ नही[१६] सषी[१७] भइंस[१८] पीडार[१९] ॥ ध्रु० ॥

[५४]

आवि दमोदर बैठो छइ[१] पाट।
कैह नइ[२] म्हाका[३] प्रीउ की बात।

---

७. पं० दिखाया, ग्या० न० अ० दिखाडियउ, ना० दिषाईया। ८. न० तात। ९. पं० र० ग्या० जिणां दीठां, न० जिहा दीठा, अ० जांह दीठा। १०(+११). र० मुनि विरचै। १२. पं० ग्या० ना० अ० न० [में नहीं है]। १३. पं० र० ग्या० ना० न० बात, र० प्रकार। १४. प्र० स० लाख चारित्र। १५. प्र० स० आगइ, ना० [में नहीं है]। १६. पं० र० ग्या० ना० न० बडउ। १७. पं ना० न० परि, र० ग्या० पिणि। १८. म० भइस। १९. पं० ग्या० ना० पींडाड।

[५४] यह छंद म० ७३, पं० ६६, र० १०१, ग्या० १०२, ना० ११०, न० १०६, अ० ११५, प्र० २.२६, स० २.२६ है। किंतु .४ के अतिरिक्त पंक्तियाँ म० पं० र० ग्या० ना० में इस प्रकार हैं :—

म० में :
(.१) पंडिया कहियइ दामोदर प्रीय तणी बात।
(.२) केहउ रे थावर केहउ रे राह।
(.३) नित नित चालउ चालउ करइ।
(.५) ग्रह गणि तिणि मंदा कह्या।
(.६) छोड़ि नइ गोरडी प्रीतणी बात।

पं० र० ग्या० ना० में :
(.१) आवि दमोदर प्रीय समझाय।
(.२) ग्रह को पीड्यउ ऊलग जाइ।
(.३) त्रिण दोषइ ग्रह पीडवइ।
(.५) उभीय मेल्हि उलग चालीयउ।
(.६) रोवती छांडि धणि चालीयउ नाह।

षरौ पयाणउ[४] ऊपरइ।
आठमउ थावर[५] बारमउ राहु।
ग्रह गण[६] तो[७] अतिही[८] बुरा।
सिर धुणि गोरी मेल्ही धाह ॥ भु० ॥

[५५]

पंडिया[१] हुं थारी गुणकेरी[२] दासि[३]।
जोसीडा[४] दीह[५] मउडउ[६] परगासि[७]।

न० में पं० .३ के स्थान पर म० .२ है, और पं० .४, .५ के बीच म० .५, .६ और हैं, शेष पाठ यथा पं० का है।

अ० में म० .१ तथा पं० .३ नहीं हैं, शेष कुल दस पंक्तियाँ दोनों की हैं।

१. स० बइसि नु। २(+३). स० कहि न बीरा। ४. स० अयाणउं, प्र० पीयाणो। ५. स० ठांव रवि। ६. प्र० ग्रहि गणा। ७(+८). प्र० तिही।

[५५] यह छंद म० ७४, पं० ५०, र० ५४, ग्या० ५३, न० ५७, अ० ६०, प्र० २.२३, स० २.२५ हैं। ना० में यह छंद तथा इसकी क्रम-संख्या छूट गए हैं।

म० .३ है : कुदिन देई सुदिन परहरे।

पं० ग्या० में .४, और .६ परस्पर स्थानांतरित हैं।

प्र० में स्वीकृत पाठ के पूर्व निम्न पंक्तियाँ और हैं :

राज कूयरि बोलि एक चित्त।
बिप्र हकारीयो वेगि तुरंत।
आया प्रोहित राव का।

१. स० पांड्या वीरा। २. र० गुणा की। ३. म० न० स० दास। ४. पं० जोसी, र० न० जोइसी, अ० जोतिषसुं, स० दिन दस। ५. पं० र० ग्या० न० अ० दिन, प्र० बीस, स० महूरत। ६. प्र० मोडा। ७. न०

मास च्यारि[८] विलंबाविज्यो[९]।
तेतलइ[१०] ल्यउंगी[११] म्हाकउ[१२] प्रीय[१३] समझावि[१४]।
देसूं[१५] हाथ कउ[१६] मूद्रडउ।
सोवन[१७] सोंगी कविलीय[१८] गाइ ॥ ध्रु० ॥

[५६]

पंडिया तोहि[१] बोलावइ रे[२] राव[३]।
लेइ पतडउ[४] पंडिया[५] राउलइ आइ[६]।
सुदिन सोधे म्हारा[७] जोसिया[८]।
काढि न पतडउ अरु बोलि न साच[९]।
मास च्यारि राजा[१०] दिन नहीं।

प्रकास। [८]. स० एक। [९]. प्र० लगि बिलंबज्यो। [१०]. पं० स्वामी पलटिज्यो दिन, र० स्वामी पडिषिज्यो दिन, ग्या० स्वामी पालटज्यो दिन, प्र० फेरी, स० दूजइ फेरई। [११]. पं० र० ग्या० लिउं (लिं–र०), प्र० लेई, स० [में नहीं है]। [१२]. अ० रे, ग्या० न० [में नहीं है]। [१३](+[१४]). न० पिउ समझाइ, प्र० पीउ समझावि, प्र० प्रिय समझाइ। [१५]. पं० न० अ० लाष, र० सवा, म० डउली, स० देसइ। [१६]. पं० न० अ० टंका कउ, र० लाखकउ, प्र० हाथां तणो। [१७]. पं० र० तू नइ सोवन, अ० तो नूं सोवन, ग्या० न० तोनइ सोवन। [१८]. पं० र० न० कपिली।

[५६] यह छंद म० ७५, पं० ५१, र० ५५, ग्या० ५४, ना० ६३, न० ५८, अ० ६१, प्र० २.२४, स० २.२६ है।

ना० में स्वीकृत प्रथम छः पंक्तियाँ नहीं हैं।

[१]. र० न० पंडिया तो नइ। [२]. प्र० बोलावइ छै। [३]. प्र० राय। [४](+[५]). प्र० पतडउ लेई करि। [५]. पं० न० [में नहीं है], अ० स० जोसी। [६]. म० राउलइं आयु, पं० ग्या० राज माहि आइ, र० राहुलै आइ, न० राउल गुनि आउ, प्र० रावल चालि, स० वेगो आइ। [७]. पं० ग्या०, अ० सुदिन देइ म्हाका, र० सुदिन देइ म्हारा, प्र०, स० सूदन (सो दिन–

स्वामी तिथ्थ तेरस[११] नइ मंगलवार[१२]।
इग्यारमउ चंद्रमा[१३] देव नइ[१४]।
त्रीजउ[१५] चंद्रमा[१६] घोडिला[१७] जोग[१८]।
जोगिनी काल भद्रा नहीं[१९]।
पुषि नक्षत्र[२०] नइ[२१] कातिग मास।
तठइ राजा[२२] तुम्हे[२३] गम करउ।
आगिलउ[२४] राजा[२५] पूरवइ आस[२६] ॥ भु० ॥

[५७]

चालियउ[१] उलगाणउ[२] लेइ छइ[३] सउण।
राजा नइ[४] चालतां बरजस्यइ[५] कउण।

प्र०) कहे रूडा। [८]. पं० र० न० स० जोइसी, अ० पंडिया। [९]. प्र० स० बांचइ (बांच्यो–प्र०) पतडउ बोलइ छइ (बोलीयो–प्र०) सांच। [१०]. स० मास एक लगि। [११]. पं० र० न० अ० स० तिथ तेरस। [१२]. प्र० नै सुभ सोमवार, स० बार सोमवार। [१३]. पं० ग्यारमउ चंद्रमहाइ। [१४]. प्र० प्र० देव है। [१५]. प्र० स० तीसरो। [१६]. स० चंद्र छइ। ([१७]+[१८]). पं० ग्या० थारा घोडला जोग, ना० धोडलां जोग, न० स० घोडिला जोग, अ० त्रीजि सुभ जोग। [१९]. न० जोगिनी काल भला नहीं। ([२०]+[२१]). प्र० पुष्य नक्षत्र धूरि, म० पुष्टि नक्षत्र नइ। [२२]. पं० र० न० अ० तिण दिन राजा, प्र० स० जीण दिन सामी, ना० तिण दिन राव। [२३]. पं० र० ना० न० अ० स० थे। [२४]. ग्या० तउ आगिलउ, प्र० आगइ, ना० आगली, न० तद आगिलौ, अ० तठइ आगिलौ, स० ज्युं धणी आगइ। [२५]. पं० र० अ० राउ, प्र० तुमारी, न० राउ थांकी, ना० राय सुं, ग्या० राव तुम्ह। [२६]. पं० अ० पूरइ थारी (थाथी–अ०) आस, र० तुझ पूरइ आस, प्र० पूरै जिम आस, स० पूरइ हो आस, ना० राषज्यो मान।

[५७] यह छंद म० ६६, पं० ८६, र० ६१, ग्या० ६०/१, ना० ६६, न० ११०, अ० ११६, प्र० २.१०, स० २.१३ है।

कह्यउ हमारउ जे सुणउ।
स्वामी सेव[6] दुहेली[7] अरु[8] परदेस।
कर जोडी कामणि[10] कहइ[11]।
देखि[12] कुबुद्धीय[13] धण केरउ[14] वेस॥ भु०॥

[५८]

साधण ऊभी छइ। टेकि[1] कमाडि[2]।
कडिहि पटोली[3] चूनडी[4] सार।

पं० र० ग्या० ना० न० .५ है :

कुहकइ (टहूकै–र० ना०) मोर सुहामणा। (तुलना० म० ६५.५)

पं० .१ है : स्वामी चालण मत लेइ छइ सउण।

र० ना० ,, : स्वामी चालण करो तो जोवो जी सोण (स्वांण–ना०)।

न० ,, : राजा चालण मतुं लियइ छे सोण।

अ० ,, : राजा जी चालितउ लेइ छइ सउण।

ग्या० ,, : चालण मतइ पिछालउ सउण।

प्र० स० .१ है : कुंवरी कहई सुणी सांभऱ्या राय।

.२ ,, : काई स्वामी तुं उलगइ जाइ।

.४ ,, : थारइ छइ साठ अंतेवरी नारि।

६. ,, : राज कुंवरी निति भोगवि राय।

[1]. ग्या० चाल्या। [2]. ग्या० मतइ तउ। [3]. पं० उघालउ, ग्या० घालउ, अ० लेवै छै। [4]. अ० राजकुं। [5]. पं० ना० बरजइ छइ, र० बरजै। [6](+[7]). म० सोहामणी, र० सेवा दुहेली। [8](+[9]). भ० अर परदेस, ना० नयण परदेस। [10]. प्र० स० धन। [11]. प्र० स० बीनवइ। [12]. पं० र० तउ तउ देषि, ग्या० ना० तूं तो (तव–ग्या०) देषि, न० तउ देषि, अ० दंषसुं। [13]. अ० सुबुद्धिया। [14]. पं० र० धण कउ, अ० धण केसी।

[५८] यह छंद म० ६८, पं० ८४, र० ८६, ग्या० ८८, ना० ६७, न० १०४, अ० १०६-११०, प्र० २.५६, स० २.६१ है। अ० में इस छंद की

कानै हो कुंडल झिगमिगइ।
पगे हो पाइल[5] षरीय सुचंग[6]।।
हीरा जडित माथइ[7] राषडी[8]।
मोनइ सरब गति वीसरी[9] थारी चींत[10]।

प्रथम पाँच पंक्तियाँ अ० १०९ तथा शेष तीन अ० ११० में हैं। म० में पंक्तियाँ हैं :—

(.१) साधण ऊभी रे प्रउलि दुवारि।
(.२) रतन जडित सिरि तिलक निलाड।
(.३) जाल जा लंषी गोरडी।
(.४) सोना की पाइल झलकइ छइ पाइ।
(.५) रतन जडित सिर राषडी।
(.६) नेह नइ नाह कउ ऊलग जाइ।

अ० १०९ में स्वीकृत .१, .२, .३ हैं; फिर यथा .४ है : वेसर को मोती अति वणयउ, तथा .५, .६ उद्धृत म० की .५, .६ हैं। अ० ११० में .१–.५ इस प्रकार हैं :—

जाह के घर हिरणाषी हुवै नारि। (तुलना० म० १२१.१)
सो क्यों औलगै और को बार। (,, वही .२)
हेडाऊ केरइ तुरिय ज्यों। (तुलना० स्वीकृत ४८.७)
हाथ न फेरइ सौ सौ बार। (तुलना० स्वीकृत ४८.८)
आविय लाज न ठेलियइ।
शेष तीन पंक्तियाँ स्वीकृत .६,.७, .८ हैं।
स० ८ है : नितदिन उगती माषुं दीनतो।

१. म० रे। २. न० टेकि पाकार, न० टेक पुकार। ३. ना० करह पटोली। ४. अ० भाति। ५. ना० पगही पांनही, र० पग पानही, न० पगे हो पाइल, पं० ग्या० पागा पाइल। ६. न० षरीय सोभंत, ना० सुचंग। ७. न० रतन जडित सिर, ना० हीरा जडित मु। ८. ना० रीषडी। ९. अ० मोनइ

राति दिवस चालूं चालूं करइ[११] ।
स्वामी[१२] थां घरि छइ[१३] किसी इह रीति[१४] ॥ ध्रु० ॥

[५६]

लाड गहेलीय[१] हे लाड[२] निवारि[३] ।
तुरिय पलाणिया ऊभा छइ[४] बार ।
पहिर पटोलीय[५] हे[६] चूनडी[७] ।
कूंकम[८] चंदन चरचि तू[९] गात्र[१०] ।

सर्व बीसर गइ । [१०]. अ० ताहरी चीत, ग्या० थारीय बात । [११]. र० हालुं हालुं करो, म० चलि चलि करउ, ना० ऊलग करइ, न० अ० चालण (चालू—न०) करइ । [१२]. स० [में नहीं है] । [१३]. र० ना० थां घरि राजा, अ० ताहरइ घर अछइ, प्र० तोयां घरि बोलबा, स० नित दिन ऊगही, म० थां घरि छइ राजा । [१४]. ना कीसी आ रीत, न० किसी छे रीति, प्र० भाषु न रीति, स० भाषु दीनतो ।

[५६] यह छंद म० ७१, पं० ८५, र० ६०, ग्या० ८६, ना० ६८, न० १०८, अ० ११४, स० २.६५ है ।

किंतु पं० ना० अ० में .४ है : आड़ी आवि नइ पाकडइ (आपडी—पं०) बाग ।

पं० ना० अ० .५ है : धोखउ (पोधउ—पं०) भाजि नइ मन तणउ ।

पं० ना० अ० .६ है : सगती (पकत-पं०, संगत-ना०) साई (भाषा —ना०) देइ परणया गलइ लागि ।

ग्या० र० में पंक्तियाँ क्रमशः हैं : स्वीकृत .१, .२, .५, .४, .३, पं० .४, पं० .५, स्वीकृत .६ ।

न० में पं० की ऊपर उद्‌धृत तीन पंक्तियाँ स्वीकृत पंक्तियों के अतिरिक्त हैं ।

[१]. स० लांवडगहेला । [२](+[३]). स० हेला उठि वार । [४]. म० हिणहिलइ, अ० हणहणइ, स० आंगणइ छै । ([५]+[६]). स० न आछी । [७]. न० चूनडी भाति । [८]. र० ना० न० तूं तो चोवा, ग्या० तउ चोवा । [९]. म० उरि न, स० पौल, ग्या० चरचि नै । [१०]. म० लगाइ, स० कराइ । [११]. स० उठी ।

दिन[११] ऊगइ[१२] म्हे चालिस्यां[१३]।
हसि हसि[१४] गोरी[१५] पूछि[१६] नइ[१७] बात[१८] ॥ ध्रु० ॥

[६०]

स्वामी ऊलग जाण की षरीय जगीस।
राज[१] चलण करि[२] द्यउं[३] तो नइ[४] सीषि[५]।
इण विधि[६] राज माहें[७] संचरइ[८]।
बइठा[९] राजा[१०] सभा परधान[११]।

---

[१२]. स० सवारां। [१३]. म०षाहते स्याह। [१४]. स० गाढी होई। [१५]. ग्या० न० गोरडी। [१६](+[१७]+[१८]). ग्या० र० गलइ लगाइ, स० गलि लाइ।

[६०] यह छंद म० ६७, पं० ८८, र० ६३, ग्या० ६१, ना० १०१, न० ११२, अ० ११८, प्र० २.५७, स० २.५६ है।

किंतु म० में स्वीकृत .४, .५ नहीं हैं, और स्वीकृत .८, .६, .१० के स्थान पर हैं :

राजा पूछइ मन केरी बात। (तुलना० स्वीकृत ६१ .६)
जूठी साची थे मत कहउ। („ „ .७)
स्वामी थे मुह आड़ो देज्यो जी हाथ। („ „ .८)

ना० में स्वीकृत .६, .७, .८, .६ नहीं हैं।

अ० में .३ है : राखिज्यो छंदो राज में।

प्र० में .८, .६, .१०, हैं : सूणि रावल तुंह ज भिण जाय।
राज माहि नातो भिण करो।
राजा तेडी चोषंडी हेवि।

स० में .८ यथा प्र० है, और .६, .१० नहीं हैं।

[१]. अ० राजा जी। [२]. पं० र० अ० चालण की, ग्या० ना० न० चालतां, प्र० नीति गति, स० कुंवर धन। [३](+[४]). पं० र० ना० देह छइ,

तिणि सुं[12] मीठा बोलिज्यो[13]।
नाई साहुणी नइ[14] घणउ[15] देज्यो[16] मान।
बंदडी[17] सरिसउं[18] नवि हसउ[19]।
तठइ[20] राइ बोलाइसी[21] भीतरि गोठि।
राजा जतन करि बोलिज्यो।
कान नइडा अरु नीची द्रेठि ॥ ध्रु० ॥

[६१]

स्वामी ऊलग जाण की षरीय दुसार[1]।
राज नी[2] नीति[3] जिसी[4] षंडा नी[5] धार।

न० दियइ छइ, अ० षरीय, प्र० घण दीयें, स० देसउं। [5]. अ० जगीस। [6]. म० जिण घर, प्र० ईणी परि, ग्या० अण विधि। [7](+[8]). र० राज माहि गम करे, म० राज माहे वापरउ, ना० जन माहिं संचरै, प्र० राज माहें बेसज्यो, स० राज माहे परिहरई। [9](+[10]+[11]). प्र० स० राज चलायक अरु परधान। [12](+[13]). प्र० स० ईणसुं विरोध नहुं बोलिजइ। [14]. म० नाई साहणी नइ, र० नाई साहुणी नु, न० सइ साहुणी, प्र० स० नावी साहुणी। [15](+[16]). पं० अ० दूणउ देज्यो, र० दोनु, ग्या० दूणउ जी, न० दूणउ, प्र० संुघणों, स० सुघराई। [17]. पं० र० ग्या० न० बांदीय, स० दासी। [18]. म० ग्या० सरिसा। [19]. पं० ग्या० न० मति हसउ, र० मति हसै, अ० जन हुवउ, स० भिणा हंसोउ। [20]. ग्या० तइ। [21]. ग्या० राव बोलावसी।

[६१] यह छंद म० ६८, पं० ८६, र० ६४, ग्या० ६२, ना० १०२, न० ११३, अ० ११६, प्र० २.५८, स० २.६० है।

म० में .६, .७, .८ हैं : राजा बोलावसी भीतर गोठ। (तुलना० स्वीकृत ६०.८)

राज जतन कर बोलज्यो। („ „ .६)
ऊचा कान नइ नीचीय द्रेठ। („ „ .१०)

मूरष लोक जाणइ नही[६]।
चोर जुवारी नइ[७] कल्लाल[८]।
तिण सुं[९] हसीय[१०] म बोलिज्यो।
राजा जी पूछइ[११] मरम कइ बात।
जूठी सांची[१२] थे मत कहउ।
मुहडा आडउ थे दीज्यो[१३] हाथ[१४] ॥ भु० ॥

पं० र० ग्या० ना० में स्वीकृत पंक्तियों के अनंतर .९, .१० हैं :

कान नयड़ा पग द्रस्टि वामि (–दूरही ग्या०)। (तुलना० स्वीकृत ६०.१०)

साचनि रति गति साची गात।

न० में स्वीकृत .३, .४, .५ नहीं हैं, और शेष स्वीकृत के अतिरिक्त पं० .९, .१० हैं।

अ० में स्वीकृत के अतिरिक्त .९, .१० इस प्रकार हैं :

कान नइडा पग वेगला। (तुलना० स्वीकृत ६०.१०)

बा अंतरंग की कहिज्यो थे साथ।

प्र० स० में अंतिम चार पंक्तियों का क्रम है : स्वीकृत .९, .८, .७, .१०,।

१. ना० जगीस (तुलना० स्वीकृत ५८.१). न० गीसार, अ० छै सार, स० तो सार। २(+३). म० राज चलण, पं० राज नी रीति, र० राजा की नीति, ग्या० राजा नी नीति, ना० प्र० राजनीत, न० राजनीतिणं, अ० राजा जी नीति, स० राजनी गति। ४. पं० र० ना० जाणे, न० सु, म० जसउ, अ० जसी ज्युं। ५. म० षंडा की धार, र० षेडा की धार, अ० षंड गीधार, न० हसिय म बोलिज्यो आज। ६. पं० र० न० स० न (नू–प्र०) जाणही, ना० न जाणीये, प्र० न जाणइ सार। ७. पं० र० ग्या० ना० अवर, अ० अनइ। ८. म० कोटवाल, अ० कल्हार। ९. पं० र० तिणस्युं, म० तेहसुं प्र० जासूं, स० ईणुसूं। १०. स० हंसि। ११. न० पूछस्यइं। १२. र० झूठी साची, अ० जूठी बात। १३(+१४). अ० स्वामी दीज्यो हाथ।

[६२]

छंड्या[१] हो[२] गोरी[3] जेसलमेर ।
छंड्या[४] टोडा गढ अजमेर[६] ।
छंड्या[७] टउंक बिछाल छइ ।
छंड्या[८] राणा का[९] रिणवास ।
पंडियउ[१०] बउलावी[११] बाहुड्यउ ।
गोरी राउ उतर गयउ[१२] नदी बनास ।। भु० ।।

[६२] यह छंद म० १००, पं० १०१, र० १०७/१, ग्या० १०७, ना० ११५, न० १२२, अ० १३१, प्र० २.७३, स० २.७६ है।

किंतु म० ग्या० में .३, .४, .५ हैं : (.३) छंडीया चउबारा चउषंडी।
(तुलना० स्वीकृत ६७.३)
(.४) छंड्या हो सइंभरि नागरचाल ।
(तुलना० स्वीकृत २०.६)
(.५) छोड्यउ देस सवालषउ (मंडोवरउ —ग्या०)। (तुलना० स्वीकृत ३८.५ तथा २०.५)

न में स्वीकृत .३ के स्थान पर म० .५ है।

अ० में स्वीकृत .३ के स्थान पर है : चढीया सैंभर नागरचाल । (तुलना० म० .४)

[१](+[२]). पं० र० ना० राजा छंड्या (छांड्या—ना०) ग्या० राजा छोड्या, न० राजा छंडियउ, प्र० छोडीया, स० छोड़इ छइ। [3]. म० आबू, र० ना० न० भोली, ग्या० तंबूअ, प्र० टोडो नै, स० तोडइ नइ। [४]. प्र० स० मेल्ही, ग्या० छोडउ हे। [५]. म० गोरडी, र० तोडा, ना० तोडी, न० तोडा नइ। [६]. न० जेसलमेर। [७]. प्र० छोडीया, स० छाड्यो, ग्या० छोड्या। [८]. अ० चढीया, प्र० छोडीया, स० छाड्या। [९]. प्र० स० सइंभरि। [१०](+[११]). र० एक बोलाव्यो, प्र० एकाबलान, स० एक बलावे। [१२]. ग्या० लंघी।

[६३]

पंडियउ[१] बोलावि नइ आयउ गोरीय पासि।
नाटिका[२] जीव[३] न[४] हीयडलइ[५] सांस।
पलिंग[६] हुंती[७] धण[८] भुइं पडी[९]।
चीर न संभालए न पीवए जी नीर।
जाणे हियडइ हरिणी हणी।
उणिरउ गात्र[१०] उघाडा[११] नइ[१२] विकल सरीर ॥ भु० ॥

---

[६३] यह छंद म० १०१, पं० १०२, र० १०७/२, ग्या० १०८, ना० ११६, न० १२३, अ० १३२, स० २.८० है।

ना० में .१ नहीं है।

म० न० अ० स० .१ है : नाह (गोरी राउ—म०, जब राउ–अ०) उतरि गयउ (उतरियउ–न० अ०) नदी बनास। (तुलना० स्वीकृत ६३.६)

म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० .५ है : बादल छायउ चंदलउ। (तुलना० स्वीकृत ७६.५)

पं० र० ना० न० .४ है : उवा तउ नीर न पीवइ न संभरइ (संभरवइ–न०) चीर।

स० .६ है : ओको गात्र उघाड़ियो जोबन पूर। (तुलना० स्वीकृत ७६.६)

१. ग्या० पंडिउ। २. र० अ० ना० नासिका न० नासरिकइं, स० नारिका। ३. र० जीभ, स० नाड़िनू। ४(+५). र० नहीं गलै, ग्या० नइ हियडलइ, ना० न हीयैजुलै, अ० न बाहुडै, स० हीयउ नै। ६. पं० भुयं, र० न० भुइ, ना० सुध, स० भौ। ७. पं० र० न० स० भूती, ना० चली, ग्या० बइठी। ८. पं० र० न० हुई, ना० हूं, ९. अ० धरणी ढली। १०. म० गात्र, अ० वाका गात्र, न० उणरा गात। (११+१२). म० पधारीय, ना० उघाड़ौ, न० उघाडइ।

[६४]

सात[1] सहेलीय[2] बइठी छइ[3] आइ।
काढउ[4] न पीवए[5] न ऊषध[6] षाइ।
दांत[7] सूकट[8] लिया[9] गोरडी[10]।
भोली[11] तोथी[12] भलीय[13] दवदंती हे नारि।
सो नल[14] राजा[15] मेल्हि गयउ[16]।
पुरष[17] समउ[18] निगुणी[19] नहीय[20] संसारि ॥ भु० ॥

---

[६४] यह छंद म० १०२, पं० १०३, र० १०८, ग्या० १०६, ना० ११७, न० १८६, अ० १३८, प्र० ३.३, स० ३.२ है।

म० .४ है : बलि बलि बइसइ छइ राजकुमारि।

अ० में स्वीकृत .४ के अतिरिक्त म० .४ और निम्नलिखित पंक्ति है :

सुगुण सहेलिय सीख द्यइ।

प्र० २ है : धान न षायि नै सरि नाह।

[1]. ना० साथ, प्र० स० पंच। [2]. न० अ० सखी। [3]. र० बैठीय, स० मिली बइठी। [4]. अ० काउ, स० काहरऊ (काहुऊ) स० पीवौ। [6]. र० ऊषध नवि। [7](+[8]+[9]). पं० न० अ० दांत सूकट पड्या, ग्या० सूकट पड़ी, ना० दांत सूका पड्या, ग्या० दंत सूकट पड़ी, प्र० दंत सकठ बांध्या, स० दांत कष्ट बंध्यो। [10]. पं० र० ग्या० डावडी, ना० वडी। [11]. ना० न० प्र० स० [में नहीं है]। [12](+[13]). स० तोथी भली हुती। [14]. पं० अ० सोइ नल, पं० सो बलि राजा, प्र० जां नल, स० नल। [15]. पं० र० ना० न० अ० राउ, ग्या० रोवती, प्र० मेल्ही। [16]. पं० र० ग्या० ना० न० छोड़ी गयो, अ० छंडी गयउ, प्र० बन गयो, स० मेल्हे गयो। [17]. अ० पुरुषां। [18]. पं० सउं, र० इसो, न० इस, अ० सम। [19]. पं० र० ग्या० ना० न० नीच, प्र० नगुण, स० निगुण। [20]. ना० न० नहीं, ग्या० सरीर, अ० को नहीं।

[६५]

रोवती[1] मेल्हि गउ[2] धण कउ[3] रे नाह।
सूनइ मंदिर दीन्हीय छइ[4] धाह।
साधण कुरलइ[5] मोर जिउं[6]।
पाड[7] पाडोसण[8] बइठी छइं[9] आइ[10]।

---

[६५] यह छंद म० १०४, पं० ६७, र० १०२, ग्या० १०३, ना० १११, न० १२४, अ० १३३, प्र० ३.२, स० ३.१ है।

म० .२ है : हीयडलइ हाथ नवि लीजए बाह।

,, .५ ,, : जोवउ प्री मुंध मेल्ही गयउ।

पं० र० ग्या० ना० न० .४ है : सात सषी मिल बैठी छइ आइ।
(तुलना० स्वीकृत ६४.१)

पं० .६ है : बोलउ नह अण परि जाइ।

र० .६ है : भोली नाहा हुइ सु इण परि न जाइ।

ग्या० न० .६ है : नाउ इण परि कोई माणस जाइ।

ना० .६ है : नाउ उण कन्है कोई माणस जाइ।

अ० .५ यथा म० .५ है।

प्र० स० .१ है : प्रीय बोलावै धन रोवती जाइ।

प्र० .५ है : सोयन स्त्री नै करि गयो।

प्र० .६ है : असी रति नांउ माणस जाय।

स० .६ है : दिवस नइ रात भौ चितातां जाइ।

1. ना० सेवती। 2. पं० र० बाहुडी, ग्या० बाहुडीह, ना० बाहिम, न० छोडि नइ। 3. पं० ग्या० न० चालीयउ, र० चालिउ, ना० छोडीयां। 4. ग्या० दीन्हीय, स० मेल्हेइ छइ, प्र० दीयै जई। 5. र० कुरली, प्र० झूरइ। 6. र० न० अ० प्र० स० मोर ज्युं, म० मोर जउं। 7(+8). ग्या० सात सषी मिलि, स० पांच पडोसण, प्र० पाडि पाडोसण। 9(+10). प्र०

जोवउ[११] निसंतान जेउं वइ[१२] गया[१३] ।
सषीय[१४] इणि कति[१५] नाह[१६]कोइ[१७]ऊलग[१८] जाइ[१९] ॥भु०॥

[६६]

लंघिया[१] चांबिल[२] पाछिला[३] षाल[४] ।
डावी[५] देवी[६] अनइ[७] दाहिणी[८] माल ।
डावी रे[९] महासती[१०] सुर करइ[११] ।
बामा हो[१२] राजा नइ[१३] सिंघ सीयाल ।
बामा[१४] सारस[१५] कुरलिया ।
तुरिय डकावइ[१६] सइंभरि वाल[१७] ॥ भु० ॥

देखबा आय । [११]. पं० र० ग्या० ना० न० जाहि, अ० जिउ, स० ओ । [१२](+[१३]). ना० वै ग्रह्या, प्र० स० करि गयो, ग्या० ऊगयउ । [१४]. ग्या० नातु । [१५]. अ० इण जु, ग्या० इण परि । [१६](+[१७]). ग्या० कोई । [१८](+[१९]). ग्या० माणस जाय ।

[६६] यह छंद म० १०५, पं० ६३, र० ६८, ग्या० ६६, ना० १०७, अ० १२४, प्र० २.७४, स० २.८१ है ।

म० में .३ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

प्र० में केवल .१, .५, .६ हैं, शेष छूट गई हैं ।

[१]. पं० र० लांघइ छइ, ग्या० ना० लांघीयउ, प्र० लांघइ । [२]. पं० र० ग्या० ना० राजा जी, अ० राजा, म० चंबल । [३]. पं० ग्या० ना० न० चांबिल, अ० ऊंचा बिल, र० पागल, प्र० पीलियो, स० पीला हो । [४]. ना० घाट । [५]. म० बामा रे । [६]. पं० ग्या० देव्या, म० देबी । [७](+[८]). म० न दाहिणी, पं० र० ग्या० ना० दाहिणी, स० जीमणी । [९]. म० बामा रे । [१०]. ना० मासती । [११]. पं० सूर करइ, ग्या० प्री प्री करइ, ना० फौकारा, स० फैकरइ । [१२]. स० डावा । [१३]. पं० र० ना० राजा, स० सरस, अ० बसिया । [१४]. प्र० डावी रे । [१५]. ग्या० राजा । [१६]. पं० र० डकाइयउ, ग्या० डकावीउ, अ० चलावियो, ना० पलाणीया, प्र० खुंदावि, स० खुंदावई । [१७]. ना० संभरैवाल, म० सैंभर राव, स० वीसलराव ।

[६७]

चालियउ[1] उलगाणउ[2] कातिग मास।
छोडीया[3] मंदिर घर कविलास[4]।
छोडीया[5] चउबारा[6] चउषंडी[7]।
तठइ पंथि[8] सिरि नयण गमाइया रोइ[9]।
भूष गई[10] त्रिस[11] ऊचटी[12]।
कहि न[13] सषीय[14] नींद किसी परि[15] होइ ॥ ध्रु० ॥

[६८]

मगसिरियइ[1] दिन छोटा जी[2] होइ।
सषीय संदेसउ न पाठवइ[3] कोइ।

---

[६७] यह छंद म० १०७, पं० १२०, र० १२२, ग्या० १२६, ना० १३४, न० १४६, अ० १५६, प्र० ३.७, स० ३.८ है।

म० .६ है : राजा वीसल तणइ रे विछोह।

[1]. म० चालिउ, पं० र० न० अ० चाल्यउ, स० चालीयो। [2]. प्र०, स० प्रीय तो। [3]. पं० र० न० अ० छोड्या, प्र० स० सूना। धवल विलास। [5]. पं० न० अ० छोड्या, र० चउड्या, प्र० स० सूना। [6]. पं० ग्या० [4]. ना० प्र० स० चउरा, र० चोरां, अ० चउकीय। [7]. अ० चउहटा। [8]. म० प्र० स० पंथ। [9]. प्र० जोय, स० जाई। [10]. प्र० स० नहीं। [11]. ना० तस, प्र० तर। [12]. र० अउचटी, म० अउहटी, प्र० सो छुटी, स० ऊछली। [13](+[14]). स० उपरि घडा, प्र० तिहां घटी। [15]. प्र० स० नींद कहां थी।

[६८] यह छंद म० १०८, पं० १२१, र० १२३, ग्या० १२७, ना० १३५, न० १४७, अ० १५७, प्र० ३.८, स० ३.६ है।

[1]. अ० मगसिर का, प्र० आगैं तो, स० आघण कर [2]. पं० छोटा रे, र० ना० न० छोटडी, अ० मोटा जी। [3]. र० न पाठव्यो, ना० न पाठव्या,

संदेसइ ही बज[4] पड्यउ[5] ।
ऊंचा[6] हो[7] परबत नीचा[8] घाट ।
परदेसे[9] पर भुइं[10] गयउ[11] ।
तठइ[12] चीरीय[13] न आवइ[14] न चालए[15] बाट[16] ॥भु०॥

[६६]

देषि सषी हिव लागउ छइ[1] पोस ।
धण मरतीय को[2] मत दीयउ[3] दोस ।
दुषि[4] दाधी[5] पंजर हुई ।
धान[6] न भावए[7] तज्या[8] सिरि न्हाण[9] ।

प्र० न मोकल्यो, स० न मोकलोऊ । [4](+[5]). पं० वज्र पडी, र० बीज पडी, ग्या० व्रज पड्यउ, ना० सांस्या पड्या, प्र० व्रज पडो, स० बबज पड्यो । [6]. म० तठइ ऊंचा, प्र० लंघीया । [7]. स० लांध्या । [8]. पं० नीचा रे, र० न० नीचा, अ० नीचा हो, प्र० बिसमा, स० दुर्घट । [9]. पं० र० परदेसइ, ना० परदेसां अ० परदेसी । [10]. ना० पर भव, प्र० पर भोमि, स० पर भूमि, ग्या० पर भूं । [11]. र० गया, ना० पड्यां । [12]. पं० ग्या० ना० अ० प्र० [में नहीं है] । [13]. र० चीरी हो । [14]. प्र० स० जणह, ना० नाथै । [15](+[16]). पं० न० अ० नहि चलइ बाट, ना० महि उचाट, प्र० न चालइ बाट ।

[६६] यह छंद म० १०६, पं० १२२, र० १२४, ग्या० १२८, ना० १३६, न० १४८, अ० १५८, प्र० ३.६, स० ३.१० है ।

म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० .५ है : छाहडी गिणइ न तावडउ ।
(तुलना० स्वीकृत ८६.५)

[1]. पं० र० लागउ हे, म० लागउ वा, ना० लीगौ छै । [2]. र० ना० धण मरै तो कोइ, न० अ० धणह भरंती, प्र० धण मरती मोहि । [3]. र० न० मत दियौ, ना० न दे देज्यो, प्र० भिण दीयो, स० मति लावउ । [4]. (+५) प्र० स०

छांहडी धूप नू[10] आलगइ[11] ।
देषतां[12] मंदिर[13] हुयउ[14] मसांण ॥ भु० ॥

[७०]

माह मासइ सीय[1] पडइ[2] ठंठार[3] ।
दाधा छइ[4] बनषंड कीधा छइ[5] छार[6] ।
आप[7] दहंती जग[8] दह्यउ[9] ।
म्हाकी[10] चोलीय[11] माहि थी [12]दाधउ छइ[13] गात्र[14] ।

दुष भीनी । [6]. म० अन्न, र० ना० मो अन्न, ग्या० मोनइ धान । [7]. स० न भावई, प्र० न भावि । [8](+[9]). ना० ना खि न्हाण, अ० सिरि तजै न्हाण, प्र० निसभरां नाह । [10]. ना० गिणइ अनि, स० धूप नू । [11]. स० आलगई, प्र० आलगैं । [12]. न० देषतउ, अ० वाकौ देषतां, प्र० किएक, स० कवियक । [13]. प्र० झूंपडी, स० झूपड़ा । [14].पं० होइ, र० हूआ, स० होइ ।

[७०] यह छंद म० ११०, पं० १२३, र० १२५, ग्या० १२६, ना० १३७, न० १४६, अ० १५६, प्र० ३.१०, स० ३. ११ है ।

ग्या० .६ है : करह पलाणि करि आविज्यो वेगि ।

प्र० स० .२ है : जल थल महीयल सहू (बन—प्र०) कीया छार ।

प्र० .६ है : तुरी पल्हाणी वेगि घरि आवि ।

[1]. र० स० सिय, प्र० सीह । [2](+[3]). पं० पडय रि ठंठार, र० पडै रे ठंठार, प्र० पडै अपार, स० पड्यो अति सार । [4]. र० दाधा । [5]. म० अंवा की, पं० कीधो, न० कीधा हो, ना० कीधा । [6]. म० डालि, र० धार, न० छाड । [7]. प्र० स० आक । [8](+[9]). म० जग दहइ, ग्या० जगि दहुं, ना० जग दह्या, न० जग दह्यु, प्र० बन दहै, स० बन दह्यो । [10](+[11]). पं० म्हारा चोलडी, र० म्हारा कांचली, म० प्र० चोलीय, ना० म्हारा चोली, न० म्हारी चोली । [12]. म० भीतरि । [13]. र० ना० थी दाधी, पं० थी

धणीय विहूणी[१५] धण ताकिजइ।
तूं तउ[१६] उवइगउ रे[१७] आविज्यो[१८] करह[१९] पलाणि[२०]।
जोबन छत्र[२१] उमाहियउ[२२]।
म्हाकी[२३] कनक[२४] काया मरहे फेरबी[२५] आंण[२६] ॥ ध्रु० ॥

[७१]

फागुण फरहर्‌या[१] कंपिया रूष[२]।
चितइ[३] चमकियउ[४] निसि नीद[५] न भूष[६]।

दीधी, न० सवि दाधा, अ० दाधा, प्र० थकी दाधा जी। १४. न० अ० संधाण। १५. प्र० धणीय थकां, स० धणीय न तका। १६. पं० र० ना० स० [में नहीं है], न० थे, अ० थे तो। १७. पं० र० ना० न० अ० वेगा, स० वेगो। १८. स० घर आव। १९(+२०). स० तुरीय पलाणि। २१. ना० चित। २२. र० उछाईउय, ना० उकाहींयां, अ० कौ चाहिवौ, प्र० उपाडियो, स० उचाईसउ। २३(+२४). पं० म्हारी कनक, न० म्हांकी, प्र० कनक, स० ईणि कंत। २५(+२६). म० फेरिय आण, ना० भेलीयो आण, अ० फेरि गयउ उवाण, प्र० फिर गई आण, स० फेरी छइ आण।

[७१] यह छंद म० १११, पं० १२४, र० १२६, ग्या० १३०, ना० १३८, न० १५०, अ० १६०, प्र० ३.११, स० ३.१२ है।

म० में .२ नहीं है, और .४ का पाठ है :

नाम न लेइही रि निरगुण नाह।

अ० में .४, .५ का पाठ है :

होली रे खेलण म्हे किउं जाइ। (तुलना० स्वीकृत ७२.७)
जोवन चाहिबो जाइ छै।

अ० में यथा .७, .८ हैं : म्हे उलगाणा की गोरडी।
म्हां की उंगली कीरता निगली छै बांह।
(तुलना०. स्वीकृत ७२.१०)

दिन रायां[७] रितु[८] पालटी[९]।
म्हाकउ मूरष राउ न देषइ आइ।
जीवउं तउ[१०] जोबन[११] सही[१२]।
फरहरइ[१३] चिहुं दिसि बाजइ छइ[१४] बाइ[१५] ॥ धु० ॥

[७२]

चेत्र मासइ चतुरंगी हे[१] नारि।
प्रीय विण जीविजइ[२] किसइ[३] अधारि।

प्र० .३ है : जउ जोबन तो बन सषी।

स० में स्वीकृत .५ यथा .३ और .३ यथा .५ हैं, और .४, .६ हैं :

(.४) मूरष लोक न जाणइं सार। (तुलना० स्वीकृत ७३.४)

(.६) सषी बाव फरूकती (फरूकै—प्र०) जाइ (गयो—प्र०) संसार।

१. र० फरइ, न० परहरइ, प्र० स० फरक्या, ग्या० फरहर। २. म० डूष। ३. र० चितिहि, ना० चित्त, न० अ० विरह। ४. न० मेचेकीयउ, ना० चूकी। ५. अ० नाठी नींद, ना० प्र० नींद। ६. ना० अ० नै भूष। ७. प्र० दिणीयर, स० दिण परषौ। ८(+९). प्र० विदिसइ पालट्यो, स० दिस पालटइ, म० दिन पालटी, पं० रति पालिट्या, र० ना० दिन पालिट्या, न० दिल पालट्या। १०. पं० र० ग्या० ना० न० जिम धन तिम। ११. ग्या० तिम, स० जूहै। १२. प्र० स० सषी, म० सुखी। १३. पं० फिरहड्या, र० फरहड्या। १४. पं० र० बाज्या। १५. म० र० न० बाउ, पं० अ० वाइ।

[७२] यह छंद म० ११२, पं० १२५, र० १२७, ग्या० १३१, ना० १३६, न० १५१, अ० १६१, प्र० ३.१२. स० ३.१३-१४ है।

पं० ग्या० र० ना० में स्वीकृत .५ नहीं है। अ० में .५ के स्थान पर स्वीकृत .७ है, और .७, .८ हैं :

कंचूयउ[४] भीजइ जण[५] हसइ।
सात[६] सहेलीय[७] बइठी छइ आइ।
दंत कबाड्या[८] नइ नह[९] रंग्या[१०]।
चालउ[११] सषी आपे[१२] षेलण जाइ[१३]।
आज[१४] दीसइ[१५] सु[१६] काल्हे नही[१७]।
म्हे[१८] किउं[१९] होली[२०] हे षेलण जांह।
उलगाणइ की गोरडी[२१]।
म्हाकी[२२] आंगुली[२३] काढतां[२४] निगलीजइ[२५] बांह ।। भु० ।।

मास बसंत सोहामणउ।
निरगुण नाह न षेलइ हो आइ।

अ० में .६, .१० नहीं हैं, वे उसमें पूर्ववर्ती छंद में गई हैं।
स० में स्वीकृत .६, .७ के बीच और हैं :

सूणी सहेली कहुं ईक बात।
म्हाहरइ फरकइ छइ दाहिणो गात।

[१]. र० हे तुरंगी। [२]. ना० जीवनै। [३]. पं० किसकय, र० न० किसै, अ० स० कवण। [४]. पं० कंचू, र० कंचूउ, प्र० चूडलो, स० चूडे। [५]. म० धण। [६]. म० पाड, न० अ० सखी, प्र० स० पंच। [७]. म० पाडोसण, ग्या० प्र० सषी मिलि, स० सषी। [८]. प्र० कबीडा। [९](+[१०]). म० न० अ० नह घस्या। [११]. न० आवी। [१२]. प्र० स० होली। [१३]. प्र० षेलवां जायं, स० खेलवा जाई। [१४](+[१५]). र० आज दिवस। [१६]-(+[१७]). म० ते तउ काल्ह न हो, र० सो काल्हि नहीं, प्र० ते कालि नहीं, स० ते ईक दिन मांह। [१८](+[१९]+[२०]). पं० म्हे कउ हेली, र० म्हे किउं हे गहेली, ग्या० म्हाकउ हे होली, न० म्हे तउ होली, ना० म्हां की सषेली, म० म्हे किउ हे भोली। [२१]. पं० हे गोरडी। [२२](+[२३]+[२४]). म० आंगुली काढतां, र० म्हाकी आंगुली, प्र० आंगुली देतां, स० म्हाकी आंगूली देखतां। [२५]. प्र० लगसी, स० गिलजे।

[७३]

वइसाषइ[1] धुर[2] लूणिजइ[3] धान।
सीला पाणी अरु[4] पाका जी[5] पांन।
कनक काया घट[6] सींचिजइ[7]।
म्हाकउ[8] मूरष राउ न[9] जाणइ सार।
हाथ लगामी[10] ताजणउ।
ऊभउ[11] सेवइ[12] राज दुआरि ॥ भु० ॥

[७४]

देषि[1] जेठाणी[2] हिव[3] लागउ छइ[4] जेठ।
मुह[5] कुमलाणा[6] नइ[7] सूक गया[8] होठ।

---

[७३] यह छंद म० ११३, पं० १२६, र० १२८, ग्या० १३२, ना० १४०, न० १५२, अ० १६२, प्र० ३.१३, स० ३.१५ है।

म० में स्वीकृत .४ नहीं है।

अ० में अतिरिक्त हैं :

स्वीकृत .२ के अनंतर : दंत कबाड्या हे नह घस्या।
(तुलना० स्वीकृत ७२.५)

" .३ " " : तपति कउ तोय न लाभइ जी पार।

[1]. र० न० बैसाषां। [2]. र० न० धुरि, ना० धार, प्र० स० सषी। [3]. र० लुणिज हो, ना० लुणै, स० ल्हणुजै। [4](+[5]). र० हो पाका, ना० पाका जी, न० अर पाका हो, प्र० नइ पाका, स० पाका। [6](+[7]). ना० षटकसी। [8]. प्र० स० [में नहीं है]। [9]. प्र० नाह। [10]. ग्या० लगाम नइ, न० लगीम नइ। [11]. पं० र० उतउ ऊभउ, म० ऊभ छइ, ना० न० अ० प्र० ऊभउ, स० पार कइ। [12]. न० अ० सेवइ छइ।

[७४] यह छंद म० ११४, पं० १२७, र० १२९, ग्या० १३३, ना० १४१, न० १५३, अ० १६३, प्र० ३.१४, स० ३.१६ है।

मास दिहाडउ[9] दारुण[10] तवइ[11] ।
धण कउ हे[12] धरणि न[13] लागए पाउ[14] ।
अनल[15] जलइ[16] धण[17] परजलइ ।
हंस[18] सरोवर मेल्हिउ[19] ठांह[20] ॥ ध्रु० ॥

ना० में स्वीकृत .१, .२ के बीच अतिरिक्त है :
धण मरै तो कोइ मत दीयो दोस । (तुलना० स्वीकृत ६६.२)

न० अ० में स्वीकृत .२, तथा .३ के अनंतर क्रमशः अतिरिक्त हैं :

ग्रीसम मास अति गह कीयउ ।
जीयत जल विणु को नहीं ।

प्र० स० .४ है : धरती पाव न देणउ जाय ।

स० .३ है : सनेहा सारण बहई ।

1.(+2). पं० र० ग्या० ना० देषि सषी । 3. र० ग्या० न हिवइ, प्र० स० [में नहीं है] । 4. र० लागो हे, ना० लागो, न० लागउ गलइ, प्र० लागो । 5. न० मोहि । 6. म० कुमिलाणा, ग्या० कुमलाणउ । 7(+8). र० ना० सूकि गया, ग्या० सूकिया, प्र० नइ सूका, स० अरु सूकइ छइ । 9. पं० र० ना० न० अ० दिवस, ग्या० विवस । 10(+11). ना० दारुण हुवै, न० लगइ दारुण दूठ, अ० लूयां दारुण दूठ, प्र० सारणि बहइ, स० सषी लू बहइ । 12. पं० र० ना० अ० धण कउ । 13. ना० धण किन । 14. न० लागए पाल । 15. म० अंग, ग्या० ना० अन्न, प्र० अगनि, स० अन । 16. म० लागइ, ना० [में नहीं है], न० जलणइ, अ० बिना, प्र० स० बलई । 17. म० घट, प्र० बन, स० दव । 18. म० सषी हंस । 19(+20). पं० ग्या० छंडि गयउ ठाउं, ना० छंडि नै ठांव, न० छंडियो ठाउ, अ० मेल्लि गयउ ठाह, प्र० छोड्या ठाम, स० छंडइ छइ ठांइ ।

[७५]

आसाढइ धुरि[1] बाहुड्या[2] मेह्[3] ।
षलहल्या षाल[4] नइ[5] बहि गई[6] षेह् ।
जइ रि[7] आसाढ न आवई[8] ।
माता रे मइगल जेउं पग देइ ।

---

[७५] यह छंद म० ११५, पं० १२८, र० १३०, ग्या० १३४, ना० १४२, न० १५४, अ० १६४, प्र० ३.१५, स० ३.१७ है ।

म० में .३—.८ है :

(.३) साधण बलि कोइला भई ।

(.४) कोइल कोलइ लइ अंब की डाल ।

(.५) मोर टहूकइ सपी डूंगरां ।

(.६) मूरप राउ न जाणहे सार । (तुलना० स्वीकृत ७३.४)

(.७) स्वीकृत .३ ।

(.८) हंस सरोवर मेल्ह गउ ठाह । (तुलना० स्वीकृत ७४.६)

अ० में .३—.८ हैं :

(.३) मोर टहूका गिरि करइ । (तुलना० ऊपर म० .५) ।

(.४) थलकीयां नदी नइ नीर बहाइ ।

(.५) स्वीकृत .३ ।

(.६) बीज झबूकइ अब मारिस्यइ माइ ।

(.७) जा घरे धण विलविलइ ।

(.८) अवरां जासे किउं ओलग जाइ । (तुलना० स्वीकृत .६)

न० में स्वीकृत प्रथम चार के अनंतर की पंक्तियाँ हैं अ० .४, अ० .७, अ० .८ । प्र० स० में स्वीकृत .३, .४ के बीच उपर्युक्त म० .४, .५ भी हैं ।

1. पं० न० धुरि, ना० अति । 2(+3). न० बहु पड्या, प्र० स० घडूकिया । 4(+5). स० षाल्या । 6. म० बह गई । 7. प्र० स०

सद मतवाला[९] जिम ढुलइ[१०]।
तिहि घरि ऊलग काइं करेइ[११] ॥ भु० ॥

[७६]

स्रावण[१] बरसइ छइ[२] छोटीय[३] धार।
प्रीय विण जीविजइ किसइ[४] अधारि[५]।
सही समाणी[६] षेलइ[७] काजली।
तठइ[८] चिडीय[९] कमेडीय[१०] मंडिया[११] आस[१२]।
बाबहियउ[१३] प्रीय प्रीय[१४] करइ।
मोनइ अणष[१५] लावइ हो[१६] स्रावण मास ॥ भु० ॥

अजी। ८. र० ना० नावीया, प्र० स० न बाहुड्यउ, ग्या० आवीयउ। ९. ग्या० दस मतवाला, ना० सत मत माता, प्र० सद मतवा, स० सदी मतवाला। १०. ग्या० जउ हलइ, ना० जिम चलै, प्र० घुरै जिउं, स० ज्युं धुलई। ११. ना० प्र० काइ करेस, स० कांई केरस सतो।

[७६] यह छंद म० ११६, पं० १२६, र० १३१, ग्या० १३५, ना० १४३, न० १५५, अ० १६५, प्र० ३.१६, स० ३.१८ है।

ना० में .२ नहीं है।

१. र० ग्या० ना० न० सावण। २. ना० बरसै। ३. र० ग्या० छोडीय, स० छाडीय। ४. न० अ० केम, स० कवण। ५. न० अ० निरधार। ६. म० पं० र० ग्या० सहु कोइ, स० सषीय ते, ना० सहू को। ७. प्र० रमइ। ८. प्र० स० [में नहीं है], ना० जठै। ९. प्र० पंखेरूए। १०. ना० के। ११. पं० र० षंडिया, म० मंडइ छइ, ना० कंबेडीया, प्र० मांडी, स० मंडिय। १२. पं० र० ग्या० ना० जाल, न० बास। १३. पं० बाबीहा, र० बाबहिया, ना० बाबहियो, अ० बाबीहो, म० बाबीहडउ, प्र० बापहियो, स० पपीहो। १४. ना० प्रिउ। १५. म०, आसास, अ० अणख, प्र० असलास, स० सखी असलस। १६. म० लावउ, ना० लगावै छै, न० अ० लगावै, प्र० स० लावइ।

[७७]

भाद्रवइ बरसइ छइ[1] गुहिर[2] गंभीर।
जल थल महीयल[3] सहु[4] भर्‌या नीर।
जांणि कि[5] सायर ऊलट्यउ[6]।
निसि[7] अंधारीय[8] बीज[9] षिवाइ[10]।
बादल[11] धरती स्यउं[12] मिल्या[13]।
मूरष राउ[14] न देषइ जी[15] आइ[16]।
हूं ती[17] गोसामी[18] नइ एकली[19]।
दुइ दुष[20] नाह[21] किउं[22] सहणा जाइ॥ धु०॥

[७७] यह छंद म० ११७, पं० १३०, र० १३२, ग्या० १३६, ना० १४४, न० १५६, अ० १६६, प्र० ३.१७, स० ३-१९ है।

पं० र० ग्या० ना० न० में .६, .७ नहीं हैं।

स० में भी .६, .७ नहीं है, किंतु प्र० में हैं।

स० .५ हैं : सूनी सेज बिदेश पीव।

1. र० ग्या० बरिसइ, ना० प्र० बरसइ। 2. स० मनोहर। 3. ना० महीयगुल। 4. पं० र० न० सहि, ग्या० सवि, अ० छइ। 5. म० जाणे हो, ना० जाण कर, अ० जाणि करि प्र० जाणेकि। 6. अ० ऊलट्या। 7(+8). न० अ० राति अंधारी, प्र० रैण अंधारी, स० एक अंधारी। 9(+10). म० नइ बरसइ मेह, न० अ० नइ बरसइ छइ मेह, ना० बाजै वाय, प्र० बरसइ मेह, स० बीच खीवाइ। 11. प्र० सघर जो। 12. र० न० मूरख धरती सुं, प्र० धरती है। 13. न० अ० मिलि गया, प्र० नीसर्‌या। 14 न० मूरष गयउ। 15(+16). न० न देषइ आइ, प्र० न जाणइ सार (तुलना० स्वीकृत ७३.४)। 17(+18). म० ति गोसामी, न० हूं तो गोसाइं, अ० हूं अबल, प्र० हूं तो स्वामी। 19. अ० सू आं एकली, प्र० एकली। 20. प्र० ए दुष। 21(+22). म० नाह कउ, पं० नल्ह कं, र० नल्ह किं, ना० नाल किं, न० अ० नाह किउं।

[७८]

आसोजइ[१] धण मंडिया[२] आस ।
मांडिया[३] मंदिर[४] घर[५] कविलास[६] ।
धउलिया[७] चउबारा[८] चउषंडी ।
साधण[९] धउलिया[१०] पउलि पगार[११] ।
गउष[१२] चडी हरषी फिरइ[१३] ।
जउ[१४] घर आविस्यइ मुंध[१५] भरतार[१६] ॥ भु० ॥

---

[७८] यह छंद म० ११८, पं० १३१, र० १३३, ग्या० १३७, ना० १४५, न० १५७, अ० १६७, प्र० ३.१८, स० ३.२० है ।

म० .२ है : साधाण मंडइ छुइ घर वास ।

प्र० .४ है : दणीयर माछा जिम पलटाय । (तुलना० स्वीकृत ७१.३)

,, .६ है : कमारा धणी राय ।

स० .४ है : म्हांड्या सांभरि का रणिवास । (तुलना० स्वीकृत ६२.४)

,, .५ है : एक बलावै बाहुड्या । (,, ,, .५)

,, .६ है : नाह उतरि गयौ गंगा के पार । (,, ,, .६)

१. अ० आसू मासै । २. ग्या० धुरि मंडीयइ । ३. पं० र० ग्या० ना० न० अ० धवला, स० मांड्या । ४. प्र०लीप्या । ५. ना० गिर, प्र० मांड्या । ६. पं० ग्या० ना० किवलास । ७. ना० न० धउला, प्र० मांडी, स० मांड्या । ८. पं० चउरा, प्र० चोरी । ९. पं० र० ग्या० ना० न० अ० तब धण । १०. ना० धवला । ११. म० प्रकार, न० पागार । १२. पं० ग्या० ना० न० हरिष, प्र० हरष । १३. म० हरषइ, ना० हरपै हीयो, अ० हरषै फिरइ । १४. पं० ग्या० अ० अब, न० जेहि । १५. पं० न० अ० आविसी, ना० आवीया, म० आवीयउ । १६. ग्या० मूल ।

[७६]

हेम की कूंपली[1] मइण की मूंद[2] ।
साधण ऊभी रे[3] मत्त गइंद ।
चउबारा की[4] चउषंडी ।
तठइ[5] बाइ[6] न बाजए ना तपइ सूर ।
बादल छायउ[7] चंद जेउं[8] ।
रात्र[9] अंधारीय[10] जोवन पूर ॥ भु० ॥

[८०]

सासू कहइ बहू घर माहे[1] आवि[2] ।
चंदरइ[3] भोलइ[4] गिलेसी[5] राह[6] ।

---

[७६] यह छंद म० ११६, पं० १४०, ग्या० १४६, ना० १५४, न० १६४, अ० १७३, प्र० ३.५०, स० ३.५३ है ।

म० .६ है : रात्र अंधारीय विकल सरीर । (तुलना० स्वीकृत ६३.६)

पं० ना० .६ है : उणिरउ (उणकी—ना०) गात्र ऊघाडउ तिलक संदूर ।
(तुलना० स्वीकृत ६३.६)

न० अ० .६ है : उवा गात्र उघाड़ा हो विकल सरीर ।
(तुलना० स्वीकृत ६३.३)

१. ना० पूतली, प्र० कूंपी राजा, स० कूंपी । २. ना० स० मुंध । ३. पं० ना० न० उभी छइ, अ० चालइ छइ, प्र० समरै रि, स० समरई जिम । ४. म० की हो । ५(+६). पं० ग्या० ना० न० अ० पवन, प्र० बाय, स० बाव । ७. प्र० छाद्यो । ८. पं० चंद जं, ग्या० चंद जउ, ना० छंद ज्यूं, ना० चंद ज्यूं, प्र० स० चंद्रमा । ९. प्र० उवा का, स० औकी गात । १०. प्र० घट माहें, स० उघाड्या (तुलना० स्वीकृत ६३.६) ।

[८०] यह छंद म० १२०, पं० १४१, ग्या० १४७, ना० १५५, न० १६५, अ० १७४, पं० ३.२२, स० ३.२४ है ।

म० .२ है : राह विडूधउ रे करसइ तो नूं दाह ।

चंद[७] पूलाणउ[८] बनि[९] गयउ।
दूधु[१०] किम उबरइ[११] मंजारि कइ फेरि[१२]।
पवनहि दीवलउ नवि बलइ।
नाह[१३] उडीसइ धण[१४] अजमेरि ॥ भु० ॥

[८१]

अस्त्रीय जनम काइं[१] दीधउ[२] महेस।
अवर जनम थारइ[३] घणा रे[४] नरेस।

म० .४ है : ऊपरि सिषरइ मूकइ मेह।

पं० ग्या० ना० न० अ० .५ है : थे छउ उलगाणा की गोरडी।

प्र० स० .४ है : खीर (साना—प्र०) की तौलड़ी (पकूड़ी—प्र०) कुं (किं हो—प्र०) रहई सेर।

" " .५ है : धणी थाकां (थकां—प्र०) धण ताकजइ।

१. प्र० भीतरि। २. पं० अ० आइ, न० आउ, स० आव। ३. प्र० चांद कइ, ना० चंद कइ, न० चंद के अ० चंद। ४. न० भुलावइ, अ० लोभावइ। ५. न० गिलस्यां, अ० मत उग्रहइ, अ० राहु। ६. न० राउ, अ० राहु। ७(+८+९). पं० ग्या० ना० न० प्र० पुलिंदा वनि (पुलंदी वनि—न०), म० चंद पलाणउ बलि, प्र० चंद पूलंतो वनी। १०(+११). ग्या० धूध न छूटइ। १२. ग्या० मंजारहा फेर, अ० जेम मंजार। १३. ग्या० ना० न० अ० थारउ नाह, स० राव, प्र० राय। १४. प्र० मै नूं, स० तु।

[८१] यह छंद म० १२३/१, पं० १३४, ग्या० १४०, ना० १४८, न० १६१, अ० १७०, प्र० ३.५, स० ३.४ है।

म० में स्वीकृत .५ के स्थान पर स्वीकृत .३ है, और यथा .३ है :

रूप निरूपम मेदिनी। (तुलना० स्वीकृत ३४.३)

म० में स्वीकृत .८ नहीं है।

रानि[५] न सिरजीय रोझडी[६]।
घणह[७] न सिरजीय धउलीय[८] गाइ।
बनषंड[९] काली[१०] कोइली[११]।
हउं बइसती अंबा[१२] नइ[१३] चंपा की[१४] डाल[१५]।
भषती द्राष वीजोरडी।
इणि दुष[१६] झूरइ अबला जी बाल ॥ झु० ॥

[८२]

आंजणी[१] काइं नि सिरजीय करतार।
षेत्र[१] कमावती स्यउं[२] भरतार[३]।

पं० ग्या० ना० न० अ० .८ है : तइं तउ काइं सिरजी उलगाणा की नारि।
(तुलना० स्वीकृत ३.५)

[१](+[२]). पं० ग्या० काइं दीयउ रे, ना० न० काइं दीयउ, अ० तइं काइं दीधउ। [३]. न० [में नहीं है]। [४]. स० घड़ा हो। [५]. स० रानह, म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० बनिह। [६]. ग्या० स० हिरणली। [७]. ना० बनह न, न० काइं न, अ० कां न, प्र० सरहा न, स० सूरह न। [८]. स० धीणु। [९]. पं० बनि न, ग्या० न० अ० अंब न (आंबइ न—ग्या०)। [१०](+[११]) पं० सिरजी रोझडी, ग्या० सिरजी कोकिल। [१२](+[१३]), ग्या० आवि नइ। [१४](+[१५]). ग्या० चंपा हो डालि। [१६]. अ० जाटणी।

[८२] यह छंद म० १२३/२, पं० १३५, ग्या० १४१, ना० १४६, न० १६२, अ० १७१, स० ३.३२/२ है।

म० में इस छंद की केवल प्रथम तीन पंक्तियाँ म० १२३ की अंतिम तीन पंक्तियों के रूप में पाई जाती हैं—क्रम है स्वीकृत .१,.३,.२। म० १२३ की अन्य पंक्तियाँ स्वीकृत छंद ७६ में हैं।

पहिरिण[४] आछी[५] लोवडी।
तुंग तुरीय जिम भीडती गात्र।
साईय लेती सामुही।
हंसि हंसि बूझती प्री तणी[६] बात॥ ध्रु०॥

[८३]

असीय बरस की बूढइ[१] बेस।
दंत कवाड्या[२] सिरि[३] पांडुरा[४] केस।

स० में कुल सात पंक्तियाँ है, जिनमें से स० .१—.४ हैं :

भूली है बइहनडी इणै बीसास।
हूं नीव (∠नवि) जाणूं औलगि जास।
बरजती बाप रखावती व्याह।
अंकन कुंवारी रहती सग्री।

स० .५ है : ओठण लोवडी काटती झाड। (तुलना० स्वीकृत .५)
स० .६ स्वीकृत .२ है, और स० .७ है :

माई कांइ सिरजी उलिगाणा घरि नारि। (तुलना० स्वीकृत ३.५)

[१]. अ० जाटणी। [२](+[३]). ग्या० सु भरतार, स० जाट ज्युं। [४]. म० पहिरती। .[५] अ० छाबल। [६]. पं० ना० पीइकी।

[८३] यह छंद म० १२५, पं० १३७, ग्या० १४३, ना० १५१, न० १६६, अ० १७६, प्र० ३.१६, स० ३.२१ है।

म० ३. है : आइए दूती कूटणी।
,, .७ : कह्यउ हमारउ जे सुणइ। (तुलना० स्वीकृत ५७.३)
म० स० .५ है : किम भव नीगमीस कामिणी (लोहोडकी—प्र०)
,, ,, .७ : कह्यउ हमारउ जे करइ (सुणइ—प्र०)।
(तुलना० ऊपर म० .७)

[१]. म० बालकइ, पं० न० बुढडइ, ना० बूढे, अ० बालै हो, प्र० बूढी,

आइ अवासइ संचरी।
गलइ[5] लागी[6] अनइ[7] रुदन करंति[8]।
किउं[9] दिन काटइ[10] हे भाणिजी।
रात दिवस मोनइ[11] थारडी[12] चिंत।
जेतलइ[13] आवइ सइंभरि धणी[14]।
तो नइ[15] महा अपूरब[16] करि द्युं[17] मीत॥ ध्रु०॥

[८४]

बात सुणी[1] कूटणी[2] चालीय ऊठि[3]।
पाटलउ लेइ[4] मचकाइयउ[5] पूठि।

स० हो बूढ़ि। २. म० कबाडीया, पं० ना० न० पड्या, ग्या० पड्यो, प्र० शरा। ३(+४). म० पांडुरा, स० सिर पांडुरा। ५(+६). न० अ० तठइ गलइ लागी, स० गलइ लागइ। ७. पं० अरु, स० नै। ८. प्र० स० कराई (कराय—प्र०)। ९. पं० न० अ० स० किम। १०. पं० काढइ, ना० काटुं। ११. न० इसंचरी ने मुझ, अ० म्हानुं, प्र० मेहै, स० मौ। १२. पं० ना० स० थारीय। १३. पं० तेतइ, ना० जितै। १४. स० जइ करउ। १५. पं० न० अ० तेतइ, ना० जेतैं, ग्या० [में नहीं है], प्र० तोहि नीको, स० तोहि नइ कइ। १६. पं० ना० चंचल पाठव, न० एक अपूरब, अ० रूडउ एक पोढौ, प्र० सो पांडीयो, स० सो पटवो। १७. पं० करउ थे, म० प्र० करिं (कर—म०) दीयउ, स० करि देउं।

[८४] यह छंद म० १२६, पं० १३८, ग्या० १४४, ना० १५२, न० १६७, अ० १७७, प्र० ३.२१, स० ३.२३ है।

पं० ग्या० ना० में .५ है : गाल फाडावउं धारा गल समी (समा—ग्या०)।

१(+२). पं० ग्या० ना० न० अ० बात न मानीय (मीनीय—ना०) प्र० एतो कही नै, स० इतो कहे जब। ३. पं० स० चाली छइ उठि, न० चलि गइ ऊठ, अ० चालि गइ ऊठि। ४. ना० ले पटउ, प्र० दोय पाटा

पेट[६] फडावउं[७] थारउ[८] कूटणी[९] ।
कोकउं[१०] देवर अरु[११] बडउ[१२] जेठ ।
काढउं[१३] जीभ जिण बोलियउ ।
नाक[१४] सरीसा[१५] काटउं[१६] दूनिउ[१७] होठ[१८] ॥ भु० ॥

[८५]

गोरडी बइठी छइ[१] पंडिया कइ[२] आइ ।
कर जोडी अर[३] लागुं जी[४] पाइ ।
राजमती करइ वीनती ।
पंडिया कहिज्यो[५] म्हारइ[६] प्रीय नइ[७] जाइ ।

सुं, स० ले पाटो अरि । [५]. प्र० माहरी, स० पटकी छइ । [६](+[७]). पं० ग्या० ना० दांत पाडुं, न० पेट पांडा, अ० पेट फाडां, स० नांक पाट फड़ाउं । [८]. पं० दारी, प्र० [में नहीं है], स० हूं । [९]. ग्या० कुतारी । [१०]. पं० हउ तउ कोकउं, अ० कूकां, प्र० तेडो, स० तेतू । [११](+[१२]). न० अरुउ, स० अरी बड़ो । [१३]. अ० बाढां हो, न० बढाऊं, प्र० कसूं, स० काटुं । [१४](+[१५]). ना० भाक सरीसा, प्र० ताक सरीसो । [१६]. पं० काढं, ग्या० काटउं हे, ना० काटुं, न० चढ़ाल, अ० थांकौ, प्र० उपलै, स० ऊपलो । [१७](+[१८]). पं० स० होठ, ग्या० हे होठ, न० तुझ होठ, अ० छेद हो होठ ।

[८५] यह छंद म० १३०, पं० १४२, ग्या० १४८, ना० १५६, न० १७१, अ० १८२, प्र० ३. २७/३, स० ३.२६/३ है ।

प्र० स० में केवल अंतिम दो पंक्तियाँ हैं ।

पं० ग्या० ना० न० अ० .४ है : पंडीया कहिज्यो धण का (म्हांका—ना०) नाह नइ जाइ ।

अ० .१ : तेड्यउ पंडीयउ वइठउ छइ आइ ।

[१]. न० तेड्यउ, ग्या० ना० बइठी । [२]. पं० ग्या० ना० बंभण कइ, न० पंडियउ । [३](+[४]). पं० ग्या० ना० थारइ लागूं जी, न० अरु लागइ, अ० गोरी लागइ छइ । [५]. म० थे जाइ । [६](+[७]). ग्या० धण का नाह

डावां हाथ कउ[8] मूंदडउ[9]।
ढलिक करि[10] आवइ हो[11] जीमणी[12] बांह ॥ ध्रु० ॥

[८६]

पंडिया जाइ कहे[1] धण का नाह[2]।
तइ मोनइ दीधी थी[3] जीमणी बांह।

नइ। [8]. पं० ग्या० ना० न० आंगुलीया की, अ० म्हाकी अंगुली केरी। [9]. पं० ग्या० ना० न० अ० मूंद्रडी। [10]. ना० ग्या० ना० न० अ० ढलि करि, प्र० स० [में नहीं है]। [11]. म० आयउ, अ० आवी हो, प्र० स० आवण लागौ। [12]. पं० ग्या० ना० धण कीय, न० अ० धण केरी।

[८६] यह छंद पं० १४५, ग्या० १५१, ना० १५६, न० १७४, अ० १८५-१८६, प्र० ३.२६, स० ३.३१ है। म० १६० में .२ मात्र इस छंद की है।

अ० १८५. ३—.६ हैं : (.३) बोल कीधौ छुउ बरस कउ।
(.४) तठै हूआ हिव बरस इग्यार।
(.५) दिब्ब कीधा था आकरा।
(तुलना० स्वीकृत ४३.५)
(.६) सामी ते सहु बोल तुम्ह दीधा बीसार।

और अ० १८६. १,.२ हैं : (.१) पंडिया प्रीति राखी नहीं नाह।
(.२) अगनि साखइ म्हांकी झाली थी बांह।

स० में .३ और .४ परस्पर स्थानांतरित हैं, और स्वीकृत .५, .६ के बीच अतिरिक्त है :

हुं नवि जाणुं य ईम करै।

[1]. स० जोसी कहई वीरा, प्र० पंडीत कहे। [2]. म० धण का नाह सूं, स० धन की नाह। [3]. स० तोयो दीई थी, प्र० ति मोहि दीधा, ग्या० तइं

चंद सूरिज[४] दुइ साषिया[५]।
पवन पाणी अरु[६] धरती आकासि[७]।
धूप जगायउ थउ बंभणा[८]।
हउं तउ मूवी हो[९] स्वामी तणइ बेसासि[१०] ॥ भु० ॥

[८७]*

बालुं हो[१] धणीय तुम्हारडउ[२] जांण[३]।
कठिन पयोहरां तिज्यउ परांण।
बालउ जोवन[४] षिसि गयउ।
जोवन के सिरि बांधिया नेत[५]।

मोनइ दीन्ही थी। [४](+[५]). स० चंद सूरिज दुइ दीया सखि, ग्या० चंद सूरज बे साखिया। [६]. प्र० पाणी पवन नै, स० पाणी पवन अरि। [७]. प्र० धूप अकाश, स० धूर अकासि। [८]. ना० धूप उगाह्यौ बांभणां, प्र० द्रव्य पुजाव्यो बांभणै, स० दोव पुजाई थी बांभणैं। [९](+[१०]). प्र० मूसी हौं नणदल एणी वेशातो, स० मूसी हे नणदल हुं इणी विसास, ना० हौं तौ मुवी हो साही तिणइ बेसास, ग्या० हूं मूई स्वामी तिणइ रे बेसास।

[८७] यह छंद पं० १४७, ना० १६१, न० १७७, अ० १८६, प्र० ३.४८, स० ३.५१ है। किंतु प्र० स० में .१—.५ निम्नलिखित हैं :

(.१) बेगि (दया करि—प्र०) मया करि तूं घर चालि।

(.२) कठिण पयोहर छांडि छइ (छोडीया—प्र०) ठामि (वाम—प्र०)।

(.३) सिषर ते (सषर जइ—प्र०) धरती रहइ (है—प्र०) नीम्या (नम्या—प्र०)।

(.४) अंधला असूर असती (तेउ समा-प्र०) अचेती (अचेत—प्र०)।

(.५) एक सरों घरि आवजू (आविज्यो—प्र०)। (तुलना० स्वीकृत ६३.२)

ना० में स्वीकृत .६ के अनंतर भी है : उचरा सेन करु पहियचा साथ।

[१]. पं० बाले हो, ना० बालु हो, अ० हुतौ बालु हो। [२](+[३]). अ० थारो सुजाण। [४]. पं० ना० अ० बालयउ (बालो—ना०, वालं—अ०) हो।

जिण बांधिया रावण षिस्यउ।
त्रिय कारणि[6] राम[7] बांधियउ[8] सूरा[9] सेत[10] ॥ भु० ॥

[८८]

कातिग[1] मासह[2] जणह[3] चलाह[4]।
नान्हडउ[5] आषर[6] गुपति[7] लिषाइ।
आप हस्तइ[8] लिषी[9] गोरडी।
जिम जिम[10] बाचसीय[11] तिम तिम हुस्यइ[12] हेत[13]।
घणीय[14] उमाहउ[15] लागसी[16]।
सषी[17] राजा[18] करिस्यइ[19] घरह की[20] चिंत[21] ॥ भु० ॥

---

5. ना० बांधी नेव, अ० बांधीयो नेत्र। 6(+7). पं० त्रीय कारणि रामि, ना० त्रियां कारणि राणि, प्र० अस्त्री लगि राम, स० अस्त्री गेली राम। 8(+9+10). ना० बध्यौ, न० बांधिसउ सेज, म० बांध्यो सिरि सेत, अ० बांधीयो सेत।

[८८] यह छंद म० १३१, पं० १५६, ग्या० १६१, ना० १७०, न० १८६, अ० २००, प्र० ३.२५, स० ३.२७ है।

ग्या० में .५, .६ नहीं हैं।

1. प्र० काती, म० कातीय। 2. ग्या० मसि (∠मासि) म० प्र० मासां। 3. पं० ग्या० साजण, न० णह। 4. प्र० अ० पठाइ। 5. पं० ग्या० न० छाणा, प्र० स० कोरो। 6. प्र० स० कागल, ना० अच्छर। 7. अ० प्रपत। 8. म० आप हथइ, प्र० आप हसि, स० आप हस्त। 9. न० लिषइ, प्र० लो, स० लिषे, ना० लिष्या। 10. ना० न० जीम, म० जिउं जिउ। 11. पं० प्र० स० वाचइ, ना० चालस्यै। 12. र० तिम तिंम हुवइ, ग्या० तिम हुस्यइ, ना० सुं होइ, न० तिम होवसी, अ० तिउं हुस्यइ। 13. पं० हित, ग्या० हेज। 14(+15). प्र० जण कोई माहि, स० घणी उपाहौ। 16. ना० अ० लागिस्यइ, स० उलगइ। 17(+18). पं० राज, ना० अ० राजा

[८६]

चीरी लिषी[1] धण[2] आपणइ[3] हाथ।
पंडिया हो[4] चालि हेडाऊ कय[5] साथि[6]।
सात सउ कोसकउ[7] गामंतरउ[8]।

जी, न० राजा हो, प्र० राय, स० राब। [19]. पं० करे से, म० वसय, ना० न० करिसी, प्र० चलायो, स० चलावो। [20]. न० घरि केरी, अ० नारि केरी, प्र० धर अ, स० धरा अ। [21]. प्र० स० चेत।

[८६] यह छंद म० १३२, पं० १५६, ग्या० १६४, ना० १७३, न० १६३, अ० २०४, प्र० ३.२७/१, स० ३.२६/१ है।

म० में स्वीकृत .३ तथा .४ नहीं हैं।

प्र० में इस छंद की केवल .१, .३ हैं।

स० ,, ,, .१, .२, .३ हैं।

प्र० स० की शेष पंक्तियाँ स्वीकृत ८३ तथा ६२ में है।

म० १४६ तथा प्र० ३. ३५ और स० ३. ३८ में पुनः इस छंद की पंक्तियाँ इस प्रकार आई हैं :

बाहुड धणह (गोरी—प्र० स०) दिषाली छै बाट।
ऊंचा परबत नीचा (दुर्घट—प्र० स०) घाट।
लांबी बांह देखालियाँ (देखाली—म०)।
देखितो चालिजे (नइ देषतां जो जो—म०) देस की सीम।
छाहडी धूप थे (तावउड—म०) थे भीणी (मत—न०) गीणौ (गिणइ—म०)।
चीरी राषज्यो धण कौ (जिम थारउ—म०) जीव।

[1]. पं० ग्या० ना० न० चीरी दीन्ही। [2]. पं० ग्या० ना० न० गोरी। [3]. पं० ग्या० ना० न० पंड्या कइ। [4]. पं० ग्या० ना० न० स्वामि थे, स० जणह। [5]. पं० ग्या० ना० न० चालिज्यो जोवण (जोइ नइ—ग्या०, जो नइ—न०), ना० अ० चालिज्यो रुडइ जी, स० चलायो हेडाऊ कय। [6].

पंडिया रूडा[9] चालिज्यो देस की[10] सीम।
तावडउ गिणज्यो न छाहडी[11]।
म्हारी[12] चीरी[13] राषिज्यो जिउं[14] थारउ[15] जीव[16] ॥ भु० ॥

[६०]

[1]सात[2] सहेलीय[3] बइठी छइ[4] आइ।
छानउ[5] लिषीउ[6] तेह[7] माहि[8] सुणावि[9]।
लालच लिषिया[10] बहिनडी[11]।

पं० सात। [7]. न० अ० कोस। [8]. स० गाम आंतरै। [9]. अ० जतन सुं। [10]. न० अ० परदेस की। [11]. अ० गिणज्यो मत छाहड़ी, म० छाहडीय जनि गिणइ, पं० न० गिणइ न छाहडी। [12](+[13]). पं० ना० न० अ० चीरीय, ग्या० चीरी। [14]. म० जउ, पं० ग्या० ना० जिम, न० ज्युं, अ० [में नहीं है]। [15](+[16]). पं० न० घण कयउ जीव, ग्या० ना० घण कउ जीव, अ० घण केरी जीव।

[६०] यह छंद म० १३३, पं० २२५, ग्या० २३०, ना० २२६, न० १६२, अ० २०२, प्र० ३.२६, स० ३.२८ है।

पं० ग्या० ना० .८ है : से गुण लिख्या हे संभरिवाल।

न० में. ६, .७ नहीं हैं।

अ० में यथा .६, .१० हैं : (.६) करहउ उमाह्यउ घर भणी।
(.१०) सामी बेगि आवउ हिव सैंभरवाल।
(तुलना० उपर्युक्त पं० .८)

प्र० .२ है : तेरो लष्यो तूही समझाइ।

[1]. ग्या० तठइ। [2]. न० साथ, प्र० स० पंच। [3]. स० सषी मिलि। [4]. अ० बैठी। [5]. ग्या० जि, स० तैरय, पं० अ० भोली तइ प्र० तेरो, न० भोजी तइ। [6]. पं० अ० लिष्यउ, स० लिषी सषी। [7]. म० सो, ग्या० गोरी, स० सषी। [8](+[9]). म० तूम्हानयउ, पं० माहि सोणावि, ग्या० तेह सुणाइ, स० मांही सुणाई। [10]. न० अ० लिष्या छइ, प्र० लिष्यो है। [11]. म०

साम्हइ[१२] हियडलइ[१३] जीमणी[१४] कूंषि।
दुइ नष[१५] लागा[१६] नाह का[१७]।
आप[१८] समांणी[१९] करती आलि[२०]।
धण विसहर[२१] प्रीयउ गारुडी[२२]।
आउ सामी[२३] थारा डंक[२४] संभालि[२५] ॥ भु० ॥

[६१]

नाल्ह म्हाका[१] दुष[२] सहिसी[३] कउण।
म्हे तउ[४] पलिंग[५] तज्यउ[६] नइ परहर्‌यउ[७] लूण[८]।

गोरडी। [१२]. पं० ग्या० ना० न० म्हाकाइ साम्हइ, प्र० सांग्री, स० सामहै। [१३]. प्र० हूइ, स० हीयडइ। [१४]. प्र० स० डावी जी। [१५]. पं० दुइ दुष, म० दुष दुष। [१६](+[१७]). पं० ना० लागा था प्रीउ का. ग्या० लागा था हाथ का, न० लागा छइ पीउ का, अ० लागा था नाह का, प्र० लागा था देव का, स० लागा था साम का। [१८]. अ० तब आप, ना० प्र० स० आप, ग्या० म्हाका। [१९]. म० समाणी, ग्या० पं० सरेषी, ना० सरीषी। [२०]. म० स० करत आलि, पं० ग्या० षेलती आल, ना० थे लाघी थी आथ, अ० हुं करती जी आल। [२१]. म० प्रीय विसहर, प्र० प्रीय विसारी। [२२]. म० धणी गारुड़ी, ग्या० ना० प्रिउ (प्रीय—ग्या०) गोरड़ी, अ० जी गोरडी। [२३]. न० अ० ते भए लेख्यउ, प्र० जाग जो धणी, स० जागी धणी है। [२४]. ना० लिष्या है। [२५]. ना० संभरवाल।

[६१] यह छंद म० १३४, पं० १४३, ग्या० १४६, ना० १५७, न० १७२, अ० १८३, प्र० ३.३०, स० ३.३३ है।

[१](+[२]). पं० ग्या० ना० अ० पाड्या एइ (पंडिया—न० अ०) दुष म्हाका, प्र० ए दुष नाल्ह, स० जे दुष नाल्ह। [३]. पं० ग्या० ना० न० अ० जाणिस्यइ, प्र० कहे से, स० कहैइगो। [४](+[५]+[६]). म० पालथी सेज, पं० ग्या० न० म्हे त पलिंग तिज्यौ, ना० म्हे नो पल्यंक तजोइ, प्र० स० परिहर्‌यौ पलंग। [७]. न० अ० अनइ परिहर्‌यौ प्र० अर तज्यो, स० त्रीय तीज्यो। [८]. स० न्हाण।

पान[९] सोपारीय विस[१०] बडइ[११] ।
ले जपमालीय[१२] मइ जपउं[१३] नांह[१४] ।
दीह[१५] गिणंता नह[१६] घस्या[१७] ।
म्हांकी[१८] काग उडावतां थाकीय[१९] जीमणी बांह[२०] ॥ भु० ॥

[६२]

जाणियउ[१] हो[२] राजा[३] थाकउ[४] जांण[५] ।
दुहुं रे[६] काया मिलउ[७] एक परांण[८] ।

९. प्र० काथो, स० काथ । १०(+११). ग्या० विस पडइ, ना० विस वडेइ, स० ते विष बड़ौ, प्र० विश वाउ । १२. प्र० कर जपमाली, स० करि जपमाला । १३(+१४). म० जपउ प्री तणउ नाम, न० जपूं छूं नाह. अ० रे जपस्युं नाह, प्र० स० अर जपइ नाह । १५. पं० न० प्र० दिन, ग्या० ना० दिन दिन, अ० दिवद, स० आंगुली । १६. प्र० म्हारा नह, स० दिन । १७. प्र० स० गया । १८. पं० म्हारी, प्र० स० [में नहीं है] । १९. ग्या० न० अ० थाकी छइ, अ० दूषइ, प्र० दूषि, स० दूषइ छइ । २०. पं० ग्या० ना० न० प्र० स० बांह ।

[६२] यह छंद म० १३५, पं० १४८, ग्या० १५३, ना० १६२, न० १७८, अ० १६१, प्र० ३.४६, स० ३.५८ है ।

म० पं० ग्या० ना० न० अ० .१ है : हूं तउ बालुं हो धणी थारउ सुजाण। (तुलना० ८७. १)

प्र० स०. २ है : जि क्युं ही (जे किम—स०) वांछै (यछै—स०) दूर (दूरी—स०) थी (थ—स०) ।

१. म० हूं तउ वालूं, पं० न० अ० बाल, ग्या० ना० वालूं । २. प्र० स० [में नहीं है] । ३. पं० स्वामी, ग्या० ना० म० अ० धणी, न० धण । ४. ना० न० अ० तुम्हारौ, स० थारौऊ, ग्या० थारउ, प्र० थाको । ५. म० सुजाण । ६. म० अउर, प्र० दोय, स० दुई । ७. म० काया आपे, ग्या०काया

सा क्यउं[९] दूरि थी[१०] मेल्हियइ[११] ।
कुल की[१२] रे[१३] बेटीय[१४] सील[१५] जंजीर ।
जोवन राषउं[१६] मइ[१७] चोर जिउं[१८] ।
पगि पगि[१९] तो नइ[२०] पहूच रे[२१] पाप[२२] ।
इणि भवि उलगाणउ हूउ[२३] ।
अवर भवि[२४] होयउ[२५] कालउ साप ॥ भु० ॥

[६३]

पंडिया जइ तूं चालियउ[१] प्रीय कइ देसि[२] ।
हउं रि कहउं वीरा[३] तिउं रि कहेसि[४] ।

करि, ना० काया मिल, न० काया मिलिए, स० का मिल्यां छै, प्र० काया मिले । ८. म० पुराण । ९. पं० ना० न० सा किम, अ० भर जोवन । १०. पं० ना० न० दूरइ, अ० सामि, ग्या० मंदिर । ११. पं० ना० न० छोडिजइ, ग्या० छोडतां, अ० छाडिगइ । १२(+१३+१४) ना० कुल की छोडी, प्र० कुल की बेडी, स० कूलह की बेडी । १५. प्र० सयल, स० सीयलै । १६. अ० राखियउ । १७. न० अ० [में नही है] । १८. न० मोर जिउं, म० चोर जउ, ग्या० चोरि जउ । १९. अ० पगि । २०. पं० ग्या० ना० तोहि, अ० वोहिं, प्र० स० स्वामी । २१. पं० न० पहूचिज्यो, न० लागिसि, प्र० तो लागै, स० लागुहु । २२. प्र० स० पाय । २३. प्र० हूयो, स० हुवौ । २४. पं० अवर भव, ना० अवर भवै, न० अ० दूसरइ भव, प्र० आवत है, स० आवतइ भवि । २५. पं० ग्या० होज्यो, न० अ० हूज्यो, ना० [में नहीं है], प्र० भव, स० होइ ।

[६३] यह छंद म० १३६, पं० १४४, ग्या० १५०, ना० १५८, न० १७३, अ० १८४, प्र० ३.२८, स० ३.३० है ।

१. ग्या० पं० म० तू तउ चालिहो, न० अ० जइ तूं हो चालिसि, प्र० पांडीया चालीया, स० पांड्यो चाल्यो ओका । २. न० प्री कइ, देस, अ० प्रीय तणइ देश । ३. म० पं० र० ना० ग्या० न० अ० रि कहूं स्वामी, प्र०

एक सरां घरि आवज्यो[५]।
थारी बाट बुहारूं[६] सिरह का केसि[७]।
जोवन भरि जल ऊलट्यउ[८]।
थाग न पावुं[९] धरह नरेस[१०] ॥ ध्रु० ॥

[९४]

पंडिया तिम कहेज्यो[१] जिम[२] प्रीय नि रिसाइ।
साधण तुझ विण अन्न न षाइ[३]।

हूं कहूं ते वीरा, स० हूं कहूं बीरा। ४. अ० तिसउ कहेस, प्र० असूं कहैस, स० सोई कहेस। ५. पं० एक बारां घरे आविज्यो, अ० एक रिस्यो घरि आविज्यो, स० एक सारां घरि आविज्यो, ग्या० एक बारां घरि आविज्यो। ६. म० थारी बाट बुहारं, न० अ० थारी बाट बुहारस्यां। ७. न० सिर केरे केस, ग्या० सिराह कइ केसि, ना० सिरह कै केस, अ० सिर करि केस, प्र० सिरहै के केस, स० सिर का केस। ८. न० जोबन भरि जल उभर्‌यउ, प्र० भर्‌यो माहा जलटि, स० बिरह महाजल उलटई, ग्या० जोबन जल भरि ऊगयउ। ९. अ०, तठइ थाग न पाऊं जी, प्र० बाग न पामुं, स० थाग न पावइ, ग्या० थाग न पावां। १०. न० अ० सुणह नरेस, ना० धरा नरेस, स० मुंध नरेस।

[९४] यह छंद म० १३७, पं० १५०, ग्या० १५५, ना० १६४, न० १७५, अ० १८७, प्र० ३.२७/२, स० ३.२९ है।

म० न० अ० .१ है : पंडीया वीर तूं इसउ (सोय—न०) सुणेज (सुणेसु—न०)।

,, ,, ,, .२ ,, : जिउं तोनइ (जीरांउ—न०, जु तुमै—अ०) हूं कहूं तिहूं कहेज (तिसहु कहेस—न०, तेम कहेस—अ०)।

पं० ग्या० ना० .४ है : सीस फाटहु अछइ दक्षण चीर।

प्र० स० में इस छंद की केवल .१, .३, .४ हैं। प्र० स० पाठकी शेष पंक्तियाँ स्वीकृत छंद ८३, ८७ में है।

१. प्र० स० तिणी (तीण—स०) परि बोलज्यो, स० बोलज्युं। २. पं०

कुह्याणी[४] फाटउ रे[५] कंचुयउ।
षोपरि[६] फाटउ तु[७] धण केरउ[८] चीर[९]।
जिम[१०] दव दाधी लाकडी[११]।
तूं तउ[१२] उवइगउ रे आविज्यो[१३] नाणदका[१४] बीर ॥ भु० ॥

[६५]

कहि नइ गोरी थारा प्रीयरा[१] अहिनाण[२]।
थोडा थोडा म्हानय[३] दे[४] सहिनाण[५]।

ना० न० तिम। ३. ग्या० धान न षाइ। ४. पं० कुणही, न० स० कूहणी। ५. न० अ० फाटी छइ। ६. म० कोकट, न० पोषरी, प्र० पोषर, ग्या० सीस। ७. ग्या० न० फाटइ छइ। ८. ग्या० दीषिण। ९. म० जीव। १०. प्र० स० जाणे। ११. अ० रे वांहडी। १२. पं० ग्या० ना० [में नहीं है], न० थे, अ० अब तु। १३. अ० आवै। १४. न० नणदल रा।

[६५] यह छंद म० १३६, पं० १५१, ग्या० १५६, ना० १६४, न० १८२ + १८३, अ० १६४+१६५, प्र० ३.३२ (अंशतः), स० ३.३५ (अंशतः) है।

म० .८ है : ऊंचउ रे घोडउ चडय असमाण।

म० .६ है : सयल उडीसय निरषज्यो।

ग्या० में .२ नहीं है।

अ० में स्वीकृत .८ नहीं है।

न० में स्वीकृत '८ के स्थान पर है : तेजीय घोडे अरु लाल कमाण।

अ० में .५, .६ के बीच अतिरिक्त है : इसे अहिनाण हो प्री अवधारि।

न० ,, ,, ,, : पंडिया प्रीतणा ए अहिनाण।

(तुलना० स्वीकृत .१०)

किण[8] उणहारइ[9] सारिषउ[8]।
लहुडा[9] देवर कइ उणहारि[10]।
एह गोरउ प्रीय सामलउ।
सीस तिलक[11] नितु[12] नवइ रे[13] विहाण।
उरि चौडउ[14] कडि पातलउ।
ऊंचउ रे[15] जाडउ[16] कडि जमडाढ[17]।

पुनः न० अ० में इस पंक्ति के अनंतर और है :—

बालि कहि गोरडी प्री अहिनाण।
थोडा थोडा म्हानुं दे सहिनाण।

प्र० स० में .२ का पाठ है : जाणी अहिनाणहु लेहु पीछाणि।

प्र० स० में निम्नलिखित दो पंक्तियाँ स्वीकृत .६ तथा .६ के बीच और आती हैं :

पाय लपीणी मोजडी (मोचणी—स०)।
मोटो (मूछ—स०) करिवाण छै डावइ हाथि।

प्र० स० में पंक्तियाँ हैं क्रमशः स्वीकृत ६५ .१, उपर्युक्त प्र० स० .२, स्वीकृत .३, .८, .७, स्वीकृत ६६ .६, .७, स्वीकृत ६५.६, उपर्युक्त प्र० स० की अतिरिक्त पंक्तियाँ, स्वीकृत ६५.६, .१०।

[1]. ना० प्रीय, न० प्री, प्र० प्रीउ, स० प्रीव का। [2]. स० सुहिनांण। [3]. पं० मोनइ, अ० म्हानुं, न० मोहि, प्र० माहि। [4]. पं० कहि नइ, म० दीयउ, ना० कहि, प्र० सहू। [5]. म० अहिनाण। [6]. प्र० कुण। [7]. प्र० अणुहार। [8]. प्र० स० कुण सारिषो (कौण सारिखो—स०)। [9]. पं० ना० न० म्हारा लहुडा। [10]. ग्या० अहिनाण। [11]. पं० ना० न० द्वादस तिलक। [12](+[13]). पं० ना० न० करइ नवइ, ग्या० करइसु, प्र० करि उठाइ, स० उगतई। [14]. म० घडि जाडउ, पं० ना० न० अ० उरि जाड़उ। [15](+[16]). ग्या० ऊंचउ जोडउ, स० ऊंचउ गोलइ, प्र० ऊंचो

लाषां[१८] माहि[१९] पिछाणिजइ[२०] ।
पंडिया[२१] प्रीय छइ[२२] एह सहिनाण[२३] ॥ ध्रु० ॥

[६६]

बलि कहि[१] गोरी[२] थारा[३] प्रीयरा[४] अहिनाण[५] ।
थोडा थोडा म्हांनइ दे[६] सहिनाण[७] ।
किण[८] उणहारइ[९] सारिषउ[१०] ।
दाढीय रायकइ[११] भमर भमाइ[१२] ।
मस्तक माहे[१३] केवडउ ।
माहिलइ[१४] कोइय[१५] जीमणी आंषि[१६] ।

गोरो । [१७]. ना० कडि छै जमडाढ । [१८](+[१९]+[२०]). प्र० लाष मील्यां माहि लष लहइ । [२१]. अ० पंथिया । [२२]. न० अ० प्री तणा, पं० म्हारा प्र तण, ना० प्रीयका, प्र० प्रीउ म्हारो, स० म्हाको प्रीव छइ । [२३]. न० ए अहिनाण, प्र० जाणज्यो ए अहिनाण, स० इणतो सहिनाण, प्र० एण सहिनाण ।

[६६] यह छंद म० १४२, पं० १५३, ग्या० १५८, ना० १६७, न० १८५, अ० १६६, प्र० ३.३२ (अंशतः), स० ३.३५ (अंशतः) है ।

अ० .६ है : लाखा माहि पिछाणजो । (तुलना० स्वीकृत ६५.६)

प्र० स० में पूर्ववर्ती तथा यह एक ही छंद है, जिसकी पंक्तियों का विवरण पूर्ववर्ती छंद के प्रसंग में ऊपर आ चुका है ।

[१]. न० भलि कहि । [२]. न० गोरडी । [३](+[४]). पं० थारा पीउ, ना० प्रीय, न० अ० प्री । [५]. म० सहिनाण । [६]. पं० मोहि दे, ना० मोनै दे, न० अ० म्हानु दे । [७]. म० अहिनाण । [८](+[९]). ना० कहि नी गोरी किण, म० कुणि अणुहारइ, ग्या० कवण अणहारइ, अ० किण अहिनाणे । [१०]. अ० परगडउ । [११]. पं० ग्या० ना० न० राजा की । [१२]. पं० भमाहि, अ० भमेह । [१३]. पं० ना० न० अ० मस्तक माहि छइ ।

कालउ तिलउ अछइ[17] भमर जिसउ[18] ।
कडि[19] तरकस[20] छइ[21] जहंउ किरवाण[22] ।
तेजीय चड्यउ राजा नवलषइ[23] ।
पंडिया प्रीय छइ एह सहिनाण ॥ भु० ॥

[६७]

चींरी जनोइय[1] दीन्ही छइ[2] संठि[3] ।
सहस[4] सोनइया बांध्या छइ[5] गंठि[6] ।
बरस[7] दीहा कउ रे[8] संबलउ ।
[9]घीय घणउ जीमजो[10] जिम पगि[11] हुवइ[12] प्राण ।

---

[14]. पं० उणरइ माहिलइ, ग्या० ना० राजा जी कै (कइ—ग्या०) माहिलइ । [15]. न० अ० टोइयै, ना० कोइयइ । [16]. म० दाहिणी आंख । [17]. पं० न० अ० छइ । [18]. म० भमर सउं । [19]. पं० ना० न० ग्या० कड्या, अ० कडीया । [20](+[21]). पं० कस सास, ग्या० न० तरकस साज, ना० तरकस सीझ, अ० तरकस सजइ । [22]. पं० जात कुरवाण, ना० कुरवाण, ग्या० तउ कुरवाण । [23]. म० रावकइ, ग्या० छइ नवि लषइं । [24]. पं० ना० प्रीउ का, न० प्रीतम ।

[६७] यह छंद म० १४३, पं० १५८, ग्या० १६३, ना० १७२, न० १६१, अ० २०६, प्र० ३.३१, स० ३.३४ है ।

म० .६ है : हुइ हुती दुइ लेज्यो साम की सुजाण ।

[1]. ना० जनोई सुं, प्र० स० जनोईय की । [2]. म० दीयछइ, स० दीधी, पं० दीधा, ना० दीन्ही सुं, न० दीनी । [3]. पं० सांठि, म० सहंति, ग्या० ना० गंठि, प्र० स० गांठि । [4]. प्र० गणि करि, स० गिणि । [5]. म० ग्या० प्र० बंधिया, न० बांध्या । [6]. पं० न० अ० गांठि, प्र० स० सांठि । [7]. पं० वर । [8]. ग्या० दिहाडा कउ । [9]. पं० र० ग्या० ना० पंडिया, म० पंडिया थे । [10]. प्र० षाय जिम, स० खाज्यो । [11](+[12]). म० जिम थारे

पहिरिज्यो[१३] साबरी[१४] पाणही ।
चिहुंघडिया माहें[१५] तूं[१६] देइ मेल्हाण[१७] ॥ भु० ॥

[६८]

बाहुडि[१] गोरडी[२] तूं[३] घरि जांह ।
हूं[४] लेकरि[५] आवउं[६] थारडउ[७] नांह ।
सउण[८] ते[९] बंधिया[१०] गाठडी[११] ।
सात सोपारीय दीधीय[१२] छोडि[१३] ।
बोलियउ छइ[१४] ते[१५] निरवाहिज्यो[१६] ।
पाय लागीय[१७] धण बे कर जोडि ॥ भु० ॥

पगे, ना० पगे हुवै, ग्या० पगे हुवइ प्राण, स० पगाह । १३. प्र० स० पाये । १४. न० अ० संब्रर । १५. पं० ग्या० न० अ० चिहुं घडिया समउ, ना० बेऊं घडियां समै । १६(+१७). पं० ग्या० ना० न० करिज्यो मेल्हाण, अ० देज्यो मेल्हाण, प्र० दीए मेल्हाण, स० देइ मिलांण ।

[६८] यह छंद म० १४४, पं० १५४, ग्या० १५६, ना० १६८, न० १८७, अ० २०७, प्र० ३.३५/१, स० ३.३७ है ।

प्र० स० .४ है : दीधी सोपारी दोय कर च्यार ।

स० .६ है : बचन तुम्हारइ लागी छइ नारि ।

प्र० में .६ नहीं है ।

१. म० बाहुडउ, पं० भण बाहुडी, ना० बहुड, अ० बाहुडि रे, न० छाहूं माहे । २. न० अ० स० प्र० गोरी । ३. म० म्हे । ४(+५). म० ले करि, प्र० स० हुं लेइ । ६. पं० आवं हे, न० प्र० आविस्युं, प्र० आविश । ७. पं० न० ना० स० प्र० थारउ, अ० थारो रे । ८(+९). स० सोना तो, प्र० सुणज्यो । १०. पं० बीध्या, न० अ० बांध्या, ना० स० बांध्यौ, प्र० बांध्या । ११. ग्या० गोरडी । १२. पं० दीन्हा छइ, ग्या० न० दीन्ही, ना० दीधी छै, अ० तब दीनी छै । १३(+१४). ग्या० बोल्यउ छइ, न० बोलउ

[९९]

कोस पयाणइ[१] पंडियउ जाइ।
सात[२] अंगारा करि[३] बइठउ जी[४] षाइ।
हलवइ हलवइ[५] पग ठवइ[६]।
चालतां गोरडी दीधी थी[७] सीष[८]।
ते सहु[९] पंडिया नइ[१०] वीसरी[११]।
चालिवा लागियउ[१२] छोटीय वीष[१३] ॥ ध्रु० ॥

[१००]

सातमइ[१] मास[२] पहूतलउ[३] जाइ।
जठइ[४] मानिजइ[५] बलद नइ हल बहइ गाइ।

छउती, प्र० जो बोलो, स० ज्युं बोलइ। [१५](+[१६]). पं० ना० न० सो निरवाहिज्यो, अ० छौते निरबाहज्यो, प्र० स० जे निरबाहिज्यो, ना० ते निरबाहिज्यो। [१७]. पं० ग्या० ना० न० अ० पाइ पडइ।

[९९] यह छंद म० १४७, पं० १६१, ग्या० १६६, ना० १७५, न० १९४/२, अ० २०८, प्र० ३.३६, स० ३.३९ है।

किंतु प्र० स० .६ है : पड्यो संभालै आपणउ पेट।

[१]. प्र० पीयाणो, म० पयाणय। [२]. न० साथ। [३]. म० रोटा करि, पं० न० अंगा कार, स० अंगा करि, ग्या० अंगारक, प्र० अंगा करी। [४]. न० अ० घी घणउ, प्र० स० बैठो हो। [५]. अ० अलवीह चालिहो, प्र० सांसतो चालइ, स० सूनो चालै। [६]. म० पग भरइ, ग्या० पगिला भरइ. ना० भंग भरै, न० पैंग लाभइ। [७]. ना० दीन्ही थे, प्र० कहै, स० कह्या हो। [८]. प्र० स० संदेस। [९]. पं० ना० ते सवि, प्र० स० ते। [१०]. प्र० स० सघलो। [११]. प्र० स० बीसर गयौ। [१२]. अ० ठमकि चालै करि। [१३]. म० स० प्रीख।

[१००] यह छंद म० १४९, पं० १६२, ग्या० १६७, ना० १७६, न० १९५, अ० २०९, प्र० ३.३८, स० ३.४१ है।

मांड पीजइ[६] कण राषिजइ[७]।
तठइ[८] लाल विहूणी[९] बाजइ छइ[१०] घांटि[११]।
इसीय सकति अछइ[१२] देव की[१३]।
नाहर चोर नवि लागए[१४] बाट[१५] ॥ ध्रु० ॥

[१०१]

पंडियउ पहुतउ सातमइ मास।
देव कइ थांनि[१] करीय[२] अरदास[३]।

म० स० में स्वीकृत .२ और .३ के बीच और है :

इसउ चरित जिहां अनि घणउ।
सांड विहूणी ब्यावइ गाइ।

स० .१ है : अचरिज बात ईम सयल असेस।

१. न० साथमइ। २. ग्या० सथि। ३. ग्या० ना० प्र० स० पहूंतउ न० उतउ किहां, पं० पहूंतउ ले। ४. ना० उठइ मानि, प्र० तिहां, स० ते। ५. म० पूजियइ। ६. म० पीवइ। ७. म० नांषिजइ, पं० राख लिजइ, ना० न० अ० प्र० स० रालिजै। ८. पं० ग्या० ना० उठइ, अ० प्र० स० [में नहीं है]। ९. न० काट विहूणी। १०. म० रे बाजइ। ११. ग्या० स० घंट। १२(+१३). ना० देवा तणी, अ० स० तिहां देवकी, प्र० जिहां देवकी। १४. पं० ग्या० ना० नही तेहनी, न० नीही तेहनि, प्र० न देवकी, स० नहीं देवकइ। १५. स० पंथ।

[१०१] यह छंद म० १५०, पं० १६२, ग्या० १६८, ना० १७७, न० १९६, अ० २१०, प्र० ३.४४, स० ३.४७ है।

पं० ग्या० ना० न० अ० .५ है : महिमा अधिकी छइ (दीसइ-ग्या०) देव की। (तुलना० स्वीकृत १००.५)

तपीय[४] सन्यासीय[५] तप करइ[६]।
अमर काया[७] रतनालीय आंषि[८]।
जिण दिन[९] मेरु न[१०] मेदनी।
धन धन देव तूंही[११] जगनाथ।
फूल[१२] चहोडीय[१३] पंडियइ[१४]।
चंदन चरचि[१५] अर जोडइ[१६] हाथ॥ भु०॥

पं० ग्या० न० अ० .६ है : मेलउ देई स्वामी राउसुं।
" .१० " : तुं सेवकरी करुणा समरत्थ (सेवकां तारण समरथ नाथ—अ०)।

प्र० स० में प्रथम दो पंक्तियाँ क्रमशः स्वीकृत .६,.४ हैं, स्वीकृत .५ उनमें भी यथा. ५ है और शेष पंक्तियाँ हैं :

(.३) अमर स्यंघासन वैसणइ।
(.४) जिण दिन कंठ न ओ अहंकार।
(.६) जिण दिन स्वामी चंद न सूर।
(.७) जिण दिन पवन पानी नहीं।
(.८) जिण दिन स्वामी आभ न गाभ।
(.९) ये तो जुग सूना गया॥
(.१०) तदि तो दीप नीपायो हो आप॥

[१]. न० अ० धनि, म० थानक। [२](+[३]). पं० अरु करी दासि, न० अ० करै अरदास। [४](+[५]). ना० तति सन्यासी। [६]. अ० रे कापडी। [७]. म० अमृत काया, पं० उसकी कनक काया, ग्या० ना० न० कनक काया, अ० अमर वाइक। [८]. अ० रउनालीय आंखि। [९]. म० दिन दिन, प्र० जिण दिश। [१०]. म० भेटय। [११]. प्र० स० देव देवा। [१२]. ना० पूज। [१३]. पं० अ० चहोडइ, ग्या० चडाया, न० चहो। [१४]. पं० न० अ० पंडीयउ। [१५]. म० बरजि, पं० चरित्र, ना० चरचिअ। [१६]. म० जनोईय, पं० और जोडइ, ना० जौडै रे, अ० अरु जोडइ।

[१०२]

पंडियउ आइ पहूतउ[1] प्रोलि।
द्वादस तिलक चंदन की षौलि।

---

[१०२] यह छंद म० १५२, पं० १६५ (अंशतः)—१६६ (अंशतः) और इसी प्रकार र० १६७—१६८, ग्या० १७०—१७१, ना० १७६—१८०, न० १६८—१६६, अ० २१६—२१७, प्र० ३.४३ (पूर्ण), स० ३.४६ (पूर्ण) है।

म० में स्वीकृत .२, .६, .७ नहीं हैं।

पं० १६५, ग्या० १७०, ना० १७६, न० १६८, अ० २१६, में यथा .१ है स्वीकृत .४, यथा .३ है स्वीकृत .५, यथा .६, .७, .८ हैं स्वीकृत .८, .६, .१०; शेष यथा .२ है : सूभर भरिया अरथ भंडार।

और यथा .४, .५ हैं : घरि घरि तोरण मंगल च्यारि। (तुलना० स्वीकृत १२०.४)

घरि घरि अति उजला झलमलइ। (अ० घरि घरि द्वार धवला घणा।) (तुलना० स्वीकृत १०२.७)

पं० १६६, ग्या० १७१, ना० १८०, न० १६६, अ० २१७ में यथा .१ है स्वीकृत .१, यथा .२ है स्वीकृत .२, यथा .३ है स्वीकृत .३, और यथा .४, .५, .६ निम्न हैं :

(.४) हाथ बीजोरउ पुहुप की माल। (तुलना० स्वीकृत १०३.२)
(.५) राइ भुवण गयो जोइसी।
(.६) ऊभउ राखियउ पउलि दुवार।

प्र० स० में स्वीकृत .१, .२ है : (.१) प्रोहित निरखै पोलि पगार।
(.२) चंदन तिलक अंगि षौलि कराय।

स० में प्रारंभ में ही और है : पठइ पोथी रामा की छै।

[1]. ग्या० जाइ नइ बइठउ। [2](+[3]). प्र० कांधि जनोइय, स० कंठ

गलइ[२] जनोइय[३] पाट की।
रगत चंदन तणा[४] प्रोलि[५] किमाड[६]।
सरब सोना की[७] पावडी[८]।
ऊंचा तोरणि घरि घरि बार।
घरि घरि[९] ऊजला झलमलइ[१०]।
घरि घरि[११] तुलछीय[१२] बेद पुराण।
तिण भुइ[१३] पाप न संचरइ[१४]।
तठइ[१५] फिरइ[१६] जगनाथ की[१७] आंण॥ भु०॥

[१०३]

पंडियइ राउलइ[१] कियउ रे[२] प्रवेस[३]।
लेइ[४] वीजोरउ[५] मिल्यउ[६] नरेस।

जनोई। ४. ग्या० रतन चंदन तणा, म० रंग चंदन का, न० सरभ सो रजत तणा, प्र० स० रगत चंदन की। ५. म० पउल, न० यलि, प्र० पौलि, स० पीली। ६. म० प्रकार। ७. न० सबेरे सोना की, स० सीसम सार की। ८. पं० र० ग्या० ना० न० सांकुली, प्र० स० पाटली। ९(+१०). स० ऊंचा दादुर झलमलइ, प्र० ऊंचा ईडा झलमलइ। ११(+१२). पं० घरि घरि तुसली। १३. म० तिणनु, पं० उणि भुव, र० ग्या० ना० न० उणि भुइ, प्र० जिण भुइ, स० तिण भई। १४. प्र० स० छीपही। १५. पं० र० ग्या० ना० न० अ० ऊठइ, स० तिहां। १६. म० फिरय, ना० फिरइ छइ। १७. ना० जगनाथ घरि।

[१०३] यह छंद म० १५३, पं० १६८, र० १७१, ग्या० १७४, ना० १८३, न० २०२, अ० २२०, प्र० ३.४०, स० ३.४३ है।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .३ है: नमण कीधी राजा पूरबइ।

१. पं० र० रावल गनि, ग्या० रावल, म० राजन, प्र० स० जाइ। २. ग्या० लीयउ रे, प्र० कीयो। ३. प्र० राय परवेश। ४. म० हाथ, न० देइ। ५. म० बीजरउ। ६. म० भेंटा, न० मिले, स० दुज मीलइ, प्र०

कुसल कुसल अहो देवता[७]।
गंग जमुन[८] जां लगि बहइ नीर[९]।
चंद सूरिज जां लगि तपइ।
तां लगि[१०] राज करउ[११] अजमेरि[१२] ॥ भु० ॥

[१०४]

चीरी[१] दीन्ही पंडियइ[२] राउ कइ[३] हाथि[४]।
पंडिया[५] आव्यउ कहि किण साथि[६]।

मिलीया। ७. प्र० सु प्रस्न हूआ, स० सं प्रसन्न हुवो। ८. म० गंगा नदी रउ। ९. म० जां बहइ नीर, पं० र० ग्या० न० जां (जी—ग्या०) नीर बहाइ, ना० जितै नीर बिहाय, अ० जहां नीर बहाइ, स० जब लगि बहै नीर। १०. न० तौ लगि, प्र० अबिचल। ११(+१२). पं० राज की कीरति हुवइ, र० राज की कीरति रहाइ, ग्या० ना० कीरति तुम्हरि जाइ (रहाइ—ग्या०), न० कीरति अबिचल थाइ, अ० अविचल राज तुम्ह थाइ, स० राजा सयल परिवार, प्र० राज छै तुमा सरीर।

[१०४] यह छंद म० १५७, पं० १६५, ग्या० २००, र० १६७, ना० २०६, न० २२६, अ० २४८, प्र० ३.४१, स० ३.४४ है।

पं० र० ग्या० ना० न० में .५ है : जइ तुम्हे राव जी नावीया।
,, .६ ,, : तउ धण हीयडउ फाटि (फूटि—ग्या०) मरेसि। (तुलना० क्रमशः १०५.५, .६)

न० में इनके पूर्व अतिरिक्त है : मंडीयउ कागद करि धरइ।

प्र० स० में स्वीकृत .२ यथा .१ है, और अन्य पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं :

(.२) लांघ्या कूं परवत दुरघट घाट।
(.३) तुम कारण दूत रतरा (दूत रमिरां—स०)।
(.४) सूना सांभर का रिणवास।

कुण राणी[७] तो नइ[८] पाठव्यउ[९]।
राणी राजमती[१०] तो नइ[११] दीयउ संदेस[१२]।
ठाकुर थे[१३] घरि आविजो।
जीतो[१४] जोबन किहां रे लहेस ॥ भु० ॥

[१०५]

पंडिया गोरडी[१] तइ[२] किण परि[३] दीठ।
मोती[४] परोवती[५] गउषि[६] बईठि।

(.५) सूना चउरी (चउरा—स०) चउषंडी।
(.६) सूना मंदिर गढ (मढ़—स०) कविलास।

१. पं० ग्या० हिवइ चीरी, न० उतो चीरी। २. म० वाची, ना० दीधी पंडीया, न० पंडीय। ३. ना० [में नहीं है]। ४. ना० [में नहीं है]। ५. म० अ० कहि रे (कहि न रे—अ०) पंडिया। ६. म० [में छूट गया है], पं० आव्याउ कुण संघाति, अ० आयो कुण साथि, ना० आयो कवण के साथ, प्र० स० तू आयो कवण कइ साथ। ७. पं० र० किणइ। ८. पं० र० ग्या० तुम्हे, अ० तोहि। ९. पं० ग्या० मोकल्या, र० ना० अ० मोकल्यउ। १०. र० राणी राजमती यै। ११. पं० ग्या० ना० तुम्ह, र० पाठव्यौ, अ० तहि। १२. ग्या० दीया जी संदेस, र० [में नहीं है], ना० दीया संदेस। १३. अ० ठाकुरा तुम्हे। १४. अ० जातो, म० जीतो रे।

[१०५] यह छंद म० १५८, पं० १६६, र० १६८, ग्या० २०१, ना० २१०, न० २३०, अ० २४६, प्र० ३.५२, स० ३.५५ है।

प्र० स० .५ है : एक सरां घर आवज्यो। (तुलना० स्वीकृत ६३.३)
" .६ " : चढ़तो जोबन किहां लहेस। (तुलना० स्वीकृत १०४.६)
ग्या० .२ है : उण भुय पग देइ कहउ जी संदेस।
(तुलना० स्वीकृत .४)

उसमें छंद की .३—.६ के स्थान पर केवल स्वीकृत पूर्ववर्ती छंद की .५, .६ हैं।

चित[७] चोषइ[८] मन[९] ऊजलइ[१०] ।
[११]पग दुय[१२] अंतर[१३] दीयउ रे[१४] संदेस ।
जउ रे तूं[१५] आज न[१६] चालीयउ[१७] ।
तउ[१८] धण[१९] हीयडलउ[२०] फूटि[२१] मरेसि[२२] ॥ भु० ॥

[१०६]

भीतरि[१] सांचर्‌या[२] दूअनय[३] राइ ।
पाट महादे[४] राणी लीयउ[५] बुलाइ[६] ।

---

[१](+[२]). प्र० गोरडी, ना० गोरी नै । [३]. पं० र० ग्या० ना० किण विधि, प्र० को दुष, स० किणइ दुष । [४]. प्र० स० चावल । [५]. प्र० स० वीणती, ना० पोवत । [६]. र० गौपै । [७](+[८]). र० चित दोषो, प्र० स० मुषि मइलइ । [९](+[१०]). पं० मन ऊमलयउ, र० मन ऊपनो, ना० मन आरती, स० चित ऊजलइ, प्र० चित निरमल । [११]. पं० र० उणि तउ, ग्या० उण । [१२](+[१३]). पं० र० ना० न० ग्या० भुइ पग देइ, प्र० स० दुइ पग उतरी । [१४]. पं० कहउ, ग्या० कहउ जी, र० ना० न० नै कह्यो, प्र० स० कह्यो हो । [१५]. पं० र० ग्या० ना० न० अ० तुम्हे । [१६]. पं० र० ग्या० ना० न० राव जी । [१७]. पं० र० ग्या० ना० न० नावीया, अ० चालीस्यइ । [१८](+[१९]). ना० न० साधण, अ० तउ साधण । [२०]. पं० हीयउ, र० ग्या० हियडे, ना० हीयडै । [२१]. पं० र० ना० न० फाटि । [२२]. म० नरेस ।

[१०६] यह छंद म० १६८, पं० १६६, र० २०१, ग्या० २०४, ना० २१३, न० २३३, अ० २५७, प्र० ३.६०, स० ३.६२ है ।

पं० र० ग्या० ना० न० .६ है : राणी कोडि टका कउ दीन्हउ छइ हार ।
,, .७ ,, : म्हाकी भावज नइ संपिज्यो ।
,, .८ ,, : जिह कयउ पीहर छइ भोज की धार ।
(तुलना० स्वीकृत १०८.६)

उलगाणउ घर चालियउ[७]।
नयण भरे[८] अरु कियउ जुहार[९]।
चिरजीवे हो म्हाका वीर[१०] तूं।
म्हारउ आंसूय[११] रालतां[१२] भीनउ छइ[१३] हार ॥ ध्रु० ॥

[१०७]

रहि रहि[१] बीसल[२] घर[३] मम जाहि[४]।
थारा[५] करिस्यां[६] च्यारि वीवाह[७]।

प्र० स० .४ है : सह संदेसी नया (सा नईआ—प्र०) उपरि पान।
„ .५ „ : म्हा बइठा मे बावरो।
„ .६ „ : रहो तो उडीसा परधान।

१. पं० र० न० तब भीतरि। २. म० चालीयउ, अ० सीख। ३. पं० न० दूउनउं, र० ना० दोनूं, अ० करावी हो, प्र० दुहै, स० दोई। ४. पं० र० ग्या० ना० न० अ० भानमती। ५. ग्या० लीयउ जी, प्र० लीधा, स० लीय। ६. ग्या० प्र० बोलाय, स० बोलाई। ७. पं० र० ग्या० ना० न० अ० चालिस्यइ। ८. पं० ग्या० ना० अ० नयण भरइ, र० नाण भरय। ९. पं० र० ग्या० ना० न० अ० अरु करइ (करिय—र०) जुहार। १०. म० वीर तूं, र० म्हांका वीर सूं, न० म्हांका वीर जी। ११. अ० म्हांकै। १२. अ० नाखतां। १३. अ० भीगो जी।

[१०७] यह म० १६६, पं० २००, र० २०२, ग्या० २०५, ना० २१४, न० २३४, अ० २५८, प्र० ३.६२, स० ३.६४ है।

म० में .६ नहीं है।

१. म० ना० रहु रहु। २. पं० र० न० वीरां तूं, प्र० स० प्रधान तुं। ३. पं० र० हरि, ग्या० न० अ० घरहि, ना० वीर, प्र० घरहां, स० जी। ४. पं० न जाह, ग्या० अ० म जाउ, ना० म जाल, र० म जाइ, न० में जाइ प्र० न जाय, स० मतो जाई। ५. न० थारा हो, स० थारो। ६. र० करेस्यां, अ०

दोइ गोरी[८] दोइ सामली[९]।
राइ भतीजी हो[१०] राज कुमारि[११]।
बहिन दिवाडूं[१२] राइ की[१३]।
थारा व्याह करावुं[१४] गंग नइ[१५] पारि[१६] ॥ भु० ॥

[१०८]

रहि रहि[१] बहिनडी[२] तूं[३] मांम म हारि[४]।
म्हारइ[५] सहस अस्त्रियां[६] घरि नारि[७]।
एक एकां थी[८] आगली[९]।
एक अस्त्री[१०] छइ[११] म्हाकइ[१२] रतन संसारि।

करां, प्र० करू हूं, स० कराऊं हूं। ७. र० च्यारे बीवाह, प्र० थारो व्याह, स० दो ती व्याह। ८. प्र० स० एक गोरी। ९. प्र० स० दूजी सामली, ग्या० सामली। १०. म० राजभतीजी, अ० राजमती जिसी, प्र० रायभतीजो। ११. प्र० स० नयण सुतार। १२. म० मंगावं, ग्या० दिवावां, र० न० दिवाबुं, न० देवातूं। १३. म० राज की धार, पं० ना० न० तो नइ रावली, र० राउकी, ग्या० तोनै रावकी, स० देवकी। १४. अ० व्याह कराबां हो। १५. अ० गंगा के, प्र० गंग, स० गंगा कई। १६. प्र० दूवारि।

[१०८] यह छंद म० १७०, पं० २०१, र० २०३, ग्या० २०६, ना० २१५, न० २३५, अ० २५६, प्र० ३.६३, स० ३.६५ है।

प्र० स० .२ है : अक घरि (छइ—स०) साठि अंतेवरी नारि।

म० में .४, .५ नहीं है।

१. र० ना० न० रहु रहु। २(+३). म० बहिन, प्र० बैहनडी, स० बइहन। ४. प्र० बचन म हारि, स० बचन नू हारि। ५. अ० [में नहीं है]। ६. म० सहस स्त्रीयां, अ० सहस त्रीयां। ७. पं० र० न० छइ घर की नारि, ग्या० अछै घरि नारि, ना० घरे बारि, अ० अछइ म्हां घर नारि। ८. म० एकांह थी। ९. प्र० चढ़ाय थी। १०(+११). अ० पिए इकत्री

प्रेम पियारी[13] बालही।
बाई[14] उणरउ[15] पीहर[16] छइ[17] मांडव धार[18] ॥ ध्रु० ॥

[१०६]

कंठ भरे भरे[1] दीधा छै पान[2]।
उतउ देस उडीसा कउ[3] परधान[4]।
आधी जी चादर बइसणइ[5]।

छइ। [12]. पं० म्हारइ, प्र० स० [में नहीं है]। [13]. अ० प्रेमपियारी नइ। [14]. पं० र० ग्या० ना० अ, प्र० [में नहीं है]। [15](+[16]+[17]). म० ताहरउ पीहर, ना० पीहर, न० जिणकउ पीहर छइ, प्र० जेके पीहर, अ० स० जाकर पीहर छइ। [18]. पं० र० ना० न० अ० गढ मांडव धार।

[१०६] यह छंद म० १७१, पं० २०२, र० २०४, ग्या० २०७, ना० २१६, न० २३६, अ० २६२, प्र० ३.६४, स० ३.६६ है।

म० . १ है : इय दूअउ हिवय बीसल राव।
„ : २ है : सयल अंतेउर लीय बोलाय।
„ . ३ है : देव विछोहउ कांइ कीयउ।
अ० . ५ है : मोटो हो त्रित्रियां जाणियइ।
प्र० स०. १ है : सेवा पूरी चाल्यो घरि राव।
„ . २ है : ठाली लागै मिलै छइ राइ।
प्र० स०. ३ है स्वीकृत .५, प्र० स० .४ है स्वीकृत .४।
„ . ५ है : कालिमाहे (जुग—स०) पाप जे बापड़्यो (न अव- तड़्यो—स०)
„ . ६ है : राजि के कारण विणसस लंक।

[1]. न० ग्या० अ० कंठ भरे भरि। [2]. र० दीना पान। [3]. र० न० देस उडीसा की (के—न०), ना० दीयौ सौ उडीसा को, ग्या० दो सै उडीस कौ। [4]. न० राज्या बहु मान, अ० राजान। [5]. र० ना० आधी चादर

म्हाका सगा सुणीजा[६] संक्या आज[७]।
पूठि उघाडी म्हाकी हिव हुई[८]।
तइं तउ त्रिया कै कारणि[९] फेडियउ राज[१०] ॥ भु० ॥

[११०]

सांढिया[१] भरउ[२] तुम्हे[३] सउ च्यारि[४]।
भरिज्यो[५] अरथ नइ गरथ[६] भंडार।

बैसतो, ग्या० आधी चादरि वैसणौ। ६. र० न० म्हाका सग सणेजां, म० सगा रे सणेजा। ७. ना० चाल्या हो आज, अ० हो चालिस्यइ आज, म० की लोपी माम (तुलना० स्वीकृत ४५.४), प्र० स० ताकसी पूठि। ८. पं० ग्या० पूठि उघाडी बहु वइसतइ (बइसता—ग्या०), म० पूठ उघाडी हिव हुई। ९. ग्या० तौ स्त्रीयां कारण, अ० त्रिया वाचा कै कारण, म० स्त्री रूप कारण। १०. अ० छांडियउ राज, म० बोलउ हो राव।

[११०] यह छंद म० १६७, पं० १६८, र० २००, ग्या० २०३, ना० २१८, न० २३२, अ० ३६३, प्र० ३.५८—५६, स० ३.६१। किंतु प्र० स० का पाठ म० १६४, म० १६५ में है।

म० १६४=अ० २५६=प्र० ३.५८=स० ३.६१/१ है (स० में .४, .५, .६ नहीं है):

आणीया हाथीया सइ दुय च्यारि।
(तुलना० स्वीकृत ११६.५ का म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० का पाठ)

आणीया अरथ नइ द्रव्य भंडार। (तुलना० स्वीकृत .२)
आणीया हीरा पाथरी। (तुलना० स्वीकृत .३)
आणीया तेजीय तरल तुषार। (तुलना० स्वीकृत ११६.२ का म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० का पाठ)

भरिज्यो हीरा पाथरी।
बोलेउ हो पूरव्यउ बोल विचारि[७]।
कह्यउ हमारउ जे सुणउ[८]।
तउ[९] काल्हि[१०] चालिज्यो[११] एतीय बार[१२] ॥ भु० ॥

कवाइ पहिरावं पाट की।
काल्ह चलउ ए (चलावो राय—प्र०) एतीय बार।
(तुलना० स्वीकृत .६)

और म० १६५=अ० २६०=प्र० ३.५६=स० ३.६१/२ है:

ऊगउ सूर नइ हूअउ परभाति।
दीधा हाथीय सय दुय साथि।
(तुलना० स्वीकृत ११६.५ का म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० का पाठ)

दीधा हीरा पाथरी। (तुलना० स्वीकृत .३)
दीधा तेजीय मत्त गयंद।
कर जोड़ी नाल्हउ भणइ।
राजा जी चालिस्यइ मास बसंत।
स० में उपर्युक्त .१, .२, .३ नहीं हैं।

१. पं० ग्या० सांठि, ना० साठडी, न० साठडियां, अ० हिव सांठिया। २. म० सांठि। ३. म० भराय। ४. म० दुइ च्यारि, ग्या० सहस अठार, ना० न० अ० सहस विच्यारि। ५ र० भरो थे। ६. पं० र० अरथ दरब, ग्या० अरथ गरथ, ना० दरब नै अरथ। ७. म० संभारि। ८. म० जे सुणइ, र० ग्या० अ० जउ सुणो। ९(+१०). म० कोइ दिन, पं० र० ग्या० ना० न० तउ तुम्हे, अ० तो काल्हि। ११. म० मेलावउ, अ० चालो तुम्हे। १२. म० एतीय वास।

[१११]

जोगिनउ[1] एक[2] अपूरब राइ[3] ।
जइ[4] मन करइ तउ[5] सइंभरि[6] जाइ ।
चंचल चपल सुचालणउ[7] ।
कोकउ[8] जोगी[9] पूंछउ[10] मांम[11] ।
जो मांगइ[12] थे आपिज्यो[13] ।
पाटण[14] सारिसा बारह गांम ॥ भु० ॥

[११२]

[1]जोगिनउ[2] बोलय[3] सुणउ[4] नरेस[5] ।
आप[6] तूं राजा[7] नयर[8] परदेस ।

---

[१११] यह छंद म० १७७, पं० २०८, र० २१०, ग्या० २१३, ना० २२२, न० २४२, अ० २६६, प्र० ३.६७, स० ३.६६ है।

पं० र० ग्या० ना० न० .५ है: थे तउ पूछउ जोगी नइ (जोगनौ—ग्या०) बोलावइ राइ (लीयो रे बोलाइ—ग्या०, नैडो बोलाइ—ना०)।
प्र० स० .४ है : रूप सुंदर नै (अपूरब—स०) बालिय बेस।
,, .६ ,, : पाटण सरिसा नयर असेस।

[1](+[2]). पं० न० तठइ जोगिनउ, र० अठै जोगनो, ग्या० ना० तठै जोगियो (जोगनौ—ग्या०) एक, अ० तठइ जोगिय एक, प्र० स० जोगी एक। [3]. म० राव, ना० अ० आइ। [4]. म० जउ, अ० आंखि, प्र० स० [में नहीं है]। [5]. र० मनतौ, अ० टमकै माहि। [6]. न० अजमेर। [7]. र० सुचांचलो, न० प्र० चालणो, स० अरि चालणइ। [8]. अ० राइ कहइ। [9]. अ० तुम्हे। [10]. अ० पूछिज्यो। [11]. अ० नाम। [12]. स० ज्यो मागौ। [13]. स० ज्युं आलज्यौ, म० सो संुपस्यां। [14]. पं० र० उणिनइ पाटण।

[११२] यह छंद म० १७६, पं० २१०, र०, २१२, ग्या० २१५, ना० २२४, न० २४४, अ० २७३, प्र० ३.६८, स० ३.७० है।

राजभवणि[९] राणी[१०] धणी[११] ।
तउ[१२] कहि नइ[१३] कागल[१४] किणनइ[१५] देसि ।
दिवि दीठी[१६] नवि ऊलषउं[१७] ।
स्वामी[१८] गढ अजमेरि[१९] गउ भुलइ पडेसि[२०] ॥ भु० ॥

म० में .३, .४ नहीं है ।

प्र० स० .२ है : विण उणिहारां किहां लहेस ।

,, .४ ,, : ऊचै गोलइ लांबइ नाक ।

,, .५ ,, : जिणी परै (जीव पराया—स०) धण जामलइ (ओलषई—स०) ।

,, .६ ,, : चीरी दीज्यो (दीजां—प्र०) [प्रभु—स०] धण कइ हाथि ।

१. म० हिवइ । .२ म० जोगी हो, पं० र० ग्या० ना० जोगिनउ, न० संभलि जोगी, अ० जोगिय, प्र० स० जोगी । ३. र० बोलियो, ना० बोलै, न० प्र० स० कहइ, अ० पूछइ जी । .४ पं० ग्या० ना० न० [में नहीं है], र० सुन हो, प्र० स० सुणि । ५. र० अ० नरेस, ग्या० धारि नरेस, म० अ० स० धरइ नरेस । ६. पं० र० ग्या० ना० अ० अभूमीयउ । .७ पं० र० ना० अ० आप, ग्या० रावल । ८. पं० र० ग्या० ना० अ० अरु । ९. प्र० राजघरिणि, स० राजधणी । १०(+११). प्र० रावल धणी, ना० राणी । १२ (+१३). अ० तूं तिहां, ना० जाय नै, ग्या० तूं कहि नै । १४. अ० कागद । १५. अ० कवण कुं देस । १६ म० दीठी मूंध, पं० र० दिठि दीठी, न० द्दस्टि दीठी । १७. न० अ० ओलखां । १८. पं० र० ग्या० ना० न० अ० [में नहीं है] । १९. पं० अ० अजमेर, र० अजमेरि, न० अजमेर माहें । २०. म० हुं—भूलय देस, ग्या० गयो भूलि पडेसि, ना० गं जुलइ पडेस, न० भूल पडेस, अ० महिभूमि पडेस ।

[११३]

सांभलउ जोगी[1] कहइ नरनाथ[2] ।
कोमल[3] पदम छइ[4] धण केरइ हाथ[5] ।

---

[११३] यह छंद म० १८०, पं० २११, र० २१३, ग्या० २१६, ना० २२५, न० २४५, अ० २७४ [तथा २७५], प्र० ३.६६, स० ३.७१ है ।

पं० र० ग्या० ना० न० .६ है : उण रइ (धण कइ–ग्या०) सोवन चूडली (चूडिलौ—ग्या०) झलकइ (झलकै छै—ग्या०) हाथि ।

,, .७ है : चूड़ि कहूं कइ (किना—ग्या०) चूडिलउ ।

,, .८ ,, : थे तउ (थे–ग्या०) चीरी देज्यो धण कइ हाथि ।

अ० २७५ की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

(.१) राउ कहइ सुणउ गोरखनाथ ।
(.२) रतन कचोलो छइ मूघ कै हाथ ।
(.३) ख्याल घणउ गोरी मोरीयां ।
(.४) स्वीकृत .४ ।
(.५) मीठो थोडौ गोरी बोलिहै ।
(.६) म्हाकुं चित्त न बीसरइ जी नवलह नेह ।
(.७) पं० र० ग्या० ना० न० .६ ।
(.८) साथ सखी तणै नित रहइ साथ ।
(.६) सहस त्रीया माहिं जाणियै ।
(.१०) पं० र० ग्या० ना० न० .८ ।

स० .३ है : हिव होसी काचकी कामली ।

,, .४ ,, : रीस भूलउ रे प्रभु उणीहार ।

,, .५ ,, : जोगी गोरडी इणि उणीहार ।

प्र० में इनके अतिरिक्त स्वीकृत .३ तथा पं० र० ग्या० ना० न० .६ भी है ।

[1]. म० जोगी कहइ, पं० भलि जोगी, र० ना० न० सांभलि जोगी, अ० सांभलउ जोगना । [2]. म० एक गोरखनाथ, प्र० स० सुणि (कि—प्र०)

मूंगफली जिसी[६] आंगुली।
उणारा[७] कठन पयउहर[८] काजली रेह[९]।
बोलती बोल[१०] छइ[११] आकुली[१२]।
दांत[१३] दाडिम[१४] धण[१५] चीता कय लंकि[१६] ॥ भु० ॥

[११४]*

उणारा अहर फडूकइ[१] लहलहइ बांह[२]।
कइ लेष मोकलइ[३] कइ मिलइ नाह[४]।
अंग फडूकइ तन लवइ[५]।

त्रीभुवण नाथ। [३](+[४]). म० कमल पदमासण, पं० र० ग्या० ना० न० रतन कचोलउ, प्र० स० पदम कमल छै। [५]. म० दूध का हाथ, पं० र० अ० ना० स० धण कइ हाथि। [६]. ग्या० ना० सी। [७]. पं० र० ना० एतउ, अ० [में नहीं है]। [८]. र० कठिन पयउहर, म० अ० अहर प्रवालीय। [९]. पं० र० काजली रेषि, अ० बदन मयंक, म० काजल रेह। [१०]. ग्या० बोलती बोलै। [११](+[१२]). ग्या० छै कालरी, न० ठइलरी, ना० छै काजली, प्र० आकुली। [१३](+[१४]). म० ससि बदनी। [१५]. अ० अनइ। [१६]. अ० चीत्र कइ।

[११४] यह छंद पं० २१७, र० २१६, ग्या० २२२, ना० २३१, अ० २७६, प्र० ३.७७, स० ३.७८ है।

प्र० स० .१ है : आज सषी म्हारो फरकै अंग।

प्र० स० में .२ नहीं है।

प्र० स० .५ है : हेत (चित–प्र०) जणायो हे सषी।

अ० .५ है : गात्र गोरी तणा ऊलसइ।

[१]. पं० ना० उण अहिर फडूकइ, ग्या० अ [ह] र फडूकइ, अ० गोरी का अहर फरूकइ नइ। [२]. ना० लहकै बांह। [३]. पं० र० ना० कइ लिखे मोकलइ, अ० चीरी आवइ काइ। [४]. पं० र० ना० कइ मिलइ आप। [५]. पं० र० ना० अहर फडूकइ तन लवइ, ग्या० अरह फडूकइ तन

उणि रइ कडिया चीर[६] पुणि ना रहइ ठाइ[७]।
मो मन अधिक उमाहियउ।
जाणउ आज मिलेस्यइ[८] सही सइंभरि राइ[९] ॥ ध्रु० ॥

[११५]

जोगिनउ[१] जाइ नइ[२] बइठउ जी[३] प्रोलि।
भसम[४] सरोरि नइ[५] विभूति की[६] पौलि।

तपइ, न० अ० अहर फरूकइ तउ प्री मिलइ, प्र० अंग फड़ूकइ मन हंसइ, स० अंग फड़ूकइ चित हसै। ६. पं० उणिरइ करीया चारी, ना० उणिरा कडिकौ पणि अ० चीर षिसइ सवि, प्र० स० केहड्या को (रो—स०) चीर, ग्या० कडि चीर। ७. अ० नवि रहइ ठाइ, प्र० स० खीसे खीसो (खसखस—प्र०) जाय। ८. र० ना० जाणो आज मिलै, प्र० स० सकै तो मिलै मोहि (तुझ मिलसी—स०)। ९. ग्या० सषी संभरिवाल, अ० सही धण केरो नाह, प्र० स० सींभर्‌यो राइ।

[११५] यह छंद म० १८३, पं० २१६, र० २२१, ग्या० २२४, ना० २३३, न० २५३, अ० २८१/१+२८३/२ (२८१.१, .२, .३, तथा २८३ .४, .५, .६,) प्र० स० में किंचित् भिन्न पाठ के साथ प्र० ३. ७४+प्र० ३. ७५, स० ३. ७६/१+स० ३. ७७/२ है।

अ० २८१ की शेष .४ है : पाट मा दे राणी लियउ रे बोलाइ।
(तुलना० स्वीकृत १०६ .२ तथा म० १८२.४)

„ .५ „ : बीसल दे की रे भूजडी। (तुलना० म० १८२.५)

„ .६ „ : राजमती कुं जाइ बधाइ। (तुलना० म० १८२.६)

अ० २८३ की शेष .१ है : बात सुणाइ बांदी बइसि बिचारि।

„ .२ „ : हरषि घणइ रे भीतर गइ।

„ .३ „ : राणी नइ दासी कीधर संभाल।

आक धतूरा सिरि[7] घणा[8]।
हिव[9] राणी नइ बंदिडी[10] ढोलती[11] बाइ[12]।
साधण मोतीय प्रोवती।
बात सुणी[13] मोतीय दीय उछालि[14] ॥ भु० ॥

स० ३.७६ है : जोगी बइठो पउलइ जाइ। (तुलना० स्वीकृत .१)
बभूत सरीसी षोलि कराइ। („ .२)
आक धतूरा सिर (विस—स०) घणा। („ .३)
बोलइ बोलतो वचन सुठाल (सुठोल—प्र०)।
राय लेष (लीष्यो—स०) ले आवीया।
वेगी बधावइ चंपा की माल ॥

स० ३.७७ है : राय आंगण जोगी पोहतो जाइ।
जाइ प्रधान सूणाव्यो (सुणावइ—प्र०) माहि।
सघलो रावल हलहलै (कलमलै—प्र०)।
सा धन पोवती मोती की माल (माहि थाल—प्र०)।
(तुलना० स्वीकृत .५)
बांदी (दासी—स०) जाइ सूणावीयो।
(तुलना० स्वीकृत .४)
तव धन उठी मोतीय रालि। (तुलना० स्वीकृत .६)

[1]. पं० तब जोगिनइ, र० ना० न० तब जोगिनो। [2](+[3]). म० आइ पहूतलउ, पं० न० बइठउ जाइ नइ, र० जाइ अरु बैठो, ना० गयौ जाइ, अ० जाइ बइठउ जी। [4](+[5]). म० बिष समी घटि, र० न० भसम सरीरि, ना० भसम सरीर कौ, ग्या० सीस तिलक, अ० अंग कीन्ही छइ। [6]. म० वेदन की। [7]. पं० र० ना० न० अति, स० विस। [8]. स० घणवै। [9]. पं० र० ग्या० तठइ, ना० अ० [में नहीं है]। [10]. पं० र० ग्या० ना० न० दासी। [11]. ग्या० ढोलइ छइ। [12]. म० वाय। [13]. पं० उण

[११६]

चीरी मेल्ही[1] धरण[2] आपणइ[3] हाथि ।
सात[4] सहेलीय[5] चालीय छइ[6] साथि[7] ।
जाइ[8] बइठी सवे चउषंडी[9] ।
पहिलीय[10] बाचइ[11] मनकइ[12] उल्हासि[13] ।
सा धरण आंषिकउ[14] सोर जिउं[15] ।
जाणि करि[16] बइठी छइ[17] प्रीयतरणै[18] पासि[19] ॥ भु० ॥

ततषिण, र० ना० उठी ततषिणि, ग्या० ततषिण, न० ऊठती, अ० बात सुणत । [14]. न० छल्या ठाइऊं, अ० दियउ रे उलाल ।

[११६] यह छंद म० १८८, पं० २२३, र० २२५, ग्या० २२८, ना० २३७, न० २५८, अ० २८७, प्र० ३. ७६, स० ३. ७६ है ।

म० .३ है : चउबारा की गोरडी ।

म० .४ है : चीरी बाची धरण कूपली बोलि ।

ना० .५ है : जाणि बाछइ सुं रहस्युं । (तुलना० स्वीकृत ११७.२)

अ० .५ है : सात सषी माहें गहगही ।

[1](+[2]). पं० ग्या० ना० न० अ० दीन्ही (दीधी—ना० न०) जोगी, र० दीन्ही राणी, म० करिबहिटी धरण, प्र० भेली धरण, स० मेहली धरण । [3]. पं० राणी कइ, र० जोगी कै, ग्या० ना० धरण कइ, न० अ० धरण केरे । [4](+[5]). पं० र० ग्या० ना० न० अ० सात सषी, प्र० स० पांच सहेली । [6]. पं० र० ना० न० मिलि चालीय, ग्या० मिलि बइठी छइ, अ० मिलि बांची नी, प्र० लीधा, स० मिलि धरण । [7]. ग्या० आइ । [8]. न० राजा । [9]. ग्या० ना० न० अ० सखी बइठी चउषंडी प्र० स० करि बैठी चउषंडी । [10]. पं० उतउ पहिलीय, अ० चीरी । [11]. ग्या० अ० बांची । [12](+[13]). र० ग्या०ना० न० अ० मनह उल्हास, प्र० ऊपली योलि, स० ऊपली आलि । [14]. अ० आंषि, प्र० खेलत, स० षेलती । [15]. क० कउ सोर जउ, र० प्र० किसोर ज्युं, स० कसोर ज्युं । [16]. पं० वात जाणित, र० उवा तो जाणि कि । [17].

[११७]

चीरी[1] रही[2] गोरी[3] गलइ लगाइ[4]।
जाणि करि[5] बाछडइ स्युं[6] मिली[7] गाइ।
नइणां थी[8] लोही पडइ[9]।
परिहसि रूनी[10] भीनउ छइ[11] हार[12]।

पं० वइठउ, र० ना० न० अ० स० बइटी, प्र० बैठी उवा कइ। [18]. पं० पीयउ कइ, म० प्रीय तणी, प्र० पीउ की, स० प्रीव को। [19]. पं० साषि, प्र० स० षोलि, ग्या० पालि।

[११७] यह छंद म० १८७, पं० २२४, र० २२६, ग्या० २२६, ना० २३८, न० २५६, अ० २८८, प्र० ३·७८, स० ३.८० है।

म० .६ है : तिण बिन बउलीया बारह मास।

ना० .७ है : जिण बिध थे सात द्रइ।

,, .८ ,, : सात सहेली बैठी छै आय। (तुलना० स्वीकृत ६०.१)

न० में .२ नहीं है।

अ० में यथा .६ म० .६ है, और स्वीकृत .६ यथा .७ है।

अ० .३ है : आषडीये आंसू नवि रहै।

स० .४ है : कब में भेटस्यां सांभरूया राव।

[1]. म० हिव चीरी, पं० र० न० चीठी। [2]. पं० र० ना० न० ग्या० राखी, अ० लीनी। [3]. प्र० स० धण। [4]. पं० ना० गल लाइ, र० गलिज लाइ, ग्या० अ० गलइ लगाइ, प्र० ही धायडलै लायं, स० हीयडउ लगाई। [5]. पं० र० जाणि कि। [6](+[7]). पं० र० ग्या० बांछुडइ मिलीय छइ, ना० बाछइ मेली, प्र० बांछरू ही डैली, स० बाछरू है मेल्ही। [8]. अ० आंषडियाए। [9]. पं० र० ग्या० ना० न० लोही चुवइ (चवइ—न०)—अ० आंसू नवि रहै, प्र० आंसू षरयां. स० आंसू खेरिया। [10]. पं० र० ग्या० अ० उवातउ परिसि (परिसर—अ०) रूनी (डूनी—ग्या०), ना० उवा परिहसि रूनी, न० उवातउ पारसिर रूनी, प्र० करै पर हूंसो। [11]. प्र० भरा। [12]. प्र०

जिण विण[13] घडीय न जीवती [14]।
हिवइ[15] ताहि स्युं[16] हुवा[17] चीरी विवहार[18] ॥ भु० ॥

[११८]

जोगी थां कौनु कहइ हो बात।
भइंसि कउ दहीय[1] नइ घी अरु भात[2]।

मंडार। [13]. प्र० ज्या विण, स० जीवन, ना० जिण विध। [14]. प्र० न धारतां, स० ते नवि रहई। [15](+[16]). ग्या० तिहस्यउं, ना० नारसूं, न० जिण विधि, प्र० त्यासूं, स० जीणसूं। [17]. ग्या० हुउ, प्र० हूयो, स० हुवा। [18]. प्र० कागला विवहार, अ० बरसह बार, स० कागली बैहार।

[११८] यह छंद म० १८६, पं० २२६, र० २४८, ग्या० २३१, ना० २३१, न० २६०, अ० २८६, प्र० ३.७६ स० ३.८१ है। किंतु पं० ग्या० ना० न० अ० में. १ है :

उतउ (हिव—अ०, तू—ग्या०; ना० न० में यह शब्द नहीं है) भूषउ
जोगिनउ नवि कहइ बात।

र० में. स्वीकृत.३ नहीं है।

र० .१ है : उणिनै दूध अरु ठाढउ भात।

ना० में .३ और .५ परस्पर स्थानांतरित हैं, और .४ का पाठ है :

तौ नैउ नौ दूध नै ठाढो भात। (तुलना० स्वीकृत .२)

अ .३ है : आगइ बइसि जिमाडिस्यां। (तुलना० नीचे म० .३)

अ० में स्वीकृत .२ तथा .४ परस्पर स्थानांतरित है।

प्र० स० का पाठ इस प्रकार है :

जोगी था कौनु कहइ हो बात। (तुलना० स्वीकृत .१)

दूध तलवट नै (दुधइन्निहावऊं) घणी निवात।
(तुलना० स्वीकृत .४)

दूध कटोरइ पाइसुं।
आछा चावल[3] घणीय निवात[4]।

भैंस को दहीय नै सीलो (र गरड़ाकौ—स०) भात।
(तुलना० स्वीकृत .२)
सूसतौ (सांसतो—प्र०) जीमे बीरा जोगिया। (तुलना० स्वीकृत .५)
पदमिणि अंगै (आगलि—स०) घालइ छइ वाइ।
(तुलना० स्वीकृत ११५.३)
आगलि बइसी जीमाडीयउ (जीमावीयउ—स०)।
(तुलना० निम्नलिखित म० .३)
हसि हसि पूछइ प्रीउ की बात। (तुलना० स्वीकृत .६)

म० की पंक्तियाँ हैं :

(.१) हिव कुल्हडउ दूध नई सीयलउ भात।
(.२) बाषडउ दहीय नइ घणीय निवात।
(.३) आंगण बइसि जिमाडियउ।
(.४) तउ हसि हसि कहि म्हारा प्रीय तणी बात।
(तुलना० स्वीकृत .६)

म० का यह छंद पं० २२७, र० २२६, ना० २४१, न० २६१, अ० २६० है, और इन प्रतियों में म० .२ के 'दहीय नइ' और 'घणीय निवात' के बीच की शब्दावली भी जो म० में छूटी हुई है निम्नलिखित प्रकार से आती है :—

थाणडउ दहीय नइ [ऊन्हउ जी भात।
मल्हि मल्हि आज परूसिस्यां।
उणिनइ दूध कटोरइ] घणीय निवात।

[1]. ना० भइसि नउ दहीय, प्र० भइसि रउ दहीय। [2]. र० नइ घी अरु भात, ग्या० घणउ रे छइ भात, पं० नइ घेउर भात, ना० घणा निवात (तुलना० स्वीकृत .४), अ० नै चावल भात। [3]. अ० ऊन्हो हो दूध नइ। [4]. ग्या०

सुसतउ जीमे[५] वीरा जोगिया[६] ।
हंसि हंसि कहउ[७] म्हारा प्रीय की बात[८] ॥ भु० ॥

[११६]

जोगी कहइ सुणि मोरी माइ[१] ।
दिन तीजे[२] आवइ घरि[३] राइ[४] ।
हमही[५] देहि[६] बधामणी ।
दीधा मोती[७] अरथ[८] भंडार ।

घणा रे निवात। [५](+[६]). ना० न० सुसतउ जीमें म्हारा जोगीया, अ० सुसतइ सुसतइ जीमें जोगना । [७]. पं० हिवइ हंसि हंसि कहउ, न० हिव हसि हसि कहि, अ० अवि हसि कसि। [८]. न० म्हाका पिउ की बात, प्र० म्हांका प्री तणी बात ।

[११६] यह छंद म० १६१, पं० २२८, र० २३०, ग्या० २३२, ना० २४२, न० २६२, अ० २६१, प्र० ३.८०. स० ३.८२ है ।

पं० र० ग्या० ना० न० अ० का पाठ निम्नलिखित है :

हिव ल्यावइ छइ अरथ नइ गरथ भंडार । (तुलना० स्वीकृत ११०.२)
ल्यावइ छइ तेजीय तरल तोषार । (तुलना० स्वीकृत ११०.४ का म० प्र० स० का पाठ)
ल्यावइ छइ हीरा पाथरी । (तुलना० स्वीकृत ११०.३)
ल्यावइ छइ (नव गज---पं० र० ग्या० ना० न० अ०) हरतीय कुंजर च्यार। (तुलना० स्वीकृत ११०.१ का म० प्र० स० का पाठ)
कह्यउ हमारउ जइ सुणउ । (तुलना० स्वीकृत ११०.५)
तो नइ कंत मिलावस्यउं एतीय बार ।

म० का पाठ पं० जैसा ही है अंतर यह है कि पं० .२ और .३ म० में परस्पर स्थानांतरित है, एक सातवी पंक्ति के रूप में अतिरिक्त है :

ल्यावइ छइ सोनउ सोलहउ । (तुलना० स्वीकृत ११०.३)

[१]. स० माई, प्र० माय । [२]. स० तीसरई । [३](+[४]). स० घरी राय, प्र० तोरो नाह । [५](+[६]). स० हमरै देही, प्र० हमही देउ । [७]. म० पं०

दीधा हीरा[९] पाथरी।
कालि्ह[१०] आवइ[११] राजा[१२] एतीय बार[१३] ॥ भु० ॥

[१२०]

आज[१] सखी[२] तलहटी घुरइ निसाण[३]।
घरि आवियउ[४] बीसल[५] चहुआण।
घरि घरि रलिय[६] बधामणी।
घरि घरि तोरण मंगलच्चार।

ग्या० र० ना० न० अ० ल्यावइ छइ अरथ नइ। [८]. म० पं० ग्या० र० ना० न० अ० गरथ। [९]. म० पं० ग्या० र० ना० न० अ० ल्यावइ छइ हीरा। [१०](+[११]). म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० तो नइ। [१२]. (+[१३]). म० पं० र० ग्या० ना० न० अ० कंत मिलावस्यउं।

[१२०] यह छंद म० १६२, पं० २३१, र० २३३, ग्या० २३५, ना० २४५, न० २६५, अ० २६५, प्र० ३.८४, स० ३.८६ है।

किंतु म० प्र० स० का पाठ है :

(.१) हिव बारमइ (प्र० स० में यह शब्द नहीं हैं) बरस घरि आवीयउ राउ। (तुलना० स्वीकृत १२३.१)

(.२) बाजित्र बाजिया निसाणे घाउ। (तुलना० स्वीकृत २६.२)

(.३) घरि घरि गूड़ी (गढि माही—स०) ऊछली। (स्वीकृत .५)

(.४) घरि घरि तोरण मंगलच्चार। (स्वीकृत .४)

(.५) रानी कुंवरि (हरष बढ़ी—म०) हरषी (हरषइ—म०) फिरइ।

(.६) जउ (जीव—स०) घरि आवीयउ मुंध भरतार (धण को नाह—प्र० स०)। (तुलना० स्वीकृत १२२.१)

अ० में .३ तथा .५ परस्पर स्थानांतरित हैं।

न० में .३ नहीं है।

[१](+[२]). न० आज। [३]. ग्या० घुरया रे नीसाण, अ० धुरया नीसाण। [४]. पं० घरि आयउ, अ० बार बरसे घरि आयउ, ग्या० सही आयउ। [५]. अ०

घरि घरि गूडी ऊछलइ[७]।
अब[८] सषी[९] घरि आवियउ[१०] मुंध[११] भरतार[१२] ॥ भु० ॥

[१२१]*

ऊलग पूगि[१] घरि आवियउ[२] भरतार।
जाणि करि उतरी[३] समुंद कउ पार[४]।
कलंक न कोई सिर चडिउ[५]।
बाधतउ जोबन[६] विरह की झाल[७]।
लंछण को लागउ नही।
पगि पगि[८] सषीय न[९] झंषियउं आल[१०] ॥ भु० ॥

[में नहीं है]। ६. अ० रंगि। ७. र० ना० ऊछली। ८(+९). अ० अब देषि सखी। १०. ना० अ० आयउ, ग्या० आयउ घरि। ११(+१२). अ० मुंध अजमेरि।

[१२१] यह छंद पं० २४३, र० २४५, ना० २५७, न० २७६, अ० ३०७, प्र० ३.८६, स० ३.८८ है।

र० न० अ० .५ है : बारह बरस वेदन सही।
,, .६ ,, : आवियउ को नहीं मूंध सिरि आल।
प्र० स० .५ है : अण वलइ दव (वन—प्र०) परजलै।
(तुलना० स्वीकृत ७४.५)

१. अ० ओलग थी। २. पं० आवउ। ३. पं० र० ना० जाणि उतरी, प्र० जाणि कि उतरइ, स० जाणिक उलटइ। ४. अ० समुद्र कै पार, स० समंद अथाह। ५. अ० कलंक न लायउ रे कामिनी, प्र० अकल कलंक मोहि न चढ्यो, स० अकलंक कलंक मौ चढ्यौ। ६. प्र० स० सामुहो जोवन। ७. अ० बिरही की झाल, स० वीरह वीकराल। ८. पं० म्हा तउ पगि। ९(+१०). प्र० सषी गो मांडता आल, स० मो सषी मंडइ आल।

[१२२]*

हिव घरि आवियउ[१] संइभरि वार[२]।
अरजन जिम[३] धण करइ सिंणगार[४]।
भमुह कोवंड चहोडिया[५]।

---

[१२२] यह छंद पं० २३२, र० २३४, म्या० २३६, ना० २४६, न० २६६, अ० २६६, प्र० ३.६४/३.६५, स० ३.६६/३.६७ है।

प्र० ३.६४ तथा स० ३.६६ इस प्रकार हैं :

बारां बरसां मील्यो जब (धन—स०) नाह।
(तुलना० स्वीकृत १२३.१)
अरजण ज्युं धण लीयो सनाह। (तुलना० स्वीकृत १२२.२)
कसतूरी मैवट (मरदन—स०) । कीयो।
झबकइ (झबरक—स०) दीवलै गहिरी बाट।
साधण पान समारिया।
जाइ करि बैठी [धण—स०] प्रीउ की षाट ॥

प्र० ३.६५ तथा स० ३.६७ इस प्रकार है :

अरजण ज्युं धण लीयो सनाह। (तुलना० स्वीकृत .२)
गलि पैहरयो (पैहरइ—स०) टंकावल (टंकाडिलो—स०) हार।
कंचुकी (कंचु—स०) कसण तब (ते—स०) खोलिया।
(तुलना० स्वीकृत १२२.४)
कूकूं चंदन तिलक (सिरह—स०) स्यंदूर। (तुलना० स्वीकृत १७.४)
कर जोड़ी (जोड़े—स०) नरपति कहइ (नाल्हो कवि—प्र०)।
कामनी कंत सुरंग रमि (रमइ रस—स०) पूर ॥

१. पं० तब घरि आवीउउ, ना० अब घरि आवीयउ, अ० जब घरि आवीयउ। २. र० सैं भरतार, पं० मुंधि भरतार, म्या० ना० न० अ० मूंध भरतार। ३. र० अरजन, म्या० आरचीनर जिम। ४. पं० विण करइ सिणगार। ५. पं० भुमह कोवंड चहोडिया, ना० भुंह कोवंड चहोडीया, न०

नव कुच कंचू[६] मेल्हिया षंचि[७] ।
कंत पियारइ[८] कारणइ ।
तिण कारणि[९] धण मेल्हिया संचि[१०] ॥ ध्रु० ॥

[१२३]*

बारां बरसां[१] धण मिलियो नाह[२] ।
हियडलइ हाथ[३] गला माहे बांह[४] ।
अवली सवली चूंबणी[५] ।
अति रंग थी राजा[६] लीयउ टीप[७] ।
सही सहेली माहि लाजसुं[८] ।
म्हाकउ भइरव कंचूयउ[९] भीनउ छइ पीक[१०] ॥ ध्रु० ॥

भुमण कोब्रंक चहोडिया, अ० भमुंह कोदंड चडावियउ । ६. अ० नव कुच कंचूयउ । ७. अ० मेल्हियउ षंचि, षं० मेल्हा षंचि । ८. अ० प्यारा केरइ । ९. अ० अहर कंचू, ना० [में नहीं है], ग्या० विण कारणि । १०. ग्या० धण मेल्हीय सिंचि, अ० धण मेल्हिया खंचि ।

[१२३] यह छंद पं० २३६, र० २३८, ग्या० २४०, ना० २५०, न० २७०, अ० ३००, प्र० ३.६६, स० ३.६८ है ।

१. स० बारमइ बरस । २. पं० ग्या० घरि आवयउ राउ, र० ना० घरि आवीयो नाह, प्र० मिलीयो नाह । ३. अ० हीयडइ । ४. ना० अ० अंक भरि बांह, र० षवा मांहि बांह । ५. ना० अ० अवली सवली करइ चूंवणी, प्र० स० अवली सवली चूंडली । ६. ना० अति रति भरि राजा जी, प्र० स० अति रंग स्वामी । ७. ग्या० लीयउ चीपि, अ० ल्यै छै पीक, प्र० भर्ज्यौ छै पीक, स० भरिजे है पीक (तुलना० .६) । ८. पं० ना० सखी सहेली चमकउ हूवउ, र० सहे सहेली चमको, ग्या० सषी सहेली चमकउ हीयउ, अ० सही सहेली चमकउ भयउ । ९. अ० पाकइ भइरव कउ कंचू, प्र० म्हारी भैरव चोली, स० अति रंग स्वामी (तुलना० .४) । १०. ग्या० भीनउ छै

[१२४]

मुलकइ[1] हसइ[2] आलिंगन देइ[3] ।
पलिंग[4] न बइसइ अनइ[5] पान न लेइ ।
ऊभीय देइ[6] उलंभडा[7] ।
आंगुली[8] तोडइ छइ[9] मोडइ छइ[10] बांह ।
नाह भरोसउ[11] ना करुं[12] ।
तइं तउ[13] बार[14] बरिस किउं मेल्हीय[15] नाह ॥ भु० ॥

फीकि, ना० चोली नो छै पीक, अ० भीजउ छै पीक, प्र० काई भरी पीक, स० भरिजै छै पीक (तुलना० .४) ।

[१२४] यह छंद म० १६४, पं० २३७, र० २३६, ग्या० २४१, ना० २५१, न० २७१, अ० ३०१, प्र० ३.६२, स० ३.६४ है ।

म० .६ है : मोनइ ऊभडी मेल्हि तूं ऊलग जाइ ।

[1](+[2]). म० हसइ मलूकइ, पं० र० हडि हडि हसइ, ना० हठ हठ हेसे, न० हड हड हसि, अ० हसि हसि राइ, प्र० स० रूठी गोरी । [3]. र० आलिंग देइ, प्र० अंग न लाय, म० पं० आलिंगण देइ, स० अल्यंग नू लेहि । [4](+[5]). म० पलिंग न आवइ अनइ, प्र० स० पल्यंग बइसइ नवि । [6]. पं० र० ऊभी दे, स० ऊभी दइ छई । [7]. स० औलंभा । [8](+[9]). म० आंगुली मरोडइ, प्र० आंगुली गहिता, स० करि लागइ अरि । [10]. म० धण झालीय, अ० मरोडइ छइ, प्र० मुरडइ, स० मोड पूछइ । [11]. पं० र० ना० न० अ० पुरषां भरोसउ, प्र० कंत भरूंसो, स० कंत भरोसो । [12]. म० को नहीं, पं० ना करं, र० न करो, न० मत करइ, अ० मत करउ, स० कांइ करौ । [13]. स० तइ तउ । [14]. पं० बारह । [15]. पं० की मेल्ही हो, प्र० किम रहीजै, स० किम रहज्यो ।

[१२५]

टसकला[१] मुसकला[२] मोनइ[3] । न सुहाइ ।
धण कइ[४] हियडलइ[५] हाथ म लाइ ।
लाज नही[६] प्रीय[७] निरममा[८] ।
म्हाकउ वार्‌यउ[९] तूं किउं[१०] ऊलगइं जाइ ।

---

[१२५] यह छंद म० १६५, पं० २३८, र० २४०, न० २७२/१, अ० ३०२, प्र० २.४०, स० २.४३ है।

म० में .५, .६ नहीं हैं।

प्र० स० में स्वीकृत .४ यथा .६ है, और .४, .५ हैं :

(.४) निगुणी राजा थारौ किसौ बेसास । (तुलना० स्वीकृत ४५.२)

(.५) कर की बांधूं हूं दिन गिणूं ।

एक अन्य छंद म० ७०, न० १०६, अ० ११२ प्राय: इसी शब्दावली का अन्यत्र भी है :

टसकला मसकला मो न सुहाइ ।
म्हारइ हीयडलइ हाथ मलाई ।
म्हानइ मेल्हीय तुम्ह चालिस्यइ ।
दुष तणउ मुझको नही छेह ।
देह सूकी नइ पिंजर हुई ।
तुझ विण रात रोवतां जाइ ॥
घडीय बरस मुझ होइस्यइ ।
निठुर नाह अम्ह मूकि कीइ जाइ ॥ भु० ॥

[१](+[२]). अ० सामी ठसकला मसकला, प्र० स० चटकला मटकला। [3]. पं० र० अ० प्र० मो, स० मोही। [४](+[५]). म० कठिन [प] योहर (तुलना० स्वीकृत १२६.३), अ० म्हाकै रे हीयडलै, प्र० धण कि हययै, स० धन कइ हीयडइ। [६]. म० लाज नहीं। [७](+[८]). अ० तोइ निरममा, प्र० प्रीउ नैमरमां, स० प्रीय स्त्री मरम मां। [९]. म० हूं वरजूं, पं० म्हारा हो वारउ,

बालउ रे वैस[11] न देषही[12]।
हिवइ[13] निगुणा नाह[14] मोहि किसइ[15] मेलाहि[16] ॥ भु० ॥

[१२६]

ऊलग जाइ तइं किसउ कियउ[1] नाह।
मोडि उसीसउ[2] नइ सूतउ[3] बांह।
कठिन पयोहर नू मिल्या।
केली गरभ सा नू मिल्या गात।
जांघ जोडावउ[4] नू निरषिया[5]।

र० म्हारो वाड्यउ, अ० म्हांकौ वरज्यौ, प्र० रोवती मेल्हि, स० मेल्ही। [10]. न० अ० तूं, प्र० स० काई। [11]. र० बालउ वीस, अ० बालीक वेस। [12]. र० न देषडी, अ० न पेषियउ। [13]. अ० [में नहीं है]। [14]. अ० निगुण हो नाह। [15](+[16]). अ० मुहि मोहि मलाइ।

[१२६] यह छंद म० १९८, पं० २४०, र० २४२, न० २७३, अ० ३०४, प्र० ३.९८, स० ३.१०० है।

म० में ३,.४ नहीं हैं।

पं० र० न० अ० .४ है : अंगसुं (तइनउ अंग सुं—पं० न०) अग न भीडियउ राउ (भी ड्यो नहीं मेलि—अ०)।

,, .५ ,, : जंघ जुगल मोड्या नहीं (जंघ न जोडी दे जंघ सुं—अ०)

,, .७ ,, : अमृत अधर नहु घूटिया।

प्र० में .३ के 'नूं मिल्या' के अन्तर .४ के 'नू मिल्या' तक की शब्दावली छूट गई है।

[1]. पं० र० न० तइं तउ किसउ कियउ नाह, अ० प्र० तइं की कीयउ नाह, स० काईं कीयो नाह। [2]. पं० न० मोडि उसीस, र० मोड्यौ सीसै, अ० भीड करि गात्र, स० प्र० मोडी उसीसो। [3]. पं० र० न० न दीन्हीय, स० नू सूतो। [4]. म० जागतउ उलग। [5]. प्र० न निरष्यो नाह, स० नू नीरखीयौ।

रंग भरि[६] रयणि न[७] षेलियउ[८] षेल[९] ।
देव सतावौ[१०] तूं फिर[११] आउ[१२] ।
स्वामी[१३] घी विणजियउ[१४] नइ[१५] जीमियउ तेल[१६] ॥ भु० ॥

[१२७]

झूना कउ[१] उलपट[२] झूना कउ[३] ताव[४] ।
ठमकि ठमकि[५] धण मेल्हतीय[६] पाइ[७] ।
मंदिर चाली प्रीउ कइ[८] ।

६(+७). पं० र० राउ जी (राजा—र०) सेज बिछाइ, म० निसि अंध्यारी, न० राजा से लग छाइ, अ० सेजि बिछावन, स० रंग भरि रयणि । ८. म० नइ खेलइ छइ, अ० खेलिया, स० नू माडीयो । ९. पं० र० अ० खेलि । १०. म० देस सरब, प्र० राजा जी । ११.(+१२) प्र० देव संतापीयो, स० राजा तुं फिरई । १३. पं० र० तइ तउ, न० ते तउ, प्र० स० [में नहीं है] । १४. अ० घी विणजी, प्र० घी वसायो, स० घीव वीसाही । १५. पं० र० न० अ० अरु, स० तुं । १६. स० जीमो छइ तेल, प्र० जीमो तेल ।

[१२७] यह छंद म० १६६, पं० २३४, र० २३६, ग्या० २३८, ना० २४८, न० २६६, अ० २६७, स० ४.४०/१ है ।

ग्या० .५ है : सेज पहूतीय सुंदरी ।

स० .३ है : आवी अवासइ साचरी । (तुलना० स्वीकृत ८३.३)

,, .४ है : हीयडइ हरीष मन रंग अपार ।

,, .५ है : धन दीहाडउ आज कउ ।

,, .६ है : कुंवर जगायउ छइ बीसल राउ ।

१. पं० र० ना० ग्या० छींट कउ, न० अ० सावटू, स० चौथा को । २. पं० र० ना० उलवट, न० अ० चरण हो, स० लैहँगो । ३. ना० झीमा को । ४. पं० र० ग्या० अ० ना० चाउ, म० तार । ५. पं० ठमकती ठमकती, म० ठमि ठमि । ६(+७) पं० ना० मेल्हइ छइ पाउ, र० ग्या० मेल्हइ पाउ, न० मेल्हउ पाय, अ० मेल्ही जी पाउ, स० दे छइ पाव । ८. ग्या० प्रीउ कन्हइ ।

सूकड चंदन[९] भरीय कचोल[१०]।
संजत करि सेजइ चडी[११]।
तठइ[१२] सुगुणी[१३] सरिसी[१४] करइ किलोल ॥ भु० ॥

[१२८]

कनक काया[१] जिसी[२] कूंकू रोल[३]।
कठिन पयोहर हेम[४] कचोल।
केलि गरभ जिसी कूंवली[५]।
घायल जिउं धण[६] षंचइ अंग[७]।
मोडि कडि चालइ गोरडी।
उण की[८] विरह वेदन[९] नवि जाणइ[१०] कोइ।

---

[९] पं० र० ना० न० अ० चोवा चंदन। [१०]. पं० भरउ, र० भर्यो कचोल। [११]. म० चढ़ी। [१२]. ना० न० अ० ग्या० [में नहीं है]। [१३]. ग्या० सुगणा। [१४]. पं० र० ना० न० अ० ग्या० स्वामी सुं (सामि सुं—न०)।

[१२८] यह छंद म० २०२, पं० २४६, र० २४८, न० २७८, अ० ३१०, प्र० ३.६६, स० ३.१०१ है।

म० में स्वीकृत .४, .५, .६ नहीं हैं। इनके स्थान पर केवल निम्नलिखित पंक्ति है :—

थारउ उलग घर पचइ नइ कडिवाल।

प्र० स० में .५ के स्थान पर है : कडि (कां—प्र०) चालउ गोरी करइ।

[१]. अ० कनक काजि। [२]. अ० सउं, स० घट। [३]. म० कुंकु की रोल, र० कूंको रोल, अ० कुंकुम रोल, प्र० स० कूंकू लोल। [४]. पं० रतन। [५]. पं० र० सी कूंवली, म० जिसी आंगुली, प्र० जिसी कूंयली। [६]. पं० घालइ धण जउ, न० घोलइ जिम। [७]. पं० र० षाचइ नाक, न० अ० गोडइ जी नाक। [८]. अ० न० कडिय मोडि, पं० ना० मोडि कइ। [९]. प्र० विरह वेदन।

जिउं राजा,[11] राणी सुं[12] मिल्या[13] ।
तिम[14] एण संसार[15] मिलिज्यो सहु कोइ[16] ॥ भु० ॥

---

[10]. अ० नवि लावइ, पं० र० ना लहइ । [11]. म० राणी, अ० राणी हो। [12]. म०राजा स्युं, अ० राजा जिम । [13]. म० मिली प्र० स० मिल्यो। [14]. र० न० त्युं, प्र० [में नहीं है], स० यं । [15]. पं० न० अ० नाल्ह कहइ, र० नल्ह कहै, प्र० स० इणी कलि । [16]. प्र० स० सब कोइ ।

अर्थ

१

हे गौरीनंदन ! हे त्रिभुवन-सार! नाद-भेद तुम्हारे उदर-भांडार में [रहता] है। [तुम्हारे] मुख में एक दाँत झलकता है। [तुम्हारा] वाहन चूहे का है, और [तुम्हारा] तिलक सिंदूर का है। हाथ जोड़ कर नरपति [कवि] कहता है कि [वह तिलक ऐसा लगता है] जानो रोहिणी नक्षत्र में सूर्य तप रहा हो।

[तुम्हारी कृपा से] मैं सूर्य के तले स्थित भुवनों को देख रहा हूँ।

मूंसा ∠ मूषक = चूहा।

२

दूसरा कडवक (छंद), हे गणपति ! गा कर मैं [तुमको] नमस्कार करता और तुम्हारे पैरों लगता हूँ। तुम से, हे लंबोदर ! मैं विनय करता हूँ। सिद्धि और बुद्धि के तुम भांडार हो। [गणेश-] चतुर्थी को मैं तुम्हारा पारण करता हूँ। तुम [मेरा] भूला हुआ अक्षर स्थान पर ला देना।

कडवइ ∠ कडवक = छन्द।

३

हंसगामिनी और मृगलोचनी नारी [अपने] सिर को सवाँरती और दिन गिनती है। उस क्षण वह राजद्वार पर खड़ी हुई है और चारों ओर [अपने] नाथ को देखती है। [हे विधाता !] तूने राजसेवक की स्त्री का सृजन क्यों किया ? उसका सारा दिन [पति की] चिन्ता करते हुए जाता है।

लोयण ∠ लोचन। नाह ∠ नाथ। उलगाणा ∠ अवलग्न = सेवक, राज-सेवक। दीह ∠ दिवस। झूर ∠ ज्वल् = सूखना, क्षीणहोना, चिंता करना।

४

हे हंसवाहिनी सरस्वती देवी ! तू करों में वीणा धारण करती है। जूठा— अन्य की रचना पर आधारित—कवित्त कुलहीन [कवि] ही कहता है। हे शारदा माता ! तू मुझे वर दे। मेरे भूले [-भटके] अक्षरों को तू लौटाल ला। तेरे तुष्ट (प्रसन्न) होने पर अक्षर जुड़ जाते (मिल जाते) हैं। नाल्ह [कवि] यह अपने दोनों हाथ जोड़ कर कह रहा है।

तूठी ∠ तुष्ट = प्रसन्न। वषाण ∠ वक्खाण ∠ व्याख्यानय् = कहना। बे∠ द्वय = दो।

५

नाल्ह [कवि] रस भर कर रसायण (रसमयी वार्त्ता) का गान कर रहा है। त्रिभुवन-माता शारदा [उससे] तुष्ट है। मैं [एक] राजसेवक के गुणों का वर्णन कर रहा हूँ। गुणी और सुमानस जन ! तुम [इस] रास को सीखना। नारी स्त्री-चरित्र लाख प्राप्त कर ले, [किंतु] एक ही आखर (वचन) से उस समस्त का विनाश हो जाता है।

माइ ∠ मातृ । माणस ∠ मानस = अन्तःकरण । लह ∠ लभ् = प्राप्त करना।

६

भोजराज का दीवान मिला (एकत्रित) है। बहुत से अगवान लोग बैठे हुए हैं, [जिनमें] चारो दिशाओं के राय (राजा) और राणा [भी] हैं। रानी जी विनय करती हैं, "हे नरेन्द्रराज [भोज] ! अपने [जीवन के] दिन रहते वर देख कर राजकुमारी का विवाह कर दीजिए।

अगवानि ∠ अग्रथान [?] = आगे आकर मिलने वाले। विंद ∠ वंद्य [?] = वर।

७

"हे पंडित !" [किसी ने कहा,] "तुझे राजा बुला रहा है। हे पंडित ! तू

पत्रा (पञ्चाङ्ग) ले कर राजभवन में आ।" "हे मेरे ज्योतिषी !" [राजा ने कहा,] "तू मुझे—मेरी कन्या के लिए—अच्छा वर खोज दे। नागर, चतुर और सुजान [वर] लावे, [जिसको देख कर] स्वर्ग में देवता मोहित हो जावें। वीर और विचक्षण बीसल देव चौहान को [लावे]।

पंडिय ∠ पंडित। रावल ∠ राजकुल = राजभवन। जोसी ∠ ज्योतिषी।

८

ब्राह्मण और भाँट को राजा ने बुलाया। लग्न की सुपारी [उनके हाथ] उसने भेज दी [और कहा,] "तुम अजमेर गढ़ को जाओ। [वहाँ] पीढ़े पर बिठा कर [बीसलदेव के] पैर पखारना और कहना कि कन्या राजा भोज की राजमती है, जिसके, हे राजा बीसलदेव ! [तुम] वर हो।"

बंभण ∠ ब्राह्मण। पखाल ∠ प्रक्षालय् = धोना।

९

"[वह] राजा अजमेर गढ़ में निवास करता है। [वह] चौहानों के कुल में [उसका] तिलक और शृंगार है। छत्तीसो कुलों के [राजपूत] उसकी सेवा करते हैं। मदमत्त हस्तियों पर पलाँन पड़ती है। उसके घर में एक लाख घोड़ों पर पाखर पड़ी रहती है। [ऐसे] बीसल देव चौहान को वर के रूप में लाओ।"

ऊलग ∠ ओलग्गा ∠ अव + लग् = सेवा करना। पलान ∠ पर्याण = घोड़े-हाथियों की साज। पाखर ∠ पक्खर = अश्व-कवच।

१०

[ब्राह्मण और भाँट ने जाकर बीसल देव को लग्न की] सुपारी दी और राजा [बीसल देव] हर्षित हुआ। अधिक उत्साह से वह मन में आनंदित हुआ। घर-घर गुड़ी (पताका) उछल (फहरा) रही है, कामिनियाँ मंगलाचार (मंगल गीत) गा रही हैं। [घर-घर में चर्चा है कि] चौहानों के कुल का उद्धार हो गया, यदि घर में परमार जाति की स्त्री आवेगी।

उछाह ∠ उत्साह। जइ ∠ यदि।

११

राजा बीसल देव ने ब्राह्मण को प्रसन्न कर विदा किया*। [उसको] हाँसला (कंठ का एक आभूषण), ताज़ी घोड़ा, कुलाह (टोप) और कबा (लंबा अँगरखा) दिया। सोलह कलाओं का (खरा) सोना—अथवा खरे सोने की मुद्राएँ—रेशम, रेशमी वस्त्र और पक्का पान दिए। हाथ जोड़ कर राजा कहता है, "अगले (उस अन्य) राजा के संमुख, [मेरी] ममता रखना (निवेदन करना)।"

साह ∠ साधय्=प्रसन्न करना। माम ∠ ममत्व।

१२

मिलनी (वैवाहिक रीति विशेष) हुई, और तब राजा हर्षित हुआ। सूर्य [अपने] मंडल में छिप रहा। कौतुक [देखने] के लिए देवता आए हैं। स्वर्ग से देव-विमान आए हैं। अप्सराएँ—सुंदरियाँ—[कुदृष्टि-निवारण के लिए] लवण उतार रही हैं। हे बीसल देव चौहान! तुम धन्य हो, धन्य हो।

लुक ∠ लुक्क=छिपना। लूण ∠लवण। अपछरा ∠अप्सरा।

१३

[बीसल देव ने] गणपति की पूजा की, और [उसकी] यान—सवारी—चल पड़ी है। चौरासी (मंडलाधिकारी) लोगों को दूना (विशेष) सम्मान मिल है। सात सहस्र नेजा (भाला) के धनी—भलइत—हैं। पालकीमें पचास सहस्र [बाराती] बैठे हुए हैं। हाथी सात सौ सुसज्जित किए गए हैं। पैदल

---

*तुलना० 'पद्मावत' ४१६.३, .८ :

समदन दीन्ह पान कै बीरा। भरिकै रतन पदारथ हीरा।

भेंटि घाट समदन कै फिरे नाइ कै माथ।

छिताई वार्ता (ना० प्र० सभा संस्करण) छंद १६४ : समदे आप आपने देस।

की पंक्ति का अंत नहीं है। सेना ने चढ़ाई कर दी (बारात चल पड़ी), ध्वजाएँ फहरीं और [ऐसा प्रतीत हुआ] जानो बीसल देव प्रत्यक्ष देवता हो।

जांन ∠ यान = सवारी। सिणगार ∠ श्रृंगार। पालीय ∠ पाली = पंक्ति। परदल ∠ पद-दल। छेह ∠ छेअ ∠ छेक = अंत। परतिष्य ∠ प्रत्यक्ष।

१४

बीसलदेव ने बाघेरा (स्थान विशेष) को छोड़ा। ब्राह्मण वेद-पुराण का उच्चारण कर रहे हैं। कामिनियाँ मंगल [गीत] गा रही हैं। पंचवाद्यों की रुनझुन हो रही है। [बीसल देव ने] मेघाडंबर—एक रेशमी वस्त्र का छत्र*—सिर पर धारण किया। [इस समय] सकल संसार स्ववश और सिद्धार्थ—कृतार्थ—है।

सयल ∠ सकल।

१५

[बीसलदेव ने] पैरों में कंकण (कलाई का सूत्र) और सिर पर मौर बाँधा। पाँचवीं मंजिल में वह चित्तौड़ दुर्ग [पहुँच] गया। [उसका] रेशम का लाल फुलड़ा है। बाजे वज रहे हैं और नगाड़े गर्जन कर रहे हैं। राजा विवाहने के लिए चला। खेहाडंबर—उड़ती हुई धूल के गुबार—ने भानु को आच्छादित कर लिया है।

मौर ∠ मउल ∠ मुकुट। फूंद ∠ स्पंद = किंचित हिलना। खेह = धूल।

१६

राजा [बीसल देव] धार नगरी में उतरा। राजकुमारी [राजमती] मन में हर्षित हुई। [उसने कहा,] "हे सखी! जाकर [उनकी] आरती

---

* 'आईन-ए-अकबरी', [अनु० जैरेट, जि०१, पृ० १३६] में 'मेघाडंबर' महावत के ऊपर छाया करने के लिए लगाए जाने वाले छज्जे को बताया गया है, जिसको अबुल फज़ल ने अकबर का आविष्कार कहा है।

करो। वे कलाओं से संयुक्त पूर्णिमा के पूर्ण चंद्र हैं। उन्होंने स्वर्ग के देवताओं और मनुष्यों को मोहित कर लिया है। वे गोकुल में प्रत्यक्ष गोविंद जैसे हैं।"

गोवल ∠ गोकुल। परतिष्य∠प्रत्यक्ष।

१७

राजा बीसल देव तोरण में आया। [राजमती की] सात सखियों ने मिल कर कलश की वंदना की। मोतियों के अक्षत पड़ [फेंके जा] रहे हैं। चोवा-चंदन (लगाया) और सिंदूर का तिलक [किया जा रहा] है। दाहिने-बाएँ आरती हो रही है। [बीसल देव ऐसा प्रतीत हो रहा है] जानो तोरण में सूर्य उदित हुआ हो।

आषा∠अक्षत। अवली-सवली∠असव्य+सव्य=दाहिने-बाएँ।

१८

[राजमती की] सात सहेलियाँ आकर बैठी हुई हैं। राजा [भोज] मातृ-पूजा के लिए जा रहा है। सीपों में चंदन भर लिया गया है। कत्था, सुपारी और पक्का पान [ले लिया गया है]। बीसल देव ने प्रेम-पूर्वक पाणि-ग्रहण किया है। [राजमती के साथ बैठे हुए बीसल देव ऐसा लग रहा है] मानो रुक्मिणी के साथ कृष्ण बैठे हों।

माइ∠मातृ। हथलेवउ=पाणिग्रहण। रुषमणि ∠ रुक्मिणी।

१९

मालवा देश में उछाह (आनन्दोत्साह) हुआ। राजमती का विवाह रचा गया। मंडप चंदन के काष्ठ का था। चौरी सोने की थी, और मोतियों की मालाएँ थीं। पहले फेरे पर दायज में आलीसर (स्थान विशेष) और उसके अतिरिक्त माल (स्थान विशेष) दिए गए।

उछाह ∠ उत्साह। मांडहउ∠मंडप।

२०

राजा [बीसल देव] दूसरा फेरा फिरा। [इस फेरे पर] राजकुमारी की माता भानुमती ने दामाद को दायज दिया है। उन्होंने अर्थ और समस्त भांडार दिया है, और दिया है सपादलक्ष देश, साँभर सर के साथ नागर-चाल (स्थान विशेष), विछाल (स्थान विशेष) के साथ तोडा (स्थान विशेष) तथा टउँक (स्थान विशेष), और बूँदी (स्थान विशेष) के साथ कुडाल देश।

सवालखउ ∠ सपादलक्ष।

२१

राजा [बीसल देव] तीसरा फेरा फिरा। [राजा भोज ने] समस्त अंतः-पुर [की रानियों] को बुला लिया, और राजमती के साथ दायज में [उन्होंने] ताज़ी और केकांण [घोड़े] दिए, मंडोवर का देश दिया, और समुद्र के साथ सोरठ और समस्त गुजरात को दिया।

सगल∠सकल। अंतेउ∠अंतःपुर। पलिंग∠पर्यङ्क।

२२

[भोज के] हाथ में तांबूल और अंजली में नीर थे। [उनके] गले में जनेऊ था, और चीर का उसका परिधान था। छत्तीसों कुलों के [राजपूत] देख रहे थे। रेशम का [बिना हुआ] पलंग, और सावटू [वस्त्र विशेष] की चादर राजा [भोज] ने दायज में दिए हैं, और बारह गढ़ के साथ उन्होंने चित्तौर का दुर्ग दिया है।

तंबालूय∠ताम्बूल। पहिरण∠परिधान। पलिंग∠पर्यङ्क।

२३

राजकुमारी [राजमती] पीढ़े पर बैठी हुई है। उसकी कटि में रेशम की अच्छी चूनड़ी है। [उसके] कानों में कुंडल जगमगा रहा है। सिर से [लगी हुई] राखड़ी है, और ललाट पर तिलक है। [उसके] रूप को देख

कर राजा [बीसल देव] हँसा—प्रसन्न हुआ। परमार कन्या [राजमती] ने त्रिभुवन को मोहित कर लिया है।

पाट∠पट्ट=फलक, पीढ़ा। पटोल∠पट्ट दुकूल [?]=रेशमी वस्त्र। सार=अच्छी। निलाड़∠ललाट।

२४

[विदाई की तैयारी में] स्थान-स्थान पर घोड़े पलाने गए—अश्व-कवच से सुसज्जित किए गए और राजा [बीसल देव] सास को जुहार [नमस्कार] करने के लिए चला। छत्तीसो कुलों के [राजपूत] मार्ग में [खड़े] हैं। माणिक्य और मोतियों से भरा [विदाई का] नारियल था। आशीर्वाद देते हुए सास ने [बीसल देव] की वंदना की, "तुम अजमेर में अविचल राज्य करो।"

पलान∠पर्याण=अश्व-कवच। नालेर∠नालिकेर।

२५

पहिरावनी [वस्त्राभूषणादि पहनाने की रस्म] हुई, और राजा [बीसल देव] हर्षित हुआ। बाजे बज रहे हैं और नगाड़ों पर चोट पड़ रही है। दोवड़ और दुड़बड़ी बज रहे हैं। वरधू, भूँगल और भेरी भी बज रहे हैं। समस्त धार [नगरी] सुहावनी [बनी हुई] है। [अब] धार का दीपक [राजमती] अजमेर चला है।

वाजित्र∠वाद्य=बाजा। घाउ∠घात=अघात, चोट।

२६

राजा [बीसल देव] के द्वार पर नगाड़े बजे, और मन में बीसल देव चौहान हर्षित हुआ। [उसने अपने मन में कहा,] "मैंने राजा भोज की कन्या से विवाह किया है और [भोज की] राजकुमारी ने मेरा अंचल बाँधा है! आज का दिन धन्य है कि [मेरे] घर में परमार-कन्या आवेगी।"

वार∠द्वार। दीह∠दिवस।

२७

विवाह आदि करके राजा [बीसल देव] घर आया। समस्त जन (प्रजा) में उत्साह (हर्ष) हुआ। राजा [बीसल देव] ने प्रधान [अमात्य] से कहा, "या तो मुझ से सृष्टिकर्त्ता तुष्ट हुआ, या मैंने विधि का लिखा [अपने भाग्य का लेखा] पाया, जो यह मैं राजा भोज की चौरी पर जा चढ़ा [राजा भोज की कन्या का पाणिग्रहण किया]।"

तूठ∠तुष्ट = प्रसन्न ।

२८

साँभरवाल [बीसल देव] ने [राजमती से] गर्वपूर्वक कहा, "मेरे समान दूसरा भूपाल नहीं है। मेरे घर (राज्य) में साँभर [नमक] निकलता है, चारो ओर जेसलमेर का थाना है, [एक] लाख घोड़ों पर पाखरें (अश्व-कवचें) पड़ती हैं, और हे गोरी ! अजमेर गढ़ में राज्य (शासन) के लिए [सिंहासन पर] बैठना होता है (अजमेर गढ़ में राज्य करता हूँ)।"

भूआल∠भूपाल । थांण∠स्थान ।

२९

"हे साँभरवाल (बीसल देव) !" [राजमती ने कहा,] "गर्व न करो। तुम्हारे सदृश और बहुतेरे भूपाल हैं। एक [तो] उड़ीसा का स्वामी है। ये दो वचन मेरे चाहे मानो, चाहे न मानो। जिस प्रकार तुम्हारे [राज्य में] साँभरसर [नमक] निकालता है, उसी प्रकार उसके घर (राज्य) में हीरे की खानें [हीरा] निकालती हैं।"

सारिष∠सदृश ।

३०

"तेरा जन्म, हे गोरी !" [बीसल देव ने कहा] जेसलमेर में हुआ और विवाह करके तू अजमेर लाई गई ; तू बारह वर्ष की छोकरी है ; और, कहाँ उड़ीसा और जगन्नाथ [पुरी] है ! मैं अन्न छोड़ता हूँ, और पानी तजता हूँ। हे गोरी ! [नहीं तो] तू अपने जन्म की वार्ता कह।"

३१

"यदि तुम पूछते हो, तो हे धरा-नरेश, सुनो," [राजमती ने कहा]। "हरिणी के वेश में मैं वन खंड का सेवन करती थी, और एकादशी निर्जला [रहा] करती थी। [एक दिन] बन में एक अहेरी ने मेरे हृदय में दो बाण मारे और मेरा मरण जगन्नाथ जी के द्वार पर घटित हुआ।"

जइ ∠ यदि। आहेउ ∠ आखेट। वि ∠ द्वय = दो।

३२

"मरणावस्था में हरिणी (मैं) ने जगन्नाथ जी का स्मरण किया। त्रिभुवन-नाथ आ पहुँचे—जो शंख, चक्र और गदा के धारण करने वाले हैं, और [उन्होंने कहा] "हे हरिणी! मन में विचार करके [वर] माँग।" हरिणी (मैं) ने कहा, "हे त्रिभुवन-पति! यदि तुम तुष्ट हो, तो हे स्वामी! पूर्व देश में जन्म का निवारण करो (पुनः पूर्व देश में मुझे जन्म न दो)।"

समर ∠ स्मृ = स्मरण करना।

३३

"पूर्व देश के लोग कुत्सा के (घृणित) होते हैं। पान-फूल का भोग [वे] नहीं पाते हैं। [चावल के] कण संचित करते हैं और तुष (भूसी) खाते हैं।* (जब कि) अति चतुरता ग्वालियर गढ़ में, (रूपवती) कामिनी जेसलमेर में और भले (सुन्दर) पुरुष अजमेर गढ़ में (होते हैं)।"

कुच्छ ∠ कुत्सा। कुक्कस = तुष, भूसी।*

३४

"मैंने [इसीलिए] हे स्वामी!" [राजमती ने कहा,] "जन्म मारवाड़ के देश में माँगा, और [माँगा] राजकुमारी [होना], और अशेष रूपः [माँगा कि] रूप मेदिनी (पृथ्वी) में [मुझे] निरुपम [प्राप्त] हो;

*१. तुलना० ना कण कुक्कस सहिम्रा रुक्खडिया मा दडक्खडउ। संदेश रासक छंद १६।

परिधान लोवड़ी (लोमपटी) का [सुलभ] हो और मेरी कटि क्षीण (पतली) हो ; मैं अच्छी [सुंदर], गौर वर्ण की और पतले शरीर की स्त्री होऊँ ; मेरे अधर प्रवाल के रंग के, और दाँत दाड़िम [जैसे] हों।"

पहिरण∠परिधान । लोवडी∠लोमपटी। झीण∠क्षीण। धण∠धन्या। अहर∠अधर।

३५

राजा बीसल देव चित्त में चमक (चौंक) गया। स्त्री की बात उसके मन में बस गई। [उसने कहा,] "हे गोरी ! तुमने मेरी विसराहना (निंदा) की। मुझे और तुझे बारह वर्ष की [एक-दूसरे से अलग रहने की] कानि (शपथ) है। ऊलग (सेवा) के मिस (बहाने) मैं जाता हूँ, जिससे हीरे की खान मेरे घर में [भी] आ जावे।"

चमकिअ∠चमत्कृत। ऊलग∠ओलग्गा∠√अव+लग्=सेवा, चाकरी।

३६

"मैं ने, हे राजा !" [राजमती ने कहा,] "तुम्हें विरस (रुष्ट) कर दिया, मैंने [यह] अपराध किया; [फिर भी] पग की पानही से रोष कैसा ? कीड़ी के ऊपर कटकी (सेना) कैसी। मैंने [तो] हँसी की, और तुमने उसको सच्चा करके जाना। [मुझे] खड़ी छोड़ कर तुम क्यों चले ? हे स्वामी ! जल के बिना मछली कैसे जीवित रह सकती है ?"

ऊभीय∠ऊर्ध्वित=खड़ी। माछ∠मत्स्य।

३७

"हे साँभरधनी [बीसल देव] !" [राजमती ने कहा] "तुम क्यों ऊलग (चाकरी को) जा रहे हो ? मेरे मार्ग के लिए तुम करह (ऊँट) भेज दो। मैं अपने पीहर जाऊँ, और अर्थ और द्रव्य-भांडार लाऊँ, हीरा और [बहुमूल्य] पत्थर लाऊँ, और मालवा के साथ धार को लाऊँ।"

ऊगल∠ओलग्गा∠√अव+लग्=सेवा, चाकरी। करह∠करभ=ऊँट। पीहर ∠पितृ गृह।

३८

"हे गोरी !" [बीसल देव ने कहा,] "[तब तक,] मैं तुम्हारे वचनों की प्रतीति नहीं कर सकता, जब तक मैं अपने नयनों से न देख लूँ। मैं कल ही चाकर होकर जाता हूँ। मैं ब्राह्मण को टेरता (बुलाता) हूँ कि वह आज ही दिन गिन [कर शोध] दे। मैं यह सपादलक्ष देश छोड़ता हूँ। हे! गोरी भतीजे को बुलाकर मैं [उसे] राज्य सौंपता हूँ।"

काल्ह∠कल्ल∠कल्य=कल। उलगाणउ∠अवलग्न=सेवक, चाकर। सवालषउ∠सपादलक्ष।

३९

"ऊलग (चाकरी) को जाने के लिए, हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "कौन कहता है ? [वह जिसके] घर में कुल्हड़ में नमक [तक] नहीं होता, या [जिसके] घर में अकुलीन स्त्री कलह करती है, या जिसे ऋण से दबे हुए होने के कारण घर नहीं सुहाता (अच्छा लगता), या जो योगी होकर घर से निकल पड़ता दै, या तो कोई [अपना सा] मुँह लेकर ऊलग (चाकरी) को जाता है।"

ऊलग∠ओलग∠√अव+लग्=सेवा, चाकरी। लूण∠लवण।

४०

"तुम ऊलग (चाकरी) को जाने की बात करते हो," [राजमती ने कहा,] "तो मैं भी अपने राजा के साथ आती हूँ। मैं [उसके साथ] बाँदी (सेविका) होकर निर्वाह करूँगी। मैं [उसके] पाँव दबाऊँगी और [उसको] पंखा झलूँगी। [जब वह सोवेगा] मैं खड़ी-खड़ी [उसके] पहरे में जागूँगी। और इस विधि से [मैं] अपने राजा (स्वामी) की सेवा करूँगी।"

ऊभीय∠ऊर्ध्वित=खड़ी। पुहर∠प्रहर। ऊलग∠ओलग्ग∠√अव+लग् =सेवा, चाकरी।

४१

"हे पागल मुग्धे !" [राजा ने कहा,] "तुझे बाय लग गई है) बकझक सवार हो गई है)। [भला] कोई स्त्री लेकर ऊलग (चाकरी) को जाता

है ! हे भोली नारी ! तू बावली है। चन्द्रमा को किस प्रकार कूड़े से (कूड़ा उछाल कर) ढाँका जा सकता है ? रत्न छिपाने से किस प्रकार छिप सकता है ? फिर, पूरवी राजा वचन का हीन (निर्वाह न करने वाला) है, [इसलिए स्त्री का साथ रहना और भी अनिष्टकारी हो सकता है]।

गहिली∠ग्रस्ता [?]=आविष्ट, पागल, भ्रांतचित्त। कूड∠कूट।

४२

उलगाणा [प्रवासी] चला, किन्तु स्त्री उसे जाने नहीं दे रही है। [वह कहती है,] "या तो [मुझे] तू मार डाल, और या तो साथ ले चल।" उसका अञ्चल पकड़ कर स्त्री इस प्रकार कह रही है, "दो दुःख, हे स्वामी ! मुझे संध्या समय पीड़ा पहुँचाते हैं : [एक तो] यौवन [जो] मुझे मरोड़ कर मारता है, और [दूसरा संतानहीन होना, किन्तु] इसमें दोष ही कैसा, यदि नारी वन्ध्या (संतानहीन) है।

उलगाणा∠अवलग्न=सेवक, चाकर। धण∠धन्या। बाँझ∠वंध्या।

४३

"हे गोरी !" [राजा ने कहा,] "तू मुझे छोड़ दे, और मुझे तू जाने दे। यदि मैं बरस-दिन रहूँ, तो मुझे तेरी शपथ है। तू ने अपनी कठिन पयोधरों (हृदय) पर दिव्य (अग्नि)* रख लिया है। हे गोरी ! तू हँस कर अपने विचार कह। यह दिव्य (अग्नि) तूने आकर कर रक्खा—बढ़ा रक्खा है। इस दिव्य (अग्नि) में सुर-नर सभी [जल कर] क्षार हो चुके हैं।"

दिव∠दिव्य। आकर∠अग्र। छार∠क्षार।

४४

"हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "मैंने तुम्हारी आशा छोड़ दी है। मैं अब योगिनी होकर वन-वास करूँगी, या तो वाराणसी (काशी) में तप करूँगी, या तो केदार पर्वत पर चढ़ूँगी, या तो हिमालय में [जाकर] गल

---

* सतीत्व अथवा सत्य का परीक्षा पहले जलती हुई आग, तप्त तैल, तप्त लोह आदि के द्वारा दी जाती थी: इसी पदार्थ को दिव्य कहते थे।

जाऊँगी, और या तो गंग-द्वार (गंगा जहाँ से निकलती हैं) में कुदान दूँगी (कूद पड़ूँगी)।"

झंफ∠झम्प = कुदान। दुवार∠द्वार।

४५

"हे स्वामी!" [राजमती ने कहा,] "मैंने तुम्हारी आशा छोड़ दी है। तुम [हृदय के] मलिन हो; तुम्हारा विश्वास कैसा? तुमने स्त्री को बाँदी चेरी] करके [भी] नहीं गिना। सगों और स्नेहियों में तुमने मेरा ममत्व (सम्मान) लुप्त (समाप्त) कर दिया है। [मेरे ऐसे] जीवित से मृतक बड़ा (अच्छा) है, [इसलिए] हे धनी (स्वामी)! [मेरे जी में यह आता है कि मैं प्राण त्याग कर] तुम्हारा फंदा जला दूँ।"

वेसास∠विश्वास। सुणीजा∠सु+निज = आत्मीय। माम∠ममत्व।

४६

भावज मर्यादा छोड़ कर कह रही है; उसने अंचल पकड़ कर [बीसल देव को] ला बिठाया है। वह खड़ी-खड़ी उसको उलाहना दे रही है, "या तो स्त्री [राजमती] तेरे हृदय में समा नहीं [स्थान नहीं पा] रही है; या वह स्त्री जिह्वा की तेज है; [आखिर] किस दुःख से हे देवर! तू ऊलग (चाकरी) को जा रहा है?"

उलंभडा ∠उपालम्भ = उलाहना। ऊलग∠ओलग्गा ∠√अव+लग् = सेवा, चाकरी।

४७

खड़ी-खड़ी भावज [बीसल देव] को सिखावन दे रही है, "रत्न के कटोरे को तू कैसे भीख में दिए डाल रहा है?* उसे तू पैरों से क्यों ठेल (ठुकरा) रहा है? ऐसी स्त्री राजाओं की नारियों में नहीं होतीं; ऐसी तो देवालयों में मूर्त्तियाँ भी नहीं पाई जातीं। यह स्त्री हरिण के [से] नेत्रों और मधुर वचनों वाली है। यह तो दैव की बनाई हुई और विधि की गढ़ी हुई है। मैंने तो ऐसी स्त्री सूर्य के नीचे (संसार भर में) नहीं देखी है।"

*तुलना० घालि कसौटी दीजिए कनक कचोरी भीख। पदमावत, छन्द २६६

ऊमडी ∠ ऊर्ध्वित = खड़ी । कचोल ∠ कच्चोल = कटोरा । करल ⌄ करलि = हरिण ही एक जाति । निपाई ∠ णिप्फाइय ∠ निष्प्रदित । विहि ∠ विधि ।

४८

स्त्री कहती है, "हे राजपुत्र ! सुनो । ऊलग (चाकरी) को जाने में बड़ी कठिनाइयाँ हैं । तुमने राजा भोज की कन्या से विवाह किया है । उस सोलह वर्ण के (खरे) सोने को तुम राख क्यों कर रहे हो ? हे स्वामी ! मेरा जीवन-मरण [तुम्हारे] चरणों में ही है । [मेरे] स्वर्ण-कटोरों (कुचों) का भार तुम अपने हृदय पर धारण करते हो, [फिर भी] मै हेड़ाऊ (लेंहड़ी* वाले) के उस घोड़े की भाँति [उपेक्षिता] हूँ, जिस पर वह (लेंहड़ी वाला) सौ-सौ दिनों तक हाथ नहीं फेरता ।"

ऊलग ∠ ओलग्ग ∠ √ अव + लग् = सेवा, चाकरी । कुसूत ∠ कुसूत्र । छार∠ क्षार । कचोल∠कच्चोल = कटोरा । ∠ हेडा [दे०] = घटा, समूह । तुरिय ∠ तुरंग ।

४९

"हे नारी" [बीसल देव ने कहा] "कड़वी बात न कह । मैंने तुझे चित्त से विस्मृत करके छोड़ा है । जिह्वा नई (पुनः) नहीं निकलती । दावाग्नि का जला [वृक्ष] नवीन पत्ते लेता है, किंतु जिह्वा का जला [मनुष्य] नहीं पल्लवित होता है ।" नाल्ह कहता है, यह बात सभी कोई सुन लो ।

दाधा ∠ दग्ध ।

५०

"हे उलगाणे (चाकर) !" [राजमती ने कहा,] "तू मर्यादा छोड़ कर जा रहा है, [इससे] तेरे अर्थ, द्रव्य और जीवन की हानि होगी । [और] यदि तू डूबा, तो मैं भी डूबी ; यदि तू गया, तो यह घर भी गया । अर्थ और द्रव्य तो [धरती में] गड़ा रह जाता है, किन्तु जो इसका संचय करता है, [यह] उस को खाता है ।"

---

* गाय-बैलों अथवा घोड़ों के वे झुंड जिन्हें व्यापारी बेचने ले जाते हैं ।

उलगाणउ∠अवलग्न=चाकर, सेवक। अरथ∠अर्थ। दरब∠ द्रव्य।

५१

"आकुलता पूर्वक (बिना सोचे-समझे) बोलने पर" [बीसल देव ने कहा,] "[मनुष्य] पीछे पछताता है। इस प्रकार कहीं पति को मनाया जाता है? शिव के तुष्ट होने वर [पति] प्राप्त होता है। तैं ने तो न सास को गिना (कुछ समझा), न देवर और जेठ को। मेरा कहना भी तैं ने नहीं माना। हे गोरी! [इसलिए] मेरी-तेरी यह अंतिम भेंट है।"

तूठ∠तुष्ट=प्रसन्न।

५२

सात सहेलियाँ [राजमती को] समझा रही हैं। [वे कहती हैं,] "हे निगुणी! यदि [स्त्री में] गुण ही हो, तो स्वामी क्यों ऊलग (चाकरी) को जावे? [वह तो स्वामी को वैसे ही रक्खे] जैसे फूल को पगड़ी में रक्खा जाता है। [उत्तर में राजमती ने कहा,] "ताजी घोड़ा यदि [बिगड़ कर] उसासें भरने लगे, तो उसको दाबा जावे; चरते हुए मृग को मोहित कर लीजिए; किंतु, हे सखी! नाथ (स्वामी) को अंचल में किस प्रकार बाँधा जा सकता है?"

नाह∠नाथ=स्वामी।

५३

"हे सात सहेलियो!" [राजमती ने कहा,] "मेरी बात सुनो। मैंने [अपना] कंचुक खोल (हटा) कर अपना शरीर दिखाया, जिसको देख कर मुनिवर भी विचलित हो जावें। किंतु मूर्ख राजा मेरा मूल्य नहीं जानता। मैंने लाख त्रिया-चरित्र किया [किंतु सब व्यर्थ गया]। वह राजा-नरपाल नहीं, हे सखी! भैंसों को रखनेवाला—महिषपाल है।"

लष∠लक्ष। पीडाड∠पीडार∠पिण्डार=भैंसो या गायों का रखनेवाला।†

५४

दामोदर [ज्योतिषी] आकर पीढ़े पर बैठा हुआ है। [राजमती उससे

---

†यह शब्द अपशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है [देखिए मोनियर विलियम्स: संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी]।

कहती है,] "[हे ज्योतिषी !] तू मेरे प्रिय (पति) की बात कह। वह प्रयाण पर बहुत [आतुर] है।" [ज्योतिषी ने कहा,] "[तुम्हारे पति के] आठवें स्थान पर स्थावर (शनि) और बारहवें पर राहु हैं; ग्रहगण तो बहुत ही बुरे हैं।" [यह सुन कर] गोरी ने सिर पीट कर धाह छोड़ी (वह चिल्ला उठी)।

पयाण∠प्रयाण। धाह [दे०]=पुकार, चिल्लाहट।

५५

"हे पंडित !" [राजमती ने कहा,] "मैं तुम्हारे गुणों की दासी हूँ; हे ज्योतिषी ! [यात्रा का] दिन तू मंद का (देर) प्रकाशित कर; चार महीने तू [मेरे पति को] विलगावे; तब तक मैं अपने पति को समझा लूँगी। [मैं तुझे] हाथ की मुद्रिका, और सोने की (सोने से मढ़ी) सींगों वाली कपिला गाय [पुरस्कार में] दूँगी।"

पंडिय∠पंडित। जोसी∠ज्योतिषी। दीह∠दिवस। मउडउ∠मंद [!]= शनैः। † मूंद्रडा∠मुद्रा। कविलीय ∠ कपिला।

५६

[किसी ने कहा,] "हे पंडित ! तुझे राजा बुला रहा है; तू, हे पंडित, पत्रा लेकर राजभवन में आ !" [पंडित से राजा ने कहा,] "हे मेरे ज्योतिषी ! [यात्रा के लिए] तू शुभ दिन शोध; पत्रा खोल और सत्य बतला।" [ज्योतिषी ने कहा,] "हे राजा ! चार मास तक [यात्रा के लिए उपयुक्त] दिन नहीं है। हे स्वामी ! त्रयोदशी की तिथि और और मंगलवार को, जब चंद्रदेव ग्यारहवें स्थान पर होंगे, तीसरे स्थान पर भी चंद्रदेव होंगे, योग घोडिला (अश्विनी) होगा, योगिनी, काल और भद्रा नहीं होंगे, पुष्य नक्षत्र और कार्तिक मास होगा, तब हे राजा ! तुम जाओ, [जिससे] वह अगला (अन्य) राजा तुम्हारी आशा पूर्ण करे।"

रावल ∠ राजकुल = राजभवन। पतडा∠पत्र=पञ्चाङ्ग।

---

†दे० 'मुग्धाव बोध मौक्तिक' के अंत में दिए हुए 'औक्तिक पदानि' शीर्षक के अन्तर्गत 'मुद्दा' : प्राचीन गूजराती गद्य संदर्भ (संपा० मुनि जिन विजय) पृ० १८९।

५७

उलगाणा [चाकर] शकुन लेकर चला। "राजा को जाते हुए कौन मना कर सकता है ?" [राजमती ने कहा,] "यदि तुम मेरी बात सुनो, तो हे स्वामी ! सेवा (चाकरी) दुखदायक होती है, और परदेश [का निवास] तो होगा ही; मैं कामिनी हाथ जोड़ कर कहती हूँ; [फिर,] इस दुर्बुद्धि स्त्री की वय की ओर भी देखो।"

उलगाणउ∠अवलग्न = सेवक, चाकर। सउण∠शकुन । वेस∠वयस्।

५८

स्त्री किवाड़ टेक कर खड़ी है। [उसकी] कटि में पटोर (रेशम) की सुंदर चूनडी है। [उसके] कानों में कुंडल जगमगा रहा है। पैरों में बहुत चंगी [अच्छी] सोने की पायल है, और मस्तक पर हीरक जटित राखड़ी (शीशफूल) है। [वह बीसल देव से कहती है,] "मुझे अपनी सब गतियाँ (युक्तियाँ) विस्मृत हो गई हैं, [और केवल] तुम्हारी चिंता है। रात-दिन तुम 'चलूँ', 'चलूँ', करते हो। हे स्वामी ! तुम्हारे घर में यह कैसी रीति है ?"

कमाड∠कपाट। राषडी ∠ रक्षा।

५९

"हे लाड़ से अविष्ट स्त्री" [राजा ने कहा,] "तू अपने लाड़ (प्रेम) का निवारण कर; घोड़ा पलाना हुआ (सजा हुआ) द्वार पर खड़ा है; तू रेशमी चूनड़ी पहन; कुंकुम (केशर) और चंदन अपने शरीर में तू लगा। दिन निकलते ही मैं चला जाऊँगा। हे गोरी ! हँस-हँस कर (प्रसन्न मन से) मुझे से बातें पूछ।"

गहेली∠ग्रस्ता [?] = अविष्ट, पागल, भ्रांत चित्त। तुरिय∠तुरग। पल्लाण∠पर्याणय् = अश्व आदि को सजाना।

६०

"हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "ऊलग (चाकरी) को जाने की तुम्हारी बड़ी इच्छा है, तो मैं तुम्हें राजकीय चलन की सीख (शिक्षा) दे दूँ।

इस प्रकार राज्य में चलना चाहिए : राजसभा में प्रधान [अमात्य] बैठे हों, तो उनसे मीठा बोलना; नाई और साहनी को बहुत आदर देना; बाँदी के साथ मत हँसना। वहाँ यदि राजा गोष्ठी में तुम्हें [राजभवन के] भीतर बुलावे, तब हे राजा! यत्न करके (सोच-समझकर) बोलना, कान [राजा के] निकट हों और दृष्टि नीची हो।"

ऊलग∠ओलग्गा∠√अव+लग्=चाकरी, सेवा। जगीस∠जिगीषा=इच्छा। साहुणी∠साहणी∠साधनिक=सेनापति। गोठि∠गोष्ठी। द्रेठि∠दृष्टि।

६१

"हे स्वामी!" [राजमती ने कहा,] "ऊलग (चाकरी) को जाने की तुम्हें बहुत दुसार [बेकली] है। किंतु राज-नीति खड्ग की धार जैसी होती है। मूर्ख लोग उसको नहीं जानते हैं। चोर, जुवाड़ी और कलाल—इनसे हँसकर न बोलना। राजा जी मर्म की बात पूछें, तो तुम झूठी-सच्ची मत कहना, और मुँह के सामने तुम हाथ रख लेना।"

दुसार∠दुःशल्य=बेढंगे काँटे के गड़ने की बेकली।†

६२

"[राजा ने] हे गोरी, जेसलमेर को छोड़ा। [उसने] टोडा और अजमेर गढ़ को छोड़ा। [उसने] टउँक और बिछाल को छोड़ा। [उसने] राणा के रानिवास को छोड़ा।" पंडित [राजा को] पहुँचा कर लौटा, [और उसने कहा,] "हे गोरी! राजा बनास नदी [के पार] उतर गया।"

६३

पंडित [राजा को] पहुँचा कर गोरी (राजमती) के पास आया। [उसने देखा कि] न [राजमती की] नाड़ी में जीवन के लक्षण हैं, और न

---

†तुलना० भेदि दुसार कियौ हियौ तन दुति भेदै सार। बिहारी : दो० ४४३, बिहारी-रत्नाकर।

[उसके] हृदय (वक्ष) में साँस है। वह स्त्री पलंग से पृथ्वी पर आ पड़ी है; वह न चीर सँभाल रही है, और न जल पी रही है; मानो हृदय में मारी हुई हरिणी हो; उस [राजमती] का गात्र खुला हुआ और शरीर विकल है।

हिय∠हृदय। पलिंग∠पर्यङ्क। उघाडा∠उद्घाट=खुला हुआ।

६४

सात सहेलियाँ आकर बैठी हुई हैं; [राजमती] न काढ़ा पीती है और न ओषध खा रही है; गोरी (राजमती) ने दाँतों को सिकोड़ (बिठा) लिया है। [उसकी इस दशा को देख कर सहेलियों ने कहा,] "हे भोली [स्त्री]! तुझ से भी भली (अच्छी—रूपवती) दमयंती थी, किंतु उसे भी राजा नल छोड़ गया था। पुरुष के समान निगुणी संसार में [अन्य] नहीं होता है।"

दवदंती∠दमयंती।

६५

स्त्री (राजमती) को पति (बीसलदेव) रोती छोड़ गया। [राजमती] सूने राजभवन में धाह दे (चिल्ला) रही है। वह स्त्री मोर की भाँति कूक रही है। [उसके] मुहल्ले की पड़ोसिनें आकर बैठी हुई हैं। [वे कह रही हैं,] "देखो वह (पति) निस्सतान की भाँति [छोड़कर] चला गया। हे सखियो! इस प्रकार भी कहीं कोई पति ऊलग (चाकरी) को जाता है।

धाह [दे०]=पुकार, चिल्लाहट। पाड∠पाडय∠पाटक=मुहल्ला। ऊलग∠ओलग्गा/∠अव+लग्=सेवा, चाकरी।

६६

[बीसलदेव ने] चंबल और [उसके] बाद आने वाला खाल (नाला) पार किया। बाएँ हाथ की ओर उसे देवी (श्यामापक्षी) तथा दाहिने उसे माल (पक्षि-विशेष) मिलीं; बाएँ [ही] महासती (शृगाली) स्वर कर रही थी; राजा के बाएँ सिंह और शृगाल [आए]; बाएँ [ही] सारस कूके। बीसल देव [ऐसे शकुनों के साथ] घोड़ा आगे बढ़ा रहा था।

खाल [दे०] = नाला। डाव [दे०] = बायाँ हाथ। माल = पक्षि-विशेष।†
सीयाल∠शृकाल = स्यार।

६७

[राजमती ने कहा] "चाकर [बीसल देव] कार्तिक मास में गया। वह मंदिर (घर) तथा शयन गृह (?) को छोड़ गया। वह [अपनी] चौपाल और चौखंडी (चार खंडों का राजभवन) छोड़ गया। तबसे उसके मार्ग में सिर दिए रो-रोकर मैंने अपने नेत्र गँवा दिए; मेरी भूख जाती रही, और तृषा भी उच्चट गई। कहो न सखी! फिर नींद कैसे आवे?"

उलगाणउ∠अवलग्न = सेवक, चाकर। कविलास∠कैलाश = शयन गृह [?]। तठइ∠तत्र।

६८

"मार्गशीर्ष में दिन छोटा होने लगा है। हे सखी! [मेरा पति] कोई संदेश भी नहीं भेजता है। संदेशों पर [मानो] वज्रपात हो गया है। [मार्ग में] ऊँचे पर्वत और [नदियों के] नीच घाट पड़ते हैं। [मेरा पति] परदेश और परभूमि को गया है। वहाँ से न चीठी आती है, और न कोई वहाँ के मार्ग जाता है।"

वज∠वज्र। तठइ∠तत्र।

६९

"हे सखी! देखो, अब पौष लग गया है। इस मरती हुई स्त्री को दोष मत देना। मैं दुःख में दग्ध होकर पंजर [मात्र] हो गई हूँ। धान्य (अन्न) भाता नहीं है; शिर का स्नान छोड़ दिया है; छाँह और धूप नहीं लगती है (शरीर दो में किसी का अनुभव नहीं करता है); देखते-देखते राजभवन श्मशान हो गया है।"

को∠कः = कोई। मसांण∠श्मशान।

† दे० मोनियर विलियम्स: संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी।

७०

"माघ मास में ऐसा ठंठार [सुखा कर ठठरी मात्र कर देनेवाला शीत) पड़ रहा है कि उसके द्वारा वनखंड दग्ध होकर छार (राख) कर दिया गया है। [विरह में] अपने दग्ध होने के साथ-साथ संसार दग्ध हुआ [दिखाई पड़ रहा] है। मेरी चोली के भीतर से [भी] शरीर दग्ध हो गया है; स्वामी के बिना स्त्री इस प्रकार दिखाई पड़ रही है। [हे स्वामी !] तुम करह [ऊँट] पलान करके वेग (अविलंब) आओ। यौवन का छत्र उमड़ा हुआ है। मेरी कनक-काया में तुम [अपनी] आन फेर जाओ।"

सीय∠शीत। दाधा∠दग्ध। करह∠करभ=ऊँट। पलाण∠पर्याणय्= अश्वादि को सुसज्जित करना।

७१

"फाल्गुन फर-फर कर रहा है जिससे वृक्ष काँपने लगे हैं। चित में मैं चौक गई हूँ; रात में न नींद आती है और न भूख लगती है। दिन सुंदर होने लगा है, और ऋतु पलट गई है। [किंतु] मुझको मूर्ख राजा आ कर नहीं देखता है। जीवित रह जाऊँगी तभी तो यौवन [का सुख भी], हे सखी ! होगा। चारों दिशाओं में वायु फरहरा रही है, और वह [लता-वृक्षादि में से होकर वेग से बहने के कारण] बज रही है।"

रूष∠रुक्ख∠वृक्ष। चमक∠चमक्कि∠चमत्+कृ। राय∠राज्=चमकना, शोभित होना। सही∠सखी।

७२

"चैत्र मास में नारियाँ [रंग-विरंगे वस्त्रों से सुसज्जित] हो चौरंगी हो गई हैं। किंतु मैं प्रियतम के बिना किसके सहारे जीवित रहूँ ? मेरी कंचुकी भींग जाती है, और लोग हँसते हैं। सात सहेलियाँ आ कर बैठी हुई हैं। उनके दाँत कौड़ों जैसे चमकाए हुए और नख रँगे हुए हैं। [वे कहती हैं,] 'सखी ! चलो; [होली] खेलने के लिए हम लोग चलें। जो [वयस्] आज

दीख पड़ रही है, वह कल नहीं रहेगी।' [मैं कहती हूँ,] 'मैं होली खेलने किस प्रकार जाऊँ? मैं तो उलगाने [चाकर] की स्त्री हूँ; तुम मेरी उँगली काढ़ कर [पकड़ कर] बाँह निगलती [पकड़ती] हो'।"

कंचूय∠कंचुक=चोली। कवाड∠कपर्द=कौड़ी।

७३

"धुर वैशाख में धान्य (अन्न) काटा जाता है; पानी शीतल और पान पका होता है; कनक-काया [रूपी वृक्ष] को [जल के] घड़ों से सींचते (तृप्त करते) हैं। मूर्ख राजा मेरा सार (मूल्य) नहीं जानता है। हाथ में घोड़े की लगाम और चाबुक लेकर खड़ा हुआ वह राज-द्वार पर सेवा करता है।"

लुरण∠लू=छेदना, काटना। सीला∠शीतल। ऊभउ∠ऊर्ध्वित=खड़ा। ताजरण∠तज्जरण∠तर्जन=चाबुक।

७४

"हे जेठानी! देख, यह जेठ लग गया है। मुँह कुम्हला गया है और ओष्ठ सूख गए हैं। इस मास के दिन अत्यन्त तप्त होते हैं। [मुग्ध] स्त्री के पैर धरती पर नहीं पड़ पाते हैं; [मानो] आग जल रही है, और स्त्री [राजमती] उसमें प्रज्वलित होती है। हंस [अब] सरोवरों के स्थान [उनके जलहीन होने के कारण] छोड़ कर चले गए हैं।"

दिहाडा∠दिवस। तव∠तप। ठांइ∠स्थान।

७५

धुर आषाढ़ में मेघ लौट आया है। खाल (नाले) खल-भल करके बहने लगा गए हैं, और धूल बह गई है। यद्यपि यह आषाढ़ है, किन्तु [मेरा स्वामी] नहीं आ रहा है। [मेघ] प्रमत्त होकर मदगलित [हाथी] की भाँति [आकाश में] पैर रख रहा है, वह सद्यः मदोन्मत्त की भाँति ढुलक

रहा है। [पता नहीं] चाकरी में (मेरा पति) उस घर में [वहाँ] क्या कर रहा है।"

मेह ∠ मेघ। खाल [दे०]=नाला । जइ ∠ यदि । माता ∠ मत्त । मइगल ∠ मदगल । सद ∠ सद्यः। मतवाला ∠ मत्तवाल [दे०]=मदोमत्त। ऊलग ∠ ओलग्गा ∠ √अव+लग्=सेवा, चाकरी ।

७६

"श्रावण [का मेघ] छोटी धारों में बरसता है। [ऐसे रिमझिम के दिनों में] प्रियतम के बिना किसके सहारे जीवित रहा जाए ? सखियाँ और समवयस्काएँ कजली खेलती हैं। कमेड़ी (कपोती) पक्षी ने आशा लगा रक्खी है। पपीहा [भी] 'पिउ-पिउ' करता है। [केवल] मुझे श्रावण मास अनख (रोष) लगाता है।"

७७

"भाद्रपद [का मेघ] गहरी और गम्भीर वर्षा कर रहा है। जल-थल और मही तल में सब [जगह] जल भर गया है, मानो सागर ही उलट पड़ा हो। रात्रि अंधकारपूर्ण होती है, [बादलों में से] बिजली फेंक उठती है। बादल [जल-भार से नीचे आ जाने के कारण] धरती से मिला हुआ [दिखाई पड़ता] है। [ऐसे समय में भी] मूर्ख राजा आकर [मेरी दशा] नहीं देखता है। हे स्वामी ! एक तो मैं स्त्री हूँ और दूसरे अकेली हूँ। यह दोनों दुःख, नाल्ह कहता है, [एक साथ] कैसे सहन किए जावें ?"

भाद्रवइ ∠ भाद्रपद । खिव ∠ क्षिप्=फेंकना।

७८

आश्विन में स्त्री (राजमती) ने आशा लगाई। उसने राजभवन (घर) और शयन गृह को सजाया, उसने चौपाल और चौखंडी (चार खंड के राजभवन) की सफेदी कराई; उस स्त्री ने पौरी (ड्योढ़ी) तथा प्राकार (परकोटा) की भी सफेदी कराई। गवाक्षों पर चढ़ी हुई वह हर्षित फिर रही थी, कि [कदाचित्] उसका मूढ़ भर्त्तार (पति) घर आ जावेगा।

आसोज ∠ आश्विन । पउलि ∠ प्रतोली । पगार ∠ प्राकार । गउखि ∠ गवाक्ष । मुंध ∠ मुग्ध = मूढ ।

७६

[राजमती ऐसी हो रही थी मानो] हेम (स्वर्ण) की वह कुप्पी हो जिस पर मोम की मुद्रा (तह) लगी हो। वह स्त्री (राजमती) खड़ी हुई मत्त गजेन्द्र [के समान] किसी क्षण चौपाल में और किसी क्षण चौखंडी (चार खंड के राजभवन) में [दिखाई पड़ती] थी। उस समय [उसके लिए] न वायु बज रही—हरहरा रही—थी, और न सूर्य तप रहा था। वह ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे बादल से छाया हुआ चन्द्रमा हो। [एक ओर] अंधकारमयी रात्रि थी, [दूसरी ओर] उसका पूर्ण यौवन था।

कूंपली ∠ कुंपय ∠ कूपक = कुप्पी । मुंद ∠ मुद्रा । ऊभी ∠ ऊर्ध्वित = खड़ी । गयंद ∠ गजेन्द्र । तठइ ∠ तत्र । वाइ ∠ वायु । छायउ ∠ आच्छादित ।

८०

सास कहती, "बहू ! घर में आओ ; [अन्यथा] चन्द्रमा के भूल (धोखे) से [तुम्हें] राहु निगल लेगा [क्योंकि तुम्हारा मुख] विशाल (पूर्ण) चन्द्रमा बन गया है। दूध किस प्रकार मार्जारी (बिल्ली) के फेरे से बच सकता है ? पवन [के झोंके] से दीपक नहीं जल सकता। [तुम्हारा] स्वामी तो उड़ीसे में है, और तुम स्त्री अजमेर में हो।"

गिल = निगलना, भक्षण करना। पुल् = विशाल, या उन्नत होना। मंजारि ∠ मार्जारी। दीवल ∠ दीप। वल ∠ ज्वल् = जलना।

८१

"हे महेश !" [राजमती कहती है,] "स्त्री का जन्म तुमने [मुझे] क्यों दिया ? हे नरेश (नरों के स्वामी) ! और जन्म तुम्हारे पास [देने के लिए] बहुतेरे थे, [फिर भी तुमने मुझे] अरण्य का रोझ (नील गाय) नहीं बनाया, घने

[वन] की धौरी गाय भी नहीं बनाया, न वनखंड की काली कोयल बनाया कि मैं आम और चम्पा की डालों पर बैठती और अंगूर तथा बीजोरी (फल विशेष) खाती। यह अबला बाला इन दु:खों में झूर (सूख) रही है।"

रोझ ∠ ऋश्य = नीलगाय। घण = घना वन। द्राष ∠ द्राक्षा। बीजोर ∠ बीजपूर। झूर ∠ ज्वल् [?] = सूखना, चिंता करना।

८२

"हे विधाता !" [राजमती कहती है,] "[तुमने मुझे] आँजनी (जाटनी) क्यों नहीं बनाया ? [तब] मैं अपने भर्त्तार (पति) के साथ खेत कमाती, अच्छे ऊनी वस्त्र का मेरा परिधान होता, ऊँचे घोड़े के समान अपना शरीर [स्वामी के शरीर से] भिड़ाती, स्वामी को सामने से लेती, और प्रियतम से हँस-हँस कर उनकी बातें पूछती।"

सिउं ∠ समं = साथ। पहिरिण ∠ परिधान। लोवडी ∠ लोम पटी। भीड [दे०] = भिड़ाना, मुठभेड़ करना।

८३

अस्सी बरस की वृद्ध वयस् की [एक कुटनी] जिसके दाँत कौड़ों जैसे किए (चमकाए) हुए, और शिर के बाल पांडुर (श्वेत) थे, [राजमती के] आवास पर आ पहुँची। वह [राजमती के] गले लग कर रोने लगी। [वह कहने लगी,] "हे भानजी ! तू दिन कैसे काट रही है ? रात-दिन मुझे तेरी चिंता रहती है। जब तक साँभरपति (बीसल देव) आवे, तुझको एक महा अपूर्व मित्र (जार) कर दूँ।"

वेस ∠ वयस्। कवाड ∠ कपर्द।

८४

कूटनी की बात सुनकर [राजमती] उठ कर चली गई। उसने पाटा लेकर [कूटनी की] पीठ पर जमा दिया, [और कहा,] "हे कुटनी ! मैं तेरा पेट फड़वाती हूँ, मैं देवर और बड़े जेठ जी को बुलाती हूँ, तेरी वह जिह्वा निकालती

(निकलवाती) हूँ जिसने ऐसी बात कही है, और नाक के साथ [तेरे] दोनों ओष्ठों को कटवाती हूँ।"

पूठ ∠ पृष्ठ। सरीसा ∠ सदृश।

८५

गोरी (राजमती) आकर पंडित के [घर पर] बैठी है। [वह कहती है,] "हाथ जोड़ कर मैं पाँय लगती हूँ।" राजमती विनती करती है, "हे पंडित! मेरे प्रियतम से जा कर कहना कि [तुम्हारी] स्त्री [इतनी दुर्बल हो गई है कि उस] के बाएँ हाथ की मुद्रिका ढलक कर (ढीली हो कर) उसकी दाहिनी बाँह में आने लगी है।"

मूंदडा ∠ मुद्रा।

८६

"हे पंडित!" [राजमती कहती है,] "[मुझ] स्त्री के स्वामी (बीसलदेव) से जाकर कहना [कि स्त्री ने इस प्रकार कहा है,] : 'तैंने मुझे [अपनी] दाहिनी बाँह दी थी [जब तैंने मेरा पाणिग्रहण किया था], और उस (पाणिग्रहण) के दो साक्षी तो सूर्य और चन्द्रमा थे; [उसके अन्य साक्षी थे] वायु, जल, धरती और आकाश; और ब्राह्मण ने धूप-जगाया था। मैं तो स्वामी के विश्वास में मर (मारी) गई।' "

साषिया ∠ साक्षी। बंभणा ∠ ब्राह्मण। वेसास ∠ विश्वास।

८७

"[और कहना कि स्त्री ने कहा है,] : 'हे स्वामी! तुम्हारे ज्ञान (समझपने) को मैं आग लगा दूँ [जिस के कारण] [मेरे] कठिन पयोधरों ने प्राण त्याग कर दिए हैं (वे निर्जीव-से हो गए हैं) और [मेरा] बाल (नव) यौवन खिसक चला है। यौवन के सिर पर मैंने [शील का] बंधन बाँध दिया है, जिस बन्धन के बाँधने से रावण गिरा था। [तनिक विचार करो,] स्त्री के कारण [ही] शूर राम ने सेतु बाँधा था।' "

वाल ∠ ज्वाल्=जलाना । जाण ∠ ज्ञान । खिस [दे०] =सरकना, खिसकना । नेत ∠ नेत्र=रस्सी ।

८८

कार्तिक मास में अपने जन (उक्त पंडित) को भेज कर छोटे अक्षरों में एक गुप्त लेख (पत्र) गोरी [राजमती] ने अपने हाथ से लिखा [और कहा,] "जैसे ही जैसे वह [इसे] बाँचेगा, वैसे ही वैसे उसे प्रेम [होगा], वह घने उमङ्ग का अनुभव करेगा और हे सखियो राजा घर की चिंता करेगा ।"

८९

स्त्री [राजमती] ने यह चीठी अपने हाथ से लिखी, [और उसने कहा,] "हे पंडित ! तुम हेड़ाऊ (लेंहड़ी† वाले) के साथ जाओ । सात सौ कोस के अंतर पर वह ग्राम (उडीसा) है । हे अच्छे पंडित ! तुम देश की सीमा (छोर) पर जाना । आतप (धूप) और छाया न गिनना और मेरी चीठी को तुम अपने प्राणों के समान रखना ।"

चीरी ∠ चिट्ठिय ∠ स्थिति । हेडा [दे०]=घटा, समूह । ताव ∠ ताप । छाह ∠ छाया ।

९०

सात सखियाँ [उसके पास] आ बैठी हैं । [उसमें से एक कहती है,] "हे सखी तूने जो छन्न [छिपा लेख] लिखा है, वह मुझे सुना । हे बहिन ! तूने जो लिखा है, उसे सुनने की मुझे लालसा है ।" [राजमती सुनाने लगी,] "[हे स्वामी !] हृदय (वक्षस्थल) पर सामने तथा दाहिनी ओर कोख (उदर) में तुम्हारे दो नख लगे थे, [जिनको लक्ष्य करके] मेरी समवयस्काएँ कलंकारोपण करती हैं । हे प्रियतम ! [यह] स्त्री विषधर (सर्प) है, और तुम गारुड़ी (मंत्रोपचारकर्त्ता) हो । हे स्वामी ! तुम आकर अपने डंक (मन्त्र की चोट) को सँभालो ।"

छानउ ∠ छण्ण ∠ छन्न=गुप्त, छिपाया हुआ । कूष ∠ कुक्षि=उदर, पेट । आल=कलङ्कारोपण ।

---

†. गाय-बैलों अथवा घोड़ों के वे झुंड जिन्हें व्यापारी बेचने ले जाते हैं ।

९१

नाल्ह कहता है : [पत्र को आगे पढ़ते हुए राजमती ने कहा,] "मेरा दुःख कौन सहेगा ? मैंने तो पलङ्ग छोड़ दिया है, और नमक छोड़ दिया है ; पान-सुपारी [तो मेरे लिए] महाविष [हो गए] हैं; मैं तो जपमाली लेकर, हे स्वामी ! [तुम्हारा] जप किया करती हूँ ; दिन गिनते-गिनते नख घिस गए हैं, और कौव उड़ाते-उड़ाते मेरी दाहिनी बाँह थक गई है ।"

पलिंग∠पर्यङ्क । विस∠विष । लूण∠लवण । दीह∠दिवस ।

९२

"हे राजा ! तुम्हारा ज्ञान मैं जान गई । [यह तुम्हें ज्ञात है कि] हमें दो शरीर [किन्तु] एक प्राण प्राप्त हुए हैं । [अतः] उस [दूसरे शरीर] को तुम दूर से क्यों छोड़ रहे हो ? मैं कुलीन कन्या हूँ; शील (सदाचार) की शृङ्खला में मैं बँधी हुई हूँ । यौवन को [इसीलिए] चोर की भाँति [बाँध कर] रखा है । पग-पग पर इसका अपराध तुम्हें लग रहा है । इस जन्म में तुम चाकर [ही] हुए हो, [किन्तु] अपर जन्म में तुम काले सर्प होगे ।"

जाण∠ज्ञान । अवर∠अपर ।

९३

[राजमती ने कहा,] "हे पंडित ! यदि तुम प्रियतम के देश को जा रहे हो, तो हे भाई ! [जैसा] मैं कह रही हूँ, तुम उसी प्रकार कहना । [कहना कि] 'एक बार [तो] तुम घर आ जाओ; तुम्हारी बाट मैं सिर के केशों से बुहारती हूँ । यौवन [का समुद्र] अपने समस्त जल के साथ उलट पड़ा है, और मैं, हे धरा-नरेश ! सुनो, थाह नहीं पा रही हूँ [और उसमें बही जा रही हूँ] ।' "

जइ∠यदि । थाग∠स्थाघ = थाह ।

९४

"हे पंडित !" [राजमती ने कहा,] "तुम इस प्रकार कहना जिससे मेरा प्रियतम रुष्ट न हो : [कहना कि] वह स्त्री तुम्हारे बिना (तुम्हारे विरह

में) अन्न नहीं खाती है; [उसकी] कंचुकी कुहनी पर फट गई है, और उस स्त्री का चीर उसकी खोपड़ी पर फट गया है; [वह ऐसी हो गई है जैसे] दावाग्नि से जली हुई लकड़ी हो; [और उसने कहलाया है,] 'हे मेरी ननद के भाई (स्वामी) ! तुम तो वेग ही आ जाओ।' "

कंचुय∠कंचुक=चोली। दाधी∠दग्ध।

९५

[पंडित ने कहा,] "हे गोरी ! तू अपने प्रियतम का अभिज्ञान (परिचय) बतला, थोड़ा-थोड़ा उसका सहिदान (संज्ञान) तू मुझे दे। वह किसकी अनुहारि के सदृश (का) है ?" [राजमती ने कहा,] "वह मेरे छोटे देवर की अनुहारि का है, [अन्तर यह है कि,] यह गोरा है और प्रिय साँवला है। उसके सिर पर ऐसा तिलक [रहता] है जो मानो नित्य नवीन होने वाला प्रात:-काल हो। [उसका] वक्ष चौड़ा और [उसकी] कटि पतली है। [उसकी] कटि में ऊँचा और चौड़ा यम-डाढ़ [एक प्रकार का खड्ग] रहता है। लाखों में उसे पहिचान लीजिए। हे पंडित ! मेरे प्रियतम का यही सहिदान (संज्ञान) है।

अहिनांण∠अभिज्ञान। सहिदान∠संज्ञान=चिह्न। लहुडा∠लघु। जाडउ =चौड़ा। जमदाढ∠यमदंष्ट्रा=एक प्रकार का खड्ग।

९६

[पंडित ने कहा,] "हे गोरी ! मैं बलिहार जाता हूँ, तू अपने प्रियतम का अभिज्ञान (परिचय) बतला; थोड़ा-थोड़ा उसका सहिदान (संज्ञान) तू मुझे दे। वह किसकी अनुहारि के सदृश (का) है ?" [राजमती ने कहा,] "राजा की दाढ़ी [ऐसी लगती है जैसे] भ्रमर मँडरा रहे हों; मस्तक में वह केवड़ा (केवड़े का तेल या फुलेल) लगाता है; उसकी दाहिनी आँख के मध्य के कोये में भ्रमर-जैसा काला तिल है; उसकी काटि में तरकस है, जिसमें कृपाण लगी हुई है; राजा नवलखे ताजी (घोड़े) पर सवारी करता है। हे पंडित ! प्रियतम इस सहिदान (संज्ञान) का है।"

सारिष∠सदृश। तेजी∠ताज़ी [फा०]=घोड़ा।

९७

[पंडित ने] चीठी को जनेऊ में साँठ दे दी है, एक सहस्र स्वर्ण-मुद्राएँ गाँठ में बाँध ली हैं, और [उसने] वर्ष दिन का संबल [ले लिया] है। [राजमती ने कहा,] "हे पंडित! घी अधिक खाया करना, जिससे पगों में प्राण (स्फूर्ति) होवे, साबर की पानही (जूती) पहिनना, और चौघड़िया (चार घड़ी के भीतर हो तो मुहूर्त संभव हो) में ही कूच कर देना।"

चीरी∠चिट्ठिय∠स्थिति। गंठि∠ग्रंथि। पाणही ∠ उपानह = जूता।

९८

[पंडित ने कहा,] "हे गोरी! तू लौट कर घर जा; मैं तेरे स्वामी को लेकर आऊँगा। शकुन [की सामग्री] को [राजमती ने] गठरी में बाँध दिया; उसमें सात सुपारियाँ डाल दीं, [और कहा,] "जो तुमने कहा है, उसका निर्वाह करना।" [ऐसा कह कर] स्त्री (राजमती) दोनों हाथ जोड़ कर [पंडित के] पैरों लगी।

सउण∠शकुन। बे∠द्वय।

९९

पंडित कोस भर प्रयाण करने पर ही सात अँगारे (अंगारभौरियाँ—अंगारों पर सिकी हुई रोटियाँ) तैयार कर खाने बैठ गया। वह हलके-हलके (धीरे-धीरे) पग रखता था। चलते समय उसे गोरी (राजमती) ने जो सीख दी थी, वह सभी पंडित को विस्मृत हो गई, और वह छोटी (धीमी) चाल चलने लगा।

अंगारा ∠ अङ्गारक। हलुव∠लघुक। ठव∠स्थापय्। वीष∠वीखा = एक प्रकार की चाल।

१००

[पंडित] सातवें महीने [उड़ीसे] जा पहुँचा, जहाँ बैल माना जाता है (उससे परिश्रम नहीं लिया जाता) और गाय हल वहन करती (खींचती)

है; जहाँ माँड पिया जाता है, और [चावल का] कण [बचाकर] रहने दिया जाता है; जहाँ पर लाल (ललरी या लटकन) के बिना भी घंटी बजती है। ऐसा प्रभाव [जहाँ] देव (जगन्नाथ देव) का है कि मार्ग में सिंह और चोर [यात्रियों को] नहीं लगते हैं।

जठइ∠यत्र। बलद ∠वर्द । वाट ∠ वर्त्म = मार्ग ।

१०१

पंडित सातवें मास [वहाँ] पहुँचा। उसने देव (जगन्नाथ देव) के स्थान घर जाकर अरदास (प्रार्थना) की। [वहाँ] तपस्वी और सन्यासी तपस्या कर रहे थे। [उसने कहा,] "हे अमर काया और रतनारी [किंचित् लाल] आँखों वाले जगन्नाथ देव ! जिन दिनों न मेरु था और न मेदिनी थी, [उन दिनों] तुम्हीं थे; तुम धन्य हो, धन्य हो !" [इस प्रकार कहता हुआ] पंडित फूल चढ़ा कर और चन्दन चरच कर (लगा कर) [उन्हें] हाथ जोड़ रहा है।

अरदास∠अर्जदाश्त [फा०] = प्रार्थना।

१०२

पंडित [राज–] पौरि पर आ पहुँचा; वह [शरीर पर] द्वादश तिलक और चन्दन की खौरि किए हुए था; गले में वह रेशम का जनेऊ पहिने हुए था। [राज] पौरि का किवाड़ लाल चन्दन का था, और सब सोने की ही [उस पर] मढ़ान थीं। [नगर में] घर-घर में द्वारों पर ऊँचे तोरण थे, और घर-घर उज्वल झलमला रहा था; घर-घर में तुलसी और वेद-पुराण थे। उस भूमि (देश) में पाप संचरण नहीं कर रहा था, [क्योंकि] वहाँ जगन्नाथ देव की आन चलती थी।

प्रोलि∠प्रतोली । षौलि ∠ खउर ∠ खपुर = खौरि । किमाड ∠ कपाट । पावडी ∠ प्रवृत्ति = मढ़ान, आवरण । वार ∠ द्वार । तठइ∠तत्र ।

१०३

पंडित ने राजभवन में प्रवेश किया। बीजौरा (फल विशेष) लेकर वह राजा (बीसल देव) से मिला। [उसने कहा,] "हे देवता, तुम्हारा कुशल हो, कुशल हो! जब तक गंगा और यमुना में जल बहे, जब तक चन्द्र और सूर्य तपते रहें, तब तक तुम अजमेर में राज्य करो!"

वीजोरा ∠ वीजपूर।

१०४

पंडित ने चीठी राजा के हाथ में दी। [राजा ने पूछा,] "पंडित! कह, तू किसके साथ आया, और किस रानी ने तुझे भेजा?" [पंडित ने उत्तर दिया,] "रानी राजमती ने तुमको संदेश दिया है कि 'हे स्वामी! तुम घर आओ; क्योंकि हम जीवित रहे भी तो पुनः यौवन-लाभ कहाँ करेंगे?' "

चीरी ∠ चिट्ठिय ∠ स्थिति।

१०५

"हे पंडित!" [बीसल देव ने पूछा,] "गोरी को तूने किस प्रकार का देखा?" [पंडित ने कहा,] "वह गवाक्ष में बैठी मोती पिरो रही थी। उसका चित्त अच्छा और मन उज्ज्वल (शुद्ध) था। दो पग के अन्तर (कुछ दूर) से उसने संदेश दिया।" [पुनः उसने कहा,] "यदि तुम आज नहीं चलते हो, तो वह स्त्री (राजमती) हृदय के फट जाने से मर जावेगी।"

गउष ∠ गवाक्ष।

१०६

दोनो राजा भीतर चले गए। [उड़ीसा के राजा ने] पट्ट महादेवी रानी को बुला लिया, [और कहा,] "उलगाना (राज-सेवक) अब घर जा रहा है।" [रानी ने] नेत्रों को [प्रेमाश्रु से] भर कर नमस्कार किया [और कहा,] "हे मेरे भाई! तुम चिरजीवी हो। आसुओं के गिरने से [मेरा] हार भीग गया है।"

पाटमहादे∠पट्टमहादेवी। उलगाणा∠अवलग्न=सेवक। राल∠रड् [दे०] =गिरना।

१०७

[पुनः रानी ने कहा,] "हे बीसल देव ! रुको, रुको, घर मत जाओ; मैं तुम्हारे चार विवाह करूँगी (कराऊँगी), [जिनमें से] दो [स्त्रियाँ] गोरी और दो साँवली [होंगी]; [वे] राजाओं की भतीजियाँ और राजाओं की कुमारियाँ [होंगी]; [तुम्हें] राजाओं की बहनें दिलाऊँगी; तुम्हारा विवाह मैं गंगा के पार [पश्चिम के देशों में] कराऊँगी।"

१०८

"हे बहिन !" [बीसलदेव ने कहा] "रुको, रुको, तुम ममता (स्नेह) को मत हारो; मेरे घर पर एक सहस्र स्त्रियाँ (गृहणियाँ) हैं, [जिनमें] एक एक से बढ़ कर है, और मेरी एक स्त्री [तो] संसार का रत्न है; वह मेरी प्रेम-प्रिया है, और मेरी वल्लभा है। हे बाई (देवी) ! उसका पीहर मांडव और धार में है।"

मांम∠ममत्व। आगली∠अग्र। वालही∠वल्लभा। बाई∠बाइआ [दे०] =माँ। पीहर∠पितृगृह।

१०९

उड़ीसा के प्रधान (मन्त्री) ने रुद्ध कंठ के साथ [बीसल देव को] पान [का बीड़ा] दिया, और अपनी चादर [आसन] का अर्द्धभाग बैठने के लिए दिया। [तदनंतर उसने कहा,] "मेरे सगे स्नेही ! तुम आज जा रहे हो, तो अब मेरी पीठ उघड़ी हो गई [पीठ पीछे मेरी रक्षा करने वाला न रह गया]; [आश्चर्य यह है कि] तुम तो स्त्री के कारण [इस मिले हुए] राज्य को छोड़ रहे हो।"

सुणीजा [सु+निज]=आत्मीय। संक∠संक्रम्=जाना। पूठि∠पृष्ठ। फेड∠स्फेट्य=परित्याग करना।

११०

[उड़ीसा के राजा ने कहा,] "तुम चार सौ साँड़िए (ऊँट) [सामान] भर लो; अर्थ और (द्रव्य) भांडार भर लो, और हीरे और बहुमूल्य पत्थर भर लो ;" पूरबिए राजा ने विचार करके कहा, "और यदि तुम मेरा कहना सुनो (मानो), तो तुम (आज के स्थान पर) कल इसी समय जाओ ।"

काल्हि∠कल्ल∠कल्य = कल । गरथ∠ग्रंथि [?] = द्रव्य ।

१११

[किसी ने कहा,] "हे राजा ! एक अपूर्व जोगना है, वह यदि मन करे तो साँभर जा सकता है । वह चञ्चल, चपल और अच्छा चलने वाला है ।" [राजा ने कहा,] "योगी को बुलाओ और उसका मर्म पूछो । वह माँगे, तो उसे पाटण के सदृश बारह ग्राम दे दो ।"

जइ∠यदि । मांम∠मम्म∠मर्मन् ।

११२

जोगने ने कहा, "हे राजा ! सुन, तू आप तो परदेश के नगर में है और तेरे राजभवन में रानियाँ बहुतेरी हैं । तब बतला, तेरा पत्र किसको दिया जायगा ? दिव्य दृष्टि से मैं उसे नहीं देख पा रहा हूँ । हे स्वामी ! अजमेर गढ़ जाकर [भी] उसे मैं भूल सकता हूँ ।"

नयर∠नगर । तउ∠तदा । कागल∠काग़ज़ [फा०] ? = पत्र ।

११३

"हे योगी !" राजा ने कहा, "सावधान होकर सुनो । स्त्री (राजमती) का हाथ कोमल कमल [जैसा] है; मूँगफली जैसी उसकी उँगलियाँ हैं; उसके कठिन पयोधरों पर काली रेखाएँ हैं; बोल वह स्त्री आकुलता पूर्वक बोलती है; स्त्री के दाँत दाड़िम [जैसे] तथा [उसकी लङ्क] चीता की लङ्क [जैसी] है ।"

पयउहर∠पयोधर । चीता∠चित्रक ।

११४

उस (राजमती) का अधर फड़क रहा है, और बाँह लहलहा रही है;

[उसे इन शकुनों से जान पड़ रहा है कि] या तो [उसके प्रियतम का] लेख (पत्र) कोई देगा या [उसके] स्वामी मिलेंगे । [उसके] अङ्ग फड़क रहे हैं, और शरीर पल्लवित हो रहा है; पुनः उस [राजमती] का कटि पर का चीर अपने स्थान पर नहीं रुकता है (सरक-सरक जाता है) । [वह कहती है,] "मेरा मन बहुत उमङ्ग पर आया हुआ है, और [ऐसा लगता है कि] हे सखी ! आज साँभरपति मिलेंगे ।"

लव = अंकुरित होना, पल्लवित होना । मोक∠मुक्क∠मुच् = छोड़ना, देना । कडि∠कटि । सही∠सखी ।

११५

जोगना [अजमेर] जाकर [राज-] पौरि पर बैठ गया । उसके शरीर में भस्म लगा हुआ था, और [मस्तक पर] विभूति की खौरि थी । आक-धतूरा [उसके] सिर पर बहुतेरा था । अब (इस समय) रानी को बाँदियाँ हवा झल रही थीं, [और] वह स्त्री (राजमती) मोती पिरो रही थी । उसने यह बात सुनी, तो मोती उछाल दिए ।

प्रोलि∠प्रतोली । खौलि∠खपुर = खौरि । वाइ∠वायु । वात∠वार्त्ता ।

११६

चीठी स्त्री (राजमती) ने अपने हाथ में डाल ली । सात सहेलियाँ उसके साथ चलीं, और वे सभी चौखंडी (चार खंड के राजभवन) में जाकर बैठ गईं । पूर्वकथित (राजमती) मन के उल्लास के साथ [चीठी] बाँच रही है । वह स्त्री (राजमती) [ऐसा अनुभव कर रही है मानो अपनी] आँखों के सुख प्रियतम के पास ही बैठी है ।

चीरी∠चिट्ठिय∠स्थिति । उल्हास∠उल्लास ।

११७

चीठी को गोरी (राजमती) ने गले से लगा लिया, मानो बछड़े से गाय मिली हो । उसके नेत्रों से लहू [का आँसू] गिर रहा है । [काल के]

परिहास से रोती हुई [उस स्त्री का] हार भीग गया है कि जिसके बिना वह घड़ी भर नहीं जी पाती थी, अब उसी [प्रिय] से पत्र-व्यवहार हुआ (पत्र-व्यवहार की नौबत आ गई)।

चीठी∠चिट्ठिय∠स्थिति। वाछुउ∠वत्स।

११८

[राजमती ने कहा,] "हे योगी तुम [और] कौन सी बात कह रहे हो ? भैंस का दही, घी और भात, कटोरे में दूध, पायस (खीर), अच्छा चावल, और बहुत सा नवनीत है, योगी भाई, स्वस्थ होकर जीमो, और मेरे प्रिय की बातें कहो।"

कटोरा∠कच्चोलक। निवात∠नवनीत। सुस्तउ∠स्वस्थ।

११९

योगी ने कहा, "हे मेरी माता ! सुनो, राजा [आज से] तीसरे दिन घर आवेगा। हमें बधावनी (उपहार) दो।" [राजमती ने] उसे मोती तथा अर्थ-भांडार दिया, हीरे और [बहुमूल्य] पत्थर [यह सुन कर दिए कि] दूसरे दिन इसी समय राजा आवेगा।

वार∠वेला।

१२०

"हे सखी !" [राजमती ने कहा,] "आज तलहटी [गढ़ के नीचे के भूभाग] में नगाड़े घुमड़ (बज) रहे हैं, [अतः] बीसलदेव चौहान घर आ गया है। घर-घर बधावे बजाओ, घर-घर में तोरण लगाओ, और मङ्गल-आचार [मङ्गल-गानादि] करो, घर-घर में पताकाएँ उछलें [उड़ें], क्योंकि अब हे सखी ! मेरा मुग्ध (मूढ़) भर्त्तार घर आ गया है।"

१२१

"ऊलग (सेवा) पूरी करके मेरा भर्त्तार आ गया है। [उसके प्रवास की इस अवधि को जो मैंने सकुशल व्यतीत कर दिया है, वह] मानो मैं समुद्र के पार

उतर गई। [बड़ी बात यह हुई है कि इस अवधि में] मेरे मत्थे कोई कलंक नहीं चढ़ा, इस बढ़ते हुए यौवन युक्त विरह की ज्वाला में कोई लांछन [मेरे चरित्र पर] नहीं लगा और हे सखी! पग-पग पर कलंकारोपण से मैं झंखी नहीं [व्यथित नहीं हुई]।"

ऊलग ∠ओलग्गा ∠√ अव्+लग्=सेवा, चाकरी। झाल ∠ ज्वाला। लंछण∠लाञ्छन। झंख=संतप्त होना। आल=दोषारोपण।

१२२

यहाँ (अब) साँभरवाल [बीसलदेव] घर आ गया है और स्त्री (राजमती) अर्जुन की भाँति शृङ्गार कर रही है। उसने भ्रू-चाप चढ़ा लिया है और कचुक से नवांकुरित पयोधरों को [बाणों के रूप में] अपने प्यारे कान्त के कारण (उसको लक्ष्य करके) [उस कौदंड पर] दिया है, [क्योंकि] उसी के लिए स्त्री (राजमती) ने उन्हें संचित करके डाल रक्खा था।

भमुह∠भ्रू। कोवंड∠कोदंड। कंचू∠कंचूक=चोली।

१२३

बारह वर्षों पर स्त्री (राजमती) से [उसका] स्वामी (बीसल देव) मिला है। [राजमती के] हृदय पर उसका हाथ और [उसके] गले में उसकी बाँह है। दाहिने-बाएँ वह [स्त्री का] चुम्बन ले रहा है। अत्यन्त उमंग से राजा (बीसल देव) ने [चुम्बन] अङ्कित कर दिया। [राजमती ने इस पर कहा,] "मैं अपनी सखियों में लज्जित हूँगी, क्योंकि मेरी भैरव (एक प्रकार का सूती वस्त्र) की कंचुकी [तुम्हारी] पीकों से भीग गई है।" अवली+सवली ∠ असव्व+सव्व ∠ असव्य+सव्य=दाहिने+बाएँ। टीप [दे०]=अंकित करना।

१२४

[राजमती] मुसकाती है, हँसती है और आलिंगन देती है, किन्तु न पलङ्ग पर बैठती है, और न [बीसलदेव द्वारा दिया हुआ] पान लेती है।

वह खड़ी-खड़ी उलाहना दे रही है, "[हे स्वामी,] तू उँगलियाँ तोड़ रहा और बाँहें मरोड़ रहा है, किन्तु ऐसे स्वामी का भरोसा मैं नहीं करती हूँ। तूने [आखिर] बारह वर्षों तक [मुझे] क्यों छोड़ रक्खा था ?"

मुलक ∠ मुकुल। पलिंग ∠ पर्यङ्क। ऊभीय∠ऊर्ध्वित = उठी हुई, खड़ी। उलंभडा∠उपालम्भ।

१२५

[राजमती ने कहा,] "यह [तेरी] ठसक और मुसकराहट मुझे अच्छी नहीं लगती है; मुझ स्त्री के हृदय में [तू] हाथ न लगा। हे निर्मम प्रियतम ! तू लज्जित भी नहीं होता है ? मेरे मना करने पर [भी] तब तू ऊलग (चाकरी) को क्यों गया ? तू मेरी बाल वयस् को भी नहीं देखता है ? हे निगुणी स्वामी ! मुझे तू ऐसे में किस प्रकार छोड़ देता है ?"

ऊलग∠ओलग्गा∠√ अव + लग् = चाकरी, सेवा। वेस∠वयस्।

१२६

"ऊलग [चाकरी] को जाकर, हे स्वामी !" [राजमती ने कहा,] "तू ने कैसा (कौन-सा बुद्धिमानी का) कार्य किया ? तूने बाहों को तकिए के रूप में मोड़ कर शयन किया; न [स्त्री के] कठिन पयोधरों को मला; न उसके कदली-गर्भ जैसे [कोमल] गात्र का मर्दन किया; न [उसकी] जङ्घ-संधि को देखा; न रजनी में [उसके] साथ उमङ्गपूर्वक केलि की। तू तो दैव का सताया [भाग्य का मारा] लौटा है। हे स्वामी ! [मानो] तू ने घी का तो व्यापार किया, किंतु खाया तेल ही।"

केली∠कदली। निरष∠निरीक्ष = देखना। रयणि∠रजनी।

१२७

भूना (एक प्रकार का सूती वस्त्र) का [राजमती का] दुपट्टा है, और भूना का ही उसका ताव (चादर) है। ठमक-ठमक (रुक-रुक) कर स्त्री (राजमती) पैर रखती है। वह प्रियतम के मन्दिर (कक्ष) को जा रही है। [घिसा

हुआ] शुक्ल (श्वेत) चन्दन [उसने] कटोरे में भर लिया है। सज्जा (सजधज) करके [अब] वह शय्या पर आ गई है, और वहाँ वह सद्गुणवती [कामिनी] के समान कल्लोल (केलि) करने लगी है।

सुक<शुक्ल। सरिसी<सदृश।

१२८

[राजमती की] कनक-काया कुमकुम (केशर) की रोली जैसी थी। उसके कठिन पयोधर सोने के कटोरों [के सदृश] थे। कदली-गर्भ जैसी वह कोमलाङ्गी थी। वह स्त्री (राजमती) घायल के सदृश अपने अङ्गों को [पति के पास ले जाते-ले जाते] खींच लेती थी और वह गोरी (राजमती) [पति के पास आ-आ कर भी] [अपनी] कटि को मोड़ कर चल देती थी। उस (राजमती) की विरह-वेदना को कोई नहीं जानता है।

जिस प्रकार राजा रानी से मिला, उसी प्रकार इस संसार में सभी कोई मिलें।

कचोल<कच्चोल = कटोरा। केलि<कदली। कूंवली<कोमल। कडि<कटि।

परिशिष्ट

अतिरिक्त छंद

१—म० पं० न० अ०

२—म० न० अ० स०

३—म० अ० स०

४—म० स०

५—म० न० अ०

६—म० अ०

७—पं० न० अ०

८—पं० अ०

९—र० न०

१०—न० अ०

११—प्र० स०

१२—र०

१३—ना०

१४—न०

१५—अ०

१६—स०

१

म० पं० न० अ० के अतिरिक्त छंद

(१)

दीन्ही सोपारीय हरषीयउ राव।
मनह उलटि नइ अधिक उछाह।
सगलउ अंतेउरि बीनवइ।
थोड़ी थोड़ी[२] म्हांकीय[३] राषिज्यो[४] माम ॥ भु० ॥

(ऊपर की ·१,·२ की तुलना० स्वीकृत १०·१,·२ से)

म० में यह ११ है, पं० में १२, ग्या० में १४/१, र० ना० नं० में १४, अ० में १५। किन्तु म० के अतिरिक्त शेष में ·५,·६ भी यथा निम्नलिखित है :

गढ़ अजमेरि बधीमणी।

पाट महादे राणी नीमियउ धान (धाम-ग्या०)।

पं० ग्या० र० ना० न० अ० में ·१,·२ है :

बांभण सहित भीतरि गयो राउ (जाय-ना०)।

मन माहे आणंद (मनहि आणंदियउ-ग्या० र० न०) अधिक उछाह।

१. पं० कोपाउ, र० ग्या० ना० कोपीयउ, न बोलियउ। २. र० थोड़ो थोड़ो। ३. र० मांकउ, ना० म्हांकौ, ग्या० म्हाहरा। ४. ना० मांन।

(२)

राजा मंत्रीय लीयउ रे बोलाइ।
मंत्री बताउ छइ जाइ बइसाहि।
मोटउ हो[१] राजा[२] धार कउ।
साऊअ[३] पाषर्‌या[४] तुरिय[५] केकांण।
साऊअ[६] पाला[७] पालषीय[८]।
बिलंब[९] म करे[१०] बीसल[११] दे चहूआंण ॥ भु० ॥

म० में यह १२ है, पं० में १३, ग्या० में १४/२, र० ना० न० में १५, अ० में १६ । किन्तु इनमें .२ है :

बात कही चादरि बइसाइ (चौवरसाय—ना०) ।

और ऊपर की ·५, ६· के बीच इनमें अतिरिक्त है :

संजहु बाजा अउर (भेरि—न० अ०) नीसाण ।
संजहु पाइक पाखरया ।

अ० में निम्नलिखित ·६, ·१० भी है :

मंत्री कहे एहू बचन प्रमाण ।
जुगति सुं जात चलाविस्यां ।

१. पं० आग हो, न० अ० आगइ हो, र० ग्या० ना० आगै । २. पं० र० ना० अ० राजा मोटउ, न० राजा । ३. पं० र० न० थे सजहु, अ० थे सज करहु, ग्या० थे सजउ हो, ना० थे सजहौ । ४. पं० हउयर, र० ग्या० ना० हयवर । ५. अ० वर करह, न० वउवर । ६. पं० र० ग्या संजहु, ना० थे सजहो, अ० न० सज्ज वरहु । ७. पं० र० ग्या० ना० गूडर, अ० न० गयवर । ८. पं० र० ग्या० ना० पालषी, अ० न० घणा । ९. पं० र० ग्या० ना० अरघे बिलंब । १०. पं० र० ग्या० म० करिज्यो, अ० न० म० करउ । ११. पं० र० कहइ, ना० कहि ।

(३)

पाइ कंकण सिरि तिलक दीपाइ ।
प्रथम पयाणउ रे[1] सेठि तलाइ[2] ।
सोना[3] मोतीय[4] झिगमिगइ[5] ।
कुलिय छत्तीसइ रे सवि मिल्या[6] आइ ।
गूजर गउड़ ते दाहिमा[7] ।
कछवाहा हाडा अनइ चंदेल[8] ।
भाटी हो जेसलमेर रा[9] ।

दल बल देषि[10] हस्यउ चहूआंण।
नाल्ह रसाइण[11] इम भणइ[12]।
सरसइ[13] सइंभर दीयउ रे[14] मेल्हांण॥ भु० ॥

(ऊपर की '१ की तुलना० स्वीकृत १५'१ से)

म० में यह १५ है, पं० में १७, ग्या० में १८, र० ना० न० में १६, अ० में २०।

१. पं० अ० पयाणउ कीधउ, र० पयाणय ('कीधो' बाद में बढ़ाया गया है), ग्या० पियाणउ। २. पं० अ० न० सेठे लाइ, ग्या० संठे लाइ। ३. ना० पं० र० अ० न० सोवन। ४. र० ना० न० मौड अति, ग्या० मोड़ तिहां। ५. ना० पं० र० अ० न० झलहलइ। ६. र० अ० मिलीय छइ, पं० सवि मिली, ना० मिली आगै। ७. अ० नइ दाहिमा, र० तिहां डाहिमा, ना० अति दाहिमा। ८. पं० चदेल, र० ग्या० अ० वलीय चंदेल, ना० चंदेलवांण। ९. पं० न० अ० जेसलमेर का। १०. न दल देखि। ११. पं० र० ना० अ० न० कवीसर। १२. पं० म अभणइ। १३. पं० र० सर, ना० अ० सरस। १४. पं० र० ग्या० ना० राजा कियो, अ० दूजउ दीध, न० हिव कीयउ रे।

(४)

सरसइ[1] सइंभर थी रे[2] चालीयउ[3] राउ।
नयर[4] चंपावती[5] पहुतलउ[6] जाइ।
हय गय अंत न लाभस्यइ[7]।
मदगल[8] सहस हस्तीय मयमंत[9]।
सात[10] सहस[11] राजा मिल्या।
पालषी परदल अंत न छेह।
गज गइवर चाल्या घणा।
राउ राणा तिहां अंत न पार॥ भु० ॥

(ऊपर की '८ की तुलना० स्वीकृत १३.६ पं० के पाठ से)

म० में यह १६ है, पं० में १८, ग्या० में १६, र० ना० न० में २० अ० में २१। किन्तु पं० ग्या० र० ना० में ·६ है :

पाली गिणत न लाभए अंत। (तुलना० म० १४.६)

न० में ·६ है : पयदल लाभै हो को नहीं अंत। „
अ० में ·६ है : पालिय परदल को नही अंत। „
और अ० में ·७, ·८ नहीं हैं।

म० १४ में सेना के जिन अङ्गों का वर्णन है, उन्हीं का और प्रायः उन्हीं शब्दों में इस छन्द में भी है। फिर इसी छन्द में 'गय अन्त न लाभस्यइ' (·३), 'सहस हस्तीय मयमंत' (·४), 'गज गअवर चाल्या घणा' (·७) कहा गया है, जब कि म० १४ में कहा जा चुका है 'हस्ती सिंगार्या सात छइ' (·५)।

१. पं० र० सर, न० अ० ना० सरस। २. न० अ० सइंभर थकी। ३. पं० र० ना० आवीयउ। ४. पं० र० ग्या० [में नहीं है], न० नयरी। ५. र० चापावती। ६. र० न० पहूतो। ७. पं० र० न० ग्या० ना० पाइजइ, अ० न० न पामीजइ। ८. पं० र० पायदल, या० अ० ग्मयमत, म० परदल। ९. पं० मयंक, अ० सोभत, न० मयंक। १०. पं० र० ना० साठि, ग्या० पांच। ११. ना० सहस्र।

(५)

पाउ धनुष[१] धर लीयउ[२] आगे बाण।
बाजा रे बाजइ छइ[३] घुरइ[४] नीसाण।
भेरि बरघू[५] तिहां[६] भरहरइ।
बाजा रे[७] बाजइ[८] भुइकप[९] तूर।
राजा चालीयउ[१०] परिणिवा।
पेहाडंबर[११] छाइयउ[१२] सूरि॥ भु०॥

(ऊपर की ·२,·५,·६ की तुलना० क्रमशः स्वीकृत १५·४,·५,·६ से)

म० में यह १७ है, पं० में २०, ग्या० में २१, र० ना० न० में २२, अ० में २३ ।

[1]. पं० र० अ० न० पायक धनुष । [2]. पं० घर कीयउ, र० घर कीया, अ० न० घर हुया, ना० घरै, ग्या० घरी । [3]. पं० र० ना० ग्या० बाजइ, न० बाजिया । [4]. पं० र० ग्या० अ० न० गुहिर, ना० अवर । [5]. र० बजावतां, ना० बंधू । [6]. ना० [में नहीं है] । [7]. पं० र० ग्या० ना० बरघू । [8]. न० जीया । [9]. पं० र० ग्या० ना० जे भला, अ० जय रण, न० छइ रण । [10]. पं० चालौ, र० चालिउ । [11]. पं० र० ना० तठइ षेहांडबर, अ० न० तिहां षेहांडबर करी । [12]. र० लुकि रह्यउ, ना० लुकीयो ।

(६)

तलहटी[1] ऊतर्‌यउ बीसल राव ।
धारि कउ राजा जी सांम्हउ आइ[2] ।
पांचमी मजिलि[3] विचि[4] वस्यु[5] ।
राजा भोज कइ बीसल[6] लागुं जी[7] पाइ ।
कर झाली[8] ऊंचउ[9] लीयउ ।[10]
कुसल कुसल[11] पूंछइ[12] कंठि लगाइ ।
मोटउ क्षत्रिय[13] मालवउ[14] ।
राजा[15] बांहण[16] संपीयउ चमर ढुलाइ ।। भु० ।।

म०:में यह २१ है, पं० में २२, ग्या० में २३, र० ना० न० में २४, अ० में० २५ । किंतु पं० र० ग्या० ना० में उपर्युक्त ·१,·२,·३ क्रमशः ३,·१,·२ हैं और पं० र० में उपर्युक्त .७,·८ बाद के छंद की यथा ·१,·२ हैं ।

[1]. अ० न० हिवइ तलहटी । [2]. न० जाइ । [3]. अ० पांच मंडल, न० सात मंजिलि-तिहां । [4].पं० र० ना० वासउ, अ० न० तिहां विच्चि । [5]. पं० बस्या, र० अ० न० बस्यउ, ना० वसौ । [6]. पं० र० ना० [में नहीं है] । [7]. ना० लागो, ग्या० लागइ छइ । [8]. ना०

कर जोडी। [९]. पं० उंच, न० ऊंची। [१०]. अ० कीयउ। [११]. पं० र० ना० अ० न० कुसल पूछइ। [१२]. पं० र० ना० अ० न० राजा। [१३]. अ० न० हो राजा (तुलना० म० १२·२)। [१४]. अ० न० धारकौ (तुलना० म० १२·३)। [१५]. ग्या० ना० अ० न० तुरोय। [१६]. ग्या० ना० तठै; अ० न० तिहां। [१७]. ग्या० न० सुणिया, ना० पलांणीया।

(७)

चढ़ीयउ राव[१] न लावए[२] बार।
सांमि सउं[३] सामुंही[४] आई रे[५] धार।
कुलीय छत्तीसइ रे ऊलगइ[६]।
सर्व्ब सोहागिण सामुंही नारि।
कलस वंदावइं अपछरा।
राजा जी आवीयउ सीह दुवारि॥ ध्रु०॥

म० में यह २२ है, पं० में २३ का, ग्या० में २५ का, र० ना० में २६ का, न० में २७ का उत्तरार्द्ध तथा अ० में २८।

किंतु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में ·५ है :

लूण उतारइ अपछरा। (तुलना० स्वीकृत १८·५)

[१]. पं० उलीभ चडीयउ, अ० चडउत राय, र० चडीयो छै राउ, ग्या० चडिउ छइ रावल न० चढतउ राजा। [२]. अ० न० न लावइ जी, र० न लावइ। [३]. पं० सिउं, र० न० सुं। [४]. ना० साहमी। [५]. पं० र० ग्या० न० आई छइ, अ० आरवइ छै। [६]. र० अ० ग्या० न० गइल छइ, पं० गल छइ। [७]. पं० र० ग्या० अ० न० सुन्दरी, ना० सुन्दर।

(८)

हस्तीय गुंजइ[१] नितु[२] बाजइ छइ भेरि।
देषि सषी[३] म्हांकउ गढ़ अजमेर।
आना[४] सागर वींटली[५]।
पाषती पुष्कर[६] आदि बराह।

पाटण[७] सोरठ कउ[८] धणी।
हूं तइ हेली[९] बीसल पश्चिम कउ धणी ॥भु०॥

म० में० यह ३३ है, पं० में ३६, ग्या० में ४१, र० न० में ४३, ना० में ५१, अ० में ४५। किंतु पं० ग्या० र० न० अ० में .६ है: हूं रे बीसल पश्चिम तणउ (केरउ-पं०) राइ।

न० में ,, : ,, ,, ,, कउ पतसाह।

आना सागर के देखने का उल्लेख स० ७५ में भी हुआ है, किंतु उसकी शब्दावली नितांत भिन्न है।

१. अ० गाजै। २. र० छइ, ना० न० नइ। ३. पं० गउरी, र० ना० अ० न० गोरी, ग्या० गो। ४. पं० र० ग्या० न० आना हो, ना० आना। ५. न० बीसलो। ६. पं० अ० पहुकर। ७. पं० र० ना० अ० सइंभरि। ८. न० सइंभरि कउ। ९. पं० हु र, अ० गोरी हूं, र० न० ना० हु र। १०. ग्या० पच्छिम तणउ।

(६)

उठि उठि[१] गोरडी मांम म हारि।
प्रथमहि[२] अवकर बोल[३] हे नारि।
सइंभर[४] निंदी[५] नवलषी।
चाकर होइ जीवउं किसउ लेषि।
ऊलग कइ मिसि[६] गम करउं।
एक रिसउ[७] धण[८] ऊलग जाहि[९] ॥ भु० ॥

(ऊपर की ·५ की तुलना० स्वीकृत ३५·५ से)

म० में यह ४७ है, पं में ५५, ग्या० में ५६, र० में ५६, ना० में ६७, न० में ६२, अ० में ६५। किंतु ·४ का पाठ इनमें इस प्रकार है :

उहु अवकर (आखर-ग्या०) म्हारइ मनि रह्यउ लिपाइ (लुकाइ-अ०)। ग्या० में यह छंद ४६ संख्या पर भी है, केवल उसमें, .४,·५ नहीं हैं।

१. पं० र० अ० न० रहि रहि। २. पं० प्रथमइ तउ, र० अ० ग्या०

न० प्रथम तइं। [3]. र० बोलिउ, ग्या० न० बोलियउ, ना० बोल्यउ है। [4]. र० नारि सइंभर। [5]. पं० नंदी तव, र० नंदी तै, ना० नंदी। [6]. पं० अ० न० हउं रि उडीसइ, र० ग्या० ना० हूं रे उडीसइ। [7]. पं० र० सरी, अ० रस, न० ना० रसउ। [8]. अ० हम। [9]. अ० न० जाउ, पं० र० जाइ, ना० जांह।

(१०)

पाइ पडइ[1] राजा[2] मानिज्यउ[3] जोग।
काइं[4] हसावउ[5] दुरजन[6] लोग[7]।
कांमिणी सुं कुमयास किसी।
नयण सरोवर राल्या छइ नीर।
सांस० न मावइ ऊससइ।
किसन[8] भुयंगम पाइजइ षीर॥ भु०॥

म० में यह ५८ है, पं० में ६४, ग्या० में ६८, र० में ६८, ना० में ६६, न० में ७०, अ० में ७४। किंतु पं० ग्या० र० ना० न० में ४,५ हैं :

नयणा (नयनडे ग्या०) नीर रहउ (रह्यो ग्या० र० ना०) जल पूरिं (भरपूर-ग्या० ना० न०)। हीयडलइ सास न मावइअ (मावही-न०, माइजैं-ना०)।

[1]. पं० र० न० पाइ पडउं। [2]. अ० धण। [3]. म० मानिज्ये, ना० मान न। [4]. अ० जोग काइ। [5]. पं० ना० हसावइ। [6]. न० पुरजन। [7]. ग्या० कोक। [8]. पं० र० न० ना० कांइ। [9]. प० पवीय, ग्या० पाइ, र० न० पावए, ना० पावउ, अ० किम पावीयउ।

(११)

संभल[1] गोरडी[2] बोल्यउ हो[3] राउ।
करु जोडी अरु[4] कहइ समझाइ[5]।
बीसल दे करइ बीनती।
परिहरउ[6] कोप दे द्यउ रे आसीस।
दुखु[8] दारुण[9] म्हानइ[10] को नहीं।
म्हांनं[11] ऊलग जांण की[12] षरीय जगीस॥ भु०॥

(ऊपर की ·६ की तुलना० स्वीकृत ६०·१ से)

म० में यह ६५ है, पं० में ७८, ग्या० में ८२, र० में ८२, ना० में ६१, न० में ८५, अ० में ८६।

[1]. पं० र० तठइ सुणि, ग्या० न० अ० सुणि, ना० तठै सुणै। [2]. पं० ग्या० अ० न० हे भावज र० [में नहीं है]। [3]. पं०, ना० ग्या० अ० न० बोलइ छइ, र० बोलीयउ। [4]. र० अ० न० नइ, ना० तब। [5]. र० ना० लागू पाइ, पं० कहइ सुभाउ, अ० ग्या० कहइ सभाउ, न० कहूं सभा। [6]. न० तुम्हें पीहरउ। [7]. पं० मो देर, अ० विदेउ, र० मोहि द्यो, न० मुझे द्यउ, ना० म्हांनै दीयौ। [8]. ना० सुख दुष। [9]. ना० मारण। [10]. पं० म्हारइ, अ० न० अम्ह, ना० म्हां। [11]. र० न० ना० [में नहीं है]। [12]. अ० जाण री।

(१२)

बीज त्रीज नइ गम करउ न कोइ।
चउथि पांचिमि दिन षोटा जी होइ।
छठि शनीश्चर सांमहउ।
सातमइ आठमइ पठइ पुराण।
नवमि दिसा दिसइ धाईयइ।
दसमि दस पार[1] मारीयइ त्रोडि[2]।
इग्यारसिइ कंत भूषउ रहइ होइ[3]।
पूनम कउ चंद[4] निरमलउ।
इण पषवाड़इ[5] गमण न होइ॥ भु०॥

म० में यह ७६ है, पं० में ७२, ग्या० में ५५, र० में ७६, ना० में ८४-८५, न० में ७८-७६, अ० में ८२-८३। ग्या० में पाठ उपर्युक्त है, केवल उपर्युक्त .७ तथा .८ के बीच निम्नलिखित पंक्तियां और है और उपर्युक्त .८ तथा .६ यथा .११,.१२ हैं।

(.८) : बारि सइ बंभणाजी भइजी जोइ।

(.६) : तेरसइ लूगडा धोइजइ।

(.१०) : चउदिसइ काल चिहूं दिसई होइ।

पं० न० र० ना० का पाठ निम्नलिखित है, किंतु न० में इसके '७,'८,.६ नहीं है और ना० में इसके '१० के 'तेरसि' तथा '११ के 'तुरिय' के बीच के शब्द नहीं हैं।

('१) बीज तीजिइ राजा गमण न होइ।
('२) चउथि गणपति पूजइ सहु कोइ।
('३) पांचमि छठि तुम्ह दिन नहीं।
('४) सातिमि चिहु दिसि झंरइ काल।
('५) तिणि दिन गामि न चालिजइ।
('६) आटमि कइ दिन दहइ दिसासूल।
('७) तिणि दिन उलग गम नहीं।
('८) एकादसी जोगिनी सामुही जोगु।
('६) द्वादशी कइ दिन पारणो।
('१०) तेरसि तेजीया तीन्हों वार।
('११) चउदिसि तुरीय न पलाणिजइ।
('१२) पूनिमि कइ दिन पूरउ चंद।
('१३) रहि न सकइ संभर धणी।
('१४) पडिवा कइ दिन गुडह गयंद।

और अ० ८२-८३ का पाठ इस प्रकार है :

पड़िवा को दिन भलउ नहीं जोई।
बीज त्रीजइ राजा गमण न होइ।
चउथइ धणपति पूजीयइ।
छट्ठि छोटी राजा दिन नहीं।
सातमइ चिहुँ दिसि झंपै जी काल।
तिणि दिन गाम न चालीयै।
चालइ तौ विघन होवै ततकाल॥ भु०॥

हित्र आठम कै दिन पड़इ पुराण।
नवमोय सामुही जोगिणी जाण।
दसमीय काल भद्रा सही।
एकादसी दिन ब्रत करइ लोइ।
द्वादसी के दिन पारणउ होइ।
तेरस के दिन लूगड़ा धोइ।
चवदिसि काल चहुँ दिसि हुवै।
काली अमावसि नवि चलइ कोइ।
इयइ पखवाडइ जी गमण न होइ ॥ भु० ॥

[1]. ग्या० दसा सरइ। [2]. ग्या० तोइ। [3]. ग्या० [में नहीं है]। [4]. ग्या० पूनिम चंदलउ। [5]. ग्या० एहड़े पखवाड़े।

(१३)

जूठउ रे[1] जोसीयउ[2] बोलियउ[3] आल[4]।
किम दिन नहीं हो मास[5] बिचार[6]।
लालचि लायउ[7] जोसीया[8]।
मइ तउ ही उडीसा की जगीस।
सरहिस्या पहुर न पल घड़ी।
उलग चालिस्यां बिश्वा बीस[9] ॥ भु० ॥

म० में यह ७७ है, पं० में ५२, ग्या० र० में ५६, ना० में ६४, न० में ५६, अ० में ६२। किन्तु इनमें .४, .५ है :

म्हे तउ [भाया-पं०, भाई-र०] छाडस्यां (छंडीया-ग्या० न०) [जोसी-ग्या० न०] गढ़ अजमेर।

थाकां बरज्या नवि रहा।

[1]. र० झूठो रे। [2]. पं० र० ग्या० अ० न० बांभण। [3]. पं० र० अ० कहिउ रे, न० कहउ। [4]. पं० र० अ० न० विचार। [5]. ग्या०

अ० न० छै मास। [६]. र० च्यारि। [७]. पं० र० ग्या० अ० न० लागउ रे, न० लागउ तूं। [८]. पं० र० न० जोइसी, अ० पंडिया। [९]. पं० र० निश्चइ आज, अ० ग्या० न० आज सवेर (सवार-ग्या०)।

(१४)

चालिउ[१] उलगाणउ ऊलालइए[२] बात।
आडउ फिरज्यो हो[४] कालउ नाग।
वासग नाग[५] मया[६] करउ।
दूध[७] पषालिस्यां[८] थारा पाव[९]।
कटोरउ भरी[१०] पाविस्यां[११]।
भगति करउँ[१२] थारी बे कर जोड़ि[१३]।
ऊलग जातउ[१४] नाह[१५] बहोड़ि[१६] ॥ भु० ॥

म० में यह ७८ है, पं० में ६४, ग्या० में १००, र० में ६६, ना० में १०८, न० में ११७, अ० में १२५। किन्तु इनमें निम्नलिखित यथा .७ भी है :

सोना रूपा की (री०-न०, तणी-अ०) पाषड़ी (खीचड़ी—र० न० अ०, चाखड़ी-ग्या०)। स० १५६ में इसी आशय का कथन है, किन्तु पाठ नितांत अन्य है।

[१]. र० चाल्यो। [२]. पं० अ० उलालीय, र० कुलाणी, न० उला-नियत, ना० झाल। [३]. पं० बाल, र० अ० न० बाग। [४]. पं० ना० फिरइ, न० फिरइ तब, र० आयो तिहां, ग्या० फिरइ तहां। [५]. पं० र० न० ना० वासिग देव। [६]. पं० ग्या० र० न० दया। [७]. न० [में नहीं है]। [८]. ना० पषातु। [९]. र० पाग। [१०]. पं० र० ग्या० ना० अ० न० दूध कटोरइ। [११]. ग्या० न० पाविसू। [१२]. पं० र० न० ग्या० ना० भगति करेस्यां, अ० भगति करां। [१३]. पं० र० ना० दुइ करि जोरि। [१४]. पं० र० न० जातां। [१५]. पं० र० ना० न० म्हाकउ नाह। [१६]. पं० न होइ।

(१५)

सांभल गोरडी कालउ नाग।
सउण[1] न मानइ हे थारडउ[4] नाह[4]।
वचन विरोध्यउ[5] नीसरइ[6]।
चितह उचाटीयउ[7] जाइ हो जाइ।
भद्रा भरण न लेखवइ।
गोरी[9] समझि रहउ हिव तू[10] मन माहि॥ भु०॥

म० में यह ७६ है, पं० में ६५, ग्या० में १०१, र० में १००, ना० में १०६, न० में ११८, श्र० में १२६। किन्तु इनमें .१ तथा .५ क्रमशः हैं :

(.१) तोनूं (तू—ग्या०.) सुणि हे गोरी बौलै वासगनाथ (राउ-न० श्र०, राय-ना०)।

(.५) { पं० र० : उव तउ सषी न रहइ किमइ (कही का नवि रहइ—र०)।
ग्या० ना० न० श्र० : राख्यउ काहू नवि रहइ।

[1]. पं० र० श्र०सउण। [2]. पं० मानइ गोरी, र० मानइ भोली, न० न मान। [3]. र० ग्या० थारो। [4]. र० नाथ। [5]. श्र० विधीयउ। [6]. ना० नीकल्यौ। [7]. श्र० न० उमाहीयउ, पं० र० ना० उकाहियउ, ग्या० उकालीयउ। [8]. पं० र० जाइ ही जाइ, श्र० न० ओलग जाइ, ना० नाहि हे जाइ। [9]. पं० र० थे तउ गोरडि, श्र० गोरडी, ना० तू तौ गोरी। [10]. न० समझ रहि तूं, ना० रहि न समझि।

(१६)

झलकती कडरां[1] बांधीय जम दाढ़।
सुद्ध करिवाणीया[2] धानीयउ[3] बाढ़।
सेन[4] समदीयउ[5] सोरठी।
दाम देई करी कीया सवि सिणगार[6]।
आवध लेई राजा[7] चडउ[8]।
आज[9] ऊलगाणउ[10] हो चालणहार[11]॥ भु०॥

म० में यह ८० है, पं० में ८३/२. ग्या० में ६२/२, र० में ६४/२, ना० में १०३/२, न० में ११४/२, अ० म १२० । किंतु पं० ग्या० र० ना० न० में .५,.६ नहीं हैं, और ना० में .३ है :

सोरठी झलकै काप में । (तुलना० म० १४०. ३)

[१]. पं० अ० काढ़ि, र० ना० कडि । [२]. पं० र० अ० किरमाणीय, न० किलमाणी, ना० करमाणी । [३]. र० दीन्हो छै, न० दीन्हउ, ना० दीधौ छै । [४]. र० से । [५]. र० समदीया । [६]. पं० वेडी करी डाबिय कीया सिणगार, अ० न० बड़ फरी दाबिया कीया सिणगार, र० बड़ी फरी डाबिय किया सिणगार, ना० बड़ फरसी दाबिया कीया सिणगार । [७]. पं० र० अ० न० ना० हयवर । [८]. ना० चड़या । [९]. र० ना० न० सषी । [१०]. र० उलग । [११]. ना० न० हिव चालणहार ।

(१७)

डियडलउ[१] गुनहनउ बकरयउ भरीय उसास[२] ।
चाली[३] गोरडी भाटणि पासि ।
पाय पडइ[४] लालच करइ ।
ऊलग जातउ राजा राषि ।
कोडि[५] टंका कउ[६] नवसर हार ।
आभरण सरब[७] संपउ[८] ।
तोनइ[९] चंद्र सूरजि थारी बे दई साषि[१०] ।
कह्यउ म्हारउ जे करइ[११] ।
ऊलग[१२] जातउ[१३] राजा राषि[१४] ॥ भु० ॥

(ऊपर ·१,·४,·५,·८ की तुलना० क्रमशः पं० ६०·१, ऊपर ·६, म० १६६·३, स्वीकृत ५७·३ से)

म० में यह ८१ है, पं० में ८१, ग्या० में ८५, र० में ८६, ना० में ६४, न० में ८८, अ० में ६२ । किंतु पं० र० ग्या० ना० न० में ऊपर की .४, .८ नहीं है, और ऊपर की .६, .७ के बीच है :

भोली म्हा तुम्ह [बहु—ना०] बीच छइ सिरजणहार।
अ० में उपर्युक्त .४ मात्र नहीं है।

१. पं० ग्या० न० ना० तठइ हीयडलउ, अ० हिवै हियडलउ। २. पं० गहबरइ उसास, र० अ० ग्या० न० गहबर भरइ उसास (नीसास-ग्या०), र० गहबरइ भरइ उसास, ना० गरब रह्यौ छै ऊसास। ३. पं० र० ग्या० चाली छइ, अ० चालै हो, न० चालइ छइ, ना० चली छै। ४. ग्या० र० पड़ी। ५. पं० र० न० अ० न० तोनै कोडि। ६. पं० टंका नव, अ० टंका रौ, ना० टको कौ। ७. (+ ८) पं० र० न० ग्या० सगला सोभतां, अ० आपुं सोहता, ना० तौ नुं संपस्यु। ९. अ० न० [में नहीं है]। १० पं० र० चंद सुरिज दियउ दूनुं साषीया, अ० चंद सुरिज केरी बिच देउं साषि, न० ग्या० चंद सुरिज बे साखीया, ना० चंद सुरिज दोय साखीया। ११. अ० जउ करउ तउ। १२. पं० उतालग। १३. पं० र० ना० जाता। १४. पं० र० म्हाकइ राजा नइ राषि, ना० हांकउ म्नाह बहोड़, ग्या० न० म्हाकउ नाह निवारि।

(१८)

आंगणि[१] तुरीय पलाणीया आंणि[२]।
समरि भवानीय चढ़िउ रे[३] केकांण।
दहीय बंदावइ गोरडी।
तिहां[४] हसि करि[५] वालंभ[६] दीन्ही छइ[७] बांह।
तउ धण[८] हरषित[९] बाहुड़ी[१०]।
तूं तउ[११] वइगा[१२] आविज्यो[१३] मूध का नाह[१४] ॥ ध्रु० ॥

म० में यह ६६ है, प० में ६०, ग्या० में ६५, र० में ६५, ना० में १०४, न० में ११५, अ० में १२१। किंतु ना० में .१ है :
तठै तुरीय पल्लाणीया ऊभा छै वार। (तुलना० म० ७१ .२)
और ग्या० में .४ है : तब हसि बीडउ दीन्हउ छइ हाथि।

१. पं० र० तठइ, अ० वालथी। २. पं० र० आंगणइ आणि, ग्या०

[में नहीं है] । [३]. र० चढ्यो । [४]. पं० र० ना० अ० न० तब । [५]. र० अ० न० हसि । [६]. पं० र० ना० अ० न० बीडउ । [७]. पं० र० दे दीन्ही, अ० सु दीन्हीय, न० दीन्हीय । [८]. पं० र० ग्या० ना० अ० न० सा । [९]. पं० र० ना० ग्या० न० मन माहे, अ० बोलै । [१०]. पं० र० परहसी, ग्या० धरिहसी, अ० हरख सुं, ना० हसी, न० तब हंसी । [११]. पं० र० ग्या० ना० न० [में नहीं हैं] । [१२]. वलि वेगि, पं० न० बेगि, र० बेगा । [१३]. अ० न० पधारिज्यो । [१४]. अ० पं० धण का, र० अ० न० धण केरे, ना० ग्या० धण केरा ।

(१६)

राणी सं कोक्या[१] संपूरण[२] [रिण] वास ।
बंदिडी[३] सरस बोलावीया दास ।
कोकीया पंच महाजना ।
तिलक संजोइ ए दीधउ छइ[४] मान ।
एक अंतेउर बाहिरउ ।
देस उडीसा कउ परधान ॥ ध्रु० ॥

(ऊपर की ·५ की तुलना० म० १५५·५ से)

न० में यह १०६ हैं, पं० में ११७, ग्या० में १२३, ना० में १२१, न० में १४३, अ० में १२६ । किंतु पं० ग्या० ना० न० में उपर की ·१ तथा ·४ को छोड़ कर शेष पंक्तियाँ भिन्न है ।

पं० ग्या० तथा न० ना० का पाठ है :—

(·१) तठइ राणी जी सरब क्योक्या रिणवास ।

(·२) तिलक संजोइ नइ दीधउ जी ग्रास (संवास-अ०, धन तास-न०) ।

(·३) छानउ पुरव्या राइ थी ।

(·६) राणी भाई कीधउ राय चहुआण ।

अ० में पं० पाठ के अनुसार अ० १५३ है, जिसमें पं० पाठ की ·३ तथा अंतिम पंक्तियों के बीच में .४,.५ भी हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(·४) मान मुहुत्त देइ करइ बषाण।

(·५) सफल दीहाड़उ आजकउ। (तुलना० अ० ३०८ .५, पं० २४०)

यह छंद प्रक्षिप्त ज्ञात होता है, क्योंकि इस प्रकार बीसल देव का सत्कार करने पर वह उलगाना मात्र न रह जाता और न पीछे ब्राह्मण के कहने पर उसकी अपरिचित के रूप में खोज की आवश्यकता पड़ती।

१. अ० कोकि। २. अ० सउप्पउ सरव। ३. बांदीया। ४. अ० नइ दीन्हउ जी। ५. अ० देस भलाव्यउ जी। ६. अ० सहू परधान।

(२०)

कइ[१] उलगाणउ ऊलग जाइ।
कह विणजारा[२] रे[३] विणज कराइ।
कइ रे[४] आहेडीय वन भमइ।
निरगुण[५] नाह की बालही[६] नारि।
म्हा घरि मेल्हि[७] विदेस गयउ[८]।
देव म्हां जोडीय[९] नि सिरजीय करतार[१०]।
आठे प्रहर उचाट हइ[११]।
तिणि दुष थी[१२] धण पंजर[१३] थाइं[१४] ॥ ध्रु० ॥

म० में यह १२२ है, पं० में १३६, ग्या० में १४२, ना० में १५०, न० में १६३, अ० में १७२। किन्तु ना० में ·३ के अनंतर ·७ के 'उचाट' के पूर्व तक की शब्दावली छूटी हुई है।

१. पं० न० ना० ग्या० एक, अ० कोइ। २. पं० न० ना० ग्या० अ० कोइ। ३. पं० अ० न० विणजारउ। ४. पं० न० ना० ग्या०

एक, अ० कोइ। [५]. पं० न० म्हाका नान्हडा, ग्या० म्हा नान्हड़ा। [६]. पं० न० सगुणी, ग्या० सुगणी, अ० बीलै छै। [७]. पं० अ० न० ग्या० म्हां घरि छोड़ि। [८]. अ० परदेस गउ। [९]. पं० बेउ म्हा जोडीय, ग्या० देवि म्हानइ जोडि, अ० म्हांकी जोड़ी, न० म्हांकउ जोड़उ। [१०]. पं० कोइ करतार, न० कां [इ] करतार, ग्या० काइं। [११]. पं० ग्या० उचाटमाहि, अ० न० उचाट में। [१२]. पं० न० दुषि, अ० सूकि, ना० दुष भूरै। पं० न० अ० [में नहीं है]। [१३]. पं० न० अ० पंजर हुई, अ० पंजर हुई इण बार, ग्या० पंजर हुई जोइ।

(२१)

चालती चमकती मुहु मचकोड[१]।
बात करंता[२] धण का[३] नहीं षोड[४]।
सीलवंती सती[५] सारिषी[६]।
बोलती बोलइ हो मीठा जी बोल।
नाल्ह भणइ[७] सहु को सुणउ।
इसीय स्त्रीयां[८] नह[९] रब तलइ[१०] दीठ ॥ भु० ॥

(तुलना० ऊपर की .६ की स्वीकृत ४७.८ से)

म० में यह १२७ है, किन्तु ठीक यही छन्द म० १२४ भी है, केवल '४ में उसमें हैं—बोल सुमीठ। पं० में यही ३६, ग्या० में १४५, ना० में १५३, न० में १६८, अ० में १७८ है। किन्तु पं० ना० न० अ० '४ है :

बोलइ छइ एहवउ (बोल—ना०) जिसउ [अमृत-अ०] मीठ। (तुलना० म० १२७'४) पुनः ना० में '५,'६ नहीं हैं।

[१]. पं० मचकइ मोडि, न० मुहुं मचकोडि। [२]. न० बात कहता, ना० बात सुनौ। [३]. पं० न० ना० सषी का। [४]. पं० न० नहीं षोडि। [५]. पं० सषी, अ० कीजइ। [६]. अ० पारिखा। [७]. पं० नाल्ह कह, अ० न० नाल्ह कहइ। [८]. पं० तुम्ह संम तिरिय, अ० इसडीय नारा, न० ए सरसी नारी। [९]. पं० अ० न० न। [१०]. पं० न० रवि तलइ, अ० रवि तलि।

(२२)

गहिलउ हो राजा मूरष भरतार।
जाती[1] रे कलिकउ[2] न जाणइ[3] हो सार[4]।
घरह[5] अंतेउर मेल्ह गउ[6]।
जलह विहूणा[7] किम जीवए माछ[8]।
सेज पाषय[9] धण ताकिजइ।
वइगइ रे[10] आवजो[11] जोवन जाइ[12] ॥ भु० ॥

म० में यह १२८ है, पं० में १४६, ग्या० में १५४, ना० में १६३, न० में १७६, अ० में १७६। किन्तु इनमें ·१ है :

पंड्या कहिजे राजा गहिल गुमार।

अ० में यह छंद पुनः १६० संख्या पर आया है।

[1]. पं० जाता, ना० जावती, ग्या० जाति। [2]. पं० ना० कलकी, अ० कलीय की, ग्या० कुलकी। [3]. पं० ना० न लहइ। [4]. पं० अ० ना० सार। [5]. पं० ना० राय, ग्या० राजि। [6]. पं० ना० छोड़ि गउ. (गयउ-ग्या० ना०), अ० मेल्हि गयउ। [7]. अ० बिहूणौ। [8]. पं० ग्या० माछ पटाइ। [9]. पं० ना० ग्या० धणी बिहूणा, अ० एकली सेजि। [10] ना० ग्या० वैग। [11]. अ० आवौ। [12]. पं० जाय, अ० जात।

(२३)

पंडिया प्री तणा[1] एह अहिनाण[2]।
लाल वागउ[3] अरु हाथि कमाण[4]।
सोरठी[5] झलकय[6] काष माहि।
घणा[7] चउरासिया राउ कइ[8] ठांण[9]।
रतन जडित पग मोजडी।
पंडिया प्री तणा ए[10] अहिनाण[11] ॥ भु० ॥

ऊपर की .१, .३, .५, .६ की तुलना क्रमशः स्वीकृत ६५ .१०/६६.१० न० १२० ३/ अ० १२८.३,म० १७८.५, तथा स्वीकृत ६५. १०/६६.१०)

म० में यह १४० है, पं० में १५२, ग्या० में १५७, ना० में १६६, न० में १८४, अ० में १९६-१९७। किंतु अ० १९६ में यथा '४,'६ म० की केवल .२,.६ है; अ० १९६ की शेष पंक्तियां है :

('१) बलि कहि गोरडी प्री अहि नाण। (तुलना० स्वीकृत ६५'१,६६'१)

('२) थोड़ा-थोड़ा म्हानु दे सहिनाण। (वही ६५'२, ६६'२)

('३) प्यारौ हो बेस प्रिय कुं किसौ।

('५) तेजा चढै राजा नवलपै। (वही ६६'३)

और अ० १९७ में यथा '७,'९,.१० ऊपर की '३,'५,'६ मात्र है, अ० १९७ की शेष पंक्तियाँ हैं :

('१) बलि कहि गोरडा प्री अहिनाण। (तुलना० स्वीकृत ६५'१,६६'१)

('२) थोड़ा थोड़ा म्हानुं दे सहिनाण। (वही ६५'२,'६६'२,३)

('३) नूर दीवइ सदा निलपटइ।

('४) कबहि रमें करि भीर चौगान।

('५) हाथि बाडउ कइर फल भलउ।

('६) सयल करइ सदा राउ चहुआण।

('७) ऊंचउ हो घोडे अस वेस असमान।

न० में ऊपर की '१ के स्थान पर अ० १९६'१, '२ हैं।

[१] न० प्रीउ, ग्या० प्रीयका। [२]. पं० सहिनाण। [३]. न० लाल वागल। [४]. पं० न० ना० ग्या० अरु लाल कमाण। [५]. न० सोर। [६]. ग्या० झलकइ छइ। [७]. पं० ना० ग्या० न० मोटा। [८]. (+९) ग्या० कइ अहिवाण, पं० कइ ठाणि। [१०]. पं० ग्या० प्रीय का, ना० प्रीउ का, न० प्रीतम। [११]. पं० ए सहिनाण, अ० जाणिज्यो ए सहिनाण (दोनो अ० १९६ तथा १९७ में)

(२४)

पंडीया[१] बोलीयउ[२] सुणि[३] जजमांन।
उणि घरि[५] उग्रहइ[६] हीरा की षांण[७]।

देस देसंतरी दूर का[८]।
थे रूडा[९] चालिज्यो[१०] नीकइ साथि।
राज राणा[१२] तिहां अति घणा[१३]।
म्हारी चीरीय राषज्यो थांकउ रे जीव ॥ ध्रु० ॥
(तुलना० ऊपर की ·६ की स्वीकृत ८६·६ से)

म० में यह १४५ है, पं० में १६०, ग्या० में १६५, ना० में १७४, न० में १६४/१, अ० में २०५। किंतु ऊपर की ·३, ·६ के स्थान पर पं० ना० न० अ० में क्रमशः है :

म्हे कही सो चिति आणिज्यो।

म्हारी चीरीय देज्यो राउ कइ हाथि।

१. अ० न० ना० पडियो, पं० पंड्या। २. पं० न० ग्या० सुणि, अ० बोलिछै, ना० सुणिज्यो। ३. पं० न० ना० ग्या० बोलइ। ४. न० [जज] मान। ५. पं० व्याघरि, न० ग्या० तीया घरि, न० तेथकेउ, ना० था घरि। ६. ना० उग्रै। ७. पं० अ० न० खाणि। ८. अ० गम करै। ९. पं० न० ना० ग्या० थे वाट (वाटे-पं० माहि) मह- न० थे वाटे माहे. अ० तिहां तुमे। १०. अ० ले जो जी। ११. पं० ग्या० रूडइ, अ० नीको कौ। १२. पं० न० ना० ग्या० राजकुमार, अ० राजा राउल। १३. पं० न० ना० ग्या० रावलि घणा।

(२५)

दीठउ रे नगर हूय रे[१] उल्हास।
गणीय[२] न आप रे[३] तिहां[४] तणउ वास।
बंभण[५] वसइ छै[६] अति घणा।
वाणीया का[७] घर[८] कोड पंचास[९]।
कोड वारह[१०] षत्रीय[११] वसइ।
पवण छत्रीसए[१२] अंत न पार[१३]।

सर सलाकार[१४] सोहामणा[१५] ।
सात सहस घर[१६] वसइ कुंभार ।। ध्रु० ।।

म० में यह छन्द १५१ है, पं० में १६४, ग्या० में १६६, ना० में १७८, न० में १६७, अ० में २११। किंतु ग्या० में .३, .४ नहीं हैं। और ना० में अन्तिम दो पन्क्तियों के स्थान पर हैं :

सर सौलौके कुमार छै।

सुमिरि भरीया अरथ भंडार। (तुलना० स्वीकृत १०२ के पं० पाठ की .२)

१. पं० पंडिय मन हुवउ, अ० तिहां हुश्रौ रे, न० पड़े, ना० ग्या० पंडीयइ। २. पं० अ० न० ग्या० गिणउ। ३. पं० नगर जाई, अ० न० न जाइ जी, ना० ग्या० न जावै। ४. पं० र० ना० ग्या० तेह नउ अ० तेह नउ रे। ५(+६), पं० वंभण बइसइ, छइ अ० न० बंभण बसइ तिहां। ७. पं० बाणीयारा। ८. पं० घर अछइ। ९. अ० सहस पंचास, न० सहस अठार। १०. अ० न० लाख बारह। ११. ना० त्रित्री। १२. पं० पवणि छतीसइ, अ० पवन छत्तीसां को, ना० वाणि छत्तीसे। १३. अ० कउ नहीं पार। १४. पं० अ० न० ग्या० सरसउ लोक। १५. पं० अ० न० सोहामणउ। १६. पं० ग्या० तठइ तीनि सइ साठि घर, अ० तठइ सात सइ लोक, न० तठइ तीनिसइ साठि।

(२६)

पंडीयइ माणस लीयउ एक साथ।
गलइ जनोई पाट की घाति।
सइंभरवाल[१] पिछाणीयउ[२]।
कब कव[३] दीठउ छइ[४] बालकवेस[५]।
लांबउ[६] गोरउ पातलउ[७]।
बइठउ[८] राजा कइ[९] सोहइ पास[१०]।
पंडीया कागल[११] करि धरउ[१२]।
चीरीय वाचतां[१३] कांपीयउ हाथ[१४] ।। ध्रु० ।।

(ऊपर की .२, .८ की तुलना० क्रमशः म० १५३.२ तथा म० १६१.२ से)

म० में यह १५६ है, पं० में १६४, र० में १६६, ग्या० में १६६, ना० में २०८, न० में २२८, अ० में २४७। किंतु पं०, र०, ग्या०, ना०, न०, अ० में .१, .२ हैं :

पंडीया कीधी फिर संभालि।
निरषि करि दीठउ संभरिवाल।

अ० में .७ नहीं है, और उसमें .६, .८ के स्थान पर हैं :

राजा कै पासि बैठौ तब राइ।
चीरीय बांचै तब हाथ लोकाइ।

किंतु जब राजमती ने ब्राह्मण को प्रिय का सहिनाण दिया था, तब उसने नहीं कहा था कि वह राजा को बाल्यावस्था में देख चुका था।

1. पं० र० न० ना० ग्या० अ० राइ चहुआण। 2. पं० पिछाणिया। 3. ना० उठै कुमरि, ग्या० उण कर, पं० र० उव तउ कुंवर, अ० उणि तौ रे, न० उणइ। 4. पं० र० दीठा छइ, अ० दीठउ, न० दीठउ हुतउ, ना० दीठी छइ। 5. पं० र० ना० बालइ वेसि, अ० थोलक वेस, न० बालउ बेस। 6. पं० अ० उचोउ, ग्या० ऊंचउ, र० ऊंचा, न० तूंबो। 7. न० नइ पातलउ। 8. पं० न० तठइ बाइठा, र० तठइ, ग्या० उठइ 9. पं० र० न० राजा नइ, र० राजा, ना० राजा, ग्या० बइठो राजा रइ। 10. पं० न० र० नं० ग्या० नत सनमनि, र० समभांति। 11. पं० र० कागद, ग्या० कागल। 12. पं० र० ना० ग्या० करि धरइ। 13. पं० र० ना० ग्या० उतउ चोरी देखितां। 14. पं० ना० ग्या० झांपीयउ सानि, र० झांपियो सान।

(२७)

राजा सुं मिलीयउ[1] पूरब्यउ राउ[2]।
नीलाषा[3] दीन्ही[4] राज[5] कुलह कबाइ।
दीघउ[6] सोनउ [सोलहउ]।
दीन्हा[7] ढोल[8] अवर नीसाण[9]।

आंसू नांषि[10] पूरिबउ[11] वीनवइ[12]।
सिद्धि करउ[13] वीसलदेव[14] चहूआंण ॥ ध्रु० ॥

(ऊपर की .१, .२, .३, .६ की तुलना० क्रमशः म० १७४.१, स्वीकृत ११.२ स्वीकृत ११.३ तथा म० १७३.८ से)

म० में यह १७२ है, पं० में २०४, र० में २०६, ग्या० में २०६, ना० में २१८, न० में २३६, अ० में २६५। किन्तु पं०, र० ग्या० ना०, न०, अ० में .३ है :

दीन्ही हीरा पाथरी। (तुलना० स्वीकृत ११०.३)

और ग्या० अ० में .५ है : पूरब्या राउ बिदा करइ (नै बीनवै-ग्या०)।

1. अ० जिहां मिल्यउ, ना० मील्यौ थी। 2. पं० र० ना० बीसल राइ (बीसलो राउ—र०)। 3. पं० र० अ० ग्या० न० लाष, ना० लाषा। 4. ग्या० दीन्हा। 5. पं० र० अ० ग्या० ना० तिहां। 6. अ० दीधउ छइ। 7. अ० दीधा जी। 8. अ० ढोल। 9. पं० नइ नीसाणि, ग्या० बली नीसाण, अ० अनइ अवर नीसाण, ना० न० र० अनइ नीसाण। 10. पं० र० न० रोवइनइ, ना० रोइ नइ, ग्या० राय। 11. र० ना० पूरब्यो न० पूरब के, ग्या० पूरब्या नै। 12. न० धणी। 13. पं० र० थे तउ सिद्ध करउ, ग्या० थे सिद्ध करउ, अ० सिद्ध करउ तुम्हें, न० सीष दीधी। 14. पं० थे वीसल, र० न० वीसल।

(२८)

हूयउ रे[1] मुकलावउ[2] हरषीयउ[3] राइ[4]।
सगलाई[5] बंदिण[6] लीया रे[7] बोलाय[8]।
बीसलदे[9] घरि चालीयउ[10]।
दीन्हा[11] अरथ नइ गरथ भंडार[12]।
दीन्हउ[14] सोनउ सोलहउ[15]।
कर जोड़ी[16] अरु लागउ पाय[17]।

माया काम[१८] बस्यालिया।
सिद्धि करउ[२०] वीसल वीर म लाइ[२१] ॥ ध्रु० ॥

(ऊपर की .१, .४, .५, .८ की तुलना० क्रमशः स्वीकृत २५.१ स्वीकृत १०२.०, स्वीकृत ११.३ तथा म० १७२.६ से)

म० में यह १७३ है। पं० २०३, ग्वा० में २७८, र० में २०५, न० में २३७, ना० में २१७, अ० में २६४। समानता केवल अंतिम पंक्ति में है, किन्तु हो सकता है कि शेष पंक्तियाँ ऊपर की शेष पंक्तियों के स्थान पर हों।

पं० र० अ० ग्वा० न० ना० का पाठ—

राउ सुं मिल्यो पूरब्यो राउ। (तुलना० म० १७२.१)
कृष्ण बांभण तठइ लीयो बोलाइ।
समुझाइजै प्रोहित राउ का।
तठै आंचलि आंगू लूहै राउ।
मुख थी बोल न नीसरै।
सिद्धि करो थे वीसलराउ।

(२६)

राजा स्यउं[१] मिलीयउ रे[२] पूरब्यउ राउ[३]।
घर लिषि[४] मोकलाउ[५] तुम्हांनइ[६] सुणाइ[७]।
रतन पदारथ संपीया।
सगा रे[८] सणीजा की[९] जातीया[१०] पूठि।
पूरबीयउ राउ[११] चालीउ[१२]।
बीसल राउ[१३] चाल्यउ घर उठि[१४] ॥ ध्रु० ॥

(ऊपर की १, .४ की तुलना० म० १७२.१, तथा स्वीकृत १०६.४, .५ से)

म० में यह १७४ है, पं० में २०५, र० में २०७, ग्वा० में २१०, ना० में २१६, न० में २३६, अ० में २६६। किन्तु न० में 'रतन पदारथ' (·३) से 'ऊठि' (·६) तक की शब्दावली छूट गई है।

[1]. पं० राजा सं, र० राजा सुं, अ० बलि राउ सुं। [2]. पं० र० न० ग्या० बोलीयउ, अ० वीनवइ। [3]. पं० र० न० ग्या० बीसल राव। [4]. पं० र० अ० ना० ग्या० धणि लिषि। [5]. पं० र० अ० ना० मोकल्यउ। [6]. पं० किउ, र० कियो, अ० एह, ना० (+७) सुमभाव ग्या० कै। [7]. पं० र० अ० सुमाइ, न० सभाउ। [8]. पं० र० अ० ना० म्हाका सगा। [9]. पं० र० अ० ना० सुणीजा। [10]. पं० न० ग्या० थाकी, र० अ० थांकिय। [11]. र० पूरबीराउ। [12]. पं० अस बोलियउ, र० ना० ग्या० इम बोलियौ, अ० इम वीनवइ। [13]. पं० र० ना० तब वीसल राउ, अ० बीसल दे। [14]. पं० र० ना० घरि ऊठि, अ० घरह कुं ऊठि।

(३०)

तोइ राजा उतरउ नगर मझारि।
नफर चलाव्यउ[1] दिवस गिणाइ[2]।
धीरय[3] देज्यो राणीयां[4]।
दिन दस महि[5] पठावय[6] हो राइ[7]।
राजमती सउ[8] जाय[9] इमि कह्यो।
गोरी घर नउ[10] मोहीयउ[11] वीसलराउ ॥ ध्रु० ॥

म० में यह १७५ है, पं० में २०६, र० में २०८, ग्या० में २११, ना० में २२०, न० में २४०, अ० में २६७। किंतु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .१ है :

[उड़ीसा की-पं० र० न० ग्या०] तलहटी ऊतर्‌यउ बीसल राइ।

(तुलना० म० २१.१)

[1]. पं० र० षदावइ, ग्या० षंदाया, अ० कोइ अछइ, न० षंदाइ, ना० षंदाइ नइ। [2]. अ० वेगिजो जाइ। [3]. अ० (+४) राजमती कुं धीरय दीयइ। [4]. ना० धीरज दीयो राणीयां। [5]. पं० र० अ० न० ना० ग्या० दिवस चिहुं माहि। [6]. पं० र० न० ना० ग्या० पहुंचिज्यो, अ० आविस्यइ। [7]. पं० र० न० जाइ, अ० [में नहीं है]। [8]. पं०

र० अ० न० ना० राजमती नै, ग्या० राणी राजमती नै। [९]. पं० (+१६) अम (अस) कहे, अ० जाइ कहइ, र० न० ना० ग्या० इम कहे। [१०]. पं० र० न० ना० ग्या० घर नइ, अ० घरह। [११]. पं० र० अ० ना० ग्या० उमाहियउ, न० ऊम्हा।

(३१)

नगरीय माहि हो पठह वजाइ।
को अछय जो[1] अजमेरहां[2] जाय[3]।
लाष टंका देउं[4] उचित का[5]।
तिहां[6] कागल लिष[7] दीयउ[8] आपणइ[9] हाथ[10]।
दिन चउथइ[11] म्हे[12] आविस्यां।
राणी राजमती नइ[13] दिउ समाधि[14] ॥ भु० ॥

(तुलना० ऊपर की '६ की म० १८२.६ से)

म० में यह १७६ है, पं० में २०७, र० में २०६, ग्या० में २१२, ना० में २२१, न० में २४१, अ० में २६८।

किन्तु पं० र० ग्या० ना० न० अ० में .१ तथा .४ इस प्रकार है :

(.१) तठइ पडह दिवावइ वीसल राउ।
(.२४) हउ तउ र० (ना० में नहीं है) चीरी लिषि द्यउं मनह (ना० में नहीं हैं) सुभाइ (चीरी धउं आपइ हाथ लिषाइ—अ०)।

[1]. पं० र० ग्या० छइ कोई, अ० न० छइ कोई आज, छइ कोई अैसो, र० ना० कोइ आज। [2]. पं० र० अजमेरइ, अ० अजमेरहि, न० अजमेरह। [3]. पं० र० अ० न० जाइ। [4]. पं० देव, र० द्युंगा। [5]. पं० गाठिका, अ० न० ना० ग्या० रोकड़ा, र० त्रिका। [6]. न० ग्या० (न० नहीं है)। [7]. न० चिठी लिखी, ग्या० चीरी लिष। [8]. न० ग्या० द्युं। [9]. न० ग्या० मनह। [10]. न० सुया, ग्या० सुहाइ। [11]. पं० दिन चउ नइ, अ० न० ना० ग्या० दिन चिहुं माहें, र० दिन चिहुँ में। [12]. न०

म्हों। [१३]. पं० र० ना० ग्या० सतवंती राणी नइ, अ० राणी राजमती कुं, न० राजमती नइ। [१४]. पं० र० न० ना० ग्या० कहिज्यो जाइ, अ० जो कहइ जाइ।

(३२)

जोगिनइ[१] राव कउ[२] कीयउ रे[३] आदेस।
भगवा कापड़ मइला वेसि[४]।
काषि अधारीय सिरि जटा।
सोवन सींगीय[५] पूरइ छइ[६] नाद।
रतन जडित पग मोजडी[७]।
वज्र[८] कछोटीय[९] नइ पावडी पाय[१०]।
गढ़ अजमेर नइ[११] गम करउ।
बे कर जोडीय[१२] पगि पडइ[१३] राइ[१४] ॥ ध्रु० ॥

(ऊपर की .२, .५ की तुलना० क्रमशः म० १८४.२ तथा म० १४०.५ से)

म० में यह १७८, पं० में २०६, र० में २११, ग्या० में २१४, ना० में २२३, न० में २४३, अ० में २७०।

[१]. पं० र० न० ना० ग्या० (+२) आइउ जोगी (जोगिनौं-ग्या०) [२]. अ० राउजी, पं० र० न० ना० राजा। [३]. अ० करइ, ग्या० दीयै। [४]. ग्या० मैलो जी भेस। [५]. पं० र० ना० उणितउ सोना सीगी, ग्या० उणि सोना ठीसीगीय अ० उणिरे सोवण सीगीय। [६]. पं० र० ग्या० न० पूरियउ। [७]. ना० री मेषली, ग्या० कांधे मेखला, पं० र० न० की मेषली, गलि मेखली (तुलना० म० १८६.५)। [८]. पं० र० उकइ वजर, न० ना० उणरइ बज्र। [९]. र० ना० कछोटडी। [१०]. पं० न० ना० पाउडी पाइ, र० पाउडी पाग, अ० चाखड़ी पाइ। [११]. पं० र० गढ़ अजमेरा, अ० गढ़ अजमेर कुं। [१२]. पं० र० तठइ करि जोडी, अ० न० ना० ग्या० कर जोडी। [१३]. पं० ना० ग्या० नइ पगि पडइ, अ० राजा लागइ छइ, न० पग पडइ छइ। [१४]. अ० पाय।

(३३)

जोगीय[१] सिद्धि बोलइ तिणि ठाइ[२]।
बचन दुइ संभलउ दुइ हम च्यारि[३]।
गुटिका विद्या अम्ह कन्हइ[४]।
गुटिका लेकरि[५] करूं परदेस।
आंषि फुरूकइ[६] हूं गम करूं[७]।
तत षिण हूं साधू[८] परदेस ॥ भु० ॥

म० में यह १८१, पं० में २१३, र० में २१५, ग्या० में २१८, ना० में २२७, न० में २४७, अ० में २७२।

१. पं० र० तब जोगिनउ, अ० न० ग्या० जोगिनउ। २. र० तिहठाइ। ३. पं० र० अ० न० ना० ग्या० दुइ ('दुइ'—ग्या० में नहीं है) म्हाका सांभलउ राइ। ४. र० ग्या० छै अम्ह कन्हइ, पं० अ० छइ म्हो कन्हइ। ५. पं० र० म्हे गुटक उगीलि, न० ना० गुटका मिलि, अ० म्हे ल्हि गुटिको। ६. पं० गुर उपदेसि, अ० म्हे उड़ां वरदेस, न० ऊड़ां परदेस, र० गुरूपदेस, ना० करां गुरु उपदेस, ग्या० करां परदेस। ७. पं० र० ना० आखि ठमका माहि सचरौ, अ० आंखि टमकैरै गम करां, न० ग्या० आंषि मटकइ माहि संचरा। ८. पं० ग्या० म्हे (म्हेतउ—अ०) अण विधि, र० अ० इण विधि, र० न० ना० म्हे इण विधि। ९. पं० राव साधी, अ० न० राव जी साधां, ना० र० राव साधां।

(३४)

जोगिनउ[१] पहुतउ[२] गढ़ अजमेर।
फिर कर[३] जोइया[४] च्यारह फेर[६]।
अउलीया[७] ओलि[८] उघाडि नइ[९]।
तठइ[१०] पाट महादे रांणी[११] लीयउ रे बोलाय[१२]।
बीसल दे की[१३] रे गोरडी[१४]।
रांणी राजमती नय द्यउ[१५] समाधि ॥ भु० ॥

(ऊपर की .६ की तुलना० म० १७६ .६ से)

म० में यह १८२ है, पं० में २१८/१—२१६/२, र० में २२०/१—२१८/२, ग्या० में २२३/ १—२२१/२, ना० में २३२/ १—२३०/२, न० में २५२/ १—२५०/२, अ० में २८०/ १—२८१/२ । इन समानांतर छन्दों के शेषार्द्ध देखिए । म० में इस प्रमाद का कारण यह है कि दोनों छन्दों के ·४ में केवल 'नैदेह' तथा 'लीयो' का अन्तर है । इस छन्द की टिप्पणियों के अन्त में

पं० २१६· १, ·२,·३, ना० र० २१८·१ ·२ ·३, ना० २३०·१, ·२, ·३ ग्या० २२१·१, ·२, ·३ क्रमशः इस प्रकार हैं :

तब जोगनउ आवउ हो संभरि माहिं ।
नीकीय नगरीय सूव [स] बसाइ ।
नवलषी नविषंड जाणिजइ ।
(तुलना० अ० २७८·१,·२,·३)

पं० २१८·४, ·५, ·६, र० २२०·४ ·५ ·६, ना० २३२ ·४·५, ·६ ग्या० २२३·४, ·५, ·६ क्रमशः इस प्रकार हैं :

तउ तउ राजमती राणी नइ देषाइ (देहि षेदाइ-ग्या०) ।
लिषउ आयाउ राउ चहुआण कउ ।
हउ मुषि बचनि कहुं समुझाइ ।
(तुलना० अ० २८०·४, ·५, ·६)

अ० २७८·४,·५,·६,·७ क्रमशः इस प्रकार हैं :

जोगिनौ हरखियउ तव मन मांहि ।
आधउ चालइ जोगी मनह उछाहि ।
प्रह विकासि पधारियउ ।
आइ पहूतउ जी अजमेर माहिं ॥ ध्रु० ॥

[1]. पं० र० तब जोगिनउ । [2]. पं० [नहीं है] । [3]. पं० र० अ० फिरि करि । [4]. पं० र० अ० ग्या० दीठा जी । [5]. पं० च्यांर देस, र० च्यारिउं सेर, अ० च्यारि ए सेर । [6]. अ० उघाउियै [7]. अ० न० [में नहीं है], र० तो ।

८. अ० पाटमादे राणी, पं० पाट महे दे राणी, न० पाठ में राणी। ९. ग्या० री। १०. पं० अ० न० भूजडी, र० भूजली, ग्या० भोजा। ११. अ० राजमती कुं। १२. पं० र० न० देज्यो जाइ, अ० जाइ बधाइ, ग्या० देज्यो जी जाइ।

(३५)

हिव[1] जोगी[2] नय आय[3] कीयउ प्रवेस[4]।
भगवा कापडा मइला वेस।
कुसल कुसल आइस कह्यउ[5]।
हिवइ[6] आइ छइ[7] ठिय[8] निरमल इ[9] चित्र।
दुषि दाधी[10] पंजर हुई।
जइ रे साधण गोवय मंदिर वाट[11] ॥ मु० ॥

(ऊपर की ·२ की तुलना० म० १७८·२ से)

म० में यह १८४ है, पं० में २२०, र० में २२२, ग्या० में २२५, ना० में २३४, न० में २५५, अ० में २८४। किन्तु अन्तिम पंक्ति पं० र० ग्या० ना० में इस प्रकार है :

उणिरै (गोरी नै-ग्या०) दिवस न भूष न नींद्रडी रात्रि।

अ० में यह निम्नलिखित तीन और पंक्तियों के साथ म० की अंतिम पंक्ति के पूर्व आती है :

वीसलदे विरहै करी।
गोरी नित्त हियै वहैं अधिक उचाट।
बार बरस पूरण भया।

१. पं० र० ना० न० ग्या० तठइ, अ० तत्र। २. ग्या० जोगी नइ, अ० जोगना कुं। ३. पं० र० अ० ग्या० न० राणी, ना० राणी नुं। ४. पं० र० अ० ग्या० न० ना० कीयउ आदेस। ५. अ० न० कहैं, पं० कहउ। ६. पं० र० अ० न० ना० उवा तउ, ग्या० तव तइ। ७. पं० र० अ० न०

ना० ग्या० गोरडा । [८]. पं० र० अ० न० ग्या० दीठी । [९]. पं० र० अ० ना० ग्या० निर्मल गात्र, न० निरमल वान । [१०]. अ० उठि उठि । [११]. अ० मंदिरे जोवइ प्री तणीबाट ।

(३६)

हिव[१] जोगिनउ प्रोलि[२] बइठउ छइ[३] आइ[४] ।
सीस जटा घटि भसम लगाइ[५] ।
आरधी[६] राउ[७] कलमलय[८] ।
सुललित[९] वांणीय रूप[१०] असेस[११] ।
राजमती तू तउ[१२] गोरडी[१३] ।
वीसल राजा नुं न दीयउ संदेस ॥ ध्रु० ॥

म० में यह १८५ है, पं० में २२१, र० में २२३, ग्या० में २२६, ना० में २३५, न० में २५४, अ० में २८२ । किंतु पं०, र०, ग्या०, ना० न० क० में अंतिम पंक्ति इस प्रकार है :

गोरी दिन चिहुं माहिं आविस्यइ धरह नरेस ।

[१]. पं० र० तब, न० अ० ग्या० ना० [में नहीं है] । [२]. पं० अ० न० ग्या० जोगिनउ द्वारि, र० जोगिन उ द्वारै, ना० जोगने बारणै । [३]. पं० र० ग्या० बइठउ । [४]. पं० र० जाइ । [५]. र० घटि भस्मीय लाय, न० धरि भसम लगाइ, ग्या० भसि भसम लगाइ । [६]. पं० र० अ० न० ना० ग्या० आधइ । [७]. ० र० अ० न० ना० ग्या० अंतेवर । [८]. पं० र० अ० न० ग्या० कलमली, ना० कलानलीस । [९]. पं० र० उतउ सुललित, ना० लाल । [१०]. पं० र० अ० न० ना० ग्या० कहइ । [११]. पं० र० अ० न० ना० ग्या० सदेस । [१२]. पं० ना० ग्या० सु कहइ, अ० सु तुम्ह, र० न० सुंदुं । [१३]. पं० ना० जोगीयउ, अ० कहउ, न० कहइ जोउिनउ, र० ग्या० जोगिनउ ।

(३७)

कवण देसावर[१] कवण थे थांन[२] ।
थारा[३] दरसण कइ[४] बलिहारीय जाउ[५] ।

घांघल्या ल्यउ थारी[६] जीन की[७]।
दिन दस मांहि[८] आवय जउ हो[९] राउ[१०]।
रतन जडित तो नइ[११] मेषली।
सोना की मुद्रा[१२] घालिस्यउ काँनि[१३]।
नयणा[१४] राउ जी[१५] जब देखस्यउ[१६]।
देषि जोगी म्हांरा विरह की वात ॥ ध्रु० ॥

म० में यह १८६ है, पं० में २२२, र० में २२४, ग्या० में २२७, ना० ना० में २३६, न में २५६+२५७, अ० में २८५+२८६। पं० र० ग्या० ना० में अंतिम पंक्ति का पाठ है : जोगी बचन साचउ करि म्हारउ जानि।

न० अ० में ऊपर की प्रथम चार पंक्तियाँ न० २५६ और अ० २८५ की प्रथम चार है, और शेष चार पंक्तियाँ न० २५७ और अ० २८६ की अंतिम चार हैं। अ० २८५ शेष दो हैं :

सोना रूपा की द्युं जीभडी।
लाख टका द्युं तुरत गिणाइ।

और न० २५७ अथवा अ० २८६ की शेष दो हैं :

जौगना तोहि वधाइय देसि।
थारें सोना री सींगीय नाद पूरेसि।

[१]. र० स्वामी कोण दिसाउर। [२]. र. न० कौण सुठाउ, पं० ना० ग्या० कवण सुठाइ, अ० कवण थारउ ठाउ। [३]. पं० थारइ। [४]. अ० [में नहीं है]। [५]. र० बलिय जाउं। [६]. न० थारा। [७]. न० जीभ (न ?) का, ना० जीभांरी, ग्या० जीनका। [८]. पं० र० ना० ग्या० स्वामी दिन चिहुं माहि, अ० न० दिन चिहुं मांहे। [९]. पं० जे आवइ, र० ना० जो आवै, अ० जइ आवसी, ग्या० आवेसी। [१०]. र० आप। [११]. पं० दउ, र० ग्या० द्यउं, न० दिउं, ना० द्यु। [१२]. पं० र० न० थारै सोना की मुद्राव, ग्या० थारइ सोबन मुरकी, न० हारा जडित मुद्रा। [१३]. पं० र० ना० ग्या० घालुं जा कानि, न० द्यूं कानि। [१४]. पं० र० न० ना० ग्या० नयणे।

[१५]. पं० रा० राउ, न० ना० राइ, ग्या० राव जी। [१६]. पं० र० न० ना० जब देखिस्यउं, ग्या० देष देषस्यां।

(३८)

तिण[१] वालंभ म्हानइ सउ[२] कह्यउ[३]।
तिणि[४] म्हानइ[५] दीधी छइ[६] जीमणी बांह।
साचउ कह्यो[७] जोगी[८] पालज्यो[९]।
कहि[१०] घरि आवस्यइ[११] मूंघ कउ[१२] नाह ॥ध्रु०॥

(ऊपर की ·२ की तुलना० स्वीकृत ८६·२ से)

म० में यह १६० है, पं० में २२७/२, र० में २२६/२, ना० में २४१/२, न० में २६१/२, अ० में २६०/२ है। ना० में .३ है: सो बात राजा पाली नहीं।

न० में .३ नहीं है।

[१]. पं० र० ना० तिणइ, अ० [में नहीं है]। [२]. पं० र० ना० विलंबी हिव, न० बिलंबाणउ हिव, अ० मोसुंरे क्यु। [३]. पं० र० कहउ। [४]. पं० र० ना० स्वामी, अ० उणि, न० [में नहीं है]। [५]. पं० र० मोनइ, अ० मोकुं, ना० मैने। [६]. पं० र० अ० दीन्ही था, न० ना० दीधी थी। [७]. पं० र० सा, अ० साच कहउ। [८]. अ० तुम्हे। [९]. पं० र० ना० पाला नहीं, अ० जोगना। [१०]. पं० र० न० हिवइ कवे, अ० कब। [११]. पं० र० न० ना० घरि आवइ हो। [१२]. पं० र० न० ना० धण कौ।

(३६)

जउ घर अवीयउ[१] मूंध कउ कंत।
साधण साधि स्यउ[२] मिलीय हसंत।
कलस वंदावइ[३] हरषइ फिरइ[४]।
धण बोलावइ[५] वीसल[६] घर माहि[७] आवि[८]।

वाजा जी वाजीया जागीय ढोल[९]।
आदित ध्यायउ कुल वडउ।
बोलइ छइ बंदण जयजयकार।
घरि घरि गूडी ऊछली।
घरि घरि तोरण मंगलच्यारि ॥ भु० ॥

(ऊपर की ·६, ·१० की तुलना० १०·३, १२·३, तथा १०·४, १२०·४ से)।

म० में यह १६३ है, पं० में २३२, र० में २३५, ग्या० में २३७, ना० में २४७, न० में २६७, अ० में २६५ (संख्या दुहराई है)। किंतु अंतिम दो पंक्तियाँ पं०, र०, ग्या०, ना० न०, अ० में हैं :

आज ससार सूयस वस्यउ।
सखि जउ घरि आवायउ वीसल चहुआण।

इनमें ·७,·८ भी किंचित् भिन्न और इस प्रकार हैं :

आनंद (हरषि-अ०) बधावा ऊछल्या।
बंभण भाट करइ छइ वषाण।

ग्या० में ·४,·५ नहीं है।

१. पं० र० ना० ग्या० सखी घर आवीयउ न० अ० घरिहिं पधारीयउ। २. पं० न० ग्या० साधण सामि सिउं, अ० साधण सखीयसुं, र० साधण मिली। ३. पं० र० ना० ग्या० कलस जवारा, न० कलिनस वीरा। ४. ग्या० बधावीया, अ० हरष सु, पं० र० बांधीया, न० बीचिया, ना० बाहीया। ५. पं० र० ना० न० हरष चढ़ी धण बोलायउ बोल। ६. अ० आकरा तिथि धण बोलायउ बोल। ७. पं० र० अ० न० ना० दे घरि। ८. अ० न० आवीयउ, पं० आवीया, र० आईऊ, ना० आवीयो। ९. र० बाजिया ढोल।

(४०)

हे नकटी तूं तउ[१] देस ऊतारि[२]।
गलइ पहिरती हे फूलां की माल[३]।
लहुडउ सउं[४] घूंघट काढ़ती[५]।

छाती कउं बड़उ[६] तू देती हे[७] उलालि[८]।
कोयउ[९] आंजती[१०] आंष कउ[११]।
ए दुष[१२] मेल्ही म्हे[१३] माथइ[१४] मारि[१५] ॥ भु० ॥

म० में यह १६६ है, पं० में २३६, र० में २४१, ना० में २५३, न० में २७२/२, अ० में २०३।

१. पं० र० तूं, अ० (+२) देसां मांहि उतारि। २. पं० र० पाट उतारि, न० चीर उतारि। ३. न० फूल नी माल। ४. पं० नान्हे सउ, र० न० नान्हउ सउ। ५. पं० अ० गूंघट काढ़ती। ६. पं० र० तउ गात कउबड़, अ० गात्रकौ तू बड़ौ, न० गात्र को बाड़। ७. पं० र० अ० देतीय। ८. पं० रालि, र० डालि। ९. र० काया, अ० बांका। १०. अ० अंजती। ११. पं० र० आंकुड्या, न० आंषड्या। १२. पं० र० तिणि घणि, अ० तिणि दुषे, न० तिणि। १३. अ० म्हे मूंकी। १४. न० चितह। १५. न ऊतारि।

(४१)

रूसणा कउ[१] स्वांमी कहइ विचार[२]।
रूसणउ मीठउ मूंध भरतार।
प्रीत पारेवा आगली।
प्रीति मीठी[३] स्वांमी[४] माछली नीर[५]।
प्रीति[६] मीठी मोरां[७] दादुरां[८]।
स्वामी[९] प्रीत मीठी अम्हानय[१०] अरध संसारि[११] ॥ भु० ॥

म० में यह १६७ है, पं० में २४२, र० में २४४, ना० में २५६, न० में २७५, अ० में ३०६।

१. पं० रूसणा कयउ। २. पं० र० अ० सुणउ विचार, न० कवण विचार। ३. र० प्रीति थी। ४. न० जिसी। ५. पं० माटली नीर। ६. (+७). पं० र० प्रीति मोरां अरु, न० प्रीति मेहा। ८. अ० मेह सुं। ९. पं० र० अ० न० [में नहीं है]। १०. पं० म्हाक, अ० तिमि, र० न० म्हाकै। ११. पं० न० अरध सरीरि, र० अ० अधर सरीर।

(४२)

सूकड़स्यउं[1] धण[2] खोलीया[3] अंग।
तिलक सिंदूर सउं[5] मंडीया[6] अंग[7]।
कृष्नागरनी गाव[8] चोलीया[9]।
गलि कुसमावलि[10] पहिरती हार[11]।
भूषर कयसउ मोहीयउ।
त्रिभुवन मोहीयउ[12] जाति पमारि[13] ॥ भु० ॥

(ऊपर की '६ की तुलना० स्वीकृत २३'६ से)

न० में यह २०० है, पं० में २३५/१, र० में २३७/१, ग्या० में २३६/१, ना० में २४६/१, न० में २६६/१, अ० में २६८। किंतु इसकी अंतिम दो पंक्तियाँ पं० र० ग्या० ना० न० अ० में हैः झबकि करि दीवउ (दीवलउ—न० अ०) बोलीयो (संजोइयो—ग्या० न० अ०)

तठइ साईया (सवाया-ग्या०) हूया छइ मुंध भरतार।

१. र० न० सूकडि सिउं, ग्या० चंदन स्यउं। २. अ० न० गोरी। ३. पं० र० षोलीयउ, ग्या० षोलाउ। ४. अ० अंगि। ५. पं० र० न० ना० ग्या० न० [में नहीं है] सीसि ससोभत, अ० सीस सिंदूर। ६. पं० मानिय, अ० समारियउ, र० न० ना० मांडियउ। ७. पं० र० मंग, अ० अंगि, न० उमंग। ८. पं० र० किस्नागर, अ० कृष्ण अगर चोओ, न० उणामरच, ना० कृष्णागर कौ, ग्या० कृष्णागर चोवौ। ९. पं० चोचउ लीयउ, अ० न० लाइयउ, र० ना० बोलीयो। १०. अ० (+११) गलहै हिसउ गोरी कुसुम नउ हार, प० उणि गल पहिरउ कुसुमावलि माल, न० ना० गलि कुसुमावलि पहिरा हार। १२. अ० तठइ उमाहिया। १३. अ० तिन्है मुध भरतार।

(४३)

नागर[1] पांन आगइर[2] वाय।
काथउ[4] सोपारीय[5] लावसउ जाय[6]।

संजत करि[७] सेजइ चढ़ी[८]।
राइ रांणी[९] रह्या तिहां धरि गलि लाय[१०] ॥ भु० ॥

(ऊपर की ·५ की तुलना० स्वीकृत १२७·५ से)

म० में यह २०१ है, पं० में २३५/२, र० में २३७/२, ग्या० में २३६/२, ना० में २४६/२, न० में ३६६/२, अ० में २६६/२, अ० के पूर्वार्द्ध की पंक्तियाँ है :

सात सहेलीय मिलीय छै आइ।
बाहिर चौखंडी बैठी रे जाइ।
प्रेम प्रीतम तणउ जोइवा।
एक एका सुं हंसइ हसाइ।

ना० में इस छंद की ·१ नहीं है।

१. पं० अ० न० ग्या० [में नहीं है]। २. र० अडागरा, न० आडीगहर, ग्या० अडागर। पं० आडगरा, अ० अडोगर। ३. पं० र० अ० चाविजइ, न० विह्यजइ। ४. ना० सुंदर। ५. ना० बाटीया। ६. पं० ग्या० नइ फडस कपूरि, र० अरु पडसीयो कपूर, अ० नइ सुरभि कपूर, न० सूभी रे कपूर ना० सुरभि कपूर। ७. र० सजनि दुइ, पं० अ० ग्या० ना० साजति हुई। ८. पं० ग्या० सेजडी। ९. र० तठै राणी, न० ग्या० तठै राउ राणी। १०. पं० र० ना० हुआ लपट पूरि, अ० ग्या० न हुआ लटपट पूरि।

२.

म० न० अ० स० के अतिरिक्त छंद

(४४)

मिलीय सहेलीय कीयइ छइ[१] बात।
अगर चंदन स्यउं छांटीया[२] गात।
ऊकडा[३] लेजो[४] आकरा।

काथा[५] सोपारी[६] पाका जी[ ] पांन।
डूड़ा[७] तेजीय जालवउ[८]।
हालउ[९] चउरासीया साम्हा जांन॥ भु०॥

(तुलना० ऊपर की ·४ की स्वीकृत १८·४ से)

म० में २० है, न० में ·२६, अ० में २७, प्र० में १.४२, स० में १.४७। किन्तु ऊपर की ·३,·४,·६ प्र० स० में यथा ·४, ·५,·६ है और प्र० स० ·१, ·२, ·३ हैं :

कूंपर चढ़ावती बोलै बोल (भाट-प्र०)
अगर चंदन (तणी-प्र०) कीजइ बोल (आडि-प्र०)। (तुलना० म० २०·२)
भला भला ताजी चढ़ै (थे जालवो-प्र०)। (तुलना० म० २०·५)

१. अ० न० कीजइ छइ। २. अ० छांटई न छांटीजइ। ३. न० ऊकटणा,प्र० ऊंडा, स० ऊंटां। ४. अ० न० लेज्यो, प्र० लीधा, स० लीअइ। ५. प्र० स० आचरै। ६. प्र० स० बीड़ा। ७. अ० न० रूड़ा-रूड़ा। ८. अ० न० चालणा। ९. म० आया, न० हाल।

(४५)

काइं न[१] सराह्यउ[२] गोरी पूरब्यउ देस[३]।
पाप तणी[४] नहीं जिहां[५] प्रवेस।
जिण दिसइ अरथ[६] उदउ करइ।
एक बाणारसी अनइ[७] प्रियाग।
साग [२] सुं[८] सरिसी[९] मिलइ।
जिहां न्हायां जाइ[१०] जनम का पाप[११]॥ भु०॥

म० में ४० है, न० में ५१, अ० में ५३, स० में २·१०। किंतु स० में ·३, ·४, ·५ ·६ हैं :

(.३) अति चतुराई दीखइ घणी।
(.४) गंगा गया छै तीरथ योग।

(.५) वाराणसीं तिहां पर सजे ।
(.६) तिणि दरसण जाइ पातिग हासि ॥

प्र० में यह छंद नहीं है

[१]. अ० कान, स० क्युं । [२]. स० बीसरायो । [३]. न० स० पूरव देस । [४]. अ० न० स० पाठ तणउ । [५]. स० तिहां । [६]. स० सूरज, न० सूर । [७]. अ० अउर न० अरह । [८]. न० सायर संग । [९]. अ० सुरसर । [१०]. न० जावइ । [११]. अ० सवि पाप ।

(४६)

भाटिणी[१] कहइ सइंभर राउ[२] ।
सिसर[३] पूनिम षंड किम धाईयइ[४] ।
कला संपूरण भोगवइ ।
चोवा[५] चंदन अंग विलाइ[६] ।
चतुर[७] चउरासीया[८] साचवुं[९] ।
विलवलती काइं[१०] मेल्हीय जाइ[११] ॥ धु० ॥

म० में ८२ है, न० में ६१, अ० में ६५, प्र० में २·४१ तथा स० में २·४४ । किंतु न० अ० में उपर्युक्त ·५ नहीं है, और ·२ और ·३ के बीच निम्नलिखित पंक्तियाँ अधिक है :

देषतां मानव चित हरइ ।

मृगनयणी अरु अबला जी बाल (नारि-न०) ।

सगुण गुणवंती नयण विसाल । (तुलना० म० ४३·५ ·६,·४)

[१]. स० कुंवरी । [२]. अ० सुणि सैंभर वाल, स० सुणी सांभर्‍या राव । [३]. अ० प्र० ससिहर, स० सीसहर । [४]. अ० कि षंड थाइ, स० पूरा हो जाई, प्र० पूरो जाय । [५]. प्र० तूंया । [६]. स० तिलक सोहाई, प्र० अग लगाय । [७]. स० चरित्र प्र० चिरता । [८]. प्र० चारासी । [९]. स० हूँ आलंबू, अ० चालती । [१०]. न० मूंध । [११]. प्र० मेहली नै जाय ।

(४७)

आज स्वांमी[१] मोनइ[२] निट्ठ विहाण[३] ।
पडिवा कइ दिन[४] कहीयउ[५] जांण[६] ।
आज न राउलउ[७] सापड्यउ[८] ।
स्वामी तुम्ह स्यउ हूं रमती[९] करतीया आल[१०] ।
सदा स[११] सनेहीय सूवती ।
आज मूव ठउ तिउ[१२] पडूअ जंजाल[१३] ॥ भु० ॥

म० में ८३ है, न० में ६२, अ० में ६६, प्र० में २·४२, स० में २·४५ । किंतु ·४, ·५, ·६ प्र० स० में है :

(.४) पारि पहुर माही नूं मीली अंष (नविलागी आंष-प्र०) ।

(.५) उछ्इ पांणी ज्युं माछुली ।

(.६) जिंव जारि (जो सूनू-प्र०) ति उटुछु (तो ऊठऊ-प्र०) भंषि ।

इसके अतिरिक्त प्र० में ·२ नहीं है—केवल 'मुझ राति' शब्दावली उसकी आई है ।

१. अ० सखी । २. अ० मोकुं, प्र० [में नहीं है] । ३. स० विहाण । ४. अ० रहउ तहु । ५. स० कहइ छइ । ६. न० न जाण । ७. अ० निरालउरे, स० बीरालइ, प्र० निरालो । ८. अ० सीपड़ै, स० सीय पड्यो. प्र० सीर पड्यो । ९. अ० न० सामिसुं हसि हसि । १०. अ० करती हुँ आल । ११. न० सदा । १२. अ० आज सूनी सामी, न० आज सूनी हूं । १३. न० पडीय जंजाल ।

(४८)

बीज अंधार शुक्र जी वार[१] ।
महूरत नहीय छइ[२] चितह[३] विचार[४] ।
महा[५] विग्रह[६] ऊपजइ ।
जे उलिगाणउ[७] जी उलग जाइ ।
आवण कां[८] संसा[९] पड़इ[१०] ॥ भु० ॥

म० में ८४/१ है, न० में ९३, अ० में ९७, प्र० में २.४३, स० में २.४६। किन्तु न० अ० प्र० स० में ·६ भी है, जो म० में नहीं है :

तबहूं ही (जाणि—प्र० स०) हींमालइ गलिस्यां जी (राजा गलिया हो—प्र० स०) जाइ। (तुलना० स्वीकृत ४४·५)

(न०) हूँ जाग जिगणि हुई साथि रहाइ।

१. अ० नइ सुक्रजी वार। २. स० नहीया, प्र० न। ३. न० सरवर, प्र० स० कहइ। ४. प्र० स० बर नारि। ५. अ० न० धुरि माहें। ६. प्र० स० उपग्रह। ७. प्र० स० जे नर उलग। ८. स० इण महूरत, प्र० जायण-हार। ९. न० सांसउ। १०. न० पड्यउ।

(४९)

त्रीजई[1] घरि घरि[2] मंगलचार[3]।
चिहुं दिसइ कामिणि करइ श्रृंगार[4]।
रमइ सहेलीय[5] काजली।
घरि घरि कामिणी रमइ छइ[6] बाल[7]।
चंद्र बदनी[8] विलषी फिरइ।
वेगि पधारउ[9] वीसल राव ॥ ध्रु० ॥

म० में ८४/२ है, न० में ९४, अ० में ९८, प्र० में २·४४, स० में २·४७। किंतु प्र० स० में अंतिम पंक्ति है: स्नेह (नेह-प्र०) तूठी राजा औलगी मेलही (मेल्हि)।

१. स० ती तैं, प्र० कीजिय। २. अ० न० धुरा लगि। ३. अ० न० मंगलवार। ४. स० सयगार, प्र० सिणगार। ५. न० सहेलीय मिली। ६. प्र० स० मंडइ छइ। ७. न० आइ, प्र० स० खेल। ८. अ० तबहि चंद्र बदनी। ९. अ० आज रहियइ घरे, न० इउ किम चालियइ।

(५०)

चउथि अंधारीय[1] मंगलवार[2]।
चंद उजवालउ करइ[3] घरि बारि।

बरत कीयउ[४] घरि आपणइ।
चउथि जुहारउ तुम्ह[५] सइंभर राव।
बचन अम्हारउ मानिजो।
हरषय कीयउ जोइणी[६] ठाइं ॥ भु० ॥

म० में ८५ है, न० में ६५, अ० में ६६, प्र० में २·४५, स० में २·४८ है। किंतु न० में ·१,·२,·३ नहीं है।

१. अ० न अँधारी नइ। २. अ० आदितवार, स० नई मंगलवार। ३. अ० स० घरि ४. स० बरति करइ, प्र० बरत करा। ५. अ० प्र० स० [में नहीं है]। ६. अ० हरष करी रहियइ, न० हरष करेज्यो स० हरखि के पूजो, प्र० हरष का पूजो।

(५१)

पांचमि कउ दिन पहुतउ जी[१] आइ।
आवतउ होइ घरि[२] छंडी जाइ[३]।
तूं अजमेरां कउ राजीयउ[४]।
पुत्र[५] नहीं अछइ कलत्र[६] परिवारि।
सइंभरि थांभणइ बइसणइ[७]।
राइ चहूं आंण किउं उलग जाइ[८] ॥ भु० ॥

म० में ८६ है, न० में ६६, अ० में १००, प्र० में २.४६, स० में २.४६।
१. अ० पहुतइ छइ। २. अ० आज तुम्हें वर, न० आज मोनइ तू०, प्र० अठै तोए, स० ऊडत होइ ३. अ० छाडि म जाइ, न० छोडि जाइ, स० छोडौ हो राय। ४. अ० राजवी। ५. अ० न० प्रीति। ६. अ० न० नहीं तुम्ह कलत्र, स० कलत्र सहू, प्र० कलत्र लषमी। ७. अ० न० थारइ जी उग्रहै, प्र० स० थाणउ बइसणइ। ८. प्र० स० औलगि नीवारि।

(५२)

रहि रहि कांमिणि[१] अंचल छोड़ि।
उलग जाइ ले आवउ[२] कोडि[३]।

देस उडीसइ नइ[४] गम करउ[५]।
दुष्ट[६] बचन बोल्या[७] तिणि ठाइ।
छठि म्हे निश्चइ चालिस्यां[८]।
राजा[९] उमाहीयउ उलग जाइ ॥ भु० ॥

म० में ८७ है, न० में ६७, अ० में १०१, प्र० में २. ४७ स० में २.५०। किंतु न० में .४ है :

कुबचन बोलण तणा ए पग।

और प्र० स० में ·५, ·६ हैं :

(.५) छउ सातम दिन आवीयो। (छठि को दिन ऊगीयो-प्र०)
(.६) निहचइ औलगि चालणहार (चालै राय—प्र०

[१]. अ० न० गोरडी। [२]. अ० स्यावां हीरा हम, स० हूं आऊं। [३]. स० न बहोड़, प्र० बहोड़ि। [४]. न० स० [में नहीं है।]। [५]. अ० गम करां। [६]. अ० गोरडी, अस० ये। [७]. अ० बोलै जी वयण, स० बचन। [८]. अ० चालण नवि द्युं, न० मदन विचि वासिया। [९]. न० मेलि (मेल्हि)।

(५३)

राइ बचन सुण्या[१] राजकुमारि[२]।
पलिंग छोड़ी पडइ[३] धरती पडइ[४] नारि[५]।
बेटी राजा भोज की।
उठि उकरइ[६] बीसल राव।
कर जोड़ी[७] नाल्ह कहइ[८]।
स्वामी[९] सातिम कउ दिन राणी मनावि[१०] ॥ भु० ॥

म० में ८८ है, न० में ६८, अ० में १०२, प्र० में .२ .४८, स० में २.५१। किंतु न० में .४, .५ हैं :

(.४) कर झाली ऊंची ल्यै बीसल राउ।
(.५) नाह कहइ सामी सुणउ।

और प्र० स में .४ है :

उठइ उछंकि लेइ (राय धरि-प्र०) अंकमाय (अकरवाल-प्र०)

[1]. न० स० सुणि हो। [2]. न० स० राजकुमार। [3]. अ० स० छाड़ी, न० प्र० छोड़ि नइ। [4]. प्र० धरती ढली। [5]. प्र० [में नहीं है]। [6]. अ० ऊंची हो झालि लें, न० कर झाला ऊंची लै। [7]. अ० कर रु जोड़ि। [8]. अ० गोरी भणइ, स० नरपति कहइ, प्र० नाहलो कवि। [9]. न० प्र० स० [में नहीं है]। [10] अ० न० मेल्हि म जाइ, स० रहियौ हो राव, प्र० रह्यो भूपाल।

(५४)

चंद बदनी धण दीठी[1] नाइ।
सिसहर[2] भाण[3] गिल्या जाणे[4] राह।
आंसूअ राल्या[5] मोर जिउं[6]।
कामिण यात[7] परीछी छइ वाइ[8]।
आठमि कउ दिन[9] आवीयउ।
बरत करइ[10] जिहां[11] बीसलराउ॥ मु०॥

म० में ८६ है, न० में ६६, अ० में १०३, प्र० में २.४६, स० में २.५२।

[1]. अ० न० विलखी। [2]. स० सीसहरण। [3]. स० जाणे। [4]. न० जिम, स० छइ। [5]. न० मासइ जी, स० ढाल्या। [6]. म० मोर जउ। [7]. स० कत मिल्या तिणी ठाई, प्र० कंत परीसिणय। [8]. अ० परीछवै, न० परछवौ। [9]. अ० वरत करउ तुम। [10]. न० करेज्यो। [11]. न० तुमे, स० घरि, प्र० तिहां।

(५५)

नवमिइ घरि घरि मंगल होइ।
घरि घरि पूज रचइ[1] सबि कोइ।
नव[2] दिन पूजा नव रतां।

बल बाकुल थे बड़ा कराइ[3]।
भोग लेई जगदीश्वरि।
इणि परि पूजइ[4] वीसलराउ ॥ ध्रु० ॥

म० में ६० है, न० में १००, प्र० में २.५०, स० २.५३। किंतु न० में म० ·५, ·६·७ के स्थान पर हैं :

(.५) इण परि वेग तूं पूज रचाइ (तुलना० ऊपर की .६)
(.६) देवी पुजी सु प्रसन हुई।
(.७) जिम मनह मनोरथ सफला जी थाइ।

अ० में १०४ इसी विषय का है, किंतु पाठ इस प्रकार नितांत भिन्न है :

चालस आज जो वीसलराउ।
राजमाहे हुवउ एक कहाउ।
जाल झलंपी गोरडी। (तुलना० स्वीकृत ५ ८·३)
तब आइ बोली पलंक कै छेह।
आज तौ कोई चालै नहीं।
नवमी के दिन कीजै तब नेह ॥ ध्रु० ॥

[1]. स०पूज करइ। [2]. न० नवमइ। [3]. न० ले भोग कराइ, स० पूजा रचौ ठाई, अ० पूजा रचि राय। [4]. स० पूजइ छइ।

(५६)

दसराहा दिन हरषीयउ[1] राइ।
तुरिया वालि छोड़े वाजाइ[2]।
चउरासीया तिहां[3] आवीया।
बाजा हो[4] वाजइ घुरइ नीसांण।
राजा आहेडइ चालीयउ।
उडीय षेह नइ छाया[5] भाण[6] ॥ ध्रु० ॥

म० में ६१ है, न० में १०१, प्र० में २·५१, स० में २·५४। किंतु न० में ·२, ·३ हैं :

(·२) वाड हूंती छोड्या तुरा विलाइ।
(·३) चतुर चउरसिया सवि मिला।

(तुलना० स० ४५·४, स० ७०·३)

अ० १०५ इसी विषय का है, किन्तु पाठ इस प्रकार नितांत भिन्न है :

दसमी के दिन चढ़ै राय भुवाल।
चतुर चौरासीया भाक भमाल।
आज आहेडउ रे चित बस्यउ।
पास ऊभी गोरी ढोली छै बाउ।
आवस्यां सांभ सहु।
सभा बोल दीधउ तब बीसल राउ ॥ भ० ॥

[1]. न० आवियउ, स० पहुँतो छइ। [2]. प्र० स० पलाएयां छइ ठायै हो ठाइं। [3]. स० सहू, प्र० जीहां। [4]. न० बाजिय। [5]. न० नइ चालियउ, स० नइ सूझई, प्र० न० सूझै। [6]. प्र० सूर।

(५७)

हरि बासर[1] दिन पहुंतउ[2] राइ।
चंद बदनी तव[3] लागी[4] पाइं।
बरत करिज्यो[5] घर आपणइ।
पारणउ कीजसी[6] द्वादशी योगि।
वली वइगा[7] पधारिजो।
स्वामी[8] तेरसि कइ दिन कीजस्यइ[9] भोग ॥ भु० ॥

म० में ६२, न० में १०२, अ० में १०६, प्र० में २·५२, स० में २.५५ है। किंतु न० में ·५, ६ है :

(.५) दुइ दिन राजा घरि रहइ।
(.६) जिम वले कीजियइ तेरसी भोग।

प्र० स० में केवल .५ का पाठ न० के सामन है : दोई दिन स्वामी थे बिलंबज्यो।

१. अ० इग्यास कउ, न० इग्यार। २. अ० न० स० पहुतउ छइ। ३. स० धन ४. अ० स० लागै छै। ५. न० करउ रे, स० करू। ६. स० पारणो कीधो। ७. अ० मुहुरत भलैं। ८. अ० प्र० स० [में नहीं है]। ९. प्र० कीज्यो।

(५८)

चउदिसइ बात[१] करउ[२] भूपाल।
सामुहीय छींक हणीय कपाल[३]।
चउरासिया[४] तिहि[५] बोलीया[६]।
सुणउ वर माल थे[७] सांभरो[८] राउ।
कुसल उलग करी बाहुडउ।
आवती तेरस उलग जाइ ॥ भु० ॥

म० में ६३, अ० में १०७, न० में १०३/१. प्र० में २.५३, स० में २.५६/१। किन्तु न० में उपर्युक्त ·२ तथा ·३ के बीच अतिरिक्त है: चंदबदनी हम बीनवइ।

और न० अ० में ·४ का पाठ है : सुणविवा लोचे (सउण वचालउ जी —अ० स०) वीसलराउ।

स० में भी ·४ का पाठ अ० न० का है। किन्तु उपर्युक्त ·६ उसमें नहीं है।

१. स० बरत। २. न० करेइ, प्र० जो करि। ३. अ० न० हुई ततकाल, अ० हणीइ कपाल, प्र० हण्यो जो कपाल। ४. अ० न० (+५) चतुर चउरासियां। ५. स० सहू, प्र० जीहां। ६. न० करइ पुकार। ७. प्र० [में नहीं है]। ८. प्र० सींभरा [राय]।

(५९)

अमावसि दिन[१] पहुतलउ[२] आइ।
पितरां[३] पूजि की[४] जीमावि नइ जोइ[५]।

आवउ प्रोहित राउ कउ।
सराध करावी[6] सइंभरां राइ[7]।
भोजन[8] भगति राणी करइ।
आगलि बइसि जीमासइ हो[9] राउ[10] ॥ भु० ॥

म० में ६४ है, न० में १०३/२, अ० में १०८, प्र० में २.५४ स० में २·५६।

[1]. अ० न० स० अमावसि कउ दिन। [2]. अ० न० स० पहुतउ छइ। [3]. न० पितरांने। [4]. अ० स० (+५) पिंड भरावै छै राउ, न० षेट पराइउ जाइ, प्र० पिंड भराववा जाय। [6]. स० सरायो, प्र० सरावी। [7]. न० तूं बीसल राउ। [8]. न० भाव। [9]. अ० प्र० जीमाडियउ, न० णउमणियउ, स० जिमायो छइ। [10]. न० आइ।

(६०)

रहु रहु गोरडी[1] मूंध[2] म रोइ।
ले लोटउ[3] मुष काजल धोइ।
फूटि रे हीया निसाहसी[4]।
सोनउ सोलहउ काइं कियउ[5] लोह[6]।
झलिहलि[7] दीयउ रे[8] फूटउ नहीं।
राजा बीसल तणइ[9] रे विछोह ॥ भु० ॥

म० में १०३ है, न० में १२५, अ० में १३४, प्र० में ३.४, स० में ३·३। किन्तु प्र० स० ·४ है : पाथरी घडीयो कै त्रीषठ (त्रिणक लै-प्र०) लौह।

[1]. प्र० स० वेहनडी। [2]. स० बचन तू, प्र० मनह। [3]. स० लोटिका प्र० लोठी। [4]. न० उसाससूँ, स० नी बालूवा, प्र० नुं भालवुं। [5]. अ० न० दहि कियउ। [6]. न० छार। [7]. न० (+८) आज हियानूं, प्र० (+८) झलहलायो। [8]. अ० रेह, स० [में नहीं है]। [9]. स० साउणा प्रीतम तणो, प्र० म्हारा सगुणा स्वामी तणै।

(६१)

जाकइ[१] घरि[२] हिरणाषीय नारि ।
ते किम भमइं[३] परायइ[४] वारि ।
कइ मूया कइ मारिया ।
वलीय[५] न पूछीय[६] धण केरीय[७] आस[८] ।
विरह विआकुल वीनवइ ।
धण मरती नवि लावए बारि[९] ॥ ध्रु० ॥

म० में १२१, न० में १६६, अ० में १७५, प्र० में ३·२३, स० में ३·२५ । किन्तु ·५ की पाठ न० अ० प्र० स० में इस प्रकार है ।

नयण दुइ (ने-से०) स्रावण (सारंग-स० प्र०) हुइ रह्या (रह्यो स०) ।

१. अ० न० जांह कै, स० जेकै । २. न० बार । ३. अ० किम जाइ जी. न० किम जावइ । ४. अ० अबरां के, न० अवरां तणी, स० पार कइ । ५. अ० न० जोवलीय, प्र० बलती । ६. अ० न पूछीय । ७. प्र० धण की । ८. अ० बात, न० प्र० स० सार । ९. न० सार, प्र० स० बार ।

(६२)

राय उडीसइ जी रहीयइ जाइ[१] ।
राजमती अजमेरह माहि ।
दस बरस इम[२] नीगमए[३] ।
इग्यारमउ[४] बरस पहुतउ छइ आइ ।
राजा[५] अजीय न बाहुडउ[६] ।
तेडावइ[७] बंभण वेग[८] पठाइ ॥ ध्रु० ॥

म० में १२६ है, न० में १७०, अ० में १८१, प्र० में ३·२४, स० में ३·२६ ।

१. प्र० रह्यउ ने ठाइ, न० रह्यउ रे जाइ, स० रहीयो । २. अ० बरस इग्यार । ३. अ० न० स० नीगम्या । ४. अ० बारमउ । ५. अ० राजा

जी। ६. अ० बाहुड्या ७. अ० हिव तेड़िवा, न० प्र० तेड़ी, स० तेड़ो। ८. न० प्र० स० जणाइ।

(६३)

बरस बावीस[१] मउ[२] बालक[३] वेस।
दंत कबाडीया[४] किरुलसा[५] केस।
हाट सेरी मांहि[६] जोइज्यो।
कय रे जोइज्यो घरि राजदुवारि[७]।
कय रे गांधी कय हाट।
कइ एते ठउडे[८] जोइजो[९] सइंभरउवाच[१०] ॥ भु० ॥

म० में १४१ है, न० में १८६, अ० में १६८, प्र० में ३·३३, स० में ३·३६। किन्तु उपर्युक्त ·५ के स्थान पर अ० न० में दो पंक्तियाँ हैं :

कइ रे पटुवा कै हाट में (हाटड़ी-न०)।
कइ रे सुधा सुरइयां की शाल।

और अंतिम पंक्ति के स्थान पर अ० न० में है :—छानउ नहीं राजा सइंभर वाल।

प्र० स० में उपर्युक्त ·५, ·६ नहीं है।

१. अ० बरस बत्तीस, न० बर बत्तीस। २. अ० हो, न० स० कौ। ३. अ० बालै, न० चंगो रे, स० वाला। ४. अ० दंत कबाडया, न० कमाड्या। ५. अ० कुरलित, न० अकुलित, स० किलकिल। ६. अ० सेरी विच, न० सेरा विच, स० ब्रिहाड्या कइ। ७. अ० सही राजदुवारि, न० स० राजदुवारि। ८. अ० (+६) ईये ठौड़े फिरि जोइज्यो, न० ए ठोडे जोइ लीजो। १० अ० वाल, प्र० राय।

(६४)

पंडीयउ बोलइ[१] धरह नरेस[२]।
एक सती[३] तो नइ[४] दीयउ रे[५] संदेस।

तू चिरजीवे[६] बहिनडी।
धणीय[७] म्हारउ[८] अछइ[९] सइंभर राव।
तूं तउ[१०] उड़ीसा कउ धणी।
म्हाकउ[११] उलगाणउ धरि दे नइ खदाइ[१२] ॥ भु० ॥

म० में १५४ है, न० में २०३, अ० में २२१, प्र० ३·४६, स० में ३·४६।

[किन्तु म० १५३ में ब्राह्मण जिस 'नरेश' से मिला है वह अजमेर का राजा है। न तो वह धार का है, और न उड़ीसा का।]

१. अ० वीनवै, न० स० कहै हो, प्र० स० कहै सूणी। २. अ० न० सुणउ नरेस। ३. स० (+४) उणी गुणवंती। ४. अ० तुम्हां, न० तूनइ। ५. स० कह्योउ। ६. अ० न० तू बीर हूं, स० तू बीरा में। ७. (+८) अ० म्हारउ उलगाणउ धणी, स० लाडिलौ धणी, प्र० आमारौ प्रीउ। ८. अ० म्हाकउ। ९. अ० छइ। १०. प्र० स० तूं। ११ अ० न० थांकौ, प्र० स० थारउ। १२. अ० न० हम (मो—न०) घरहि पाठइ, स० घरि बेगि पठाव, प्र० घरि पठाय।

३

म० अ० स० के अतरिक्त छंद

(६५)

पंडीया गोरडी[१] किण परि[२] दीठ।
संदेसइ कइ[३] मिस[४] आवीय नीठ[५]।
आंसूय मोरे लीया[६]।
जउ[७] दुबल[८] हुइय छय षरीय करंक।
आषंडीए ए रतनावली[९]।
तूट पडइ[१०] रतनालीय[११] धण कउ[१२] कंत[१३] ॥ भु० ॥

म० में १५६ है, अ० में २५०, प्र० में ३.५३/१, स० में ३·५६।

[1]. अ० बलि कहि गोरडी, स० पंडीया ते गोरडी। [2]. अ० किण विध, स० किणइ दुख, प्र० को दुख। [3]. स० संदेसोई। [4]. स० कह्यो। [5]. स० धन नीठ। [6]. अ० रालइ धण मोरज्युं, स० पडै जगी रेलिया। [7]. अ० स० [में नहीं है]। [8]. अ० स० दूबली। [9]. अ० प्र० स० रतनालीयां। [10]. स० पड़ैलो। [11]. अ० स० [में नहीं है], प्र० लो। [12]. अ० स० धणकेरो हो। [13]. अ० प्र० स० लंक।

(तुलना० .१ की स्वीकृत १०५.१ से)

(६६)

जउ जउ रे[1] पंडीयउ[2] कहइ संदेस।
तिम तिम झूरइ[3] धरह[4] नरेस।
कइ रे तूं कांमणि कांममी[5]।
कइ रे तुंरीया कउ[6] सयल[7] जंजीर।
कइ रे तूं बंधण[8] बांधीयउ।
एक दरसउ[9] तुम्ह घरह संभालि[10]।
साधण झूरइ[11] अति घणउ[12]।
थोहर आंगणइ[13] सूकीय[14] पाकी डाल[15] ॥ भु० ॥

म० में १६० है, अ० में २५१, प्र० में ३.५३/२, स० में २.५७। किन्तु .७ के स्थान पर अ० में है :

अउर विमासण जन करउ।

[1]. स० जीम जीम। [2]. अ० दियइ रे। [3]. अ० झूर। [4]. अ० झुरइ। [5]. अ० कामिणे कामिणयो, स० कांमणी कामणै, प्र० कामण कामणयो। [6]. अ० रे जडियो, स० भरीयो, प्र० तुं भरीयो। [7]. अ० सबल। [8]. अ० बंधणे। [9]. अ० एक रिस्यउ, स० एक सरां, प्र० एक सरौ। [10]. अ० तुम्हे घरि दिसा हालि, स० प्र० राइ घरह सीधावि। [11]. प्र० स० नल। [12]. प्र० स० प्यंगल हुई। [13]. स० ओकई, प्र० थारै आंगणे। [14]. अ० स० सूकइ। [15]. अ० चंपा की डाल, प्र० स० चंपा की माल।

(६७)

पंडीयइ चीरी दीन्ही राउ कइ हाथ।
कागल बाचतां झंफीयउ हाथ।
गुपति पणइ[1] तिण[2] वाचीयउ[3]।
नव जोवन नव रंगइ नेह[4]।
अहनिसि झूरइ[5] गोरडी।
वीसल राजा[6] तणइ रे[7] विछोह[8] ॥ भु० ॥

(तुलना० .१, .२ की क्रमशः स्वीकृत १०४. १ तथा म० १५६.८ से)

म० में १६१ है, अ० में २५२, प्र० में ३·५४, स० में ३·५८ है। किन्तु म० ·१, ·२ के स्थान पर अ० में हैं :

वलि वलि चीरीय हाथि ले राइ।
कागल वांचै हो संभर राइ।

और प्र० स० की ·१, ·२ हैं :

(·१) दुष्ट गचन बोल्या तिणि ठाई (नृप जाय-प्र०)।
(.२) ले चीठी आपी तणी राई। (ले चीरो आप छै वाय-प्र०)

[1]. प्र० स० इसा गूपती बचन। [2]. अ० सवि, स० तो, प्र० उण। [3]. अ० वांचीया, प्र० बंचीया। ४. प्र० नवरंगो नेह। [5]. स० समरई। [6]. स० सांभल राजा, प्र० सींभरया राव। [7]. स० तणौ, प्र० तणै। [8].स० सनेह, प्र० बिज्योग।

(६८)

चीरीय बाचतां[1] दीठउ राइ[2]।
ततषिण देव पधारीया आइ।
कांइ वीसल[3] विलषउ[4] भयउ[5]।
सूना पाटण[6] देस षंघार[7]।
कर जोड़ी राजा कहइ[8]।
देहि विदा बलि मुझहि मुरारि[9] ॥ भु० ॥

म० में १६२ है, अ० में २५३, प्र० में ३·५५, स० में ३·५८।

[१]. स० बांची। [२]. पेखियउ राइ, स० देखौं तब राई। [३]. स० राजा। [४]. (+५) स० मन बिलखायो। [५]. प्र० फार। [६]. अ० सूनौ हो पाटण। [७]. अ० देवगधार। [८]. अ० राजा भणइ, स० नै राई बानई। [९]. अ० हिव मोहि म मार, स० मौ मुगती दातार, प्र० मो श्री क्रुन मुरारि।

(६९)

चीरीय बांचीय[१] दुय जण[२] राइ।
वीनवय[३] जोसीय ऊभडउ[४] आइ।
उलगाणानय[५] वेग[६] चलाविज्यो।
वचन अम्हारउ[७] जाणि म जाणि[८]।
ऊभडउ[९] जोसीय[१०] वीनवइ।
गोरडी छंडिस्यइं हिव वलीय[११] प्रांण॥ भु०॥

(तुलना० .३,.४ की क्रमशः स्वीकृत १०६.३ तथा २९.४ से और .५ की ऊपर की.२ से)

म० में १६३ है, अ० में २५५, प्र० में ३·५६, स० में ३·६०। किन्तु ·५ अ० में इस प्रकार है।

जो किम राइ न चालिस्यै।

और प्र० स० ·२,·३,·६ है :

(·२) करणो जोसी ऊभौ तीणी ठाइ।

(·३) आजि चलावै देव हूइ।

स० (·६) ये घरि चालो नू लावो हो वार।

प्र० (.६) ईम करतों देव की आण।

[१]. अ० बचावीय, स० बाचइ छइ। [२]. अ० दुहुं जणा, स० दोही। [३]. प्र० स० करणो। [४]. अ० ऊभीय, स० उभौ तिणि। [५]. अ० ओलगाणा कुं। [६]. अ० [में नहीं है]। [७]. अ० वचन अम्हाकौ। [८]. स० मांनो नू मांन। [९]. स० कर जोडे, प्र० कर जोडी। [१०]. स० दूज, प्र० नै। [११]. अ० ततखिण।

(७०)

मलयइ लागी[१] वेरू[२] राना राइ[३] ।
राजा नइ[४] राणीय लीयउ रे[५] बुलाइ ।
वीसल दे[६] घर पाठवइ[७] ।
नमि नमि दुइ जण[८] करइ जुहार ।
राज करजो घरि आपणइ ।
रांणी[९] कोडि टकां कउ[१०] नवसर[११] हार[१२] ॥ भु० ॥

(तुलना० .६ की म० ८१.५ से)

म० में १६६ है, अ० में २६१, प्र० में ३·६१, स० में ३.६३ । किन्तु ऊपर की ·६ अ० में यथा ·४ है, और ऊपर की ·४,·५ के स्थान पर यथा ·५,·६ हैं :—

भावज म्हांकी कुं सौंपज्यो ।
जिंहर को पीहर अछइ भोज की धार । (तुलना० स्वीकृत १०८·६)

स० में .१, तथा ·२ परस्पर स्थानांतरित है, और प्र० स० ·३ है :

उलिगाणउ घरि चालियौ । (तुलना० स्वीकृत १०६·३)

१. अ० स० गलहि लागी, प्र० गलि लगाय । २. अ० बेऊ, स० अरू, प्र० तिहां । ३. अ० रूना हो राइ, स० रुदन कराइ, प्र० दोय रोय । ४. अ० पाट मा दे, प्र० राजा । ५. स० लेइ । ६. स० उलिगांणउ । ७. अ० हिव चालिस्यै । ८. स० दूणौ । ९. स० राणी नइ दीयो । १०. प्र० राणी [ट] का कोट को । ११. प्र० दीधो । १२. प्र० हार ।

४

म० स० के अतिरिक्त छंद

(७१)

चालउ उलगाणउ लेइ छइ सउण ।
राजा नइ चालतां बरजस्यइ कउण ।

सात बरस आगे रही[1]।
चीरी दे न देइ[2] नवि मोकल्यउ[3] कोइ।
हिवइ कइ गोरडी तपइ।
इसीय बातां नहु जुगतीय न होइ ॥ भु० ॥

(तुलना० .१,.२ की स्वीकृत ५७.१,.२ से)

म० में यह ५३ है, प्र० में २'३३, स० में २.३६। किन्तु प्र० स० में १,'२,.५,.६, इस प्रकार है :

('१) ऊलग जाए सजौ (कियो—प्र०) समदाव।
(.२) हंसि करि गोरडी पूछइ राव (नाह—प्र०)।
('५) लाहा लेता जनम गौं।
('६) तुय करे (तै करै राजा—प्र०) तिसी तोथी (तुझ थी—प्र०) होइ।

[1]. स० पेहलो रह्यो, प्र० पहैलो रहूं। [2]. स० जएह, प्र० झिएा। [3]. प्र० मत मोकलो।

(७२)

पंडीयउ चाल्यउ जगनाथ कइ देस।
छंडीया गढमढ[1] सयल असेस।
छंडीय[2] परबत दूभर घाट।
उत्तर दिसहि[3] चालीयउ[4]।
चालीयउ प्रोहित राव कइ।
देस उडीसय[5] पहुतलउ[6] जाइ ॥ भु० ॥

म० में यह १४८ है, प्र० में ३'३७, स० में ३'४०। किन्तु स० में ऊपर की .५ यथा .३ है, और '४ तथा .५ हैं :

('४) जाई पर भूमि कियो प्रवेश।
('५) घाठ दुर्घट ते लांघीया।

[1]. प्र० स० मंदिर। [2]. म० छुंडीया चउबारा चउषंडीया (तुलना० स्वीकृत ६२'३)। [3]. प्र० दिसा जो। [4]. प्र० चालीयउ बाट। [5]. स० सातमइ मास। [6]. प्र० पौहूतो।

(७३)

पंडीयउ पूछय किहां परधान।
राजा कहइ[1] विवाणउ मान[2]।
एक अंतेउर वाहरउ।
देस उडीसा कउ परधान ॥ भु० ॥

(तुलना० .३ की म० १०६ .५ से तथा .४ की स्वीकृत १०६.२ से)

म० में यह १५५ है, स० में २२१। किन्तु स० में ६२'४, मात्र मिलती है, जो स० .६ हैं, शेष निम्नलिखित है :

('१) पाड्यो उसारै तेड्यौ छइ राई।
('२) छीनी उलगी मांई सूं कही।
('३) नां ईम कहीयो देव सूं।
('५) लाख पाखर आंगइ जुड़इ।

[1]. स० राइ चलायो। [2]. स० चउगिणइ मान।

५

म० न० अ० के अतिरिक्त छंद

(७४)

दखिण भूम कउ[1] एह बिचार।
सनांन तणउ जिहां नहीं आचार।
कांचली नहीं नारी तणइ।
पहिरण की नवि जाणइ ए सार।

कछोटा तिहां[२] पहिरणइ।
बालउ देस नउ जनम[३] अवतार॥ भु०॥

म० में यह ४१ हैं, न० में ५३, अ० में ५५। किन्तु न० अ० में '४ है:

(न०) लीह नइ लाज नहीं जिण देस।
(अ०) लाज नै लीह को नहीं सचार।

[१]. अ० न० देस कउ। [२]. अ० जिहां। [३]. न० तणउ रे आचार।

(७५)

बात[१] रीति हुई[२] मारू कइ देस[३]।
रांतीय कांछली[४] फूटरा वेस।
नीली धड ऊपर[५] भली[६]।
झीण लंकी[७] महा[८] दीसइ ए नारि[९]।
सरस कंठ ति सोहामणउ॥ भु०॥

(तुलना० .४ की स्वीकृत ३४.४ से)

म० में यह ४३/१ है—केवल छंद-संख्या नहीं है, न० में ५४/१, और अ० में ५६/१।

[म० न० अ० तीनों में केवल ५ पंक्तियाँ इस छंद में हैं, जब कि शेष सर्वत्र ६ पंक्तियाँ से कम का छंद नहीं हैं।]

[१]. अ० बारूय, न० वारूं है। [२]. अ० न० [नहीं है]। [३]. अ० न० मारू तणै देस। [४]. अ० न० लोवड़ी। [५]. अ० न० कांचली। [६]. अ० पहिरणै, न० तिहां पहिरणइ। [७] अ० पातलै लंकि, न० पातली लंक। [८]. अ० नै, न० नइ [९]. अ० भीनहि हो वानि, न० फूटरी ए नारि।

(७६)

तीरथ घणा तिहां[१] मारूकइ देस[२]।
कुच दुइ फूटरा अधर सविसेस।
रूप अधिकी छइ मेदनी।

सगुण गुणवंतीय नइण बिसाल।
देषतां मानव चित हरइ।
मृग नइणी अरु अबला जी बाल॥ भु०॥

(तुलना० .३ की स्वीकृत ३४.३ से, और .४, .५, .६ की क्रमशः न० ६१, तथा अ० ६५ की .६, .४, .५ से)

म० में यह ४३/२ है, न० में ५४/२, अ० में ५६/२ तथा ५७।

अ० में निम्नलिखित पंक्तियाँ .१ के अनंतर अधिक हैं :

वेसि भलै गोरी कामिनी (भला तिहां नार का—न०)।
जिहां टंडा हो पाणीय निरभय देसि।

और अ० में ·२ के अनंतर अधिक है— वयणे हो बांकीय बोलणी।

किन्तु अ० में म० ४३·३ यथा उसकी ५७.१, म० ४३·२ यथा ५७·२ और ऊपर की पंक्ति यथा ५७·३ है। छंद का संगठन पूरी रचना में कहीं इस प्रकार नहीं हुआ है। इसलिए यद्यपि म० पाठ में एक पंक्ति कम है, किन्तु अ० के पाठ से उसकी ठीक पूर्ति नहीं होती।

[१]. अ० न० छै। [२]. अ० मारूअ देसि, न० मारू तणइ।

(७७)

नीका हो[१] उलग पट[२] नीका हो[३] वेस[४]।
बांह सुआली[५] भूलइ केस[६]।
लंक चीताह कउ धणह ज्यउ[७]।
डसल[८] भुवंगा[९] अहर प्रवाल।
कठन पयोहर तनक स्याह।
धन फेरइ सउ सउ वार॥ भु०॥

(तुलना० .६ की स्वीकृत ४८.८ से)

म० में यह ६६ है, न० में १०५ और अ० में १११। किन्तु न० अ० में उपर्युक्त ·६ नहीं है, और अंत में ये तीन पंक्तियाँ और हैं :

इसडीय अउर न राजकुंआरि।

राज जी देखि कर मोहियउ।

कर दोइ सुं करै काम विकार।

और न० में म० .१ के पूर्व भी निम्नलिखित दो अतिरिक्त पंक्तियाँ हैं :

जांह के घर हरिणाषी नारि। (तुलना० म० १२१.१)

तांह कउ नाह उलग जाइ। (तुलना० म० ६८·६ तथा म०१२१·२)

१· अ० चंगा हो। २. अ० चरण, न० उलपट। ३. अ० न० चंगा हो। ४. न० वाम। ५. अ० सुहालडी, न० मुहाली (सुहाली ?)। ६. अ० कडरुल्या केस, न० वेणी रुल्या केस। ७. अ० न० धण हूयउ। ८. अ० न० दसण। ९. अ० न० सुचंगा जी।

(७८)

गोरडी[1] बोलइ हो[2] धरह नरेस[3]।
एक सती तोनय उ रे[4] संदेस।
तू वीरउ उवा[5] बहिनडी[6]।
धणीय म्हारउ[7] अछइं[8] संभर राउ।
राउ[9] उडीसा कउ[10] धणी[11]।
थाकउ उलगाणउ म्हांकय[12] घरह पठाउ[13] ॥ ध्रु० ॥

म० में यह १३८ है, न० में १८१, अ० में १६२। [किन्तु इस छंद में 'धरह नरेस' को सम्बोधन है, और ·५,·६ में उड़ीसा के राव को। यह ध्यान देने योग्य है।]

१. अ० (+२) गोरी कहइ सुणउ, न० गोरडी कहे। ३. अ० न० पूरब नरेस। ४. अ० न० तो नय दीयउ रे। ५. अ० न० हूं। ६. न० थारी वहिनडी। ७. अ० न० म्हांकउ। ८. अ० छइ। ९. आ० तं तउ, न० देस। १०. न० उड़ीसइ जे। ११. न० जोइआ। १२. न० म्हे। १३. घरे पठाइ।

६

म० अ० के अतिरिक्त छंद

(७६)

दया बिहूणउ वीसलराउ[१] ।
मंदिर छोडि विदेसइ[२] रे जाइ[३] ।
हूं छउ षरीय दयामणी ।
सांमह[४] जोवन विरह की झाल ।
वासइ मोर सुहामणा ।
दूभर श्रावण[५] पावस[६] कालि ॥ भु० ॥

(तुलना० ·५ की पं० ८६·५ तथा अ० ११६ ·५ से)

म० में यह ६५ है, अ० में १४१ । [ऊपर की समस्त तिथियाँ आश्विन की है, जब कि इस छंद में श्रावण पावस कहा गया है । यह दर्शनीय है ।]

१. अ० थे बीसल राउ । २. अ० परदेसह । ३. अ० जाउ । ४. अ० सामी हो । ५. अ० दूर रयणि । ६. अ० जिउं पावस ।

७

पं० न० अ० के अतिरिक्त छंद

(८०)

राजमतीय कुमरीय[१] मन स चिंतवइ[२] ।
हसिवि बेटी[३] बाबा पहि[४] जाइ ।
सुणउ नरेसर बीनती ।
रूपइ कंद्रप मोहिनी जाणि[५] ।

सुरगिहि मोह छइ[6] देवता।
जोइज्यो वर अति सगुण[7] सुजाण ॥ भु० ॥

(तुलना ·६ की स्वीकृत ७·५ से)

पं० र० ग्या० ना० में यह ६, है तथा अ० न० में ७।

[अपने रूप के बारे में पिता से इस प्रकार की बातें कहना जैसी ·३,·४, ·५ में हैं, असंभव है, और उसी प्रकार हँसते हुए ·६ की बात कहना भी।]

१. अ० नामइ कुमरि। २ अ० मन भाइ, र० ना० मनहि चिताय, न० मनह सुहाइ। ३. र० हस हस बेटी, न० हसतीय बेटी, ना० हसहवि। ४. न० बाबा पासहि। ५. र० मोही जाणि। ६. अ० मोहइ। ७. न० इक सगुण।

(८१)

तठइ व्याहण[1] चालियउ वीसलराउ[2]।
चिहुं दिसे थाणा[3] भोज पठाइ[4]।
तुरीय भला चढ़ि आविज्यो[5]।
जे थाणा थाटते वोलावीया राय।
कुलांय छत्तीसइ जे चड़इ[6]।
वाजा हो वाजणा अवर मढाइ[7]।
सात सहस पाइक गुडइ[8]।
भाट बाभण तठइ[9] करइ वषाण।
मयमत हस्ती सिंगारजइ[10]।
इसि परि चालीयउ[11] राइ चहुआण[12] ॥ भु० ॥

पं० में यह १४६ है, ग्या० में १५, ना० न० र० में १६, अ० में १७। किन्तु न० अ० मे ऊपर की .४ .५, नहीं है, और .१ के अनंतर निम्नलिखित पंक्ति अधिक है :

चतुर चउरासीया कीजै संभाल।

[1]. अ० न० परणवा। [2]. अ० चालीयहु वीसल भूपाल, न० चालइ वीसल राउ। [3]. ना० थीणा। [4]. अ० भोज का। [5]. र० अ० न० तुरीया भला चढ़ि आवज्यो राय। [6]. र० कुलीय छत्तीसइ जे चढ़इ। [7]. अ० ऊवर मढाइ। [8]. अ० सात सहस पायक चिल्या, न० सात सहस पाए पड़ै। [9]. अ० न० बांभण भाट तब। [10]. अ० न० मयमत्त हत्ति सिंगारीय। [11]. ना० इण परिचालीयो, अ० इण परिंचाल्यउ, न० परणिवा चालियउ। [12]. ना० वीसलराव।

(८२)

संजइ छइ[1] राजमती कउ वीर[2]।
माणिक मोतीय जड्योउ जंजीर[3]।
लाष सवा पाषरि पडइ[4]।
पालषी बइठी[5] लष सवा एक[6]।
आगइ हो गइवर बहु गुडइ[7]।
पाला हो पाइकां अंत न पार।
नवरंग नाचइ अपछरा।
सामहेलउ हुवउ[8] राइ परिवार।
मोटउ हो चत्री मालवइ।
तठइ तुरीय संपीया चमर ढुलाइ॥ ध्रु०॥

पं० में यह २३/१ है, ग्या० में २४, ना० न० र० में २५, अ० में २६। किंतु ग्या० र० अ० में .६,.१० नहीं हैं। ['वीर' शब्द 'वर' के लिए असंभव लगता है]।

[1]. अ० जोवै, न० जोवइ छइ। [2]. न० वींद। [3]. अ० जडाउ जंजीर। [4]. ना० लाष सचाइक पयक पडै। [5]. अ० न० पालकी बइठा छै। [6]. अ० न० सहस पंचास। [7]. अ० न० ना० आमइ गयवर बहु (अति—न०) दुड़इ। [8]. अ० सामहलउ हूयउ, र० ना० सामुहउ हूई हुआ ना०।

स्त्रीकृत १३·४ में है : 'पालषी बाइठा छइ सहस पंचास।' इसमें उसका ढाईगुना कर दिया गया है : 'पालषी बइठा लख सवा एक।'

(८३)

जानीवासइ पधार हो[1] राइ।
राज परोहित लीयौइ बोलाइ।
व्याह करावण देइ छइ दान।
अरथ भंडार नइ अति घणउ मान।
दीन्हा छइ तेतीय हांसला[2]।
तुम्हा हांसीय सेरिसउ कोट हिंसार[3] ॥ भु० ॥

पं० में यह ३३ है, ग्या० में ३५, न० में ३७, ना० र० में ३६, अ० में ३९। किंतु ग्या० न० ना० अ० में पं० ·२, तथा पं० ·३ के अनंतर क्रमशः निम्नलिखित पंक्तियाँ और हैं जो पं० में छूटी हुई हैं :

आवि पुरोहित रावला राव का (आवो पुरोहित राव का—र०)।
संप्या खीरोदक सावटू।
र० में इनमें से प्रथम है, द्वितीय नहीं है।

[1]. अ० न० पधारीयौ राइ। [2]. अ० दीना जो तेजीय हांसला। [3]. अ० कोट सिंगार।

(८४)

जूवा रमण[1] बइसारइ छइ[2] राय।
सात सोपारी फूलि[3] कियउ पसाउ[4]।
सवा लाख कउ मूंदडउ[5]।
राजा जी जीतउ छइ साते दाइ।
राजमती बिलषी हुई[6]।
हसइ मुलकइ वीसल राइ[7] ॥ भु० ॥

पं० में यह ३४ है, ग्या० में ३६, न० में ३८, र० ना० में ३७, अ० में ३८।

[1]. अ० जूवटइ रमणि। [2]. अ० न० ना० बइसारीयउ। [3]. अ० फल, न० फूले, ना० फूलां। [4]. अ० कीधउ पसाय, ना० की माल, न० पसाय। [5]. र० अ० मूद्रडउ, पं० समुदडउ। [6]. अ० भई। [7]. न० तठइ बीसल राइ, ना० तब बीसल राव।

(८५)

हुई पहिरावणी[1] हरषीयउ राय।
दीन्हां तेजीय कूलह कवाइ।
हीरा नइ[2] माणिक घणा।
अणपरि[3] पहिरावीयउ जात दुवारि[4] ॥ भु० ॥

(तुलना० .१ की स्वीकृत २५.१ से तथा .२ की स्वीकृत ११.२ से)

पं० में य ३५ है, ग्या० में ३७, न० में ३६, ना० र० में ३८, अ० में ४०। किंतु अ० में इसकी छूटी हुई पंक्तियाँ भी हैं :

(.४) हस्तीय एक सा दीया सिणगारि।
(.५) बांदा बांदीय अति घणां।

न० में केवल उपर्युक्त .४ है, उसमें भी .५ नहीं है।

[1]. ना० दीन्हा छै। [2]. अ० न० ना० हीरा अरु। [3]. र० अ० इण परि, ना० इणि। [4]. अ. जाति पसार।

(८६)

राजा अरु गोरडी[1] पडीय छइ काणि[2]।
जाणि कि चाक दीधी षलहाणि[3]।
राजा गर्ब्ब बोलीयउ[4]।
सो बचन गोरडी[5] म्हाकउं क्यउं न सुहाइ[6]।
जीभ दोषउ[7] दुह जिण हूयउ[8]।
तिणि वचन बांधियउ[9] उलग जाइ ॥ भु० ॥

पं० में यह ५३ है, और ग्या० में ५७, न० में ६०, र० में ५७, ना० में ६५, अ० में ६३।

१. अ० हिव राजा नै गोरडी, ना० राजा नै गोरडी। २. न० अछंइ कांणि। ३. ना० पणहार। ४. अ० गरब करि बोलीयउ, न० गरबा बोलीयउ। ५. अ० इसा वचन गोरडी, ना० सो बचन। ६. अ० गोरी तो न सुहाइ, न० किम न सुहाइ। ७. अ० जीभ कउ दोष। ८. अ० न० विहु जण हुआ, ना० दो भजण हूआ। ९. अ० वचन कउ ओधीयउ।

(८७)

ना हमि गरजू भोज की धार।
ना हमि गरजू अरथ भंडार।
ना हमि गरजू हीरा तणा।
गोरी अधिक संराहीयउ पूरब्यउ राइ।
हमि तउनि[1] किउं करि गिण्या।
उलग कइ मिसि[2] देषण जाह[3] ॥ ध्रु० ॥

पं० में यह ५७ है, ग्या० में ६१, न० में ६३/२, र० में ६१, ना० में ६६, अ० में ६७।

१. अ० हमि नातइन, न० हम नइतइत। २. अ० उलगण कइ मिसि। ३. न० जाउं।

(८८)

हउ तउ बोलतों बोलइ[1] थीइ छन सुहाइ[2]।
तउ धण पाहण[3] लीयउ उचाय[4]।
सो हम ऊपरि[5] रालीयउ।
हिवइ दूसण[6] किणइ न देणउ जाइ[7]।
ऊछइ तपि हरि ध्याईय।
तउ प्रीय बाल[8] अम्ह मेल्हीय जाइ[9] ॥ ध्रु० ॥

पं० में यह ५८ है, ग्या० में ६२, न० में ६४, र० में ६२, ना० में ७० अ० में ६८।

१. अ० न० हूं तौ बोलू (बोला—न०) र० हो तो बोलतां बोल। २. अ० तुम्हां सो, न सुहाइ, र० तीइव न सुहाइ। ३. अ० तउ घण पाथर। ४. अ० लीयउ रे बुलाइ। ५. र० अ० सो पग ऊपरि। ६. अ० न० हिव दोस। ७. न० न कहि देणउ हो जाइ। ८. अ० तउ मोही छांडी, न० तउ मुझ मेल्हा। ९. अ० न० प्रीउ उलग जाइ।

(८६)

तइं तउ ऊछा गोरी बोलिया बोल।
तइं नवि राषीयउ प्रीय तणउ तोल।
तइं कहउ[१] तिम कोई नवि कहइ।
म्हे राज पाट सवि[२] चलित्रा मेल्हि[३]।
वचन थारा भणी[४] नीसरा।
हस्तीय बंधिया मेल्हि ण जाइ[५]।
सांभरि म्हेलिस्यां नवलषी।
म्हे तउ सांच करेस्यां[६] पूरब्या राइ॥ ध्रु०॥

पं० में यह ५९ है, ग्या० में ६३, न० में ६५, र० में ६३, ना० में ७१ और पुनः ७७, अ० में ६९।

न० ना० में .५, ६ नहीं है।

ना० में यह ७१ है, किन्तु ना० में यह पुनः यथा ७७ भी है।

१. र० तइ कह्यो। २. अ० म्हे तउ राजनइ पाटि सवि। ३. अ० टालिस्यां मेटि, र० न० चालिस्यां मेल्हि। ४. अ० वचन विरोध्या। ५. अ० मेल्हिस्यां गाउ, र० मेल्हिस्यां जाइ। ६. अ० म्हे तो सेव करस्यां सही, न० म्हे तउ सेव करेस्यां।

(६०)

तिन गुनह बकसइ[1] स्वामी सहु कोइ[2]।
सुख जे करहि[3] सु तुम्ह थीइ होइ[4]।
थे न्हा लीजउ[5] भर षमा[6]।
तइ तउ एक वच[7] कहि बाली देहि[8]।
लालच करि कहइ कामिणी।
किम उलग चालइ[9] नवल सनेह[10] ॥ भु० ॥

प० में यह ६० है, ग्या० में ६४, न० में ६६, र० में ६४, ना० में ७२ अ० में ७०, ।

1. र० स्वामी तीनि गुनह बकसइ, न० तिन मुहत बगसइ। 2. अ० सहु कोइ। 3. अ० सुख करुं जउ, र० सरब जे करउ, न० सरस करउ हूजे। 4. म्हाके मनि होइ। 5. अ० थे हिवै होवौ जी। 6. न० भारी षमा। 7. अ० एक ही वचन। 8. अ० दीजिए छेह। 9. अ० किंउ उलग चालिस्यउ। 10. अ० नवलै जी नेह।

(६१)

उलग जातां किम रहइ नारि।
बोलीया बोल ते चित्तह विचारि[1]।
बोल्यउ हो पालउ आपणउ।
उतइ षाणि उआहिस्या[2] हीरा की जाइ।
मुझ विण छिण[3] तू जिन रहइ।
बेगि मिलिस्यां तुझ नइ आइ[4] ॥ भु० ॥

पं० में यह ६१ है, ग्या० में ६५, न० में ६७, र० में ६५, ना० अ० में ७३। किन्तु आगे यह छंद पुनः पं० में यथा ८७, अ० में यथा ११७, र० में यथा ६२, ना० में यथा १००, और न० में यथा १११ है।

1. अ० न० घणउ म बोलि हे मुगध गमारि। 2. अ० तठइ खांणि

उगराहिस्यां, न० कुवइ खांणि उग्राहिस्यां। [3]. अ० म्हांको चित तुम्ह पास छै गोरी। [4]. अ० तोसूं जीवता आइ, र० बली तुझवै आइ।

(६२)

वरिइज नइ रे धण[1] बरिसता मेह।
साठि दि्वस लगइ[2] तुझ सुं सनेह।
मिलिस्यां बरस बारह पछइं।
मनह उमांहा[3] नइ तू हकास[4]।
सांवरि[5] नीर मचीर भरि।
कलह कामणि तणउ नेह निवास[6] ॥ ध्रु० ॥

पं० में यह ६५ में, ग्या० में ६६, न० में ७१, र० में ६६, अ० में ७५। किन्तु ·३ र० ग्या० ना० न० अ० इनमें इस प्रकार है :

नाल्ह रसायण इम भणै।

[1]. अ० न० बरज न हो धण, र० बरजि नइ हे धण। [2]. र० अ० सात दिवस लगि। [3]. र० मनहि उहिकाही तो कास। [4]. अ० न० करूं प्रवास। [5]. र० सांभर। [6]. अ० न० नेह बिणास।

(६३)

कातिग स्वामी तू आवण देहि।
कुदिन न चालिजइ[1] बरिसइ हो मेह[2]।
लालच करि कामणि कहइ।
पगि पडी हुइ[3] नव कर जोडि[4]।
मुषि माहि करइ दसे आंगुली[5]।
हा हा जोवनइ माहि म छोड[6] ॥ ध्रु० ॥

पं० में यह ६८ है, ग्या० में ७५, न० में ७४, र० में ७२, ना० में ८०, अ० में ७८।

[1]. ना० को दिन चालिनै। [2]. अ० बरसतै मेह। [3]. अ० न० ना० पगि पड़ि वीनवै। [4]. अ० न० दुइ कर जोड़ि, ना० बे कर जोड़ि। [5]. ना०

आंगुरि। [६]. अ० न० भर माहे हमहि न (मत—न०) छोडि, ना० मम छोड।

(६४)

गहिली हे मुंधि कि षरीय गुवारि[१]।
हीयडलइ नयण नहीं हे नारि[२]।
तीरथराज[३] प्रयाग जा[४]।
मो हइ तिरी[५] उढीसा तणी जगीस[६]।
रहस्यां पहर[७] त पल घडी।
तउ सषी चालिस्यां[८] विस्वा वीस॥ भु०॥

पं० में यह छंद ६६ है, ग्या० में ७६, र० में ७३, न० में ७५, ना० में ८१, अ० में ७६। किन्तु ना० में ·५ का 'रहस्यां' तथा ·६ का 'विस्वास' शब्द नहीं हैं।

[१]. अ० तुं खरी गमार, र० मूंध षरी गमार, ना० मूंध तूं षरीय गिमार। [२]. अ० र० ना० थारइ नहीं नार। [३]. (+४) ना० तरथरा गया ज्यु। [४]. अ० न० प्रयाग सुं। [५]. अ० मोहि, र० मोहै तिउं रा, ना० मोनु तौ। [६]. अ० उड्डीसा की खरीय जगीस, ना० उडीसा तणी जगीस। [७]. र० रहस्यां, ना० म्हे तो रहस्यां। [८]. अ० उलग चालिस्यां।

(६५)

जइ धण मरिसी[१] गंग माहे जाइ।
उलग जात[२] न रहाइ[३]।
अस वचन[४] किम बोलिजइ।
मरस्या जे[५] निकुलीणी नारि[६]।
तुं तउ कुलवंती[७] किम मरइ।
एतउ भोर मिसि[८] छोडी हे नारि॥ भु०॥

पं० में यह छन्द ७१ है, ग्या० में ७४, ना० में ८३, र० में ७५, न० में

७७, ना० में ८३, अ० में ८१। किन्तु अ० में अंतिम के स्थान में निम्न-लिखित तीन पंक्तियाँ हैं :

(.४) मइं (तू—न०) नवि छोडी तू चित्तह उतारि।
(.५) इवइ गोरडी तू तपै। तुलना० म० ५३.५)
(.६) अजुगती बात न बोलीय नारि। (तुलना० म० ५३.६)

ग्या० न० में इनमें से .४ मात्र है।

[1]. न० कइ धण मरसी। [2]. र० अ० ना० ऊलग जातां जी। [3]. अ० न० तोई न रहाइ, र० ना० तो न रहाइ। [4]. र० अ० ना० इसी बचन। [5]. र० न० अ० ना० मरस्यइं जे। [6]. न० अकुलीणीय नारि। [7]. ना० इम कुलवंती। [8]. ना० सीता हे रामैं।

(६६)

तिथ महूरत सो गिणइ नारि[1]।
व्याहण चालिजइ[2] कोइ कुवारि[3]।
उलग जांतां हो[4] दिन किसा।
वचन का दाधां[5] हो निसरि जाहि[6]।
भरणि भद्रा[7] ले नवि गिणइ।
झूठी हे गोरी म्हानइ षुणस न देइ॥ धु०॥

पं० में यह छंद ७३ है, ग्या० में ७७, ना० में ८६, न० में ८०, र० में ७७. अ० में ८४। किन्तु अन्त में ये दो पंक्तियां अ० में और है :

रइ न सकै सैंभर धणी।
बलि बीजै चालिवा त्रे बडि थाइ।

[1]. र० सो गिणै। [2]. अ० व्याहण चालइ जउ। [3]. अ० न० राजकुमारि, र० काइ कुवारि, ना० काइ नं बार। [4]. अ० उलग जातां रे [5]. न० बचन का दीधा। [6]. ना० नीकल जाय। [7]. अ० भरणी नइ भद्रा। [8]. अ० न० म्हारां षुणस म लाइ।

(९७)

कनक कचोला[१] हुनं विष हुया[२]।
विष बल्ली[3] नवि छिवणी जाइ[४]।
अमृत फल था[५] ते बिष हुया[६]।
कडवी[७] जिसी नली होइ[८]।
मरम परायउ नवि छेदियइ।
तेतलंउ अण[९] दुषत मार म जोइ[१०] ॥ भु० ॥

पं० यह छंद ८३ है, ग्या० में ८७, न० में ९०, र० में ८८, ना० में ९६, अ० में ९४।

१. ना० कनक कचोलडै। २. र० दोनुं बिष हूआ, न० विष हुआ, आइ, ना० दुन विष थाय। 3. अ० विष की रे वेलड़ी, न० विलवणी। ४. अ० न० नवि पीवणी जाइ, र० नवि वावणी जाइ, ना० नव पीलणी जाइ। ५. अ० अमृत का फल, ना० अमृत का फल, ना० अमृत फल। ६. अ० ते विष समा, ना० ता विष हूआ। ७. अ० कड़इ रे, ना० कडसब। ८. अ० वउली जिउं घण होइ, र० न० जिसी नीबोली (निवली—न०) होइ, ना० बास नीबोहली होइ। ९. अ० इणि विधि, ना० ते तो अलपत, र० ते तो अषत, न० तूं तउ अति। १०. अ० दुखिणी अधिक वा जोइ, र० दुषत भारणीय जोइ, न० भाटणी जोइ।

(९८)

उलग जातां किम रहा नारि।
बोलीया बोल नइ चितइ विचारि।
बोल्यउ पाला म्हे तउ आपणउ।
बइसि उगाहिस्यां हीरा की षांण।
मूहि विलषाणइ जिन रहइ।
म्हे तउ वइगा आविया देषे हे नारि ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद ८७ है, ग्या० में ६०/२, न० में १११, र० में ६२, अ० में ११७, ना० में १०० । और किन्तु पं० में यह छन्द पहिले यथा ६१ आ चुका है, अ० में यथा ७१, र० में ६५, न० में ६७, तथा ना० में ७३ ।

(६६)

तुरीय पलागणीया[१] वीसल राउ ।
गोरडी दीन्हीय[२] लांबीय बांह[३] ।
आषडीया जल नवि रहइ[४] ।
जाणि की सरवर फुटी छइ पालि[५] ।
दूमड़ लायउ[६] वाहला[७] ।
भूरतीय छोडिय[८] संभरि वाल ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद ६१ है, ग्या० में ६६, र० में ६६, ना० में १०५, अ० में १२२, न० में ११६ ।

१. अ० हिव तुरी पलाणिया । २. अ० दीधी हो । ३, र० लांबीय धाह । ४. अ० फूटिय पाल । ५. र० फूटीय पालि । ६. अ० न० दुख लायौ मोकुं (मूनइ—न०) । ७. र० अ० ग्राल है, ना० बालहउ । ८. अ० भूरती छोरि बयउ, र० भूरती छोडिय, न० भूरती छोडि गउ ।

(१००)

आगइ[१] प्रिय की वइरणि[२] नदीय वनास ।
नव साधण धरि[३] मंडइ आस[४] ।
चांबिल चडीय[५] नइ उतरया[६] ।
इव तउ बरिसि[७] सुहावा मेह[८] ।
नदीय वहइ प्रीय बाहुडइ ।
दूध पाणी जिम[१०] वधइ सनेह[११] ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद १०० है, ग्या० में १०६, र० में १०५, ना० में ११४, न० में १२१, अ० में १३० ।

[1]. ना० आवै। [2]. र० बयरणि, ना० प्रीय कै। [3]. अ० साधण बइठी, ना० साय धण धरि। [4]. अ० न० छंडिय आस। [5]. अ० बोल चढ्या। [6]. अ० नव ऊतरै। [7]. अ० ना० हिव तूं तौ बरस, र० अब तों बरिसि। [8]. अ० सुहारै मेह, न० सुहावा महियलि मेह। [10]. अ० दूध पाणीडूं। [11]. अ० वहै सनेह।

(१०१)

थे भली सराही दवदंती हू नारि।
बारह बरस नल कीन संभलइ[1]।
जे चित आवइ सांभरि धणी।
जाणउ जे[2] अपहछ करउ[3]।
तउ तउ धरणी माता[4] लइ नइ विहार[5] ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद १०४ है, ग्या० में ११०, र० में १०६, ना० में ११८, न० में १३०, अ० में १३६। किन्तु ना० र० न० अ० में पं० की छूटी हुई पंक्ति ४ भी है:—

(ना० र० न०) हियइडलै दुष न सहणो जाइ।
(अ०) हियडलइ दुख को को नहीं पार।

[1]. अ० नल न कियउ संभार, र० न० नल कीन सभाल, ना० न [ल] कीधी संभारि। [2]. अ० जाणु जाइ। [3]. अ० आपच करूं, र० न० आपहच करूं, ना० आपहच करौ। [4]. अ० ना० तूं तौ धरतीय माता, र० तउ धरतीय माता, न० कू तउ धरतीय माता। [5]. अ० हे देहि विहार, र० लै विहार, ना० देइ विहारि।

(१०२)

उवा तउ सूनइ मंदिरि छइ बइठीय आइ[1]।
जोवतां गउषि चढ़ी मुरछाइ।
नाह नइ देषउं[2] चिहु दिसि[3]।

वानइ विरह संतावइ[४] कोलह अंत[५] ।
जोवन गाजइ जण हसइ[६] ।
उवा तउ[७] मइण की विधि[८] घोलइ मुहि कंति[९] ॥ भु० ॥

(तुलना० '३ की स्वीकृत ३'४ के पं० पाठ से)

पं० में यह छंद १०५ है, ग्या० में १११, र० में ११०, ना० में ११६, न० में १३१, अ० में १४० ।

१. अ० ना० बइठी छइ आइ । २. अ० नाह दीसइ नहीं, र० नाह न देखउं, ना० नाह नै देखे । ३. र० अ० चिहुं दिसइ, ना० चिहुं दिसि । ४. अ० विरह संताप कौ, न० ना० बिरह संतावइ । ५. अ० को नहीं अंत, न० को नवि लहइ सार अंत, ना० को लहइ आम । ६. अ० जोर सुं, न० घण हसइ । ७. अ० न० ना० [में नहीं है] । ८. अ० मयण की वेदन, न० मायण की बिधि । ९. अ० नहीं लहै कंत, न० मोल विलहि कंत, ना० बोलै विहकंत ।

(१०३)

हिवइ राजा पहुतडउ उडीसइ जाइ[१] जगनाथ ।
असीय सहस चउरासीया सीध[२] ।
जाइ बसावउ गोइरइ[३] ।
प्रह फूटी अरु घुरया नीसाण[४] ।
रावल गुन[५] इम संचरइ[६] ।
तब मन हरष्यउ[७] वीसल चहुआण ॥ भु० ॥

(तुलना० .६ की पं० ११८.६ से)

पं० में यह छंद १०६ है, ग्या० ११२, र० १११, ना० में १२०, न० में १३२, अ० में १४२ ।

१. र० अ० उड्डीसइ । २. अ० र० न० न० असीय सहस चउरासिया राउ कै साथि, न० र० असीय सहस चउरासिया साथि । ३. ना० जाइ बसा

गांव गोइरे। ४. अ० अरू धुरया छइ नीसाण। ५. अ० राउ लगनि, न० राउ लघुइत, ना० रावल मन। ६. ना० अ० महि संचर्या, माहे संचर्या, न० मइ संचर्या। ७. ना० तभ मन रहषीयो।

(१०४)

राजा जी भेंटीउ[१] राज प्रधान[२]।
तुम्ह दिव रावउ[३] दुणउ जी मान।
आधीय चादरिं बइसणा।
सहस सोनीया उपरि पान।
म्हांथी तउ अउरु चढा यात[४]।
कहइ उडीसा का परधान ॥ भु० ॥

(तुलना० .३ तथा की क्रमशः स्वीकृत १०६.३, १०६.२ से)

पं० में यह छंद १०७ है, ग्या० में ११३, र० में ११२, ना० में १३३। अ० में १४३ है।

१. अ० राजा जी भेटिंयउ। २. अ० राउ परधान। ३. अ० हमहि दिवडउ जी, र० न० तुम्हहि दिवारो, ना० तूम्ह दरबारै। ४. अ० ना० म्हां की तूं चढाइतो (चढ़ावतो—ना०)।

(१०५)

मंत्र वइरागर[१] बहु विधि जाण[२]।
जिण रीझाव्यो[३] राय चहुआण।
बात गुपति सवे प्रीछवी[४]।
उणि तउ राणी भानमती[५] नइ दीजा बइसारि[६]।
राणी जी सांभलउ वीनती।
उतउ मोटउ[७] षत्रीय कुलह सिंणगार।
उलग आयउ छइ आपणी।
उव तउ[८] राणी रांजमती भरतार[९] ॥ भु० ॥

(तुलना० ·६ की क० २१·७ से)

पं० में यह १०८ है, ग्या० में ११४, र० में ११३, ना० में १२२, न० में १३४, अ० में १४४।

[आगे जो बीसलदेव की वास्तविकता प्रकट हुई है, उसके पूर्व यहाँ यह कथन विपरीत है कि बीसलदेव 'राजमती भरतार' है।]

१. अ० न० मंत्री वैरागर, ना० मंत्री बैरागर केरे। २. अ० बहु बुद्धि जाण, न० बहु बुधिनउ जाण। ३. अ० तब जाकूं रीझव्यउ, ना० जिण पहिराव्यो, न० जिणतइं रीझव्यउ। ४. अ० वात गुपति सहु प्राछवी। ५. अ० न० उण तउ राणीय कुं (नइं—न), ना० राणी भानुमती। ६. अ० न० कीधी छइं सार, ना० दीनी छै सार। ७. अ० मोटो, न० मोनउ। ८. अ० न० ना [में नहीं है]। ९. अ० राणी राजमती तणउ [छै—ना०] भरतार।

(१०६)

जाहि हो मंत्री[1] वार म लाउ।
वेगि बोलावउ[2] वीसलराउ।
मान महत देई कोकिज्यो[3]।
मंत्री आलसूआ माहि आईय गंग[4]।
करम परापति आपणई।
आजु दीहाहउ सहीय सुचंग[5] ॥ ध्रु० ॥

पं० में यह १०६ है, ग्या० में ११५, र० में ११४, ना० में १२३, न० में १३५, अ० में १४५। किंतु अ० में .१ के अनंतर निम्नलिखित पंक्ति अतिरिक्त है :—

वेगि बुलावौ जी बार म लाउ। (तुलना० ऊपर .१ + .२)

१. अ० जाउ मंत्रीसर। २. ना० बेगि ले आवो। ३. न० मान महुत

दे लागिज्यो, ना० मान महुंत वे लावज्यौ। ४. अ० न० आवी छइ गंग, ना० आवीय गंग। ५. अ० सफल सुरंग, न० ना० सही सुरंग।

(१०७)

आवीयउ मंत्रीय जिहां छइ राउ।
वेगि पधारउ करउ पसाउ[1]।
राणी बुलावइ थानइ राउ जी[2]।
तब हसि चडीयउ राय चहुआण[3]।
साथि चउरासिया साझता[4]।
सहस किरण जाणे उगीयउ भाण[5] ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद ११० है, ग्या० में ११६, र० में ११५, ना० में ११४, न० में १३६, अ० में १४६।

१. र० करीय पसाउ। २. अ० राणी बोलावइ राउ की। ३. र० अ० न० ना० तब हसि हयवर चढयउ चहुआण। ४. पं० साथि चउरासिया अति घणा, ना० साथ चौरासी सती। ५. र० जाणे उडयो भाण।

(१०८)

भानमती दुवारिइ[1] आवीयउ राइ।
राणी जी मन माहे[2] कीयउ सुभाइ[3]।
रतन कंवल दीयउ बइसणउ[4]।
तठइ राजा वीसल[5] करइ छइ जुहार[6]।
राणी असीस दइ राय जी।
तउ चिरजीविजै[7] सं परिवारि[8] ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद १११ है, ग्या० में ११७, र० में ११६, ना० में १२५, न० में १३७, अ० में १४७।

१. अ० भानुमती घरि, ना० भानुमती राणी दुद्वारइ। २. अ० मान देइ राणी किद्ध। ३. अ० अपसाउ ना० हूवै सुभाव। ४. अ० रतन कंवल

दीधउ बैसणइ। [५]. न० इत तइं राजा बीसल। [६]. अ० करइ जुहार। [७]. अ० ना० तूं चिरंजीवे हो। [८]. न० सहू परिवार, ना० बीसल राव।

(१०६)

तठइ राणी जी पूछइ[१] गूझ की बात।
किण विधि आवीया कोस सइ सात।
सविधि हमस्युं थे कहउ[२]।
म्हा चित मै छइ[३] ऊलग की चाउ[४]।
चाकरी करिस्यां राउ की।
इणि परि बोलइ[५] वीसल राउ॥ ध्रु०॥

पं० में यह छंद ११२ है, ग्या० में ११८, र० में ११७, ना० में १०६, न० में १३६, अ० में १४८। किंतु अ० में ऊपर की .४ तथा .६ परस्पर स्थानांतरित हैं।

[पं० १८६, १६०, १६१, तथा अ० के समानांतर छंदों में इसी प्रकार इस घटना की पुनरावृत्ति है।]

[१]. अ० पूछइ राणी तब, र० तठै राणी बूझइ छइ। [२]. अ० विधि थे हम सुं कहउ, ना० सा विधि मासिउं थे कहै। [३]. अ० म्हाकइ चित छइ, न० म्हां भिन छै। [४]. अ० ना० ओलग कउ चाउ। [५]. अ० तब हसि बोले हो, र० इण परि बोलियउ।

(११०)

आहमति बात[१] कहउ मत राइ।
उलग कउ मिसि[२] कहउ था[३] काइ।
साचउ कहउ म्हासुं तुम्हे।
थांकइ नवलषी[४] सांभरि उग्रहइ देव[५]।
राज थानिक अजमेर माहि[६]।
राजा सो किउ[७] करइ पराइय सेव॥ ध्रु०॥

पं० में यह छंद ११३ है, ग्या० में ११६, र० में ११८, ना० में १२७,

न० में १३६, अ० में १४६।

[पं० १८६, १६०, १६१ और इसी प्रकार अ० के समानांतर छंदों में इस घटना की पुनरावृत्ति है।]

१. अ० न० उवा तुम्हे बात, र० अ० तुम्हि बात। २. र० उलग मिसि करो। ३. अ० मतां कहउ, र० थे कहो कांइ, ना० थे करौ कांइ, न० मन कहाइ। ४. ना० जाकइ नवलखां। ५. अ० सइंभर उग्रहइ देव। ६. अ० राउ अजमेर कउ राजियउ, न० ना० राज थानक कारइ गढ़ अजमेर, र० राजा थांको वैसणो गढ़ अजमेर। ७. अ० ना० सो किउं।

(१११)

अम्ह घरे एक छइ राजकुमार।
तिणि अवकर बोलीयउ अविचार[१]।
तिणि बड़ा करि ना गिणा[२]।
उणि विसिराह्यउ[३] सांभरउ देस[४] ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद ११४ है, ग्या० में १२०, र० में ११६, ना० में १२८, न० में १४०, अ० में १५०। किंतु अ० न० ना० ग्या० में छंद की .५, .६ भी हैं जो पं० में नहीं हैं :—

(.५) सराह्यउ उड्डीसउ गोरडी।
(.६) म्हे तिण ओलग आया परदेस।

[पं० १८६, १६०, १६१ और इसी प्रकार अ० के समानांतर छंदों में इस घटना की पुनरावृत्ति है।]

१. र० बोलचव्या अविचार। २. ना० तिणा वडै कर ना गिणयौ, र० तिण अम्हे ओकर नवि गन्या, न० तृण वडइ करि म्हातइं गिणया। ३. अ० उण विसरायउ। ४. अ० संभर देस।

(११२)

एतलउ वचन राणी सुणयउ जाम।
मंत्र वइरायर[१] पूछियउ ताम।

बात कहा हीआ तणी[२] ।
म्हे तउ भाईय[3] करिस्यां वीसलराउ ।
छानउ पूरबी राज थी[४] ।
जउ तुम्हि मित्र[५] करउ पसाउ ।
दूजीय ठाहर ना कहउ[६] ।
तत्र म्हा मन हुउ उछाह[७] ।। भु० ।।

पं० में यह छंद ११५ है, ग्या० में १२१, र० मे १२०, ना० में १२६, न० में १४१, अ० में १५१ ।

१. अ० ना० मंत्री वैरागर । २. अ० बात कहियइ हीया तणी, र० बात कही सर्बहीया । ३. ना० म्हे तो । ४. अ० छांनउ पूरब्या राउ थी । ५. र० अ० जउ थे मंत्री । ६. ना० न० दूजी (तउम्हा—न०) ठाहरना रहौ (हुअउ—न०) । ७. अ० न० म्हां मनि होवै तो अधिक उच्छाह ।

(११३)

कर जोड़ी मंत्री कहइ बात[१] ।
बडीय आलोचणी[२] कीधीय मात[3] ।
म्हां चिति मानी छइ षरी[४] ।
नवलषी सांभरि कउ रषवाल[५] ।
राजा भाई ला सारिषयउ[६] ।
हिवइ तिलक देई[७] पहिरायउ भूवाल ।। भु० ।।

पं० में यह छंद ११६ है, ग्या० में १२२, ना० में १३०, न० में १४२, अ० में १५२ ।

१. ना० मंत्री करे छै बात । २. अ० बडी आलोचणी । ३. अ० कीधी तइं मात न० कीधी मनि, ना० कीधा बात । ४. अ० म्हां मनि मानी छइ अति खरी । ५. ना० तणौ रखवाल । ६. अ० राज भाई लहइ सारिखउ । ७. अ० न० तिलक करि नइ, ना० तिण क दे ।

(११४)

हुआ उतारइ[1] राइ चहुआण।
पउलि पश्चिम तणी दीयउ मेल्हाण।
साथि बइरागर मंत्रि छइ।
बंभण भाट करइ बषाण।
चउरास्या सहि हरषीया[2]।
मनि हरष्यउ[3] वीसल चहुआण॥ भु०॥

पं० में यह छंद ११८ है, ग्या० में १२४, ना० में १३२, न० में १४४, अ० में १५४। किंतु .१ ना० में नहीं है।

[1]. अ० कीयउ उतारइ, न० दीय उतारउ। [2]. अ० चउरासीया मन हरषिया। [3]. अ० दान द्यइ अधिक।

(११५)

जेतलउ षरच राजा तणइ होइ।
भानमती राणी पूरवइ सोइ।
लूण कपूर स वेसहू[1]।
नव कर कापडा[2] सावटू चीर।
चउरास्या नइ जूजूआ[3]।
बहिणी मनि[4] बधावए वीर[5]।
काणि म करिज्यो षरच की[6]।
तउ तत सांभरि धणी[7] छइ म्हाकउ बीर॥ भु०॥

पं० में यह छंद ११६ है, ग्या० में १२५, र० में १२१, न० में १४५, अ० में १५५।

[1]. अ० न० ना० लूण कपूर सरिसउ सहू। [2]. र० अ० ना० नवरंग कापडा (कापड़ी-न०)। [3]. ना० चोरास्यां नै भूझवा। [4]. अ० बहिनीय मान। [5]. अ० ववार छइ धीर। [6]. न० कांमण करज्यो षरच की। [7]. अ० तू तो सइंभर धणी।

(११६)

बारह मास[१] वउलावीया नारि ।
देव मेलउ दीयउ[२] कइ धण मारि ।
सूकि पाकि पंजर हूई ।
जिम भमर पुरंदर केतकी वास ।
तिम मोरइ प्रीय[३] गम कीयउ[४] ।
सेज बोसारी गोरी आवासि ।
उभी हो साधण विलविलइ ।
मइ तउ दुषि वउलावीया[५] बारह मास ॥ ध्रु० ॥

(तुलना० .३ की म० १२२.८ से)

पं० में यह छंद १३२ है, ग्या० में १३८, ना० में १४६, न० में १५८, अ० में १६८ । किंतु अ० में .६ का पाठ है : जाइ कीधउ परदेश कउ बास । (तुलना० म० १२२.५), और ना० में उपर्युक्त .५, .६ नहीं हैं ।

१. ना० बारस बरस । २. अ० न० देव मेलौ करै, ना० देव मेलो दै । ३. अ० तिम म्हांकै मनि प्रिय, न० तिम म्हारे प्री । ४. अ० गम करी, न० गम कीऊ परदेस । ५. अ० न० इम (एम—न०) बौलाविया ।

(११७)

धुरिहि सीयालउ[१] उल्हरिउ नाह[२] ।
रिण पइसंती[३] धणी लीयउ सनाह[४] ।
दिन छोटा निसि आगली ।
तइ वउ आषड्या[५] ताला दीधी[६] ।
चित अवरा सूं भोलव्यउ[७] ।
सीष ना काइरा[८] न दीध[९] ॥ ध्रु० ॥

पं० में यह छंद १३३ है, ग्या० में १३९, ना० में १४७, न० में १६०, अ० में १६९ ।

१. ना० धुरि । २. अ० उलस्यउ । ३. अ० रणह पेसंता । ४. अ० रे लेइ सनाह, न० लियउ सनाह, ना० घण मिल्यो सनांह । ५. अ० नाह लै तालिय, ना० तै लौ मन क्यें आडा । ६. अ० मोहि किम दीध, ना० नाला दीध । ७. अ० न० चित अवसासउ तइ कीयउ । ८. अ० न० साख न काईय, ना० सीष न किइय राइ । ९. अ० न० तइ माकुं (मुनइ-न०) दीध, ना० तै दीध ।

(११८)

साईं सांकल जड्या[१] कइ जड्या जंजीर ।
कर तुम्हि पहुते समुंद कइ तीरि ।
कइ कही कामणि भोलव्यउ[२] ।
एक रिसउ स्वामी[३] धरि संभालि[४] ।
धण बलि पंगुल हुइ रही[५] ।
कुमिलाणीय जिम[६] चंपा की डाल[७] ॥ भु० ॥

(तुलना० .२ तथा .४ की क्रमशः पं० १५७.२ तथा स्वीकृत ६३.४ से)

पं० में यह छंद १५६ है, ग्या० में १५२, ना० में १७६, ना० में १६०, अ० में १८८ ।

१. अ० ना० सामा संकले (सांकली-ना०) जड्या, न० स्वामा संकल जंपा । २. अ० कइ किणि कामण कामणयां । ३. एक रसौ करउ, न० एक रिसउ आवो । ४. अ० घरहि संभाल । ५. अ० धण खल पंगुल हुइ रही, ना० धण बल पंजिर होइ रही । ६. अ० हुं कुमलाणी जिम । ७. ना० चंपीय डाल ।

(११९)

कागल ठाहर धण धरइ चीर[१] ।
मस्त ठाहर करइ[२] नयण थी नीर ।
लेषणि ठाहर नइ कड्या ।

अषर ठाहर[3] मुषि झरइ तंबोल[४]।
स्वेत पटोलीय लिषि दीयउ।
मिलि वटवाडा[५] करइ कलोल ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद यथा १५५ है, ग्या० में १६०, न० में १८८, ना० में १६६, अ० में २०३ है।

१. अ० ना० करइ चार। २. अ० मलाय ठाहर करइ, ना० मत ठाहर करै। ३. ना० अर ता (ठा) हर। ४. अ० मुख कौ तंबोल। ५. अ० न० तिमि वटवाला जा, ना० मिल वडवाह।

(१२०)

वाट वटाऊ धण का वीर।
तुम्हे उतरि जावउ[१] समुद कइ तीरि।
साधण हुइ छइ लातरी[3]।
लाज छोडी तुम्हें अरु[४] कहय तुम्हे बात[५]।
उलगाणा सूं अम कहे[६]।
थारी मुंध ऊमही ऊल्हस्या गात[७] ॥ भु० ॥

(तुलना० .२ की पं० १४६.२ से)

पं० में यह छंद १४७ है, ग्या० में १६२, न० में १६०, ना० में १७१, अ० में २०१।

१. अ० तुम्हे उतरि जाइज्यो। २. अ० न० गंगा के तीर। ३. अ० साधण हुइ छइ लाकड़ी। ४. अ० ना० लाज छोडी अरू। ५. अ० कहु इक बात, ना० तुम्ह कहौ बात। ६. अ० ओलगाणा सुं तुम इम कहे। ७. अ० नइ ऊलस्या।

(१२१)

पंडियउ बारि[१] बइठउ छइ जाइ[२]।
गयउ पडिहार अरु वीनव्यउ राइ[3]।

परदेसी कोई पंडीयउ।
म्हे स्वामी भेटिवा[४] आवीया राज दुवारि॥ भु०॥

पं० में यह छंद १६७ है, ग्या० में १७२, र० में १६६, ना० में १८१, न० में २००, अ० में २१८। किंतु ग्या० र० ना० न० अ० में छंद की .३ .४ भी है जो पं० में बाद के छंद की प्रथम दो पंक्तियों के रूप में आती है :—

(.३) राज (एक-र० ना०) सुणउ इक वीनति (मुझ बातड़ी-र०, मुझ बीनती-ना०)।

(.४) एह अपूरब सुणउ जी विचार।

[१]. ना० बाहिर। [२]. अ० बइठउ तिहां जाइ, ना० बैठो जाइ। [३]. अ० तिहां वीनव्यउ राइ। [४]. अ० ना० भेटिवा। अ० आयउ छइ राजदुवारि, र० आवीयो राजदुवारि।

(१२२)

किहां बसउ बंभण[१] किह तोरो ठाउं[२]।
जोसी कहइ थारा नगर कउ नाउं।
देव देसंतरी दूरि कउ।
राणी राजमती दीयउ षंदाउ[३]।
बरस बारह उलग रह्यउ।
तुम्ह धरि आवीयउ बीसल राउ॥ भु०॥

पं० में यह छंद १७० है, ग्या० में १७५, र० में १७२, ना० में १८४, न० में २०४, अ० में २२२।

[१]. अ० कां बसउ बांभण। [२]. अ० कहां तोरउ ठाउ। [३]. र० ना० दीयउ षंदाइ।

(१२३)

झूठउ रे बंभण[१] बोलि म आल[२]।
किम आवइ[३] बीस[ल] भूवाल।

जिह घरि सांभरि ऊग्रहइ।
ऊतउ सगलय[४] भूम तणउ रषपाल।
सोरठ पाटण कउ धणी।
अम्ह घरि किम आवइ राइ भूवाल ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद १७१ है, ग्या० में १७६, र० में १७३, ना० में १८५ न० में २०५, अ० में २२३।

[१]. अ० जूठउ रे बांभण। [२]. अ० बोलै छै आल। [३]. अ० इहां किम आवै। [४]. अ० ओ तउ पच्छिम।

(१२४)

बंभण भणइ[१] तूं नि सुणी भूवाल[२]।
विह घरि थी[३] धण रूप विसाल[४]।
चिहुं देसा उवा लष लहइ।
हस्ती तिणि धण कहउ कुबोल।
सहि नि सकउ संभर धणी।
तउ धण[५] मेल्ही हो राइ निटोल ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद १७२ है, ग्या० में १७७, र० में १७४, ना० में १८६, न० में २०६, अ० में २२४। किंतु न० अ० में .३, .४, .५ है :

(.३) राजा जी गरब करि बोलियउ।
(.४) सहि न सक्यउ तिणि बाल्यउ जी बोल।
(.५) तिणि बोले राजा चटकियौ।

ना० में .३, .४ नहीं है और .५ यथा पं० में है।

[१](+[२]). अ० बंभण भणइ सुणि निसुणी भुवाल, र० बंभण भणइ तूं निसिणि भूपाल। [३]. अ० तिहां घरि छइ। [४]. न० ना० धण रूप रसाल। [५]. अ० मेल्हि गयउ राइ निटोल।

(१२५)

राजमती हसि बोलीया बोल।
राजा कइ चित्त बस्यौ कुबोल[१]।
समझायउ समझय नहीं।
उतउ राणीय सं[२] मेल्हउ छै घर वास[३]।
ऊभी मेल्ही गोरडी।
अणि विधि राऊ[४] आयउ तुम्ह पासि[५]॥ भु०॥

पं० में यह १७३ है, ग्या० में १७८, र० में १७५, ना० में १८७, न० में २०७, अ० में २८५।

१. न० बस्यो तेह क बोल। २. अ० तउ राणी तणा। ३. अ० मेल्हा रणवास। ४. अ० इण विध ए, र० इण विधि राउ। ५. अ० आवियौ तुम्ह पासि।

(१२६)

जब बंभण दीधो[१] घर कयउ भेउ[२]।
तब लाधउ कुल कयउ परमेउ।
भूझ प्रकासउ पारीयइ[३]।
मोटो छइ हींदू बडउ नरेस[४]।
वचन कइ करणि धण तिजी[५]।
हिवइ संपउ[६] उडीसा कउ देस॥ भु०॥

पं० में यह १७४ है, ग्या० में १७९, र० में १७६, ना० में १८८, न० में २०८, अ० में २२६।

१. ना० तब। २. अ० घर केरउ भेउ। ३. र० अ० ना० न० गूझ प्रकास्यौ रे पंडियइ। ४. अ० हिंदूयउ बडउ नरेस। ५. अ० वचन कारण जिण धण तजी। ६. अ० हिव संपरयु हम।

(१२७)

चमकि अरु ऊठीयउ[1] पूरिव्यउ राउ।
मंत्र वइरागर लीयउ बुलाइ।
कुवण राजा मोनइ उलगइ।
हिव तेह नउ[2] मुझ देहि परिमाण।
गढ अजमेरा कयउ धणी।
मंत्रि म्हारइ कुण वीसल चहुआण[4] ॥ भु० ॥

पं० में यह १७५ है, ग्या० में १८०, र० में १७७, ना० में १८६, न० में २०६, अ० में २२७ है।

[1]. अ० चमकि कर ऊठियउ। [2]. अ० तेह नउ। [3]. अ० कवण छइ, र० ना० मंत्री कवण म्हारै। [4]. अ० वीसल दे चहुआण।

(१२८)

दिया हकारा जी नगर तझारि।
घरि घरि राज[1] फिरइ पडहार[2]।
नगरि दुहाई संचरी।
सबे ठाकुर[3] घरि बारी रह्या।
राइ आप आहेटइ मिसि चढइ[5]।
सिंह सिकार नइ षेलण जाइ[6] ॥ भु० ॥

पं० में यह १७६ है, ग्या० में १८१, र० में १७८, ना० में १९०, न० में २१०, अ० में २२८।

[1]. अ० घरि घरि राउला, ना० घरि रावला। [2]. र० फिरै पटधार। [3]. अ० सब्रहि ठकुरालाह, र० परिबस्या हो राइ, ना० सवर बारा होइ। [4]. अ० सहित परिवार। [5]. अ० आप आहेड़ा कइ मिसइ, र० ना० आप आहेडा मिसि चडे। [6]. अ० खेलण जास्यइ हो सिंह सिकार।

(१२६)

फिरथा नकी[1] फेराईय आण।
घरि घरि सज्या छइ[2] तुरीय केकाणि[3]।
देस देसाह का नीकल्या।
राजा जी सरव[4] बटावी छइ आण[5]।
छत्र चउरासीया ताणीया।
नरवर[6] सरव जुहारण जाइ[7] ॥ भु० ॥

पं० में यह १७७ है, ग्या० में १८२, र० में १७६, ना० में १६१, न० में २११, अ० में २२६।

१. अ० हुकम हुयउ तब, र० फिरया नकीब, ना० स्वामी की अब २. ना० घरि घरि राज्या। ३. अ० हो करह केकाण। ४. अ० राजा जी पूरब्यइ। ५. अ० सरवर ठाम, ना० बरती आंण। ६. अ० तठइ सरब राजा मिल, र० नरवै जी, ना० राजा सब मिलिय। ७. अ० सरब करै प्रणाम, ना० करै प्रमाण।

(१३०)

पदम सरोवरि बइठउ छइ आई[1]।
आपण श्रीय मुषि बचन कहाइ।
अहो जिण पूरब आसंगीयउ[2]।
षांडउ हो समुद पषालीयउ जाइ[3]।
आवण पइ राजा कहइ।
थे वइगा हो आणिज्यो वीसल राउ[4] ॥ भु० ॥

पं० में यह १७८ है, ग्या० में १८३, र० में १८०, ना० में १६२, न० में २१२, अ० में २३०।

१. र० बइठो छै राइ। २. अ० जिणि घर पूरब आसथी, ना० पूरब राव मिलि आसंधी। ३. अ० पखालियउ समदूह आउ। ४. अ० ले आवउ वीसल राउ।

(१३१)

चिहुं दिसि राजा कइ[1] चमर ढुलाइ।
वंद सहोदर[2] बइठा छइ आइ।
परिगह दलमल सहि मिल्या[3]।
तठइ पूरिब्यउ राजा बषाणइ छइ[4]।
गढ अजमेरां कयउ धणी।
वेगा आणउ[5] वीसल चहुआण॥ भु०॥

पं० में यह १७९ है, ग्या० में १८४, र० में १८१, ना० में १९३, न० में २१३, अ० में २३१।

1. अ० पूरब दिसि राजा। 2. र० अ० वृंद सरोवर। 3. अ० परिगह दल महलइ मिल्या, ना० परिग्रह दल मिल्या। 4. र० अ० करइ बषाण, ना० करइ छइ बषाण। 5. अ० थे वेगि बोलावउ, र० बेगि आयो।

(१३२)

दाहिणी दिसि राजा[1] चंवर ढूलाइ।
दषिण दिसि राजा बइठे छइ आइ।
सिहर कलिंग पुर उग्रहइ[2]।
उण रइ सगली सेना षइठी छइ आई।
आपण पइ राजा कहइ।
थे वइगा आवउ[3] वीसल राइ[4]॥ भु०॥

पं० में यह १८० है, ग्या० में १८५, र० में १८२, ना० में १९४, न० में २१४, अ० में २३२।

1. अ० चिहुं दिसि राजा के। 2. अ० तठइ सहर कलिंग उग्रहइ। 3. अ० थे वेगि वीसल दे कुं, ना० थे वेग ले आविज्यो। 4. अ० ल्यावौ बुलाइ।

(१३३)

आगिलि दिसि राजा[1] चमर ढुलाइ।
राउ का ऊलग बइठा छइ आइ।
वसइ राजा बाणारसी[2]।
उतउ कनवजाइ[3] दिवाईय आण[4]।
आपण पूरब्यउ बीनवइ।
थे तउ वेगा आणउ[5] वीसल चहुआण॥ ध्रु०॥

पं० में यह १८१ है, ग्या० में १८६, र० में १८३, ना० से १६५, न० में २१५, अ० में २३३।

[1]. अ० उत्तर दिसि राजा। [2]. अ० प्रथमै बाणारसी कौ धणी। [3]. अ० कनउज जाइ। [4]. अ० दिवारी जी आण। [5]. अ० थे तोड ल्यावौ, ना० वेग आणौ।

(१३४)

पाछिली दिसि राजा[1] चवर ढुलाइ[2]।
सींघल दीपी राजा[3] बइठउ आइ[4]।
आप नरेसर वासीयउ[5]।
तठइ पूरब्यउ राजा करइ सुभाइ।
म्हांकी हो एही ज वीनती[6]।
थे तउ[7] वेगा आणउ वीसल राउ॥ ध्रु०॥

पं० में यह १८२ है, ग्या० में १८७, र० में १८४, ना० में १६६, न० में २१६, अ० में २३४। किंतु अ० में .३ है : देसपति महिलउ दीयइ।
और ना० में ·२,·३,·४ नहीं हैं।

[1]. अ० न० पश्चिम दिसि राजा। [2]. ना० करइ सुभाव। [3]. अ० सिंघल द्वीप को। [4]. अ० बइठउ छइ आइ। [5]. न० आपु नरेसुर। [6]. र० म्हांकी हो एह वीनती। [7]. अ० थे वेगि मेलौ, ना० [में नहीं है]। [8]. अ० वेगा आणी वीसल राउ, र० बेगि वे आणो वीसलो राउ।

(१३५)

इतउ सुणीइ[1] राजा मंदिरी जाइ।
भाणमती राणी ली छइ बोल[।]इ[2]।
हसि राजा आलिंगीयउ[3]।
राणी हेहि तोनइ[4] कहुं सुभाइ[5]।
जो भाई करि बोलीयउ[6]।
सो थां कउ भाई[7] म्हानइ दिष[।]इ[8] ॥ भु० ॥

(तुलना० .२ की स्वीकृत २०.२ से)

पं० में यह १८३ है, ग्या० में १८८, र० में १८५, ना० में १६७, न० में २१७, अ० में २३५।

[1]. अ० मनहि विमासी, र० इतनो सुणी. ना० इतरौ सुणि। [2]. अ० लियइ बुलाइ। [3]. अ० हसिय आलिगण नृप दियइ, न० हंसि नइ राजा आवीयउ। [4]. अ० राणी तोनां। [5]. अ० कहुँ हुँ सदभाइ। [6]. अ० जो भाई तइ बोलावियौ। [7]. अ० ना० थारा सो भाईय। [8]. अ० मोहि दिखाउ, ना० मुझनै देषाव।

(१३६)

भानमती बोलइ[1] सुणि राइ[2]।
एता दिन[3] संभालीयउ काइ[4]।
इतनी हो आरति राज की[5]।
किउ तइ आज पूछीया राइ[6]।
भाव भलइ आणाविज्यो।
थांकउ जुडियउ हो सिगलउ परिवार[7] ॥ भु० ॥

पं० में यह १८४ है, ग्या० में १८६, र० में १८६, ना० में १६८, न० में २१८ अ० में २३६। किंतु ग्या० र०, ना०, न०, अ० में ·४ ·५ का पाठ है :

(.४) आज किउं पूछियउ किउ करी सार ।
(.५) भाव भले तें मानिज्यो ।

१. अ० भानुमती कहइ । २. अ० सुणौ जी राइ । ३. अ० इतना दिवस । ४. अ० न संभर्यो काइ । ५. अ० इतरी गाढ़ राजा किउ करी, ना० इतने अढेतिस जाई कु करी । ६. र० ना० पूछीया कीधीय सार । ७. अ० सहु परिवार ।

(१३७)

तब हसि करि[१] राजा आलिंगन देहि ।
भानमती मुझ कहउ सु एह[२] ।
राजमती लिखि मोकल्यउ ।
चीरी दे बंभण दीयउ षंदाइ ।
बार बरस ऊलग हुया[३] ।
थां घरि आव्या हो[४] वीसल राउ ॥ भु० ॥

पं० में यह १८५ है, ग्या० में १६०, र० में १८७, ना० में १६६, न० में २१६, अ० में २३७ ।

१. अ० तब हसि । २. अ० मुझ कु कह्यउ भेउ । ३. अ० बार बरस ओलग रह्यउ । ४. अ० थां घरि आयउ छइ, र० न० थां घरि आयो हो ।

(१३८)

तव आपणउ बंभण[१] लीयउ बोलाइ ।
भानमती राणी[२] लिष्यउ वचाइ ।
सरस वचन घण वांचीया[३] ।
तब पंडियइ[४] बात कही समझाइ ।
भोज राजा की चउंरी चढ्यउ[५] ।
उतउ उलगाणउ[६] देज्यो घरह षंदाइ[७] ॥ भु० ॥

पं० में यह १८६ है, ग्या० में १८१, र० में १८८, ना० में २००, न० में २२०, अ० में २३८ ।

[1]. अ० तब राजा पंडियउ । [2]. अ० राजमती राणी । [3]. न० सार बचन तिण वाचिया । [4]. अ० पंठियइ । [5]. अ० चमरी । [6]. अ० न० सो० ओलगाणउ । [7]. अ० न० म्हां कै घरहि पठाइ, ना० दीज्यो घरह पठाइ ।

(१३६)

पछिम पउलि[1] मेल्हो पडदार ।
बंभण भाट करह जइकार ।
नट नाटिक दीसइ घणा ।
उणि रइ कौतोहल दीसइ दरबारि[2] ।
भीतरि जाइ सुणावीयउ ।
थारी बहिनडी[3] कोकइ राजदुवारि[4] ॥ भु० ॥

पं० में यह १८७, है, ग्या० में १६२, र० में १८६, ना० में २०१, न० में २२१, अ० में २३६ ।

[1]. अ० हिव पश्चिम पोलि । [2]. अ० कउतिग दीसइ जी राय दरबार । [3]. ना० तो क्युं थारी बहिन कौ । [4]. अ० तेडियउ राय दुआरि, ना० कोकीयौ राजदुवारि, र० कोक्यो राजदुवारि ।

(१४०)

रायंगणि जब[1] आवीयउ राउ ।
कामणी ढोलइ[2] सीतल बाउ ।
एक चंदन लेपन करइ ।
एक सषी करि[3] देहि तंबोल ।
एक गोरी फूल बधावही[4] ।
एक सषी करइ चंदन षउलि ॥ भु० ॥

पं० में यह १८८ है, ग्या० में १६३, र० में १६०, ना० में २०२, न० में २२२, अ० में २४१ । किंतु ग्या० र० न० अ० में उपर्यक्त .३ तथा .६ के स्थान पर यथा .३, .४ निम्नलिखित हैं :—

सफल दीहाडउ आज कउ। (तुलना० स्वीकृत २६.५)
ए सखि वदइ अमृत बोल।

१. अ० राय आंगणि जब। २. अ० कामिणी ढोलइ छइ। ३. अ० एक सखि बीडउ। ४. अ० कामिनी फूल वधावही।

(१४१)

तेडावा आव्या राजा[1] वीसल राउ।
पूरबी राजा कीयउ[2] अधिक उछाह[3]।
दीनी हो चादर वइसणइ[4]।
कवण देसावर कुण तू देव।
कवण की थे उलग करउ[5]।
हूं नवि जाणं रावलउ भेव॥ ध्रु०॥

(तुलना० .३ की स्वीकृत १०६.३ से)

पं० में यह १८६ है, ग्या० में १६४, ना० में २०३, र० में १६१ न० में० २२३, अ० में २४२,। [किंतु पं० ११२, ११३, ११४ अथवा अ० १४८, १४६, १५० के होते हुए इस छंद में घटना की पुनरावृत्ति हुई है।]

अ० न० में .२ के बाद निम्नलिखित पंक्तियाँ और हैं :

वीसल दे सु विनय करइ।
तठइ कर ग्रहै राजा जी कंठ लगाइ।

१. अ० नजरि आव्यउ जब, ना० आव मिल्या तब। २. अ० पूरब्यउ राजा जी। ३. अ० सनमुख आइ। ४. अ० आधी हो चादर वैसणइ। ५. अ० ओलग कवण की तुम करउ।

(१४२)

जइ तूं हो पूछइ[1] धरह नरेस[2]।
म्हाहरइ उग्रहइ[3] सइंभरि देस।
थाणउ गढ़ अजमेर महि[4]।

म्हे तउ वचन[५] बांधीया आवीया हेव[६] ।
साधण बरस बारह हुवा[७] ।
म्हे उलगाणा थाहरा देव[८] ॥ भु० ॥

(तुलना० .१ की स्वीकृत ३१.१ से)

पं० में यह १६० है, ग्या० में १६५, ना० में २०४, र० में १६२, न० में २२४ अ० में २४३ ।

[किंतु पं० ११२, ११३, ११४, अथवा अ० १४८, १४६, १५० के होते हुए इस छंद में भी घटना की पुनरावृत्ति है ।]

१. अ० जइ तुम्ह पूछउ छउ । २. अ० धरह नरेस, । ३. अ० म्हांरइ उग्रहइ छइ । ४. थाणउ गढ़ अजमेर कहि । ५. अ० वचन का । ६. र० बंध्या आविया एथ । ७. अ० ना० साधण बरस बारह तजी । ८. अ० थांका नरदेव ।

(१४३)

एतलैउ वचन[१] कहउ किणि काज[२] ।
सफल जनम हुव मुझ आज[३] ।
जइ तुम्ह सुं भेटा हुई ।
तउ थे लेहु[४] उडीसा कउ देस ।
म्हा तुहेइ सप्पउ राउ जी[५] ।
हिवइ आपा उगाहो[६] हो धरह नेस[७] ॥ भु० ॥

पं० में यह छंद १६१है, ग्या० में १६६, र० में १६३, ना० में २०५, न० २२५, अ० में २४४ ।

[किंतु पं० ११२, ११३, ११४, अथवा अ० १४८, १४६, १५० के होते हुए इस छंद में भी घटना की पुनरावृत्ति है ।]

अ० में .५ का पाठ है :

मया करहु तुम्ह देव जी ।

१. अ० इतनउ जी वचन । २. ना० कहउ किण काज ३. अ० मुझ हुवइ छइ आज । ४. अ० तुम्ह लेहु, ना० तुम्हे लेवौ । ५. र० म्हे तुम्हां

संप्यो राउ जी, ना० म्हे थाने राज सो सुंपीयौ। [६]. अ० र० आप उम्हाहउ, ना० आप उग्राहो। [७]. अ० धरह नरेस।

(१४४)

तब हसि बोल्यउ राउ चहुआण।
तुम्हारउ वचन[२] सामी परमाण।
वीनती एह म्हांकी सुणउ।
म्हे तउ चालतां गोरीय दीन्ही थी बांह[३]।
बरस बारह पाछइ आविस्यां।
हिवइ तुम्हि कहउ[४] जिम घरि जांह[५] ॥ भु० ॥

पं० में यह १६२ है, ग्या० में १६७, न० में २२६, ना० में २०६, र० में १६४, अ० में २४५।

[१]. तब हसि बोलइ जी। [२]. अ० तुम्ह तणौ वचन। [३]. अ० गोरी नै दीधी छइ बांह। [४]. अ० हिव म्हांकु धड दूवउ, र० हिवै तुम्हे कहो, ना० हिवै कह्यौ। [५]. अ० तउ घर जांह, ना० ज्युं तुम्हे घरे जाह, न०हथ मरे जांह।

(१४५)

तब पंडियउ अरु कोक्या परधान[१]।
पूरब्यउ राउ दीयै बहु मान[२]।
आघा पधारउ देव जी[३]।
स्वामी तुम्हि जाणउ सुधि सहिनाण[४]।
म्हां बइठा हा सोझिलइ[५]।
पंडिया राइ वीसल चहुआण[६] ॥ भु० ॥

पं० में यह १६३ है, ग्या० में १६८, र० में १६५, ना० में २०७, अ० में २४६, न० में २२७।

[१]. अ० पंडियो कोको हो कहइ परधान। [२]. अ० चाहुइ बहु मान, न० लियहि बहु मान। [३]. र० देवसी। [४]. अ० सुद्ध सहिनाण। [५]. अ० म्हां

बइठां ही सोभल्यौ। ६. अ० पंडियउ चाहइ जी तब ताइ चहुआणइ पंडिय, न० नइ तेडइ राइ चहुआण।

(१४६)

तब चमकिउ करि[1] उठीयउ संइभरि वाल।
आव्या आडा[2] फिरि गया जाल[3]।
इहु रि जनम अहिलउ गयउ[4]।
तब राजा हो वीसल वीनव्यउ राइ[5]।
विदा करउ म्हांनइ राइ जी[6]।
पाछइ विणसइ[7] म्हारइ मोटा काज[8] ॥ भु० ॥

पं० में यह १६७ है, ग्या० में २०२, र० में १६६, न० में २३१, ना० में २११, अ० में २५४।

१. अ० हिव चमकि करि। २. र० ना० अ० आंख्या आडा। ३. अ० फिरि गयउ रे जंजाल। ४. र० इ रे जन्म अहेलो गयो, ना० इह जनम इहलउ गयो। ५. अ० ना० वीनवइ राज। ६. अ० ना० विदा करउ म्हांकु देव जी। ७. अ० पाछलि विस्णयइ। ८. अ० म्हांकौ काज, र० म्हांहरै मोटा काज, ना० सगला काज।

(१४७)

तब जोगी कु[1] पुंछइ राउ[2]।
थे किणि विधि परि मंडल जाउ[3]।
कुवण विद्या छइ तुम्ह कन्हइ[4]।
स्वामी कइ तुम्हे जाणउ[5] तंत कइ मंत।
कइ तुम्हि काया साधना[6]।
स्वामी कइ पर काइ[7] थे करउ प्रवेस।
कइ पंखी हुइ सचरउ।
नाथ जी किम साधउ परदेस[8] ॥ भु० ॥

पं० में यह २१२ है, ग्या० में २१७, र० में २१४, न० में २४६, ना० में २२६, अ० में २७१ । किन्तु ना० में .५, .६ के 'काया साधना । स्वामी कइ पर' शब्द नहीं है ।

१. अ० ना० ततखिण जोगीनै, र० तब जोगिनै । २. अ० पूछइ छइ राउ, र० पूछइ ततषिण राउ । ३. र० पर मंडलै जाउ, ना० करि मलुल जाउ । ४. अ० कांइ विद्या अछइ तुम्ह कनइ । ५. अ० कंइ कोइ जाणउ छउ । ५. अ० कइ तुम्ह कांई छइ साधना । ७. अ० कइ पर काया । ८. अ० थे साधउ परदेस, ना० किण पर साध्यो परदेस ।

(१४८)

थे तउ चालउ हो जोगीय[१] म लावउ बार ।
ततषिणि जाइ[२] जणाविज्यो सार ।
राजमती राणी नइ अम कहे[३] ।
गोरी घर नइ[४] उमाहियउ वीसल राउ ।
तुरीय पलाण्या छइ काहिडा[५] ।
दिन चहुं माहि[६] मिलेसीय आइ[७] ।। ध्रु० ।।

पं० में यह २१४ है, ग्या० में २१६, र० में २१६, ना० में २२८, न० में २४८, अ० में २७६ है ।

१. अ० हिव तुम्हे चालउ । २. अ० म्हां कीही खबर । ३. अ० राजमती राणी सुं कहै । ४. अ० गोरी घरह, ना० गोरी थारा घर नै । ५. र० तुरीय पलाणीया काहिजा, ना० तुरीय पलाण्या पाषरया । ६. अ० दिन चिहुं मांहे, ना० दिन च्यारा मांहि । ७. अ० सही आविस्यइ राइ, र० तुम्हां मिलिस्यइ राइ ।

(१४६)

तठइ जोगिनउ चालियउ छइ[१] गुटिकउ षाइ ।
सींगी नाद पूरयउ तिण ठाइ ।
गुरु कउ वचन समरण कर्या[२] ।

उहु तउ धरती[3] भूलि न देईय पाउ[4]।
इतरी ष्यांति करि गम करइ[5]।
जोगी दूजइ दिन आव्यउ सइभरि माहि[6] ॥ भु० ॥

पं० में यह २१५ है, ग्या० में २२०, र० में २१७, ना० में २२६, न० में २४६, अ० में २७७।

[1]. अ० जोगन चालइ तव। [2]. ना० गुरु का वचन समरो धरा। [3]. अ० तउ धरतीय। [4]. अ० भूल न देवइ हो ठाइ, ना० भूल न द्यै छै पाउ। [5]. अ० मनकीय खंतइ गम करइ। [6]. अ० जोईय सैंभर जाई।

(१५०)

राय चउरासीयां[1] देइ छइ सीष।
ठमकती ठमकती चालिज्यो वीष।
तुरिय म लाविज्यो तिजिसाउ[2]।
पावन वाहनइ[3] जिम संचरइ राइ[4]।
सुंदरी आइ हीयडइ चढ़ी[5]।
म्हे तउ पाणीय पीस्यां[6] उवा कन्हइ जाइ[7] ॥ भु० ॥

पं० में यह २२६ है, ग्या० में २३३, र० में २३१, ना० में २४३, न० में २६३ अ० में २६४/१ + २६३/२; अ० में उपर्युक्त ·१,·२,·३, अ० २६४ ·१,·२,·३ हैं, और ·४,·५,·६ अ० २६३ ·४,·५,·६ हैं।

[1]. र० राउ चोरासीया नै। [2]. र० ना० अ० न० तुरीयम लाविज्यो ताजणउ। [3]. अ० ना० पवन वाहन। [4]. ना० जिम संचरइ कोइ। [5]. अ० सुंदरि आवि हियइ चढ़ी। [6]. अ० पाणी पीस्यां, ना० पाणै पाविस्यां। [7]. अ० ना० उणि कन्है जाइ, न० उणि कहल जाइ।

(१५१)

नयर उडीसा थी चढ़इ राइ[1]।
आसणि हयवर[2] लाष पसाउ[3]।

ठकुराला सवे गयल छइ।
तठइ जुलमती तुरीय[४] चउरासिया साथि।
मजिल मजिल तुरी गटीयाइ[६]।
उतउ दिवस गिणइ[७] नवि गिणइ राति[८]।
चीतलता चिति गोरडि वसी[९]।
तठइ धुरि ह[स्या] ढोल[१०] नइ भरहरी भेरि[११]।
राजा मतिहि आणंदीयउ[१२]।
जब दिठि दीठउ[१३] गढ़ अजमेर॥ भु० ॥

पं० में यह २३०, ग्या० में २३४, र० में २३२, ना० में २४४, न० में २६४ है। किंतु पं० २३० '१,'२,'३,'४,'५ क्रमशः अ० २६३ '१,'२,'३,'४,'५ हैं और पं० २३० '६,'७,'८,'९,'१० क्रमशः अ० २६४ '६,'७,'८,'१० हैं।

१. अ० जब उछ्यउ राय, ना० चालीया राय। २. अ० कुशल की दक्षणा। ३. अ० कीध पसाउ। ४. अ० जिलमती तुरीय, ना० जुलमती तुरीय। ५. अ० ना० चउरासीया छइ साथि। ६. र० ना० अ० न० मजिल मजिल तुरी पालटै, (पालटीयै-र०)। ७. अ० न० ना० दिवस न गिणै राजा। ८. अ०। ९. र० अ० ना० चालतां चित्त गोरी बसी (बसी गोरडी—र०)। १०. अ० ना० घुर रह्या ढोल, र० तठै घुराह्या ढोल। ११. ना० घुरहरा भेरि। १२. र० ना० राजा मनि, आनं दीयो। १३. ना० जब राजा दीठउ।

(१५२)

तब बोलइ वीसल चहुआण।
अजीय तूं मूंध न मेल्हइ मान[१]।
इकु माण तुझ ही मलइ[२]।
बरम वारह तूं छोडी हे नारि[३]।
कुवचन थी ऊलग गयउ[४]।
अजू तू गरब न[५] छोड़इ गमारि[६]॥ भु० ॥

पं० में यह २४१ है, ना० में २५५, र० में २४३, न० में २७४, अ० में ३०५।

१. अ० न मूंकइ हो माण। २. अ० रण माणौ तूंही मली, र० इहु माण तुझही मलै। ३. अ० छडी हे नार। ४. अ० वचन कै बेध्यउ ओलग गयउ। ५. र० अजी गरब। ६. अ० न छंडी गमारि, र० तूं न तिजै गमारि।

(१५३)

संवत सहस सत्तिहित्तरइ जाणि[१]।
नल्ह कवीसरि कही अमृत वाणि[२]।
गुण गुंथ्यउ चउहाण का।
सुकल पक्ष पंचमी[३] श्रावण मास[४]।
रोहिणी नक्षत्र सोहामणउ[५]।
सो दिन गिणि[६] जोइसी जोडइ रास[७] ॥ भु० ॥

पं० में यह २४५ है, ना० में २५६, र० में २४७, न० में २७७, अ० में ३०६।

१. अ० तेर सतोत्तरइ जाणि, न० सहस तिहुत्तर जाणि। २. अ० सरसीय वाणि, न० रसीय बषाणि। ३. अ० सुक पंचमी, न० सुकुल पंचमी। ४. अ० नइ श्रवण मास। ५. अ० हस्त नक्षत्र रविवार सुं। ६. अ० सुभ दिन, र० सो दिन जोई। ७. अ० पं० जो सी रे जोड़ियउ रास, र० जोइसी जोड्यो रास।

८

पं० अ० के अतिरिक्त छंद

(१५४)

चालउ उलगाणउ[१] सउण बुलाय[२]।
साधण प्रीय वउलावण जाइ[३]।
रहि न सकइ पगला भरइ।

हुई दाहिणी भैरवी[४] सउण सुचंग[५]।
वउलाया धण पगा लाग।
स्वामि नइ आइ नइ[६] कुसल वंदाई[७]।
गुहकइ छइ राजा दाहणउ।
तुरीय डकाईयउ संभरि राय॥

(तुलना० ·८ की ६६·६ से)

पं० में यह छंद ६२ है, ग्या० में ६८, र० में ६७, ना० में १०६, अ० में १२३। किंतु अ० में उपर्युक्त ·५, ·६ नहीं है, उनके स्थान पर यथा ·४, ·६ उसमें निम्नलिखित है :

(·४) नीठे नीठे समझाविय नारि।
(·६) धण कुंवारि तुरी चढै राइ।

१. र० चाल्यो उलगाणो। २. अ० बोलावण। ३. धण जीवड़ौ। ४. अ० दाहिणी भैरवी। ५. अ० फहकरइ, र० सुचंग, ना० सुणौ सुणौ सुचंग। ६. ना० स्वामी गहू। ७. र० कुसल पठाइ, ना० कुशल बुलाइ। ८. अ० तठै तुरी काठिया।

(१५५)

एक सुणउ मुझ वीनती।
एह अपूरब सुणह विचार।
रे पडिहार म लावउ वार।
वेगि ऊली बुलावउ[१] सभा मझारि।
बांभण कुवण दे संतरी।
तब पउलीय पंडियउ लीयउ बोलाइ।
आवउ देव दया करी।
जोसीय[२] तुझ बोलावइ राइ[३]॥ ध्रु०॥

(तुलना० ·१, ·२ की पं० १६७.३, ·४ से)

पं० में यह छंद १६८ है, ग्या० में १७३, र० में १७०, ना० में १८२ अ० में २१६।

[1]. र० अ० ना० योगी बोलावउ जी। [2]. अ० पंडिया तोहि, र० जोइसी हो। [3]. अ० ना० नोनै बोलावइ छइ राइ।

(१५६)

धन्य हो पंडिया धन्य हो राइ।
नफर षंदाया दिवस गिणाइ[1]।
धन्य हो जोगी दरसणी।
जिणि वेगि ले मेलउ धण कउ नाह[2]।
धन्य दिहाड़उ आज कउ।
राणी राजमती मिल्यो बीसल राउ॥ भु०॥

(तुलना० .५ की स्वीकृत २६.५ से)।

पं० में यह छंद २४४ है, ना० में २५८, र० में २४५, अ० में ३०८। किन्तु ना० र० अ० में उपर्युक्त .५,.६ नहीं है, और उपर्युक्त .३ के पूर्व निम्नलिखित और है :—

धन्य हो गोरी गुण भरी।
धन्य हो पूरव्यउ सयण कहाइ।
धन्य वैरागर मत्रवी।
भानुमती राणी धन्य सभाइ।

[1]. अ० मुहूरत दिवस दियउ धन्य गिणाई। [2]. र० मेलव्यउ धण को नाह।

६

र० न० के अतिरिक्त छंद

(१५७)

चाल्यो पंडीयो[1] गयो अजमेर[2]।
जोआ[3] छइ गढ राच्या रेही छेह।

जोई छइ गढ़ री तलहटी।
जोई छइ हस्ती घोड़ा तणी लास[४]।
जोआ[५] छइ चोहटा चोषंडी।
तठइ राज करंतो जोयउ बीसल चहुआण[६] ॥ भु० ॥

र० ना० में यह छंद ११ है, न० में १२/२।

[१]. ना० चाल्यो पांड्यो। [२]. ना० गढ़ अजमेर। [३]. ना० जोया।
[४]. ना० घोड़ा तणी साल। [५]. ना० जोया। [६]. ना० बीसल चहुआण।

१०

न० अ० के अतिरिक्त छंद

(१५८)

देस मालव माहे नगरीय धार।
लोक वसै धनी मनहि उदार।
वापि कुवा सरवर छया।
राज करइ राजा भोज सुजाण।
न्याय जसइ जगि दीपतउ।
इण मांहि परतापी इंद्र जिम आण ॥ भु० ॥

न० अ० में यह छंद ६ है। स० १२ इसी विषय का है, किन्तु उसका पाठ नितांत भिन्न है।

(१५६)

चालियउ ओलगाणउ उलालीय[१] बाग।
तोरणइ तूंलबे[२] काला रे नाग।
मत तोकुं देखि राउ बाहुड़ै।
कालै घड़ै साम्ही[३] आवि कुंभारि[४]।

तोना ओढावां रे लोवड़ी[५]।
आज तूं वाजि रे सामुही वाउ।
रजी ऊडै ज्युं[६] धरि रहै राउ॥ ध्रु०॥

(तुलना० .१, .२ की म० ७८.१, .२ से)

यह न० में ११६, और अ० में १२७ है। न० में उपर्युक्त '३ नहीं है।

१. न० [में नहीं है]। २. न० तोरणे लवइ। ३. न० का लइ धड़ई सुमुही। ४. न० आनि कुंभार। ५. न० तो नइ उढ़ाविसुं दो ववसार। ६. न० राजी उडई नइ।

(१६०)

ततखिण राउ चढ्यउ कर जोडि।
तुरीया पलाणिया वालथी छोडि।
सोरठी झलकै काख में।
जरह रंगावलि कस्या छै आणि।
पायका वृंद आगइ पुलइ।
राजा हो चंचल चडीयउ तुरंग॥ ध्रु०॥

(तुलना० .३ की क० १४० .३ से)

यह छंद न० में १२० तथा अ० में १२८ है।

(१६१)

पंडिया तुं कहे जिम प्री न रीसाय।
साधण तुझ विन अन्न न खाइ।
देइ कइ हेति आधार ल्यइ।
सोइ अंग लागइ नहीं स्वाद न देइ।
पाय लागी लालच करइ।
हूं तउ नेह जोडउं जिम माछली नीर।

श्री वीसारी जी गोरड़ी।
हिव वेग पधारो जी साहस वीर ॥ भु० ॥

(तुलना० .१, .२ की स्वीकृत ६४.१, .२ से)

यह छंद न० में १८०, अ० में १९२ है।

११

प्र० स० के अतिरिक्त छंद

(१६२—३०२)

ये छंद सभा के संस्करण में प्रकाशित हैं, इसलिए इनकी केवल संकेत संख्याएें नीचे दी जा रही हैं !

स० १·६=प्र० १·६, स० १·७=प्र० १·७, स० १·९=प्र० १·८/२, स० १·१०=प्र० १·८/१, स० १·११=प्र० १·९/१, स० १·१२=प्र० १·९/२, स० १·१३=प्र० १·१०, स० १·१६=प्र० १·१३, स० १·१७=प्र० १·१४, स० १·१८=प्र० १·१५, स० १·२०=प्र० १·२०, स० १·२३=प्र० १·२३, स० १·२४=प्र० १·२४, स० १·२५=प्र० १·२५, स० १·२६=प्र० १·२६, स० १·३२=प्र० १·३२, स० १·३३=प्र० १·३३, स० १·३४=प्र० १·३४, स० १·३५=प्र० १·३५, स० १·३६=प्र० १·३६, स० १·३७=प्र० १·३७, स० १·३८=प्र० १·३८, स० १·३९=प्र० १·३९, स० १·४१=प्र० १·४०, स० १·४२=प्र० १·४१, स० १·४६=प्र० १·४४, स० १·५०=प्र० १·४९, स० १·५१=प्र० १·४८, स० १·५३=प्र० १·५०, स० १·५४=प्र० १·५१, स० १·५५=प्र० १·५२, स० १·५९=प्र० १·५५, स० १·६३=प्र० १·५९, स० १·६४=प्र० १·६०, स० १·६५=प्र० १·६१, स० १·६६=प्र० १·६२, स० १·६७=प्र० १·६३, स० १·६८=प्र० १·६५, स० १·७०=प्र० १·६७, स० १·७२=प्र० १·६९, स० १·७४=प्र० १·७०, स० १·७५=प्र० १·७१,

स० १·७६=प्र० १·७२, स० १·७७=प्र० १·७३, स० १·८३=प्र० १·७५,
स० १·८५=प्र० १·७६, स० १·८५=प्र० १·७७ : कुल ४७ छंद

स० २·१४=प्र० २·१३, स० २·१६=प्र० २·१५, स० २·२१=प्र० २·२०,
स० २·२२=प्र० २·२१, स० २·२३=प्र० २·२२, स० २·२४=प्र० २·२३/१,
स० २·२८=प्र० २·२५, स० २·३४=प्र० २·३१, स० २·४०=प्र० २·३७
स० २·४२=प्र० २·३६, स० २·५७=प्र० २·५५, स० २·५८=प्र० २·५६,
स० २·६३=प्र० २·६१, स० २·६४=प्र० २·६२, स० २·६६=प्र० २·६३,
स० २·६७=प्र० २·६४, स० २·६८=प्र० २·६५, स० २·६९=प्र० २·६६,
स० २·७०=प्र० २·६७, स० २·७१=प्र० २·६८, स० २·७२=प्र० २·६९,
स० २·७३=प्र० २·७०, स० २·७४=प्र० २·७१, स० २·७५=प्र० २·७२,
स० २·८२=प्र० २·७५, स० २·८४=प्र० २·७७, स० २·८५=प्र० २·७८,
स० २·८६=प्र० २·७९ : कुल २८ छंद

स० ३·५=प्र० ३·६, स० ३·२२=प्र० ३·२०, स० ३·४२=प्र० ३·३९,
स० ३·४५=प्र० ३·४२, स० ३·४८=प्र० ३·४५, स० ३·५४=प्र० ३·५१,
स० ३·६१/१=प्र० ३·५७, स० ३·६७=प्र० ३·६५, स० ३·६८=प्र० ३·६६,
स० ३·७२=प्र० ३·७०, स० ३·७३=प्र० ३·७१, स० ३·७४=प्र० ३·७२,
स० ३·७५=प्र० ३·७३, स० ३·८३=प्र० ३·८२, स० ३·८४=प्र० ३·८१,
स० ३·८५=प्र० ३·८३, स० ३·८७=प्र० ३·८५, स० ३·८९=प्र० ३·८७,
स० ३·९०=प्र० ३·८८, स० ३·९१=प्र० ३·८९, स० ३·९२=प्र० ३·९०,
स० ३·९३=प्र० ३·९१, स० ३·९५=प्र० ३·९३, स० ३·९९=प्र० ३·९७,
स० ३·१०२=प्र० ३·१००, स० ३·१०३=प्र० ३·१०१ : कुल २६ छंद

स० ४·१=प्र० ४·१, स० ४·२ = प्र० ४·२, स० ४·३=प्र० ४·३,
स० ४·४ = प्र० ४·४, स० ४·५ = प्र० ४·५ स० ४·६=प्र० ४·६,
स० ४·७ = प्र० ४·७, स० ४·८ = प्र० ४·८ स० ४·९=प्र० ४·९,
स० ४ १०=प्र० ४·१०, स० ४·११=प्र० ४·११, स० ४·१२=प्र० ४·१२,
स० ४·१३=प्र० ४·१३, स० ४·१४=प्र० ४·१४, स० ४·१५=प्र० ४·१५,

स० ४·१७=प्र० ४·१६, स० ४·१८=प्र० ४·१७, स० ४·१६=प्र० ४·१८,
स० ४·२०=प्र० ४·१६, स० ४·२१=प्र० ४·२०, स० ४·२२=प्र० ४·२१,
स० ४·२३=प्र० ४·२२, स० ४·२४=प्र० ४·२३, स० ४·२५=प्र० ४·२४,
स० ४·२६=प्र० ४·२५, स० ४·२७=प्र० ४·२६, स० ४·२८=प्र० ४·२७,
स० ४·२६=प्र० ४·२८, स० ४·३०=प्र० ४·२६, स० ४·३१=प्र० ४·३०,
स० ४·३२=प्र० ४·३१, स० ४·३३=प्र० ४·३२, स० ४·३४=प्र० ४·३३,
स० ४·३५=प्र० ४·३४, स० ४·३६=प्र० ४·३५, स० ४·३७=प्र० ४·३६,
स० ४·३८=प्र० ४·३७, स० ४·३६=प्र० ४·३६, स० ४·४१=प्र० ४·३८,
स० ४·४२=प्र० ४·४० : कुल ४० छंद

१२

र० के अतिरिक्त छंद

(३०३)

गढ़ अजमेर धण करइ छइ सिणगार।
सात सहेली बइठी छइ सार।
उवा पहिरइ छइ नवलषा हार।
उवा अगर चंदण घसि लावइ छइ गात्र।
नयण में काजल मुखहि तंबोल।
संजत कर सेजइ चड़इ।
सातां सहेल्यां रउ मलीयो मान॥ भु०॥

(तुलना० उपर्युक्त .६ की स्वीकृत १२७.५ से)

यह र० ४२ है।

[केवल सात चरण होने के कारण इसकी छंद-रचना ग्रंथ के अन्य समस्त छंदों से भिन्न है।]

(३०४)

इसी न काई हो दीठी नारि।
कांई इसी सोरठ देस मझार।
ना गुणवंत विद्याधरी।
संगल द्वीप समुद्र के पारि॥ भु० ॥

(तुलना० .१ की स्वीकृत ४७.४ से)
यह र० ८४ है।

[केवल चार चरण होने के कारण इस की छंद-रचना ग्रंथ के अन्य समस्त छंदों से भिन्न है]

(३०५)

सवीय नै धाइ समझावण जाइ।
राजकुमरि तूं मंदिर आवि।
जै दुष छै तो अति घणो।
हीयडले माहि न क्युं सुहाइ।
बेटी तूं राजा भोज की।
तोहि रूठी कोइ धान न षाइ॥ भु० ॥

(तुलना० .४ की स्वीकृत ४६.४ से)
यह र० में १०६ है।

१३

ना० के अतरिक्त छंद

(३०६)

मांग सीष धरि चाल्यौ छै राव।
राजा जी सुं करइ जुहार।

बीछडता हीय गहबरइ।
कर जोडी अरू इस भरइ।
थे छउ मोटा राजवी।
म्हे थांनु दासीय दीनी छइ राइ।
लाज बहे ज्यों कुलतणी।
नीर नयणे भरि लागै छै पाय ॥ भु० ॥

यह ना० में ४१ है।

(३०७)

दीन बचन स्वामी तुम कहौ कांइ।
आरत कांम करज्यो मन माहि।
थोडै कहै घणौ मानिज्यो।
थे सिर का सेहरा माथे का मौड।
म्हां सारू कांम जणाविज्यो।
स्वामी कर न सकै थांइरी होड।
थे सब धरती का धणी।
राजा जी वीसल नै द्यै बांह।
मिल पधारो थे घरि दिसै।
जब थे गढ अजमेरह जांह।
इतनौ कह्यौ थे मांनज्यो।
पटराणी करज्यो राणीया माहि ॥ भु० ॥

यह ना० में ४२ है।

(३०८)

सेज वाले कीजै समुदाय।
भीत[र] बइठा छै रांणी राव।
जोडइ दुहुं जै सारिषी।
यै बिधाता चढै बिनांण।

किण जांणै किण ऊपरा।
लाल नगरी चढीयौ छइ राव।
नयर पाडल पुर पधार।
नगरी थकी चढीयो छै राय।
नयर मांडल पुर पहुतौ आइ।
ताण्या लाल सिराइचा।
हयवरां गयवरां को नहीं पार।
चौरास्यां गहमह धणी।
सभा सोहइ छइ राव की लार॥ भु० ॥

यह ना० में ४३ है। किंतु इस छंद में दो छंदों की पंक्तियाँ मिली हुई ज्ञात होती हैं।

(३०९)

डेरै डेरै तद्रै भूपाल।
चउरास्यां तणी संभाल।
बीसल दे अति हरष सुं।
उजल सुंषडा अनै पकवान।
भोजन गत करै ठाकुरां।
चिवल सोपार पाका पांन।
केवड काथ कपूर सुं।
आपइस हाथ दइ चहूआंण॥ भु० ॥

यह ना० में ४४ है।

(३१०)

मांडलपुर थी चढ्यो चहूआंण।
पंचाली कीधौ मेल्हाण।
डेरा दीया नय ऊपरै।
आय मिलै अछै सगलौ लोग।

मोन्यां करइ बधामणा।
कलस वंदावै राजा जोग ॥ भु० ॥

यह ना० में ४५ है।

(३११)

करि सझाई चढ़ियौ छै राइ।
अंबर सयल रह्यउ ज छाइ।
पुरतांलां धसमसी।
कटक चालइ दस कोस कइ फेर।
घाट घाटा सहू लंघीया।
सातमै दिवस आयो अजमेर ॥ भु० ॥

यह ना० में ४६ है।

(३१२)

राज चौरासीयइ दीयइ छइ सीष।
सब कोई घर आपणै जाइ।
म्हांकी सोभा थांथी बधी।
बिनय करै बोलै बीसल राउ ॥ भु० ॥

यह ना० में ४७ है।

(३१३)

सुरंग पटोली छाया हाट।
हयवर गयवर मिल्या छै घाट।
पैसारा की परवांहु चइ।
बाजै बरघू अनै नीसांण।
लुंण उतारै अपछरा।
रतनागिर सूं चढ्यो चहूआण।
राजमंत्री आगलइ।

जोव दीसै जाणे परतष भांण।
सहि मुष चाहै छै रावका।
भूठ कहइ तैनै राव की आंण॥ भु०॥

(तुलना० .५ की स्वीकृत १२.५ से)

यह ना० में ४८ है।

(३१४)

ततषिण मिंदिर अर चत्रसाल।
तिहां पोढण पहुतो भूपाल।
[?] लां सेज विचाई यह।
राजमती लीयइ कंठ लगाय।
आलिंगन चुंबन करइ।
मनषत मानै वीसलराय।
राजकुमर चित मोहीयो।
मोटो राजा गरब न माय॥ भु०॥

यह ना० में ५० है।

१४

न० के अतिरिक्त छंद

(३१५)

घूरिहि सीयालियउ ल्हलरियउ नाह।
रणहि पइ संतालियउ सनाह।
दिने छोटा निसि आगली।
तइ तउ मोनइ किमतालिय दीघ।
चित अवे सास उतइ कियउ।
सीष न काई तइ मुंनइ दीघ॥ भु०॥

यह न० में १६० है।

१५

अ० के अतिरिक्त छंद

(३१६)

बांभण भाट आया अजमेर।
आवीयौ भोजराज कौ नालेर।
वीसल दे मन गहगह्यौ।
था कुं भानुमती राणी कुमरि की मात।
कंचन थाल रतने भर्यो।
ऊपरि मंगल मूंकि नालेर।
करइ नरेसर वीनती।
आवहु जी जान करि आज सवेर ॥ भु० ॥

अ० में यह १४ है।

(३१७)

परणि उरणि राजा दीयइ प्रवाह।
दीजै छै अरथ नै गरथ प्रवाह।
याचक देस प्रदेस का।
ऊरण कीधा हो चारण भाट।
प्रोलि प्रोलै प्रवाह द्यै।
दुरबल लोक के दालिद्र टालि।
सुदिन लेई साम्हउ चंद्रमा।
राजा हो चालीयउ बहु जस खाटि ॥ भु० ॥

अ० में यह ४१ है।

(३१८)

मयण की वेदन सहिय निस्संक।
काया हो लाइय कोई न कलंक।

चित्त मुहडइ धणु चल वली।
कुशल वउलाई बरस इग्यार।
लाज मरजाद सुं धण रही।
सुजस पायउ गोरी सकल संसार॥ भु० ॥
अ० में यह १८० है।

(३१६)

नगर भीतरि जब पंडियउ जाइ।
प्रथम दरवाजै हो हरषित थाइ।
पेखि कूआ किहां बावड़ी।
किहां सुसरवर किहां सरस वनखंड।
किहां हि तंबोलिनी मालिनी।
किहि सु उग्राहिजइ राउ कउ दंड।
पंडित वाद हुवइ नव नवा।
पर कहथा सबद को कीजइ किहि षंड॥ भु० ॥
यह अ० में २१२ है।

(३२०)

पंडियउ मोहियउ देखि बजार।
हसति साटइ तिहां लीजइ तोषार।
दरवाजै हिव दूसरै।
मल्ल भिडइ भिडइ पाइका जोडि।
किहां सु सन्नाह समारियइ।
किहि हि समारियइ बाण कोदंड॥ ॥ भु० ॥
अ० में यह २१३ है।

(३२१)

दरवाजइ तीजइ वस्तु विशेषि।
गहगह्यउ पेष करि चित्र सविशेषि।

पाट पटंबर साटियइ ।
किहि किण काटियइ कनक दे रेखि ।
छयल रंजि राता रहै ।
त्रीखे हो लोयण तरुणीय पेखि ।
कहुं कहुं बालक बहु पढ़ै ।
चित्र कर बेचइ किहां बहुत आलेखि ॥ भु० ॥

अ० में यह २१४ है ।

(३२२)

दरवाजै चउथे हिव जाणि ।
भणइ हो बांभण वेद पुराण ।
किहां गुण भाट चारण भणइ ।
दान वेचइ किहां पुरुष सुजाण ।
देस विदेसी दीसइ घणा ।
वहरा वे पारियां को नहीं जान ।
अनोपम नयर सुहामणउ ।
पगि पगि चउतरइ जुड़इ रे दीवाण ॥ भु० ॥

अ० में यह २१५ है ।

(३२३)

बात सुनी राजा अधिक उल्हास ।
वीसल दे चढ्यउ वेगि वहासि ।
साबति सेन साथइ करी ।
ततषिण आवियउ राजदुवारि ।
निलवट नूर सोहइ घणौ ।
मेल मेली तठइ राजगृह माहिं ॥ भु० ॥

अ० में यह २४० है ।

(३२४)

घरह कुं चाले हिव वीसल राइ।
पूरव्यउ राइ बोलावण जाइ।
एक मजलि रह्या एकठा।
सीख कीधी तब पूरव्यइ राउ।
एक एकां थी रे आगला।
त्रीस तुरी दीन्हा चमर ढुलाइ।
चउरासीयां कुं रे जूजुआ।
सावट्ट बागा नइ सहि हथियार।
मिलि हिलि राउ पाछउ चल्यउ।
तब तुरीअ डकाविया सइंभर वाल॥ भु०॥

अ० में यह २६२ है।

१६

(३२५—३४३)

स० के अतिरिक्त छंद

स० १·८, १·४०, १·४३, १·४४, १·४५, १·५६, १·७६, १·८०, १·८१, १·८२ : कुल १० छंद

स० २·१, २·३, २·२७, २·७६, २·७७, २·७८ : कुल ६ छंद

स० ३·६, ३·७ : कुल २ छंद

स० ४·१६ : कुल १ छंद

छंदानुक्रमणिका

(संख्याएँ स्वीकृत छंदों की हैं।)

शब्दानुक्रमणिका

(संख्याएँ स्वीकृत छंदों की हैं)

इस अनुक्रमणिका में केवल ऐसे शब्दों को दिया जा रहा है जो प्रायः अपनी प्राचीनता के कारण दुर्बोध हो गए हैं और उनके प्राचीनतर रूपों को देते हुए उनके अर्थों को देने का भी एक संक्षिप्त प्रयास किया जा रहा है।

अंगारा : अङ्गारक = अंगारों पर सिकी हुई रोटी ९९
अंतेउर : अन्तःपुर = रनिवास २१
अगवाणि : अग्रयान [[illegible]] = आगे आकर मिलने वाले ६
अपछरा : अच्छरा : अप्सरस् = अप्सरा १२
अरथ : अर्थ = धन ५०
अरदास : अर्ज़दाश्त [फ़ा०] = प्रार्थना १०१
अवर : अपर = दूसरा ९२
अवली-सवली : असव्व-सव्व : असव्य-सव्य = दाहिने-बाएँ १७, १२३
अहर : अधर = ओष्ठ ३४
अहिनांण : अभिज्ञान = परिचय ८५
आकर : अग्र = बढ़ा हुआ ४३
आखा : अक्षत = समूचे चावल १७
आगली : अग्र = बढ़ा हुआ १०८
आल [दे०] = कलङ्कारोपण, दोषारोपण ९०, १२१
आसोज : आश्विन = क्वार मास ७८
आहेड : आखेट = शिकार ३१
उघाडा : उद्घाट = खुला हुआ ६३
उछाह : उच्छाह : उत्साह १०, १९
उलंभडा : उपालम्भ = उलाहना ४६, १२४
उलगाणा : अवलग्न = सेवक, चाकर ३, ३८, ४२, ५० ५७, ६७, १०६
उल्हास : उल्लास ११६
ऊभा : उब्भिय : ऊर्ध्वित = खड़ा ३६, ४०, ४७, ७३, १२४
ऊलग : ओलग्ग : अव + लग् = सेवा करना, चाकरी करना ९, ३५
ऊलग : ओलग्गा : √अव + लग् = सेवा, चाकरी ३५, ३७, ३९, ४६, ४८, ६०, ६५, ७५, १२१, १२५
कंचुय : कञ्चुक = चोली ७२, ९४, १२२
कचोल : कच्चोल = कटोरा ४७, ४८, १२८
कटोरा : कच्चोलक ११८

हिन्दी-परिषद् के अन्य प्रकाशन

डॉ० माताप्रसाद गुप्त

तुलसीदास—तृतीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५८४, मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक के डी० लिट्० थीसिस का संशोधित एवं परिवर्धित हिन्दी रूपान्तर है । तुलसीदास-सम्बन्धी नवीनतम प्रामाणिक सामग्री के लिए यह ग्रन्थ हिन्दी अध्यापकों तथा उच्च कक्षा के हिन्दी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है ।

तुलसी—प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या १६०, मूल्य २), न्यूज़प्रिंट पर १।) । इस पुस्तिका में लेखक ने अपना तुलसी-विषयक आलोचनात्मक अध्ययन सुगम और संक्षिप्त रूप में रक्खा है । यह कृति सभी के लिए उपयोगी है ।

अर्द्धकथा—मूल लेखक बनारसीदास जैन, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या ७२, मूल्य १) । यह सं० १६६८ में लिखी गई हिन्दी की पहली आत्मकथा है, जो हिन्दी साहित्य और भारतीय इतिहास के प्रत्येक प्रेमी के देखने योग्य है ।

डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

आधुनिक हिन्दी साहित्य (१८५०-१६०० ई०)—तृतीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४०६, मूल्य ६) । यह ग्रन्थ लेखक के डी० फ़िल्० थीसिस का संशोधित एवं परिवर्धित रूपान्तर है और आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक अर्द्धशताब्दी का प्रथम खोजपूर्ण और विस्तृत अध्ययन है ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका (१७५०-१८५० ई०)—प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५१६, मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक के डी० लिट्० थीसिस के आधार पर लिखा गया है, और आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका के प्रामाणिक अध्ययन के लिए अत्यन्त आवश्यक है ।

पं० उमाशंकर शुक्ल

कवित्त-रत्नाकर—मूल लेखक सेनापति, तृतीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या २५३, मूल्य ३।।) । यह संस्करण विस्तृत समालोचनात्मक भूमिका और टिप्पणी सहित ग्रन्थ का एक सुसम्पादित पाठ प्रस्तुत करता है ।

डॉ० श्रीकृष्णलाल

आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास (१६००-१६२५ ई०)—तृतीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या ४१४, मूल्य ६) । यह ग्रन्थ लेखक के डी० फ़िल्० थीसिस का

हिन्दी रूपांतर है। आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास का क्रमबद्ध, सूक्ष्म तथा आलोचनात्मक अध्ययन इस ग्रन्थ में हिंदी पाठकों को प्रथम बार प्राप्त होगा।

डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा

सूरदास—तृतीय संशोधित संस्करण, पृष्ठ-संख्या ६०८, मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक का डी० फ़िल्० थीसिस और महाकवि सूरदास की जीवनी तथा काव्य का प्रथम खोजपूर्ण अध्ययन है, जिसमें लेखक ने विषय से सम्बन्धित समस्त उपलब्ध सामग्री का उपयोग बड़ी योग्यता के साथ किया है।

डॉ० कामिल बुल्के

राम-कथा—प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५३२, मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक का डी० फ़िल्० थीसिस है, जिसमें उसने विषय से सम्बन्धित देशी-विदेशी समस्त सामग्री का उपयोग करते हुए विषय का अनुशीलन किया है।

डॉ० भोलानाथ

आधुनिक हिन्दी साहित्य (१६२५-१६५० ई०)—प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५००, मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक का डी० फ़िल्० थीसिस है, जिसमें पहली बार पिछली चौथाई शताब्दी के हिन्दी साहित्य की विभिन्न धाराओं का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

डॉ० जगदीश गुप्त

हिन्दी और गुजराती कृष्ण-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन—प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५३०, मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक का डी० फ़िल्० थीसिस है, जिसमें हिंदी कृष्ण काव्य-साहित्य तथा गुजराती कृष्ण काव्य-साहित्य का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

डॉ० बदरी नारायण श्रीवास्तव

रामानंद संप्रदाय—प्रथम संस्करण, पृष्ठ-संख्या ५१५ मूल्य ८) । यह ग्रन्थ लेखक का डी० फ़िल्० थीसिस है, जिसमें महात्मा रामानन्द के वैष्णव सम्प्रदाय की निर्गुण और सगुण शाखाओं का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कोषाध्यक्ष, हिन्दी-परिषद्, यूनीवर्सिटी, इलाहाबाद